A CONTRASTIVE ANALYSIS OF STANDARD HINDI AND BANGRU

(मानक हिन्दी और बांगरू का व्यतिरेकी विश्लेषण)

पंजाब विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० उपाधि
के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

1981

निर्देशक
डा० डी० डी० शर्मा
एम० ए०, पी-एच० डी०
(संस्कृत तथा भाषाविज्ञान)
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ।

अनुसन्धित्सु
सोम दत्त

0. भूमिका

0.1 प्रेरणा तथा प्रयोजन

0.2 क्षेत्र तथा सीमाएं

0.3 सामग्री संकलन

0.4 विश्लेषण प्रणाली

0.5 योजना का संक्षिप्त ब्यौरा

0.6 आभार-प्रदर्शन

0.7 टंकन-समस्या

0.8 लिप्यंकन

0. भूमिका

0.1 <u>प्रेरणा तथा प्रयोजन</u> : लगभग एक दशाब्दी तक (1954 से 1963 तक) वर्तमान हरियाणा राज्य के बांगरू भाषी विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ाने का अवसर मिलने पर यह बात मेरे सामने आई कि हरियाणा में प्राय: सभी स्तरों के विद्यार्थी अपनी मातृभाषा से प्रभावित हो कर हिन्दी के प्रयोग में, विशेषतया हिन्दी के शुद्ध उच्चारण में कुछ विशेष प्रकार की त्रुटियां किया करते हैं । इन के परिहार के सम्बन्ध में सोचने पर यही सब से अधिक उपयुक्त मार्ग प्रतीत हुआ कि इस प्रकार की सभी त्रुटियों को नोट करके किसी वैज्ञानिक आधार पर व्यवस्थित किया जाए जिससे कि ऐसी त्रुटियों का पूर्वानुमान हो सके तथा अध्यापक-वर्ग विद्यार्थियों को इन से बचा सके । कहते हैं इलाज से परहेज बेहतर होता है क्योंकि बार-बार किया जाने वाला शोधन-कार्य कष्ट-साध्य तो होता ही है पूर्ण रूप से सफल भी नहीं हो पाता । बाद में जब ज्ञात हुआ कि भाषा-विज्ञानियों ने भी भाषा-शिक्षण में मातृभाषा तथा लक्ष्य भाषा के व्यतिरेकी विश्लेषण के महत्त्व को पूरी तरह स्वीकार कर लिया है तो हरियाणा राज्य के बांगरू-भाषी विद्यार्थियों के हिन्दी शिक्षण के लिए ऐसा व्यतिरेकी विश्लेषण प्रस्तुत करने के प्रयोजन से यह शोध-कार्य प्रारम्भ किया गया ।

0.2 <u>क्षेत्र तथा सीमाएं</u> : प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में सांकालिक मानक हिन्दी और बांगरू का भाषाविज्ञान की वर्णनात्मक पद्धति के अनुसार व्यतिरेकी विश्लेषण किया गया है । कहीं-कहीं मानक हिन्दी में आगत शब्दावली के स्रोतों का भी उल्लेख किया गया है । ऐसा करने से यद्यपि सैद्धान्तिक रूप में वर्णनात्मक पद्धति का कुछ अतिक्रमण भी हुआ है पर इसकी विशेष उपयोगिता को दृष्टि में रखते हुए ऐसा किया गया है । शोध-प्रबन्ध में प्रमुख रूप से स्वनप्रक्रिया ; रूपस्वनप्रक्रिया ; रूपप्रक्रिया तथा वाक्य-रचना सभी स्तरों पर पाई जाने वाली विभिन्नताओं की खोज की गई है, यद्यपि समानताओं का भी कुछ विवेचन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में 'मानक हिन्दी' का अभिप्राय हिन्दी भाषा के उस रूप से

है जिसे प्राय: परिनिष्ठित हिन्दी के नाम से पुकारा जाता है, जो पढ़े लिखे शिष्ट लोगों के औपचारिक वाक्व्यवहार में प्रयुक्त होता है, जिसे शिक्षण-संस्थाओं में विषय विशेष के रूप में पढ़ाया जाता है तथा शिक्षा के माध्यम के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है, जो भारत सरकार तथा उत्तर-भारत के विभिन्न प्रदेशों में राज-भाषा के रूप में प्रयुक्त होताहै और जो आकाशवाणी के हिन्दी समाचार बुलेटिनों में प्रतिदिन सुनाई देता है। इसे मुख्यतया हिन्दी के साहित्यिक तथा औपचारिक मानक तक ही सीमित रखा गया है परन्तु आवश्यकतानुसार इसमें बोल-चाल वाले मानक रूप का और अरबी-फारसी तथा अंग्रेज़ी से प्रभावित शैली का भी समावेश हुआ है।

इसी प्रकार इसमें 'बांगरू' का अभिप्राय उस जन-भाषा से लिया गया है जिसे भाषाविज्ञानियों ने पश्चिमी हिन्दी की एक उपभाषा बताया है, जो हरियाणवी, हरियाणी, जाटू आदि विभिन्न नामों से पुकारी जातीहै तथा जो हरियाणा राज्य के अधिकांश भाग में जन-साधारण की मातृभाषा के रूप में व्यवहृत होती है। यहां पर यह स्पष्ट कर देना भी उचित होगा कि बांगरू भाषी प्रदेश में भी स्थान-भेद के कारण भाषायी स्वरूप में कुछ-कुछ विभिन्नता आ जाती है। प्रस्तुत शोध में मुख्य रूप से जीन्द क्षेत्र की बांगरू को विश्लेषण का आधार बनाया गया है, यद्यपि विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य स्थानों की बांगरू के सम्बन्ध में किए गए शोध- कार्य का भी आवश्यकतानुसार उपयोग किया गया है।

यहां यह स्पष्ट करना भी उचित होगा कि बांगरू-भाषियों को मातृभाषा बांगरू का ज्ञान तो सहज, सरल तथा स्वाभाविक रूप से बिना किसी प्रयास के हो जाता है परन्तु आवश्यकता पड़ने पर उन्हें औपचारिक तथा शैक्षणिक प्रयोजन से प्रयोग में लाई जाने वाली मानक हिन्दी का ज्ञान सप्रयास प्राप्त करना होता है।

0.3 <u>सामग्री संकलन</u> : शोध का लक्ष्य तथा क्षेत्रनिर्धारित हो जाने पर सामग्री संकलन हेतु मैंने बांगरू के मुख्य सूचक के रूप में स्वयं ही कार्य किया है। इस संदर्भ में निवेदन है कि बांगरू मेरी मातृभाषा है। मेरा जन्म, लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा

बांगरू-भाषी क्षेत्र के केन्द्रीय स्थान जीन्द में हूं। जीन्द क्षेत्र के बांगरू-भाषी जन-साधारण के साथ मेरा सम्पर्क निरन्तर बना रहा है। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि भाषा की दृष्टि से मेरे बांगरू के ज्ञान पर मेरी स्कूली शिक्षा का कोई विशेष प्रभाव नहीं हुआ है। फिर भी बांगरू के अविकृत रूपों की प्राप्ति के लिए तथा संकलित सामग्री को सत्यापित करने के लिए मैंने अपने क्षेत्र के अन्य बांगरू भाषी लोगों के उच्चारणों का भी परीक्षण किया है। इसके अतिरिक्त सामग्री संकलन के कार्य में मैंने बांगरू-भाषी क्षेत्र के अपने दौरों का भी पूरा लाभ उठाया है। जब-जब मुझे बांगरू भाषी जन-साधारण का पारस्परिक वार्तालाप सुनने का अवसर मिला, कुछ न कुछ उपयोगी सामग्री अवश्य हाथ लगी। बांगरू पर अब तक हुए शोध-कार्यों से भी उपयोगी सामग्री का संकलन किया गया है।

मानकहिन्दी सम्बन्धी सामग्री का संकलन करने के लिए मुख्यतया हिन्दी भाषा पर हुए प्रामाणिक भाषावैज्ञानिक अध्ययनों, प्रामाणिक व्याकरणों, प्रामाणिक कोशों, आकाशवाणी के हिन्दी समाचार बुलेटिनों आदि से सहायता ली गई है। आवश्यकतानुसार मानक हिन्दी सम्बन्धी सामग्री मैंने स्वयं भी जुटाई है। मानकहिन्दी की मेरी पृष्ठभूमि के सन्दर्भ में निवेदन है कि मैंने हिन्दी विषय में एम०ए० तक की शिक्षा प्राप्त की है और मानकहिन्दी उच्चारण के प्रति मैं पूर्णतया सतर्क रहा हूं। अपने द्वारा जुटाई गई मानक हिन्दी सम्बन्धी सामग्री की परिशुद्धता का सत्यापन मैं मानकहिन्दी का प्रयोग करने वाले अन्य लोगों की सहायता से करता रहा हूं।

0.4 <u>विश्लेषण-प्रणाली</u> : व्यतिरेकी विश्लेषण की पृष्ठभूमि इस क्षेत्र में किये गये कार्यों तथा भाषा-विज्ञान सम्बन्धी प्रामाणिक ग्रन्थों की सहायता से तैयार की गई। इस कार्य में आगरा विश्वविद्यालय के हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ में कुछ समय तक प्राप्त किया गया भाषा-विज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण भी बहुत सहायक रहा। इसके अतिरिक्त हरियाणा भाषा विभाग की 'भाषायी-सर्वेक्षण योजना' के अन्तर्गत प्राप्त किया गया अनुभव भी उपयोगी रहा।

व्यतिरेकी विश्लेषण के लिए सम्पूर्ण संकलित सामग्री को विषयानुसार सुयोजित किया गया । इस के लिए अलग-अलग विषयों के अनुसार अलग - अलग तैयार की गई स्लिपों से भी सहायता ली गई । सुयोजित सामग्री के आधार पर मानक हिन्दी और बांगरू में भाषायी स्तरों पर पाई जाने वाली सूक्ष्म से सूक्ष्म विभिन्नताओं की खोज की गई । उपलब्ध विभिन्नताओं पर गम्भीर चिन्तन करके भाषायी निष्कर्ष निकाले गए । उन्हें प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में स्थान देने से पूर्व बांगरू भाषी लोगों तथा भाषाविदों की सहायता से सत्यापित भी किया गया । ऐसे सत्यापन के दौरान श्रद्धेय गुरुवर डा० डी०डी० शर्मा से अमूल्य परामर्श मिलते रहे । यह उन्हीं के कृपापूर्ण परामर्शों का सुफल है कि मानक हिन्दी और बांगरू में पाई जाने वाली विभिन्नताओं को प्रस्तुत व्यतिरेकी विश्लेषण में वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया जा सका है ।

0.5 <u>योजना का संक्षिप्त ब्यौरा</u> : शोध-प्रबन्ध को स्वनप्रक्रिया, रूपस्वनप्रक्रिया, रूपप्रक्रिया तथा वाक्यरचना इन चार अध्यायों में विभाजित किया गया है ।

पहले अध्याय में मानक हिन्दी और बांगरू में उपलब्ध स्वनप्रक्रिया सम्बन्धी विभिन्नताओं का ब्यौरा दिया गया है । इस सन्दर्भ में उन स्वनिमों के सम्बन्ध में विशेष चर्चा की गई है जो समान रूप से मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में उपलब्ध नहीं होते या जिन के स्वनिकीय स्वरूपों अथवा वितरण सम्बन्धी भिन्नता के कारण भाषायी बाधाएं उत्पन्न होती हैं । व्यंजन-गुच्छ सम्बन्धी विभिन्नताओं में उन स्थलों का विशेष उल्लेख किया गया है जहां मानक हिन्दी में उपलब्ध सार्थक-भेद बांगरू में लुप्त हो जाते हैं । द्वित्व व्यंजन के सन्दर्भ में उन परिस्थितियों पर विशेष बल दिया गया है जिन परिस्थितियों में मानक हिन्दी के द्वित्व व्यंजन का बांगरू में सरलीकरण हो जाता है । मानक हिन्दी और बांगरू में उपलब्ध अक्षरीय ढांचों की विभिन्नताओं को विस्तार से दिखाया गया है । उन परिस्थितियों का ब्यौरा भी दिया गया है जिन में मानक हिन्दी की तुलना में बांगरू का बलाघातित अक्षर अपेक्षाकृत गुरु तथा बलाघात रहित अक्षर अपेक्षाकृत लघु हो जाता है । अनुनासिकता के सन्दर्भ में ऐसी विशिष्ट परिस्थिति का उल्लेख भी किया गया है जिसमें मानक हिन्दी में तो केवल स्वनिकीय अनुनासिकता उपलब्ध होती है, परन्तु बांगरू में भेदक अनुनासिकता भी उपलब्ध होती है ।

दूसरे अध्याय में मानक हिन्दी और बाँगरू में पाई जाने वाली रूपस्वनप्रक्रिया सम्बन्धी विभिन्नताएं दिखाई गई हैं । इस सन्दर्भ में विभिन्न रूपप्रक्रियाओं के फलस्वरूप होने वाले स्वनिम-लोप, स्वनिम-आगम तथा स्वनिम-प्रतिस्थापन सम्बन्धी विभिन्नताएं दिखाई गई हैं । मानक हिन्दी में संस्कृत की संधियों की विद्यमानता तथा बाँगरू में उनके अभाव के कारण उत्पन्न भाषायी बाधाओं की चर्चा भी की गई है । इस अध्याय में यह भी दिखाया गया है कि किस प्रकार पूर्व प्रत्यय के योग के कारण बाँगरू प्रातिपदिक के स्वरूप में अन्तर आ जाता है ।

तीसरे अध्याय में रूपप्रक्रिया सम्बन्धी विभिन्नताओं का वर्णन मुख्यतया विभिन्न शब्द- भेदों के आधार पर किया गया है । नामिक पदों (संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण) में लिंग, वचन तथा कारक के कारण होने वाले रूपान्तरण सम्बन्धी विभिन्नताएं दिखाई गई हैं । विशेषण के सन्दर्भ में संख्यावाची विशेषणों तथा विशेषण की अवस्थाओं सम्बन्धी विभिन्नताएं भी दी गई हैं । क्रियाओं में अनेक क्रियारूपों, प्रेरणार्थक क्रिया रूपों, कृदन्तों, वाच्यों, काल रचना, संयुक्तक्रिया आदि सम्बन्धी विभिन्नताओं का उल्लेख किया गया है । अव्ययों के सन्दर्भ में सार्वनामिक क्रियाविशेषणों तथा कृदन्तीय क्रियाविशेषणों सम्बन्धी विभिन्नताएं, परसर्गों (कारक प्रत्ययों) तथा परसर्गात्मक शब्दों (सम्बन्ध सूचकों), समुच्चयबोधकों आदि की विभिन्नताएं दिखाई गई हैं । इसी अध्याय के अन्त में व्युत्पादक प्रत्ययों द्वारा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों तथा व्युत्पन्न सामासिक प्रातिपदिकों सम्बन्धी विभिन्नताएं भी दिखाई गई हैं ।

चौथे अध्याय में वाक्यरचना के आधार पर पाई जाने वाली विभिन्नताएं दी गई हैं । इस संदर्भ में मानक हिन्दी और बाँगरू में पाई जाने वाली उद्देश्य-विधेय-मेल सम्बन्धी विभिन्नताओं, पदक्रम सम्बन्धी विभिन्नताओं, उपवाक्य सम्बन्धी विभिन्नताओं, वाक्य रूपान्तरण सम्बन्धी विभिन्नताओं आदि का वर्णन किया गया है ।

शोध-प्रबन्ध के अन्त में शोध के निष्कर्षों का संक्षिप्त ब्यौरा दिया गया है ।

0.6 <u>आभार-प्रदर्शन</u> : मैं उन अनेक बांगरू भाषियों तथा मानक हिन्दी का प्रयोग करने वाले उन लोगों का आभारी हूं जिन की सहायता से बांगरू तथा मानक हिन्दी सम्बन्धी सामग्री का संकलन तथा भाषायी निष्कर्षों का सत्यापन किया गया ।

उन अनेक विद्वानों के प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूं जिन की रचनाओं से मुझे व्यतिरेकी विश्लेषण की तकनीक तथा शोध-कार्य के लिए मानक हिन्दी और बांगरू सम्बन्धी उपयोगी सामग्री उपलब्ध हुई ।

हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ, आगरा के भाषाविज्ञान के उन सभी प्राध्यापकों का मैं कृतज्ञ हूं जिन से मुझे भाषाविज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ ।

हरियाणा, भाषाविभाग की ` भाषा सर्वेक्षण योजना ` में काम करने से मुझे बांगरू के भाषावैज्ञानिक विश्लेषण का जो अनुभव प्राप्त हुआ उसके लिए मैं विभाग के सभी सम्बद्ध अधिकारियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना चाहूंगा ।

मैं पंजाब विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष डा० राव गुरुजी का आभारी हूं जिन्होंने मुझे अपने विभाग में शोध की अनुमति प्रदान की । हिन्दी विभाग के वर्तमान अध्यक्ष डा० मैथिली प्रसाद भारद्वाज जी के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूं जो समय समय पर मेरी समस्याओं को सहर्ष सुलझाते रहे हैं ।

यह भूमिका भाषाविज्ञान के मर्मज्ञ विद्वान श्रद्धेय डा० डी० डी० शर्मा जी के नामोल्लेख के बिना अधूरी ही रहेगी । श्रद्धेय डा० शर्मा के कृपा-पूर्ण निर्देशन में ही यह शोध-कार्य सम्पन्न हो सका है । उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मेरे पास उपयुक्त शब्द नहीं हैं ।

0.7 <u>टंकन-समस्या</u> : टंकण में अनुनासिकता के चिन्ह (ँ) का अभाव होने के कारण अनुनासिकता के स्थान पर भी अनुस्वार का ही प्रयोग हुआ है । टंकित प्रतियों में स्वनिमीय लेखन के सन्दर्भ में तो अपेक्षित सुधार किया गया है किन्तु अन्यत्र इसे छोड़ दिया गया है ।

०.४ <u>लिप्यंकन :</u> स्वनप्रक्रिया तथा रूपस्वनप्रक्रिया में तो स्वनिमीय लिप्यंकन को अपनाया गया है जो दो तिर्यक रेखाओं /   / के मध्य दिया गया है। आवश्यकतानुसार स्वनिमीय लिप्यंकन लघु कोष्ठकों (   ) में दिया गया है। टंकन-सुविधा के कारण स्वनिमीय लिप्यंकन में गुरु कोष्ठक [   ] के स्थान पर लघुकोष्ठक (   ) अपनाने पड़े हैं। रूपप्रक्रिया तथा वाक्यरचना में स्वनिमीय लेखन की पद्धति का अनुसरण न करते हुए आम प्रचलित लिप्यंकन विधि का ही अनुसरण किया गया है।

सोमदत्त

(सोम दत्त)

संकेत-सूची

संकेत-सूची

/ /	स्वनिमीय लिप्यंकन
( )	ध्वनिकीय लिप्यंकन
{ }	रुपिम
~	वैकल्पिक प्रयोग
→	सम्पन्न रूप
:	विरोध
// - //	मा जायी भाषा
मा० हि०	मानक हिन्दी
बाँ०	बाँगरू
पुं०	पुल्लिंग
स्त्री०	स्त्रीलिंग
ए० व०	एक वचन
ब० व०	बहुवचन
उ० पु०	उत्तम पुरुष
म० पु०	मध्यम पुरुष
अ० पु०	अन्य पुरुष

बजारी गाँवों के सन्दर्भ में

` अ `	ह्रस्व स्वर
` आ `	दीर्घ स्वर
` ह `	व्यंजन
( )	विद्यमानता अनिवार्य नहीं

मानक हिन्दी के सन्दर्भ में

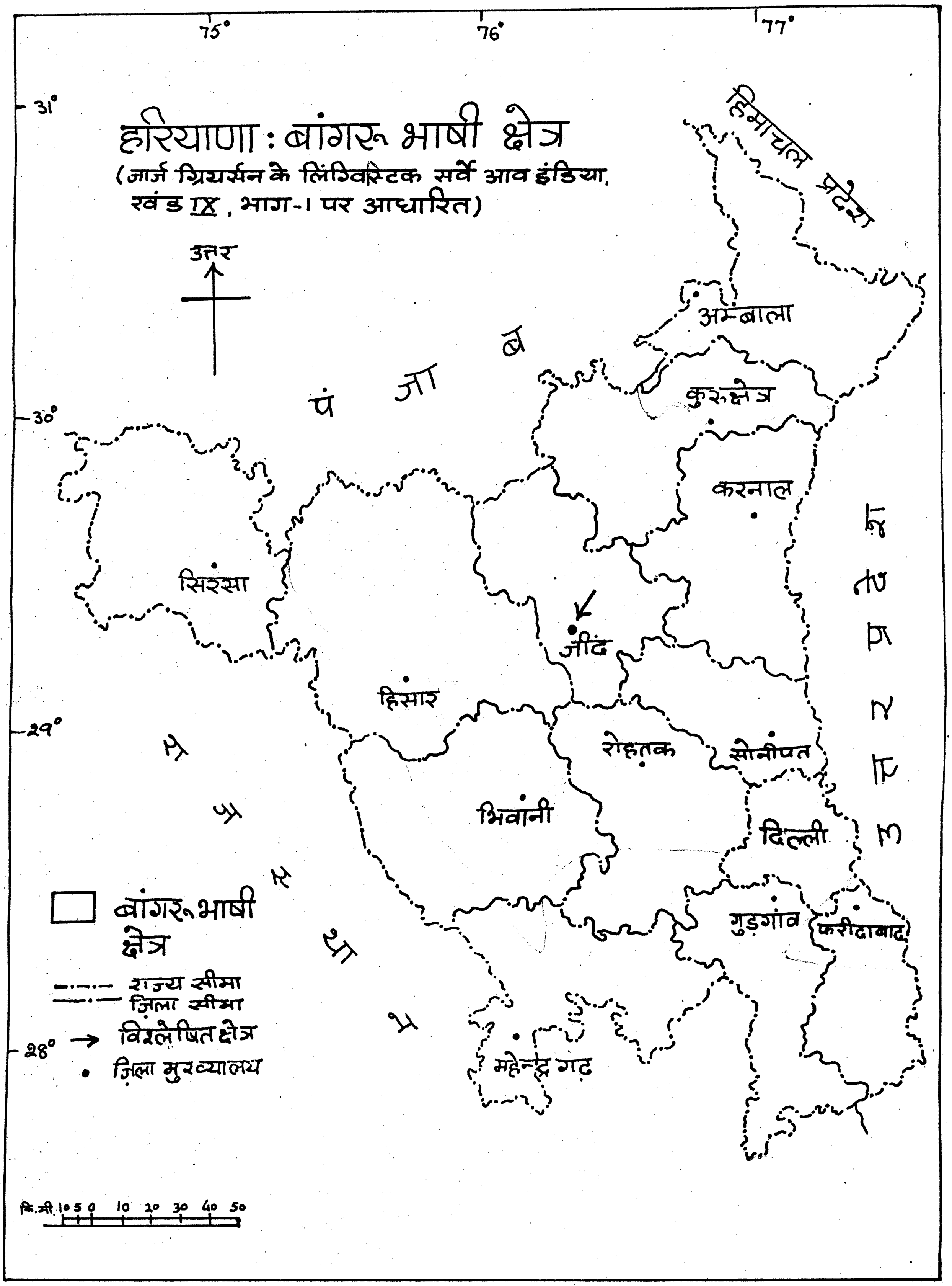
` ऑ `	उच्चार निम्न पश्च वर्तुलित दीर्घ स्वर

अइ	/ऐ/ का संध्यक्षर उपस्वन
अउ	/औ/ का संध्यक्षर उपस्वन

बांगरू के सन्दर्भ में

ऑ	/आ/ का ह्रस्व उपस्वन
ईॅ	/ई/ का ह्रस्व उपस्वन
ऊॅ	/ऊ/ का ह्रस्व उपस्वन
एॅ	/ए/ का ह्रस्व उपस्वन
औॅ	/औ/ का ह्रस्व उपस्वन
इ̈	/इ/ का केन्द्रीकृत उपस्वन
उ̈	/उ/ का केन्द्रीकृत उपस्वन
[illegible]	अग्र केन्द्रीकृत अवर्तुलित ह्रस्व स्वर
[illegible]	पश्च केन्द्रीकृत वर्तुलित ह्रस्व स्वर
ण्ह	प्रतिवेष्टित नासिक्य महाप्राण व्यंजन
ळ	प्रतिवेष्टित पार्श्विक अल्पप्राण व्यंजन
ळ्ह	प्रतिवेष्टित पार्श्विक महाप्राण व्यंजन

मानचित्र : बांगर मारवी क्षेत्र



मानचित्र CENSUS OF INDIA 1981, SERIES-6 HARYANA से साभार.

विषय-सूची

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

भूमिका (i-vii)

संकेत-सूची (viii-ix)

मानचित्र : बांगरू भाषी क्षेत्र (x)

1. स्वनप्रक्रिया 1-101

1.1. स्वनिममाला 1

1.1.1 मानक हिन्दी स्वनिममाला 1

1.1.2 बांगरू स्वनिममाला 9

1.2. स्वनिमीय व्यतिरेक 15

1.2.1 स्वर सम्बन्धी व्यतिरेक 15

1.2.2 व्यंजन सम्बन्धी व्यतिरेक 19

1.2.3 अधिखंडात्मक स्वनिमों सम्बन्धी व्यतिरेक 27

1.3. स्वनिकीय व्यतिरेक 28

1.3.1 बांगरू में स्वनिकीय स्वर ह्रस्वता तथा स्वनिकीय व्यंजन-दीर्घता 28

1.3.2 मानक हिन्दी में स्वनिकीय व्यंजनदीर्घता 31

1.3.3 /ऐ औ/ के सन्ध्यक्षर उपस्वन 34

1.3.4 /म्/ तथा /ह्/ के उपस्वन 36

1.3.5 स्वनिकीय अनुनासिकता 36

पृष्ठसंख्या

1.4. वितरण 37

1.4.1 स्वरों का वितरण 37

1.4.2 व्यंजनों का वितरण 41

1.4.3 अनुनासिकता का वितरण 57

1.5. स्वरक्रम 58

1.5.1 स्वरक्रम जिस के आदि तथा अन्त में कोई व्यंजन न हो 59

1.5.2 आदि स्वरक्रम 59

1.5.3 मध्य स्वरक्रम 60

1.5.4 अन्त्य स्वरक्रम 62

1.6. व्यंजन दीर्घता अथवा द्वित्व 66

1.6.1 व्यंजन दीर्घता अथवा द्वित्व सम्बन्धी कुछ तथ्य 66

1.6.2 बांगरू में व्यंजन द्वित्व की कुछ परिस्थितियां 68

1.6.3 ऐसी परिस्थितियां जिनमें मानक हिन्दी में व्यंजन द्वित्व उपलब्ध परन्तु बांगरू में अनुपलब्ध 69

1.7. व्यंजन गुच्छ 71

1.7.1 आदि व्यंजन गुच्छ 72

1.7.2 अन्त्य व्यंजन गुच्छ 78

1.7.3 मध्य व्यंजन गुच्छ 86

1.8. अक्षर 88

1.8.1 अक्षर-सीमा 88

1.8.2 एकाक्षरी शब्दों के अक्षरी ढांचे 91

1.8.3 बहु अक्षरी शब्दों के अक्षरी ढांचे 94

		पृष्ठसंख्या
1.9.	बलाघात	95
	1.9.1 सार्थक बलाघात शब्दस्तर पर भी	95
	1.9.2 अक्षर स्तर पर बलाघात अनुमेय	96
	1.9.3 अक्षर स्तरीय बलाघात का प्रभाव	96
1.10.	अनुनासिकता	100
	1.10.1 मानक हिन्दी की स्वनिमीय अनुनासिकता की परिस्थिति विशेष में बांगरू में स्वनिमीय अनुनासिकता भी	100
	1.10.2 मानक हिन्दी अनुनासिकता के स्थान पर बांगरू नासिक्य व्यंजन	101
	2. रूपस्वनप्रक्रिया	102-118
2.1.	स्वनिम का लोप	102
	2.1.1 /-अ-/ का लोप	102
	2.1.2 /हे/ तथा /दे/ धातुओं से /ए/ का लोप	103
	2.1.3 पूर्वकालिक कृदन्त में /इँ/ का लोप	104
	2.1.4 द्वित्वव्यंजन का सरलीकरण	104
	2.1.5 /ह/ का लोप	105
2.2.	स्वनिम का आगम	106
	2.2.1 सरल व्यंजन का द्वित्वीकरण	106
	2.2.2 विभिन्न व्यंजनों का आगम	107
2.3.	स्वनिम परिवर्तन	111
	2.3.1 स्वर परिवर्तन	111
	2.3.2 व्यंजन परिवर्तन	116

3. रूपप्रक्रिया

		पृष्ठसंख्या
3.	रूपप्रक्रिया	119-218
3.1.	संज्ञा	121
3.1.1	अन्त्य स्वनिम	121
3.1.2	लिंग	123
3.1.3	वचन	129
3.1.4	कारक	131
3.2.	सर्वनाम	143
3.2.1	सर्वनाम तालिका	143
3.2.2	लिंग	145
3.2.3	वचन	145
3.2.4	पुरुष	147
3.2.5	कारक	148
3.2.6	कर्म कारक के वैकल्पिक संश्लिष्ट रूप	151
3.3.	विशेषण	152
3.3.1	अविकारी तथा विकारी विशेषण	152
3.3.2	विशेषणों का रूपान्तरण	154
3.3.3	सर्वनामों से व्युत्पन्न विशेषण	155
3.3.4	' सा ' का प्रयोग	156
3.3.5	विशेषण के रूप में कृदन्तों का प्रयोग	156
3.3.6	संख्यावाचक विशेषण	157
3.3.7	उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था	162
3.4.	क्रिया	163
3.4.1	अन्त्य स्वनिम	163
3.4.2	क्रिया का साधारण रूप	164
3.4.3	अकर्मक तथा सकर्मक क्रिया	164

पृष्ठसंख्या

3.4.4 प्रेरणार्थक क्रिया 167
3.4.5 नामधातु 171
3.4.6 कृदन्त 171
3.4.7 लिंग, वचन तथा पुरुष 177
3.4.8 काल 179
3.4.9 पक्ष 180
3.4.10 वृत्ति 181
3.4.11 सहायक क्रिया 182
3.4.12 वाच्य 184
3.4.13 काल रचना 185
3.4.14 संयुक्त क्रिया 188

3.5. क्रियाविशेषण 190

3.5.1 रूपान्तरण 190
3.5.2 सार्वनामिक क्रियाविशेषण 191
3.5.3 संज्ञा से क्रियाविशेषण 195
3.5.4 क्रियाविशेषण के रूप में कृदन्त 196
3.5.5 निषेधात्मक क्रियाविशेषण 197
3.5.6 बलात्मक निपात का योग 198

3.6. परसर्ग तथा परसर्गात्मक शब्द 198

3.6.1 परसर्ग 199
3.6.2 परसर्गात्मक शब्द 204

3.7. समुच्चयबोधक 205

3.8. विस्मयादिबोधक 208

3.9. व्युत्पन्न प्रातिपदिक 209

3.9.1 व्युत्पादक प्रत्ययों द्वारा व्युत्पन्न प्रातिपदिक 210
3.9.2 व्युत्पन्न सामासिक प्रातिपदिक 217

		पृष्ठसंख्या
	4. वाक्य-विन्यास	219-234
4.1.	भिन्न शब्द-भेद के रूप में	219
4.2.	पदक्रम	221
4.3.	उद्देश्य तथा विधेय की मैत्री	221
	4.3.1 वचनपरक मैत्री	222
	4.3.2 लिंगपरक मैत्री	223
	4.3.3 पुरुषपरक मैत्री	224
4.4.	कर्मणि तथा भावे प्रयोग	224
4.5.	पदबन्ध	225
	4.5.1 संज्ञा पदबन्ध	225
	4.5.2 क्रिया पदबन्ध	227
	4.5.3 क्रियाविशेषण पदबन्ध	229
4.6.	उपवाक्य	229
4.7.	रूपान्तरण	231
	4.7.1 तथ्यात्मक वाक्यों का निषेधात्मक वाक्यों में रूपान्तरण	231
	4.7.2 ऋजुकथन का वक्रकथन में रूपान्तरण	233
	निष्कर्ष	235
	सहायक ग्रन्थ सूची (हिन्दी)	245
	सहायक ग्रन्थ सूची (अंग्रेज़ी)	255

-0-

1. स्वनप्रक्रिया

1.1 स्वनिममाला

1.2 स्वनिमीय व्यतिरेक

1.3 स्वनिकीय व्यतिरेक

1.4 वितरण

1.5 स्वरक्रम

1.6 व्यंजन दीर्घता अथवा द्वित्व

1.7 व्यंजन गुच्छ

1.8 अक्षर

1.9 बलाघात

1.10 अनुनासिकता

1. स्वन प्रक्रिया

1.1 स्वनिममाला

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों की स्वनिममाला को खंडात्मक तथा अधिखंडात्मक दो भागों में विभाजित किया गया है । खंडात्मक स्वनिमों को आगे स्वरों तथा व्यंजनों में विभाजित किया है । व्यंजनों में ही अर्द्धव्यंजन[1] भी शामिल किए गए हैं । अधिखंडात्मक स्वनिमों में अनुनासिकता, संहिता, बलाघात, स्वराघात और अन्त्यपरिरेखा शामिल हैं । पहले मानक हिन्दी स्वनिममाला तथा तत्पश्चात् बांगरू स्वनिममाला प्रस्तुत है ।

1.1.1. मानक हिन्दी स्वनिममाला

(क) खंडात्मक स्वनिम

(1) स्वर

	अग्र अवर्तुलित	केन्द्रीय अवर्तुलित	पश्च वर्तुलित
उच्चतर उच्च	ई		ऊ
निम्नतर उच्च	इ		उ
उच्चतर मध्य	ए		ओ
मध्यम मध्य		अ	
निम्नतर मध्य	ऐ		औ
उच्चतर निम्न			(ऑ)
निम्नतर निम्न		आ	

टिप्पणी 1. कोष्ठक में दिये गये स्वनिम /ऑ/ का प्रयोग हिन्दी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों में ही होता है ।[2] इस का प्रयोग अंग्रेज़ी तत्सम उच्चारण के प्रा।

1- हाकेट, सी० एफ०; ए कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक्स; भारतीय संस्करण,1970; पृष्ठ 94

2- (i) वर्मा, धीरेन्द्र, हिन्दी भाषा का इतिहास,1949; पृष्ठ 98

(ii) भाटिया, कैलाशचन्द्र, हिन्दी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों का भाषा अध्ययन, 1967; पृष्ठ 89

(iii) उप्रेति, मुरारी लाल; हिन्दी में प्रत्यय विचार; 1964; पृष्ठ 6.

सुशिक्षित व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। मानक हिन्दी में इस स्वनिम ने अपना स्थान बना लिया है, अत: अनेक विद्वानों[1] द्वारा स्वनिममाला में इसे स्थान दिया गया है।

टिप्पणी 2. स्वनिम /अ/ केन्द्रीय है या पश्च, इस सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद पाया जाता है। कई विद्वानों ने इसे पश्च स्वर[2] बताया है, जबकि कई अन्य विद्वानों ने इसे केन्द्रीय स्वर[3] कहा है। वास्तव में इसका स्थान केन्द्रीय तथा पश्च की मध्यवर्ती स्थिति में है।[4] व्यावहारिक दृष्टि से जिस प्रकार / इ ई / का तथा / उ ऊ/ का लघु-दीर्घ युग्म बनता है, उसी प्रकार / अ आ / भी युग्म बनाते हैं।[5] यह वर्तुलित (अर्थात् ओठों की गोलाई वाला) भी नहीं, जबकि अन्य सभी पश्च स्वर वर्तुलित हैं। इस लिए प्रस्तुत विश्लेषण में इसे केन्द्रीय स्वर माना गया है।

1- (i) वर्मा, धीरेन्द्र; हिन्दी भाषा का इतिहास; 1949; पृष्ठ 98
(ii) भाटिया, कैलाशचन्द्र; हिन्दी में अंग्रेज़ी के आगत शब्दों का भाषा तात्त्विक अध्ययन; 1967; पृष्ठ 89
(iii) उप्रेति, मुरारीलाल; हिन्दी में प्रत्यय विचार; 1964, पृष्ठ 6

2- (i) वर्मा, धीरेन्द्र; हिन्दी भाषा का इतिहास; 1949; पृष्ठ 102
(ii) तिवारी, उदयनारायण; हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास; 2018 वि0; पृष्ठ 319
(iii) शर्मा, आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी, 1975; अंक 3(2), पृष्ठ 3
(iv) चौधरी, अनन्त, नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, 1973, पृष्ठ 179
(v) कृष्ण, ब्रजेश्वर, हिन्दी भाषा का स्वरूप विकास, 1973, पृष्ठ 5

3- (i) मल्होत्रा, सैलानन्द; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी, 1970, प्राक्कथन, पृष्ठ 13
(ii) भाटिया, कैलाशचन्द्र, हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा, 2027 वि0, पृष्ठ 29
(iii) तिवारी, भोलानाथ, हिन्दी ध्वनियाँ और उनका उच्चारण, 1973, पृ0 40
(iv) चतुर्वेदी, एम0जी0, ए कन्ट्रास्टिव स्टडी आव हिन्दी-इंगलिश फोनोलॉजी, 1973; पृष्ठ 17

4- जैन महावीर सरन; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन; 1974; खण्ड 1.1.1.5.7, पृष्ठ 22

5- शर्मा, आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी; 1975; पृष्ठ 4

टिप्पणी 3. जिह्वा की अग्र तथा पश्च अवस्था की बीच की स्थिति के लिए कई विद्वानों[1] द्वारा 'मध्य' शब्द का प्रयोग किया गया है जबकि प्रस्तुत अध्ययन में ऐसी स्थिति के लिए 'केन्द्रीय' शब्द प्रयुक्त किया गया है और 'मध्य' शब्द का प्रयोग जिह्वा की उच्च तथा निम्न अवस्था के बीच की स्थिति के लिए किया गया है। कई विद्वानों[2] ने हमारे अनुसार भी ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है।

टिप्पणी 4. विभिन्न स्वर स्वनिमों का पारस्परिक विरोध डा० मल्होत्रा,[3] डा० भाटिया,[4] डा० जैन[5] आदि विभिन्न विद्वानों द्वारा दिखाया गया है।

1- (i) सक्सेना, बाबूराम; अवधी का विकास ; 1972; पृष्ठ 23

(ii) वर्मा, धीरेन्द्र; हिन्दी भाषा का इतिहास; 1949; पृष्ठ 101

(iii) तिवारी, उदय नारायण ; हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास; 2018 वि0 ; पृष्ठ 318

(iv) भाटिया, कैलाशचन्द्र; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा; 2027 वि0 ; पृष्ठ 25

2- (i) मल्होत्रा, रमेशचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970; प्राक्कथन, पृष्ठ 12-13

(ii) जगदेवसिंह; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू; 1970; पृष्ठ 9

(iii) हाल, रार्बट ए, जूनियर; इन्ट्रोडक्टरी लिंग्विस्टिक्स; प्रथम - भारतीय संस्करण 1969; पृष्ठ 46

3- मल्होत्रा, रमेशचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970; पृष्ठ 3-6

4- भाटिया, कैलाशचन्द्र ; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा; 2027 वि0; पृष्ठ 26-27

5- जैन, महावीर शरण; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन; 1974; पृष्ठ 8

(2) व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य 1	दन्तोष्ठ्य 2	दन्त्य 3	वर्त्स्य 4	पश्चवर्त्स्य (मूर्धन्य) 5	तालव्य 6	कोमल तालव्य 7	अलिजिह्व 8	काकल्य 9
स्पर्श									
अघोष अल्पप्राण	प्		त्		ट्		क्	(क़्)	
अघोष महाप्राण	फ्		थ्		ठ्		ख्		
घोष अल्पप्राण	ब्		द्		ड्		ग्		
घोष महाप्राण	भ्		ध्		ढ्		घ्		
स्पर्श संघर्षी									
अघोष अल्पप्राण						च्			
अघोष महाप्राण						छ्			
घोष अल्पप्राण						ज्			
घोष महाप्राण						झ्			
संघर्षी									
अघोष		(फ़्)		स्		श्	(ख़्)		
घोष				(ज़्)			(ग़्)		ह्
उत्क्षिप्त									
अल्पप्राण					ड़्				
महाप्राण					ढ़्				
नासिक्य									
अल्पप्राण	म्		न्		ण्		ङ्		
महाप्राण	म्ह्		न्ह्						
कम्पित				र्					
पार्श्विक									
अल्पप्राण				ल्					
महाप्राण				ल्ह्					
अर्द्ध व्यंजन		व्				य्			

5)

टिप्पणी 1. कोष्ठक में दिए गए स्वनिम /क़,ख़,ग़/ का प्रयोग केवल अरबी-फारसी के आगत शब्दों में तथा /फ़, ज़/ का प्रयोग अरबी-फारसी तथा अंग्रेज़ी के आगत शब्दों में होता है।[1] इन का प्रयोग अरबी-फारसी तथा अंग्रेज़ी के आगत शब्दों के तत्सम उच्चारण के प्रति सचेष्ट व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। /ख़,ग़/ का उच्चारण स्थान प्रस्तुत विश्लेषण में, कोमल तालव्य माना गया है। डा० रमेशचन्द्र महरोत्रा[2] ने भी इन स्वनिमों का स्थान कोमल तालव्य बताया है जबकि कुछ अन्य विद्वानों[3] ने इन का स्थान /क़/ के समान ही बताया है।

टिप्पणी 2. स्वर मध्यग तथा स्वरोपरान्त अन्त्य स्थिति में /ड़/ : /ढ़/ का न केवल व्यतिरेकी वितरण उपलब्ध है बल्कि विद्वानों ने इनके न्यूनतम भेदक युग्म[4] भी दिए हैं। /बढ़ा/ : /बड़ा/ में /ढ़/ : /ड़/ का विरोध होने के कारण प्रस्तुत विश्लेषण में /ढ़/ को भी स्वनिम माना गया है। वैसे /ढ/ : /ढ़/ का विरोध सिद्ध करने वाला कोई न्यूनतम भेदक युग्म या व्यतिरेकी वितरण उपलब्ध नहीं है। डा० महावीर सरन जैन /ड़/ को स्वतंत्र स्वनिम मानते हैं परन्तु (ढ़) को /ढ/ के उपस्वन के रूप में स्वीकार करते हैं।[5]

1- मिलाइए (i) वर्मा, धीरेन्द्र; हिन्दी भाषा का इतिहास ; 1949; पृष्ठ 9
(ii) भाटिया, कैलाशचन्द्र; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा; 2027 वि० ; पृष्ठ 40
(iii) चौधरी, अनन्त; नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी; 1973; पृष्ठ 188, 199-201
(IV) शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ;1975;पृष्ठ 11
2- महरोत्रा, रमेशचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970;पृष्ठ प्राक्कथन 15-16
3- (i) वर्मा, धीरेन्द्र; हिन्दी भाषा का इतिहास; 1949; पृष्ठ 127 के सामने चार्ट
(ii) शर्मा, आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी; 1975; पृष्ठ 10
(iii) चौधरी, अनन्त; नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी; 1973;पृष्ठ 188,189
4- (i) द्विवेदी, देवी शंकर ; भाषा और भाषिकी ; 1964; पृष्ठ 57
(ii) जैन, महावीर सरन; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन; 1974; पृष्ठ 66
5- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन; 1974; पृष्ठ 66

6) टिप्पणी 3. नासिक्य तथा पार्श्विक स्वनिमों के महाप्राण रूपों की चर्चा करते हुए डा० महावीर सरन जैन लिखते हैं " यह बात ठीक है कि `म्` एवं `म्ह` `न्` एवं `न्ह` तथा `ल्` एवं `ल्ह` के बीच व्यतिरेक पाया जाता है तथा इस के पर्याप्त उदाहरण भी ढूंढे जा सकते हैं किन्तु प्रश्न यह है कि `म्ह`, `न्ह` `ल्ह` को / उफान् / में व्यवहृत / फ् / की भांति इकाई रूप में माना जाए अथवा / अनुसार / में व्यवहृत / सृ / के गुच्छ रूप में स्वीकार किया जाए।"[1] डा० महावीर सरन जैन का विचार है कि इन्हें " इकाई रूप की अपेक्षा `ध्वनि + ह` के गुच्छ रूप में मानना अधिक संगत है "[2] जबकि अन्य अनेक विद्वानों[3] ने इन्हें इकाई रूप में स्वीकार किया है। प्रस्तुत विश्लेषण में भी इन महाप्राण रूपों को इकाई रूप में स्वीकार किया गया है।

टिप्पणी 4. व्यंजन स्वनिमों का परस्पर व्यतिरेक डा० रमेश महरोत्रा,[4] डा० महावीर सरन जैन[5], डा० कैलाश चन्द्र भाटिया[6] आदि विभिन्न विद्वानों द्वारा दिखाया गया है।

1- जैन, महावीर सरन; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन; 1974; पृष्ठ 35
2- जैन, महावीर सरन; यथोपरि ; पृष्ठ 38
3- मिलाइए- (i) वर्मा, धीरेन्द्र; हिन्दी भाषा का इतिहास; 1949; पृष्ठ 127 के सामने वाई
(ii) तिवारी, उदयनारायण ; हिन्दी भाषा का उद्गम तथा विकास; 2018 वि०; पृष्ठ 315
(iii) शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975; पृष्ठ 17
(iv) चौधरी, अनन्त ; नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी; 1973; पृष्ठ 227, 228, 230
(v) अरुण, विद्या भास्कर; ए कम्पेरेटिव फोनोलाजी आव हिन्दी एंड पंजाबी; 1961; पृष्ठ 1
4- महरोत्रा, रमेशचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970; पृष्ठ 6-15
5- जैन, महावीर सरन; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन; 1974; पृष्ठ 30-38
6- भाटिया, कैलाश चन्द्र; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा; 2027 वि० ; पृष्ठ 41-46

7)

(ख) अधिखंडात्मक स्वनिम

अनुनासिकता /˜/

संहिता

बाह्य /+/ या रिक्त स्थान ; दो पदों के बीच प्रयुक्त

आन्तरिक/-/ प्राय: अविच्छिन्न ; पद के बीच रूपिम सीमा पर प्रयुक्त

बलाघात /'/ पद से पूर्व प्रयुक्त

स्वराघात

उच्च /3/
मध्यम /2/
निम्न /1/

अन्त्य परिरेखा

आरोही /↑/
अवरोही /↓/
सम /→/

टिप्पणी 1. प्रस्तुत विश्लेषण में संहिता के अन्तर्गत दो स्वनिम माने गए हैं। बाह्य संहिता का अपने अभाव से विरोध /पी+ ली/ 'पीने की क्रिया हो चुकी' : /पीली/ 'पीले रंग की' जैसे न्यूनतम भेद युग्मों में प्राय: उपलब्ध होता है, परन्तु आन्तरिक संहिता का अपने अभाव से व्यतिरेक की ओर ध्यान प्राय: नहीं जाता जो निम्न लिखित न्यूनतम भेदक युग्म से स्पष्ट है -

/बन्-ना/ 'बनना क्रिया' : /बन्ना/ 'दुल्हा'

टिप्पणी 2. बलाघात के स्वनिम के बारे में पर्याप्त मतभेद है। डा० उदय

8)

नारायण तिवारी[1] ने बलाघात के स्वनिम को मान्यता नहीं दी है जबकि डा० सैल चन्द्र महरोत्रा[2] बलाघात के दो स्वनिम मानते हैं। डा० महावीर सरन जैन[3] बलाघात का एक ही स्वनिम स्वीकार करते हैं, जो अपने अभाव से व्यतिरेकी है। प्रस्तुत विश्लेषण में भी बलाघात का एक स्वनिम स्वीकार किया गया है। इस स्वनिम की विद्यमानता और इस के अभाव का व्यतिरेक निम्नलिखित भेदक युग्म से स्पष्ट है।

/ 'क्या है ↑/ ` क्या बात है ` ।

/ क्या 'है↑/ ` क्या सचमुच है ` ।

टिप्पणी 3. स्वराघात के स्वनिमों के सम्बन्ध में भी मतभेद है। डा० सैलचन्द्र महरोत्रा[4] ने ऐसे पांच स्वनिम माने हैं। डा० महावीर सरन जैन[5] के अनुसार स्वराघात के चार स्वनिम हैं। डा० उदयनारायण तिवारी[6] ने यह संख्या तीन स्वीकार की है। प्रस्तुत विश्लेषण के क्षेत्र में स्वराघातों के सूक्ष्म अध्ययन को शामिल नहीं किया गया है। हम डा० उदय नारायण तिवारी की धारणानुसार स्वराघात के तीन स्वनिम ही मान रहे हैं।

टिप्पणी 4. डा० सैलचन्द्र महरोत्रा[7] ने न्यूनतम भेदक युग्मों द्वारा अन्त्य-परिरेखाओं का व्यतिरेक स्पष्ट किया है, यथा-

/ फिर्↓/ ` फिर कभी ` ।

/ फिर्↑/ ` फिर क्या ? `

/ फिर्→/ ` फिर ... ( जरा सोच लूं ) `

1- तिवारी, उदयनारायण; हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास; 2018 वि०; पृष्ठ 503-504

2- महरोत्रा , सैलचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970; पृष्ठ 2

3- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन;1974;पृ० 81

4- महरोत्रा, सैलचन्द्र; यथोपरि ; पृष्ठ 2

5- जैन, महावीर सरन; यथोपरि ; पृष्ठ 81

6- तिवारी,उदय नारायण; हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास; 2018 वि० ; पृष्ठ 514

7- महरोत्रा, सैलचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970 ; पृष्ठ 16

1.1.2. बांगरू स्वनिममाला

(क) खंडात्मक स्वनिम

(1) स्वर

	अग्र अवर्तुलित	केन्द्रीय अवर्तुलित	पश्च वर्तुलित
उच्चतर उच्च	ई		ऊ
निम्नतर उच्च	इ		उ
उच्चतर मध्य	ए		ओ
मध्यम मध्य		अ	
निम्नतर मध्य	ऐ		
निम्न		आ	

टिप्पणी 1. प्रस्तुत विश्लेषण में बांगरू के नौ स्वर स्वनिम स्वीकार किए गए हैं। प्रस्तुत विश्लेषक की स्व बोली में स्वर स्वनिम उपर्युक्त अनुसार ही रहे हैं। डा० नानक चन्द शर्मा[1] द्वारा भी इन्हीं स्वर स्वनिमों को मान्यता दी गई है। परन्तु स्थान-भेद के कारण स्वर स्वनिमों की संख्या घट-बढ़ सकती है। डा० रणवीर सिंह के अनुसार 'बांगरू में 'ऐ' और 'औ' का नितान्त अभाव है।[2] अत: उन्होंने आठ स्वर स्वनिम माने हैं। डा० शिव कुमार संढिलवाल[3] / ओ / : / औ / के विरोध को मानते हुए / औ / सहित बांगरू में दस स्वर स्वनिम मानते हैं। डा० जगदेव सिंह ने / ओ / : / औ / के विरोध के अतिरिक्त / इ / : / ई / और / उ / : / ऊ / के विरोध को भी मान्यता देते हुए बारह स्वर स्वनिम माने हैं।[4] डा० जगदेव सिंह के अनुसार / इ / केन्द्रीकृत अग्र स्वर तथा / उ / केन्द्रीकृत पश्च स्वर हैं।[5] स्वयं

1- शर्मा, नानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्‌गम तथा विकास ; 1968; पृष्ठ 45
2- भाषा विभाग हरियाणा द्वारा प्रकाशित ; हरियाणा की उपभाषाएं ; प्रथम संस्करण ; पृष्ठ 6
3- संढिलवाल, शिवकुमार ; बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन ; 1980; पृष्ठ 35-37
4- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 1,13
5- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 11

10)

डा० जगदेवसिंह ने भी इन (/ इ उ /) की विद्यमानता बांगरू की एक बोली में भी स्वीकार की है।[1] डा० जगदेवसिंह ने गांव बामला(भिवानी-रोहतक सड़क पर भिवानी से लगभग 7 मील की दूरी पर स्थित) की बोली में ` औ ` तथा ` उ ` का अभाव माना है।[2] प्रस्तुत विश्लेषण में ` इ ` को ` इ ` में अन्तर्भुक्त माना गया है और ` औ ` तथा ` उ ` का भी अभाव माना गया है।

टिप्पणी 2. बांगरू में मानक हिन्दी के ` औ ` तथा ` ऑ ` का अभाव है। अन्य स्वरों का उच्चारण मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में समान है, अतः प्रस्तुत विश्लेषण में बांगरू स्वरों का विवरण हिन्दी स्वरों के ही अनुरूप दिया गया है। डा० नानक चन्द शर्मा[3] तथा डा० शिव कुमार खंडेलवाल[4] द्वारा दिए गए बांगरू स्वरों के चार्टों में जो ब्यौरा दिया गया है, उस से हमारी सहमति नहीं है। इस ब्यौरे के अनुसार अग्र स्वरों / ई इ ए ऐ / को क्रमशः संवृत, अर्द्धसंवृत, अर्द्ध विवृत तथा विवृत बताया गया है। पश्च स्वरों का वर्णन भी समान आधार पर किया गया है। डा० शिव कुमार खंडेलवाल ने स्वरों का विस्तृत विवरण देते समय[5] इस भूल को सुधारते हुए / ई इ / तथा / ऊ उ / को संवृत, / ए / तथा / ओ / को अर्द्धसंवृत तथा / ऐ / को अर्द्धविवृत बताया है। डा० जगदेवसिंह[6] ने बांगरू में जिह्वा की चार ऊंचाइयों को भेदक मानते हुए / ऐ / को अग्रनिम्न बताया है। वर्तमान विश्लेषण में / ऐ / को

1- कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की पत्रिका ; जर्नल आव हरियाणा स्टडीज़; खंड VI , अंक 1-2, 1974; पृष्ठ 58
2- हिन्दी विभाग पंजाब की वार्षिक लेखक गोष्ठी सन् 1962-63 में डा० जगदेवसिंह द्वारा पढ़ा गया शोध निबन्ध; भाषा और उसका अध्ययन तथा बांगरू की ध्वन्यात्मक संरचना ; 1963 ; पृष्ठ 29
3- शर्मा, नानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास ; 1968; पृष्ठ 43
4- खंडेलवाल, शिवकुमार ; बांगरू बोली का भाषा- शास्त्रीय अध्ययन ; 1980; पृष्ठ 35
5- खंडेलवाल, शिवकुमार ; यथोपरि ; पृष्ठ 39-41
6- जगदेव सिंह; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 9

11)

मानक हिन्दी ब्यौरे के अनुसार निम्नतर मध्य(दूसरे शब्दों में अर्द्धविवृत) माना गया है ।

टिप्पणी 3. बांगरू /आ/ को डा० शिव कुमार डंडियाल[1] ने पश्च बताया है, जबकि डा० जगदेव सिंह[2] और डा० नानक चन्द शर्मा[3] ने अपने ब्यौरे अनुसार इसे केन्द्रीय बताया है । मानक हिन्दी /आ/ के सन्दर्भ में दिए गए कारणों(देखिए अंश 1.11(क)। टिप्पणी 2) से बांगरू /आ/ को भी केन्द्रीय स्वीकार किया गया है ।

टिप्पणी 4. बांगरू स्वर स्वनिमों का विरोध न्यूनतम भेदक युग्मों की सहायता से डा० जगदेव सिंह,[4] डा० नानक चन्द शर्मा[5] तथा डा० शिव कुमार डंडियाल[6] ने दिखाया है ।

1- डंडियाल, शिव कुमार ; बांगरू भाषा का भाषा शास्त्रीय अध्ययन ;1960 ; पृष्ठ 39

2- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 11

3- शर्मा, नानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 1968 ; पृष्ठ 45

4- जग देव, सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू; 1970 ; पृष्ठ 13

5- शर्मा, नानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 196 ; पृष्ठ 49

6- डंडियाल , शिव कुमार ; बांगरू भाषा का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन; 1960 ; पृष्ठ 35-37

12) (2) व्यंजन

	द्वयोष्ठ्य 1	दन्त्य 2	वर्त्स्य 3	पश्च वर्त्स्य (मूर्धन्य)	तालव्य 5	कोमलतालव्य 6	काकल्य 7
स्पर्श							
अघोष अल्पप्राण	प्	त्		ट्		क्	
अघोष महाप्राण	फ्	थ्		ठ्		ख्	
घोष अल्पप्राण	ब्	द्		ड्		ग्	
घोष महाप्राण	भ्	ध्		ढ्		घ्	
स्पर्श संघर्षी							
अघोष अल्पप्राण					च्		
अघोष महाप्राण					छ्		
घोष अल्पप्राण					ज्		
घोष महाप्राण					झ्		
संघर्षी			स्				ह्
उत्क्षिप्त				ड़्			
नासिक्य							
अल्पप्राण	म्		न्	ण्			
महाप्राण	म्ह्		न्ह्	ण्ह्			
कम्पित			र्				
पार्श्विक							
अल्पप्राण			ल्	ळ्			
महाप्राण			ल्ह्	ळ्ह्			
अर्द्धव्यंजन		व्			य्		

टिप्पणी 1. बांगरू का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन करने वाले विद्वानों डा० जगदेवसिंह[1], डा० नानक चन्द शर्मा[2] तथा डा० शिव कुमार[3] खंडेलवाल द्वारा दी गई बांगरू

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 1
2- शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास ; 1968;पृष्ठ 45
3- खंडेलवाल,शिवकुमार ; बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन;1980;पृष्ठ 31

13)

स्वनिममाला में उपर्युक्त महाप्राण व्यंजनों को शामिल नहीं किया गया है। दूसरे शब्दों में ये विद्वान इन्हें इकाई स्वनिम के रूप में स्वीकार न करके 'व्यंजन+ह' के गुच्छ के रूप में स्वीकार करते हैं परन्तु प्रस्तुत विश्लेषण में मानक हिन्दी के समान ही (देखिए अंक 1.11.(क).2. टिप्पणी 2) इन्हें इकाई स्वनिम स्वीकार किया गया है। बांगरू में इन का वितरण इकाई स्वनिम के समान ही है जैसे बांगरू में / ल्हको / 'छिपाओ' ऐसा पद है जिसमें ह्रस्व स्वर से पूर्व / ल्ह / का प्रयोग उपलब्ध है, जबकि ऐसी स्थिति में केवल इकाई स्वनिम आ सकते हैं, व्यंजन गुच्छ नहीं (देखिए अंक 1.7.1(ख)(5))। इसी प्रकार / ल्ह्याव / 'लिहाफ' पद में / य / से पूर्व / ल्ह / उपलब्ध है, जबकि बांगरू में शब्द के आदि में केवल दो व्यंजनों का गुच्छ उपलब्ध है, तीन का नहीं (देखिए अंक 1.7.1(क)(2))।

टिप्पणी 2. प्रस्तुत विश्लेषण में बांगरू के / म्ह न्ह ल्ह / के अलावा / ण्ह ड़्ह / को भी इकाई स्वनिम स्वीकार किया गया है। / ण्ह ड़्ह / का अन्य निकटतम स्वनिमों से विरोध आगे (देखिए 1.2.2(6) तथा (8)) दिखाया जाएगा।

टिप्पणी 3. बांगरू व्यंजन स्वनिमों का विरोध डा० जगदेव सिंह[1], डा० नानक चन्द शर्मा[2] तथा डा० शिवकुमार खंडेलवाल[3] द्वारा दिखाया गया है।

(ख) अधिखंडात्मक स्वनिम

अनुनासिकता / ँ /

संहिता

बाह्य / + / या रिक्त स्थान ; दो पदों के बीच प्रयुक्त

आन्तरिक / - / प्राय: अचिन्हित ; पद के बीच रुपिम सीमा पर प्रयुक्त

/ ' / पद से पूर्व प्रयुक्त

आघात
स्वराघात

उच्च / 3 /

मध्यम / 2 /

निम्न / 1 /

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू; 1970 ; पृष्ठ 14-15

2- शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास;1968; पृष्ठ 47-48

3- खंडेलवाल, शिवकुमार; बांगरू बोली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन ;1980; पृष्ठ 51-58

14)

अन्त्य परिरेखा

आरोही /↑/

अवरोही /↓/

सम /→/

टिप्पणी 1. डा० जगदेव सिंह[1] ने संहिता के अन्तर्गत चार स्वनिम स्वीकार किए हैं। उन्होंने बाह्य संहिता तथा आन्तरिक संहिता के अतिरिक्त आन्तिक संहिता और सीमा संहिता दो और स्वनिम माने हैं जो वाक्य अथवा वाक्यांश के अन्त में प्रयुक्त होते हैं। हमारे विचारानुसार चूँकि ये अन्त्य परिरेखा के अंग हैं, अतः प्रस्तुत विश्लेषण में इन्हें संहिता के अलग भेदों के रूप में स्वनिम नहीं माना गया है।

टिप्पणी 2. डा० जगदेव सिंह[2] के अनुसार " बलाघात फोनीम नहीं है। पद में अक्षरों पर बलाघात कम या अधिक हो सकता है पर उससे अर्थ में कोई अन्तर नहीं पड़ता। " परन्तु डा० जगदेव सिंह[3] स्वयं यह स्वीकार करते हैं " ज़ोर देने के लिए अलबत्ता बलाघात का प्रयोग किया जाता है। " इस ज़ोर देने वाली बात के कारण ही प्रस्तुत विश्लेषण में बलाघात को स्वनिम स्वीकार किया गया है। मानक हिन्दी के समान बांगरू में भी बलाघात अक्षर स्तर पर भेदक न होकर शब्द स्तर पर ही भेदक है।

टिप्पणी 3. डा० जगदेवसिंह[4] ने अन्त्य परिरेखा के अन्तर्गत निम्न आरोही अन्त्य परिरेखा को भी स्वनिम माना है तथा तीन स्वराघातों और चार अन्त्य परि-रेखाओं के विभिन्न संयोगों के आधार पर न्यूनतम भेदक युग्म भी उद्धृत किए हैं। प्रस्तुत

1- जगदेव सिंह : ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970, पृष्ठ 1,2

2- जगदेवसिंह ; भाषा और उसका अध्ययन तथा बांगरू की ध्वन्यात्मक संरचना ; हिन्दी विभाग, पंजाब की वार्षिक लेखक गोष्ठी, 1962-63 में पढ़ा गया निबन्ध ; पृष्ठ 14,

3- जगदेव सिंह ; यथोपरि ; पृष्ठ 14

4- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 , पृष्ठ 1

15)

विश्लेषण के क्षेत्र में विभिन्न स्वराघातों और विभिन्न अन्त्य परिरेखा के विभिन्न संयोगों के सूक्ष्म अध्ययन को शामिल नहीं किया गया है, अत: बांगरू में भी सुविधा के लिये, मानक हिन्दी के समान अन्त्य परिरेखाओं के तीन ही स्वनिम माने गए हैं।

1.2 स्वनिमीय व्यतिरेक

यहाँ हम मानक हिन्दी और बांगरू के स्वनिमों के भेदक लक्षणों की चर्चा के साथ उन स्वनिमों का विशेष उल्लेख करेंगे जो मानक हिन्दी में उपलब्ध हैं पर बांगरू में नहीं या यदि बांगरू में उपलब्ध हैं तो मानक हिन्दी में नहीं। यही तत्व है जिसके कारण वाग्व्यवहार में भाषायी अन्तराय उत्पन्न होता है।

1.2.1 स्वर सम्बन्धी व्यतिरेक

(1) मानक हिन्दी में / ऑ / गौण व्यवस्था का स्वर है। जैसे कि पहले उल्लेख किया गया है (देखिए अंक 1.1.1.(क) (1) टिप्पणी 2) इस का प्रयोग अंग्रेज़ी के आगत शब्दों में ही होता है। इसका प्रयोग अंग्रेज़ी तत्सम उच्चारण के प्रति सचेष्ट व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी का यह स्वनिम अपने साथ अनुनासिकता का स्वनिम कभी भी धारण नहीं करता,[1] जबकि मूल व्यवस्था के सभी दस स्वर अनुनासिकता का स्वनिम धारण कर सकते हैं। बांगरू के स्वर स्वनिमों में मूल तथा गौण व्यवस्था का ऐसा कोई अन्तर नहीं है।

(2) भाषा विज्ञानियों[2] ने स्वरों के विवरण में ओठों की स्थिति, जिह्वा की ऊंचाई और जिह्वा भाग को महत्व दिया है। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में जिह्वा की ऊंचाई तथा जिह्वा भाग सार्थक लक्षण हैं, दूसरे शब्दों में दोनों के स्वरों में इस बात से सार्थक भेद उत्पन्न होता है कि जिह्वा का कौन सा भाग

1- महरोत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970 ; पृष्ठ 25

2- (i) राबर्ट, ए० हाल, जूनियर ; इन्ट्रोडक्टरी लिंग्विस्टिक्स ; प्रथम भारतीय संस्करण 1969 ; पृष्ठ 46

(ii) हाकेट, सी० एफ ; ए कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक्स ; भारतीय-संस्करण 1970 ; पृष्ठ 77

जितना ऊपर उठता है परन्तु ओठों की स्थिति अर्थात् ओठों की वर्तुलता - अवर्तुलता सहायक लक्षण है, भेदक नहीं। दोनों में अग्र तथा केन्द्रीय स्वर अवर्तुलित हैं और पश्च स्वर वर्तुलित। दोनों में स्वरों का कोई भी ऐसा युग्म नहीं है जो केवल ओठों की वर्तुलता या अवर्तुलता के आधार पर भेदक युग्म हो। यदि दोनों में / आ / को केन्द्रीय अवर्तुलित के स्थान पर पश्च अवर्तुलित मान भी लिया जाए (देखिए अंक 1.1.1(क)(1), टिप्पणी 2 ; अंक 1.1.2(क)(1), टिप्पणी 3) तो भी ओठों की स्थिति सहायक लक्षण ही रहती है।

(3) जहाँ तक जिह्वा भाग का सम्बन्ध है, मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अग्र, केन्द्रीय तथा पश्च तीन स्थितियाँ सार्थक हैं। समान जिह्वा ऊँचाई पर अग्रता - पश्चता के आधार पर दोनों में न्यूनतम भेदक युग्म भी उपलब्ध है। दोनों में / इ / : / उ / का विरोध जिह्वा की अग्रता तथा पश्चता के कारण ही है।

(4) जिह्वा की ऊँचाई की दृष्टि से मानक हिन्दी में कुल सात अवस्थाएं सार्थक हैं जबकि बांगरू में केवल छ: अवस्थाएं सार्थक हैं। जिह्वा की निम्न अवस्था में मानक हिन्दी में उच्चतर निम्न और निम्नतर निम्न दो अवस्थाएं सार्थक है परन्तु बांगरू में निम्न अवस्था में केवल एक अवस्था ही है। अग्र तथा केन्द्रीय स्वरों में दोनों में जिह्वा की ऊँचाई की क्रमश: चार तथा दो अवस्थाएं हैं। मानक हिन्दी में पश्च स्वरों में जिह्वा की ऊँचाई की पांच अवस्थाएं हैं जबकि बांगरू में केवल तीन।

(5) स्वर ध्वनियों की मात्रा की दृष्टि से प्रमुख उपस्वनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दोनों में / इ अ उ / ह्रस्व हैं तथा शेष स्वर दीर्घ हैं।

(6) शिथिलता तथा दृढ़ता के विरोध के बारे में यह कहा जा सकता है कि मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही प्राय: ह्रस्व स्वर शिथिल हैं और दीर्घ स्वर दृढ़ हैं। / ई / : / इ / और / ऊ / : / उ / के विरोध में दृढ़ता का यह अन्तर अधिक स्पष्ट है। दोनों युग्मों के पहले सदस्य अर्थात् / ई / तथा / ऊ / दृढ़ हैं जबकि दूसरे सदस्य क्रमश: / इ / तथा / उ / शिथिल हैं।

(7) मानक हिन्दी में कुल ग्यारह स्वर स्वनिम हैं जबकि बांगरू में कुल नौ स्वर स्वनिम हैं। बांगरू में उपलब्ध स्वर स्वनिमों के अलावा मानक हिन्दी की मूल व्यवस्था में /औ/ तथा गौण व्यवस्था में /ऑ/ स्वनिम उपलब्ध हैं।

(8) मानक हिन्दी की मूल व्यवस्था के /औ/ का मूल व्यवस्था के अन्य निकटतम /ओ/ से विरोध शब्द की आदि, मध्य और अन्त्य तीनों अवस्थाओं में उपलब्ध है। बांगरू में /औ/ का अभाव होने के कारण ऐसे विरोध का भी अभाव है। मानक हिन्दी /औ/ के स्थान पर बांगरू भाषी /ओ/ का उच्चारण करता है। इस प्रकार बांगरू के /ओ/ का क्षेत्र मानक हिन्दी के /ओ/ से अधिक विस्तृत है। मानक हिन्दी में /औ/: /ओ/ का विरोध प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म प्रस्तुत हैं, यथा

/ओ/ : /औ/

आदि /ओर्/ ‘तरफ’ : /और्/ ‘तथा’

मध्य /बोना/ ‘क्रिया बोना’ : /बौना/ ‘छोटे कद का’

/कोर्/ ‘वह सन्धि जिस पर से अंग मोड़ा न जा सके’ :/कौर्/ ‘निवाला’

/बोरा/ ‘बड़ा थैला’ : /बौरा/ ‘पागल’

अन्त्य /जो/ ‘सर्वनाम’ : /जौ/ ‘अनाज’

/सो/ ‘सर्वनाम’ : /सौ/ ‘शत’

/लो/ ‘लेना क्रिया का रूप’ : /लौ/ ‘दीपक की लौ’

<u>भाषायी बाधा</u>:- मानक हिन्दी // औ → ओ // बांगरू

(9) मानक हिन्दी की गौण व्यवस्था के /ऑ/ का निकटतम स्वनिम /आ/ से विरोध प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म प्रस्तुत हैं। यह विरोध शब्द की तीनों स्थितियों नामतः आदि, मध्य तथा अन्त्य में उपलब्ध है, यथा

/आ/ : /ऑ/

आदि /आन्/ ‘इज़्ज़त’ : /ऑन् / ‘पंखा ऑन कर दो’

मध्य	/बाल/ `सिर का बाल`	:	/बॉल/ `गेंद`
	/डाल/ `डालडाल`	:	/हॉल/ `बड़ा कमरा`
	/काल/ `समय`	:	/कॉल/ `पुकारना`
	/चाक/ `कुम्हार का चाक`	:	/चॉक/ `चाक से लिखो`
	/काफ़ी/ `पर्याप्त`	:	/कॉफ़ी/ `पेय पदार्थ`
अन्त्य	/ला/ `क्रिया लाना`	:	/लॉ/ `कानून`

मानक हिन्दी में /ऑ/ का /ओ/ तथा /औ/ से विरोध प्रकट करने के वास्ते न्यूनतम भेदक युग्म भी प्रस्तुत हैं यथा-

/ऑ/	:	/ओ/
/बॉल/ `गेंद`	:	/बोल/ `कथन`
/लॉ/ `कानून`	:	/लो/ `लेना क्रिया का रूप`
/ऑ/	:	/औ/
/लॉ/ `कानून`	:	/लौ/ `दीपक की लौ`

/ऑ/ युक्त ऐसे शब्द प्राय: बांगरू भाषियों द्वारा प्रयोग में नहीं लाए जाते। बांगरू भाषी स्कूली बच्चों को अंग्रेज़ी के अध्ययन के समय जब ऐसे शब्दों को सीखना पड़ता है तब भाषायी बाधा स्पष्ट रूप से उभर आती है। वे प्राय: /ऑ/ के स्थान पर /आ/ अथवा /ओ/ का उच्चारण करते हैं। उन द्वारा /आ/ अथवा /ओ/ का निर्धारण प्राय: अंग्रेज़ी शब्दों के वर्ण-विन्यास के आधार पर किया जाता है। /ऑ/ के लिए जिन शब्दों में रोमन वर्ण `ओ` का प्रयोग होता है उनमें वे प्राय: अपने /ओ/ को प्रयुक्त करते हैं तथा जिन शब्दों में रोमन `ए` का प्रयोग होता है उनमें वे प्राय: /आ/ का प्रयोग करते हैं यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
/कॉल/	/काल/
/बॉल/	/बाल/
/हॉल/	/हाल/
/गॉड/	/गोड/
/कॉफ़ी/	/कोफी/

19)

भाषायी बाधा:- मानकहिन्दी // ऑ → आ, औ // बांगरू

1.2.2. व्यंजन सम्बन्धी व्यतिरेक

(1) मानक हिन्दी में स्वरों के समान व्यंजनों की भी मूल तथा गौण व्यवस्थाएं हैं। व्यंजन /क़, ख़, ग़, फ़, ज़/ गौण व्यवस्था के व्यंजन हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है (देखिए अंक 1.1.1.(क) (2), टिप्पणी।) इनका प्रयोग अरबी-फारसी तथा अंग्रेज़ी के आगत शब्दों के तत्सम उच्चारण के प्रति सचेष्ट व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी की सामान्य बोलचाल में प्राय: इन्हें क्रमश: / क ख ग फ ज / से प्रतिस्थापित कर दिया जाता है[1], मानक हिन्दी प्रयोग में, यथा आकाशवाणी के हिन्दी समाचारों में, सदा / क़, ख़, ग़, फ़, ज़ / का ही प्रयोग किया जाता है। बांगरू-व्यंजनों में मूल तथा गौण व्यवस्था का ऐसा कोई अन्तर नहीं है।

(2) चवर्गीय व्यंजनों को प्रस्तुत विश्लेषण में स्पर्श-संघर्षी बताया गया है। अनेक विद्वानों[2] ने इन्हें स्पर्श-संघर्षी कहा है परन्तु कुछ विद्वानों[3] द्वारा इनके घर्षण रूप के बारे में सन्देह भी व्यक्त किया गया है। इनकी कार्यकारिता स्पर्शों के समान है[4]। अत: स्पर्श-संघर्षियों को स्पर्शों के एक रूप में ग्रहण किया जा सकता है। बांगरू के

1- शर्मा, आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी; 1975; अंक 26; पृष्ठ 11

2- (i) सक्सेना, बाबूराम; अवधी का विकास; 1972; अंक 30; पृष्ठ 29
(ii) मल्होत्रा, कैलाशचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी तथा ध्वनिमी; 1970; पृ० 75-76
(iii) जैन, महावीर सरन; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन, 1974; पृष्ठ 46
(iv) चौधरी, अनन्त; नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी; 1973; पृष्ठ 19[illegible], 193, 224

3- (i) वर्मा, धीरेन्द्र; हिन्दी भाषा का इतिहास; 1940; पृष्ठ 117-118 पर पाद टिप्पणी
(ii) जगदेव सिंह; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू; 1970, पृष्ठ 5

4- (i) मल्होत्रा, कैलाशचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970; पृष्ठ 76
(ii) ग्लीसन, एच० ए०; एन इन्ट्रोडक्शन टू डिस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स; पृष्ठ 335

विश्लेषकों डा० जगदेवसिंह[1], डा० नानकचन्द शर्मा[2] तथा डा० शिव कुमार खंडेलवाल[3] ने तो वर्त्स्यीय व्यंजनों का उल्लेख स्पर्शों में ही किया है। अन्यथा स्पष्ट संकेत न होने पर हमारे विश्लेषण में स्पर्श-संघर्षियों को स्पर्शों के अन्तर्गत ही समझा जाएगा।

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही व्यंजनों के स्पर्श, संघर्षी, उत्क्षिप्त, नासिक्य, कम्पित, पार्श्विक तथा अर्द्ध व्यंजन वर्ग उपलब्ध हैं। दोनों में प्राणत्व और घोषत्व सार्थक हैं। उच्चारण स्थान की दृष्टि से मानक हिन्दी में जहां कुल नौ[4] अवस्थाएं हैं वहां बांगरू में ऐसी कुल सात अवस्थाएं हैं। मानक हिन्दी और बांगरू के व्यंजनों में उपलब्ध व्यतिरेक का वर्णन आगे व्यंजनों के विभिन्न वर्गों यथा स्पर्श आदि के आधार पर किया जा रहा है।

(1) स्पर्श : मानक हिन्दी की मूल व्यवस्था के स्पर्शों एवं बांगरू के स्पर्शों में पूरी समानता है। दोनों में पांच उच्चारण स्थान नामत: द्वयोष्ठ्य, दन्त्य, पश्च वर्त्स्य, तालव्य और कोमल तालव्य भेदक हैं। पश्च वर्त्स्य में प्रतिवेष्टन भी उपलब्ध है। दोनों में ही स्पर्शों में प्राणत्व और घोषत्व के आधार पर दोहरे दोहरे युग्म हैं। मानक हिन्दी की गौण व्यवस्था में /क़/ के समावेश के कारण मानक हिन्दी में अलिजिह्वीय स्थान भी भेदक है। मानक हिन्दी में इस प्रकार स्पर्शों में छ: स्थान भेदक हैं जबकि बांगरू में कुल पांच ही।

1- जगदेव सिंह ; यथोपरि ; पृष्ठ 3-6

2- शर्मा, नानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास; 1968; पृष्ठ 45

3- खंडेलवाल , शिव कुमार ; बांगरू बोली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन ; 198[illegible]; पृष्ठ 38

4- डा० रमेश चन्द्र महरोत्रा वर्त्स्यीय व्यंजनों तथा /श/ को पश्च तालव्य तथा /य/ को तालव्य मानते हैं, अत: उनके अनुसार उच्चारण स्थान की दस अवस्थाएं हैं- देखिए महरोत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970, पृष्ठ 76-77

मानक हिन्दी में उपलब्ध अलिजिह्वीय स्पर्श व्यंजन में प्राणत्व तथा घोषत्व दोनों ही भेदक नहीं हैं।[1] मानक हिन्दी में / क़ / का निकटतम व्यंजन / क / से विरोध प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म प्रस्तुत हैं यथा -

/ क /		: / क़ /	
/ कतरा /	` फांक `	: / क़तरा /	` बूंद `
/ कदम् /	` कदम्ब `	: / क़दम् /	` पांव `
/ कालीन् /	`काल सम्बन्धी `	: / क़ालीन् /	` गलीचा `
/ कौल् /	` नामधारी `	: / क़ौल् /	` प्रतिज्ञा `
/ हल्का /	` भारी का उल्टा `	: / हल्क़ा /	` क्षेत्र `
/ ताक् /	` देखना `	: / ताक़् /	` कमरोई `

बांगरू में / क़ / के अभाव के कारण /क़/ : /क/ के विरोध का भी अभाव है। बांगरू भाषी को जब /क़ / का उच्चारण करना पड़ता है तब वह उसे अपने निकटतम व्यंजन / क / से प्रतिस्थापित कर लेता है। यह बात दूसरी है कि कुछ बांगरू शब्दों में अरबी-फारसी शब्दों के विकास के साथ / क़ / → /ख / / ग / में परिवर्तित हो गया है यथा / वक़्त / → / वख्त / ; / सन्दूक़ / → / सन्दूख / ; /बन्दूक़ / → /बन्दूख / ; / तान्क़ा / → / तान्गा / ; तक़ाज़ा / → / तगादा /

भाषायी बाधा :- मानक हिन्दी // क़ → क // बांगरू

(4) संघर्षी : मानक हिन्दी में मूल व्यवस्था में तीन संघर्षी / स श ह / हैं जबकि बांगरू में केवल दो संघर्षी / स ह / ही उपलब्ध हैं। अतः मानक हिन्दी में / स / : / श / का विरोध उपलब्ध है। बांगरू में / श / के अभाव के कारण ऐसे विरोध का भी अभाव है। बांगरू भाषी मानक हिन्दी / श / के स्थान पर सर्वदा अपने / स / को प्रतिस्थापित कर लेता है। मानक हिन्दी में / स / : / श / का

1- / ग़ / को अलिजिह्व भी मान लिया जाए (देखिए अंक 1.1.1(क)2, टिप्पणी 1) तो भी यह संघर्षी होने के कारण घोषत्व के आधार पर / क़ / के साथ युग्म नहीं बनाता।

22)

विरोध प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म उपलब्ध हैं,यथा-

/ स / : / श /

/ सीख् / ` सखी ` : / शीख् / ` बुद्ध चरित्र `

/ सादी / ` साधारण ` :/ शादी/ ` विवाह `

/ साख् / ` वर्ण ` :/ शाख् / ` एक वस्त्र `

/ सर्./ ` मुखिया यथा सरपंच  :/ शर्./ ` बाण `

/ सेर् / ` तोल का माप ` : / शेर्./ ` एक जंगली जानवर `

/ सीसा / ` एक धातु ` : / शीशा / ` दर्पण `

/ पास् / ` निकट ` :/ पाश् / ` बन्धन `

भाषायी बाधा :- मानक हिन्दी // श → स // बांगरू

मानक हिन्दी की गौण व्यवस्था के संघर्षी स्वनिमों नामतः / ख़ ग़ फ़ ज़ / का निकटतम स्पर्श स्वनिमों क्रमशः / ख ग फ ज / से विरोध उपलब्ध होता है और यह विरोध को प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म भी उपलब्ध हैं,यथा-

/ ख / : / ख़ /

/ खाना / ` भोजन ` : / ख़ाना / ` स्थान यथा डाकख़ाना `

/ खैर्./ ` एक वृक्ष ` :/ ख़ैर्./ ` भलाई `

/ खसरा / ` एक प्रकार की खुजली ` : / ख़सरा / ` पटवारी की बही `

/ खान् / ` भण्डार /  : / ख़ान् / ` पठान `

/ खब् / ` खाना ` : / ख़ब् / ` झगड़ा, तकरार `

/ ग / : / ग़ /

/ गौर्./ ` श्वेत वर्ण ` : / ग़ौर्./ ` चिन्तन, ध्यान `

/ गुल / ` फूल ` : / ग़ुल / ` शोर, हल्ला `

/ गोल् / ` वृत्ताकार ` :/ ग़ोल् / ` झुंड `

/ बाग् / ` लगाम ` :/ बाग़ / ` उपवन `

3)

/फ/ : /फ़/

/फन्/ 'साँप का फन' : /फ़न्/ 'हुनर'

/फलक्/ 'फट्टी' : /फ़लक्/ 'आसमान'

/दफा/ 'मर्तबा, बार' : /दफ़ा/ 'दूर करना'

/ज/ : /ज़/

/जरा/ 'बुढ़ापा' : /ज़रा/ 'तनिक'

/जीना/ 'क्रिया जीना' : /ज़ीना/ 'सोपान'

/सजा/ 'क्रिया सजाना' : /सज़ा/ 'दण्ड'

/राज्/ 'शासन' : /राज़्/ 'भेद'

/गज्/ 'हाथी' : /गज़्/ 'माप की इकाई'

बांगरू में /ख़ ग़ फ़ ज़/ उपलब्ध न होने के कारण उपर्युक्त विरोधों का भी अभाव है। बांगरू भाषी इनके स्थान पर अपने निकटतम स्वनिम क्रमशः /ख ग फ ज/ का उच्चारण करता है। मानक हिन्दी की मूल तथा गौण दोनों व्यवस्थाओं को मिलाने पर मानक हिन्दी में संघर्षी स्वनिमों में पांच उच्चारण स्थान नामतः दन्तोष्ठ्य, वर्त्स्य, तालव्य, कोमल तालव्य और काकल्य, सार्थक हैं जबकि बांगरू में केवल दो स्थान नामतः वर्त्स्य तथा काकल्य ही सार्थक हैं। मानक हिन्दी में /ख़/ :/ग़/ तथा /स/ : /ज़/ के विरोध में घोषत्व सार्थक है। बांगरू में संघर्षी स्वनिमों में सार्थक घोषत्व का अभाव है। मानक हिन्दी की गौण व्यवस्था के स्वनिमों का बांगरू-भाषी द्वारा उच्चारण किए जाने पर उत्पन्न होने वाली भाषायी बाधा निम्नलिखित अनुसार है -

भाषायी बाधा-मानक हिन्दी //ख़ → ख// बांगरू

//ग़ → ग//

//फ़ → फ//

//ज़ → ज//

(5) उत्क्षिप्त: मानक हिन्दी में उत्क्षिप्त स्वनिमों में प्राणत्व सार्थक है जबकि बांगरू में केवल एक ही अल्पप्राण उत्क्षिप्त स्वनिम उपलब्ध होने के कारण ऐसी सार्थकता का अभाव है। मानक हिन्दी में /ड़/ : /ढ़/ का विरोध प्रकट करने वा

21)

न्यूनतम भेदक युग्म प्राप्त हैं, यथा -

/ ड़ / : / ढ़ /

/ बड़ा / ' विशाल ' : / बढ़ा / ' आगे बढ़ा '

/ कोड़ी / ' बीस का समूह ' : / कोढ़ी / ' कुष्ट रोगी '

/ बड़ / ' एक वृक्ष ' : / बढ़ / ' आगे बढ़ '

/ बाड़ / ' खेत की बाड़ ' : / बाढ़ / ' नदी की बाढ़ '

/ पड़ / ' गिरना ' : / पढ़ / ' पुस्तक पढ़ना '

बांगरू में / ढ़ / के अभाव के कारण उपर्युक्त विरोध का भी अभाव है। बांगरू भाषी मानक हिन्दी के घोष महाप्राण उत्क्षिप्त / ढ़ / के स्थान पर अपने घोष महाप्राण प्रतिवेष्टित स्पर्श / ढ / का प्रयोग करता है, यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू
/ पढ़ /	/ पढ /
/ बाढ़ /	/ बाढ /
/ बढ़ /	/ बढ /
/ बढ़ा /	/ बढ्ढा /
/ कोढ़ी /	/ कोढी /

भाषायी बाधा:- मानक हिन्दी // ढ़ → ढ // बांगरू

(6) नासिक्य - मानक हिन्दी नासिक्यों में चार उच्चारण-स्थान नामतः: द्वयोष्ठ्य, वर्त्स्य, पश्च वर्त्स्य(प्रतिवेष्टित गुण सहित) एवं कोमल तालव्य सार्थक हैं जबकि बांगरू में केवल तीन उच्चारण स्थान नामतः: द्वयोष्ठ्य, वर्त्स्य तथा पश्च वर्त्स्य(प्रतिवेष्टित गुण सहित) सार्थक हैं। मानक हिन्दी में कोमल तालव्य नासिक्य / ङ् / का प्रयोग कवर्ग तथा / म् न् ह् य् / के पूर्व होता है। इन परिस्थितियों में वर्त्स्य नासिक्य/ न् / भी उपलब्ध है। अतः मानक हिन्दी में / ङ् / : / न् / का न्यूनतम भेदक युग्म उपलब्ध न होते हुए भी / ङ् / : / न् / के व्यतिरेकी वितरण के कारण ये दोनों स्वतंत्र स्वनिम हैं। मानक हिन्दी में उपलब्ध व्यतिरेकी वितरण के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -

/ ङ /	:	/ न् /
/ गङ्गा /	:	/ पुन्गा / 'एक कीड़ा'
/ मङ्गी /	:	/ फुन्गी / 'शाखा का सिरा'
/ दिङ्नाथ /	:	/ जगन्नाथ /
/ वाङ्मय /	:	/ चिन्मय /
/ सङ्घार् /	:	/ मन्हूस /
/ सङ्घम् /	:	/ अनुस्वार् /

बांगरू में 'ङ' का प्रयोग केवल कवर्गीय व्यंजनों के पूर्व होता है और यह / न् / के उपस्वन के रूप में प्रयुक्त होता है। डा० जगदेवसिंह का इस सम्बन्ध में भिन्न मत है। वे 'ङ' को बांगरू स्वनिम माला[1] में स्थान देते हैं परन्तु स्वयं उनके अनुसार भी 'स्वर मध्यग स्थिति में यह सवर्णीय घोष स्पर्श / ग् / तथा पूर्ववर्ती स्वर की अनुनासिकता के साथ मुक्त परिवर्तन में मिलता है, उदाहरणतया / रङाई ~ रंगाई /।[2] डा० जगदेवसिंह ने अन्त्य स्थिति में 'ङ' के प्रयोग का जो उदाहरण / रङ / दिया है,[3] उसका भी मुक्त परिवर्त / रङ्ग् / उपलब्ध है। अत: प्रस्तुत विश्लेषण में 'ङ' का प्रयोग सदा कोमल तालव्य व्यंजनों के पूर्व ही माना गया है जहां यह / न् / के व्यतिरेक में नहीं है। डा० नानक चन्द शर्मा[4] ने भी 'ङ' को / न् / के अन्तर्गत माना है।

मानक हिन्दी में पश्च वर्त्स्य (प्रतिवेष्ठित गुण सहित) एक ही अल्प प्राण नासिक्य स्वनिम / ण् / है जबकि बांगरू में उक्त अल्पप्राण स्वनिम के साथ उसका महाप्राण रूप स्वनिम भी उपलब्ध है जिसका वर्त्स्य महाप्राण नासिक्य / न्ह् / से विरोध प्रकट करने वाला न्यूनतम भेदक युग्म भी बांगरू में उपलब्ध है, यथा-

/ न्ह् /	:	/ ण्ह् /
/ बान्ह् / 'चल चलाना'	:	/ बाण्ह् / 'बांध'

1- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 1

2- जगदेव सिंह ; यथोपरि ; पृष्ठ 7

3- जगदेव सिंह ; यथोपरि ; पृष्ठ 7

4- शर्मा, नानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 196[illegible] ; पृष्ठ 50

हां यह बात द्रष्टव्य है कि बांगरू में / ण्ह / के विकल्प के रूप में प्राय: / ह्ण / व्यंजन अनुक्रम भी उपलब्ध होता है, यथा –

/बाण्ह /	/ बाह्ण /	'बहिन'
/काण्ही/	/ काह्णी/	'कहानी'

मानक हिन्दी में न तो / न्ह/ : / ण्ह / का विरोध उपलब्ध है और न ही / ण्ह / तथा / ह्ण / व्यंजन अनुक्रम। बांगरू के / ण्ह / के स्थान पर मानक हिन्दी भाषी अपने निकटतम स्वनिम / न्ह / का ही प्रयोग करता है।

भाषायी बाधा बांगरू // ण्ह न्ह // मानक हिन्दी

(7) कम्पित : मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही वर्त्स्य स्थानीय सघोष कम्पित स्वनिम / र / समान है। अत: भाषायी बाधा उत्पन्न नहीं होती।

(8) पार्श्विक : मानक हिन्दी में केवल वर्त्स्य पार्श्विक उपलब्ध है जिस में प्राणत्व भेदक है जबकि बांगरू में वर्त्स्य तथा पश्च वर्त्स्य(प्रतिवेष्टित गुण सहित) दो उच्चारण स्थान सार्थक हैं और दोनों में प्राणत्व भेदक है। इस प्रकार मानक हिन्दी के दो पार्श्विक स्वनिमों के मुकाबले में बांगरू में चार पार्श्विक स्वनिम उपलब्ध हैं। बांगरू में / ल / : / ल़ / तथा / ल्ह / : / ल़्ह / का विरोध प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म उपलब्ध हैं, यथा :

/ ल /	: / ल़ /
/ लाली / 'लालिमा'	: / लाल़ी / 'मुर्छा'
/ बाला / 'गीला'	:/ बाल़ा / 'ताकू'
/ टाल् / 'घंटा'	: / टाल़् / 'टालना'
/ झाल्/ 'झाड़ी'	: / खाल़्/ 'पानी का नाला'
/ लाल्/ 'लाल रंग'	: / लाल़् / 'राल'
/ छाल् / 'वर्ण'	: / छाल़् / 'शाला, यथा घुड़साल'
/ गाल् / 'कपोल'	: / गाल़् / 'गली ; गाली'

/ ल्ह /	: / ल़्ह /
/ माल्ह / 'पहलवान'	: / माल़्ह / 'शहद का छता'

मानक हिन्दी में / ल़् /, / ल़्ह् / के अभाव के कारण उपर्युक्त विरोधों का भी अभाव है । मानक हिन्दी भाषी द्वारा बांगरू के / ल़् / तथा / ल़्ह् / के स्थान पर अपने निकटतम स्वनिम क्रमशः / ल् / तथा / ल्ह् / प्रतिस्थापित कर लिए जाते हैं ।

भाषायी बाधा :- बांगरू // ल़् → ल् // मानक हिन्दी
// ल़्ह् → ल्ह् //

(9) अर्द्धव्यंजन : मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अर्द्धव्यंजन स्वनिम समान हैं । दोनों में ही ये संघर्षहीन अप्रवाही घोष अल्पप्राण स्वनिम हैं । दोनों में ही दन्तोष्ठ्य एवं तालव्य दो उच्चारण स्थान सार्थक हैं । अतः स्वनिम स्तर पर कोई भाषायी बाधा उत्पन्न नहीं होती ।

1.2.3 अधिखंडात्मक स्वनिमों सम्बन्धी व्यतिरेक

(1) अनुनासिकता : मानक हिन्दी तथा बांगरू दोनों में स्वरों की अनुनासिकता सार्थक है । दोनों में ही निरनुनासिक स्वरों का सानुनासिक स्वरों से विरोध उपलब्ध है । स्वनिम स्तर पर कोई भाषायी बाधा नोटिस में नहीं आई ।

(2) संहिता : दोनों में ही संहिता के द्विविध विरोध, नामतः बाह्य संहिता (जो पदों को विलग करती है) एवं आन्तरिक संहिता(जो किसी पद में रूपिम सीमा पर आकर समीकरण की प्रवृत्ति पर रोक लगाती है), उपलब्ध हैं । स्वनिम स्तर पर कोई भाषायी बाधा उत्पन्न नहीं होती ।

(3) बलाघात: मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही यह अनुमेय है कि किसी पद के किस अक्षर पर बलाघात होगा । दोनों में ही इसकी सार्थकता वाक्य में किसी पद पर होने में है, यहां यह अनुमेय नहीं होता । बलाघात के कारण स्वनिम स्तर पर भाषायी बाधा उत्पन्न नहीं होती ।

(4) स्वराघात और अन्त्य परिरेखा : स्वराघात की दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में त्रिविध विरोध नामतः उच्च, मध्यम तथा निम्न उपलब्ध है । इसी प्रकार अन्त्य परिरेखा की दृष्टि से भी दोनों में त्रिविध विरोध नामतः आरोही, अवरोही तथा सम उपलब्ध है । मानक हिन्दी तथा बांगरू दोनों में ही स्वराघात और अन्त्य

28)

परिरेखा के संयोग से काकु पद्धति का निर्माण होता है और काकु द्वारा अनेक अर्थों की अभिव्यक्ति होती है ।[1] स्वनिम स्तर पर भाषायी बाधा उत्पन्न नहीं होती ।

1.3 स्वनिकीय व्यतिरेक

किसी भी भाषा की संरचना में उस की स्वनिम-व्यवस्था का महत्वपूर्ण स्थान होता है । कोई दो भाषाएं स्वनिमों की दृष्टि से समान होती हुई भी, उन की व्यवस्था में भेद रख सकती हैं जिसके कारण समानता रखने वाले स्वनिमों के संयुक्त होने पर उन में स्वनिकीय स्तर पर व्यतिरेक उत्पन्न हो जाता है ।

यहां हमारा उद्देश्य मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में पाए जाने वाले उन विभिन्न स्वनिकीय रूपों का विवेचन करना नहीं है जो दोनों में समान रूप से उपलब्ध हैं यथा " स्वरों की सामान्य विशेषता यह है कि न्यूनाधिक तुलनीय अवस्थाओं में वे अन्य स्थितियों की अपेक्षा अन्त्य स्थिति में कुछ ह्रस्वतर होते हैं "[2] उदाहरणतया मानक हिन्दी / काला / (बांगरू / काळा /) में अन्त्य / आ / पूर्ववर्ती / आ / की अपेक्षा ह्रस्वतर है ; या जैसे कोमल तालव्य व्यंजन के पूर्व प्रयुक्त अग्र स्वर कुछ पश्च कृत हो जाते हैं[3] ; या जैसे कोमल तालव्य व्यंजन अग्र तथा पश्च स्वरों के पूर्व क्रमश: कुछ अग्रीकृत तथा पश्चीकृत हो जाते हैं[4], इत्यादि । यहां हम स्वनिकीय आधार पर पाई जाने वाली उन विभिन्नताओं का उल्लेख करेंगे जो मानक हिन्दी और बांगरू में उपलब्ध हैं ।

1.3.1 बांगरू में स्वनिकीय स्वर-ह्रस्वता तथा व्यंजन-दीर्घता

(1) मानक हिन्दी में द्व्याक्षरिक शब्दों का अक्षरी ढांचा यदि ` (स) आसआ ` हो तो बांगरू के तदनुरूपी शब्दों में प्रथम स्वर का ह्रस्व उपस्वन प्रयुक्त होता

1- भिलाइर - शर्मा, मानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास ; 1968 ; पृष्ठ 45

2- मल्होत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970 ; पृष्ठ 30

3- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970, पृष्ठ 10

4- जगदेव सिंह ; यथोपरि ;पृष्ठ 5

है और स्वर मध्यग व्यंजन स्वनिमीय स्तर पर दीर्घता धारण कर लेता है। महाप्राण व्यंजन की दीर्घता की स्थिति में महाप्राण द्वित्व के स्थान पर महाप्राण के पूर्व अल्प-प्राण का आगम हो जाता है। महाप्राण व्यंजन की दीर्घता के सन्दर्भ में यह नियम मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में स्वनिकीय तथा स्वनिमीय दोनों प्रकार की व्यंजन-दीर्घता पर लागू होता है। मानक हिन्दी में उपर्युक्त वर्ग के शब्दों में न तो प्रथम दीर्घ स्वर की स्वनिमीय ह्रस्वता उपलब्ध होती है और न ही स्वर मध्यग व्यंजन की स्वनिमीय दीर्घता, उदाहरणतया :-

मानक हिन्दी		बांगरू	
/ आटा /	(आ-टा)	/आटा/	(आँट्-टा)
/ दादा /	(दा-दा)	/दादा/	(दाँद्-दा)
/ पीपा/	(पी-पा)	/पीपा/	(पीँप्-पा)
/ भूखा/	(भू -खा)	/भूखा /	(भूँख्- खा)
/ थैला/	(थै-ला)	/थैला/	(थैँल्-ला)
/ पैना/	(पै-ना)	/पैना/	(पैँन् -ना)
/ धोखा/	(धो-खा)	/धोखा/	(धोँख्-खा)

इस प्रकार बांगरू में स्वनिमीय दृष्टि से प्रथम अक्षर स्वरान्त के स्थान पर व्यंजनान्त हो जाता है। डा० नानकचन्द शर्मा[1] और डा० शिव कुमार खंडेलवाल[2] दोनों ही ऐसी स्थिति में स्वर मध्यग व्यंजन के दीर्घ रूप को द्वित्व व्यंजन के रूप में अंकित करते हैं परन्तु दूसरी ओर डा० जगदेव सिंह के विचारानुसार स्वनिमीय रूप से ऐसे दीर्घ व्यंजन अक्षर विभाजन में साधारण व्यंजन के समान व्यवहार करते हैं और स्वर मध्यग स्थिति में परवर्ती अक्षरशीर्ष के साथ जुड़ते हैं।[3]

(2) बांगरू में यदि उपर्युक्त परिस्थिति में स्वर मध्यग व्यंजन / ड़ ण् ड़् ल् य् र्, व् ह् / में से कोई एक हो तो फिर न पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर की स्वनिमीय स्तर पर

1- शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 1968, पृष्ठ 11,50

2- खंडेलवाल, शिवकुमार ; बांगरू-बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन,1980; पृष्ठ 37

3- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970, पृष्ठ 8

ह्रस्वता उपलब्ध होती है और न स्वर मध्यग व्यंजन की स्वनिकीय दीर्घता । दूसरे शब्दों में तब बांगरू और मानक हिन्दी में किसी प्रकार की स्वनिकीय विभिन्नता नहीं आती, उदाहरणतया :

बांगरू

/आढ़ू/ (आ-ढ़ू) `फल विशेष`
/माढ़ू/ (मा-ढ़ू) `व्यक्ति का नाम`
/आणा/ (आ-णा) `आना क्रिया`
/काणी/ (का-णी) `कहानी`
/आला/ (आ-ला) `आला, ताक`
/ताला/ (ता-ला) `ताला`
/मालुवाँ/ (मा-लुवाँ) `शब्द के अर्थ`
/आया/ (आ-या) `आया`
/माया/ (मा-या) `माया`
/सारा/ (सा-रा) `सारा`
/आशा/ (आ-शा) `आशा`

(3) मानक हिन्दी में द्व्याक्षरिक शब्दों का उच्चारण ढांचा यदि `(ख) आरम्भ` हो तो भी बांगरू के तदनुरूपी शब्दों में उपर्युक्तानुसार प्रथम अक्षर शीर्ष की स्वनिकीय ह्रस्वता और स्वर मध्यग व्यंजन की स्वनिकीय दीर्घता उपलब्ध होती है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसी प्रवृत्ति नहीं है, उदाहरणतया -

मानक हिन्दी		बांगरू	
/बादर्/	(बा-दर्)	/बादर्/	(बाँद्-दर्)
/कीकर्/	(की-कर्)	/कीकर्/	(कीँक्- कर्
/मुच्छ/	(मु-च्छ)	/मुच्छ/	(मुँच्-च्छ)
/बैहन्/	(बै-हन्)	/बैहन्/	(बैँह्-हन)
/चोक्ख/	(चो-क्ख)	/चोक्ख/	(चोँक्-क्ख)

यहां यह उल्लेखनीय है कि डा० जगदेव सिंह के मतानुसार बांगरू में व्यंजन की स्वनिकीय दीर्घता, जो अधिकांशतया द्व्याक्षरिक शब्दों में उपलब्ध होती है, दीर्घ स्वरों के

पश्चात् और दीर्घ स्वरों या / ब / के पूर्व की परिस्थिति में पाई जाती है।[1] इस सन्दर्भ में हम ने यह पाया है कि बांगरू में / ब / के पूर्व व्यंजन की स्वनिकीय दीर्घता केवल तब ही प्राप्त होती है जब /ब/ शीर्ष वाला अक्षर व्यंजनान्त हो। दूसरे शब्दों में अक्षर का गुरु होना आवश्यक है।

(4) बांगरू में उपर्युक्त परिस्थिति में यदि स्वर मध्यग एकल व्यंजन के स्थान पर व्यंजन तथा / य् / का गुच्छ हो तो भी उपर्युक्तानुसार पूर्ववर्ती दीर्घ स्वर की स्वनिकीय ह्रस्वता और / य् / पूर्व व्यंजन की स्वनिकीय दीर्घता उपलब्ध होती है,[2] उदाहरणतया -

/ गोडा/	(गोॅड्-डा)	/गोड्याँ/	(गोॅड्-ड्याँ)
/ मोटा/	(मोॅट्-टा)	/ मोट्याँ/	(मोॅट्-ट्याँ)

1.3.2 मानक हिन्दी में स्वनिकीय व्यंजन-दीर्घता :

(1) मानक हिन्दी में भी / य् / से पूर्व प्रयुक्त व्यंजन की स्वनिकीय दीर्घता उपलब्ध है परन्तु मानक हिन्दी और बांगरू की परिस्थितियों में बहुत अन्तर है। मानक हिन्दी में पाई जाने वाली ऐसी व्यंजन दीर्घता के सन्दर्भ में डा० सुरजभान सिंह लिखते हैं " यदि व्यंजन + य के गुच्छ (i) अन्त्य, एवं (ii) मध्य स्थिति में आएं तो सामान्यतया प्रथम व्यंजन का दीर्घीकरण या द्वित्व हो जाएगा - यह हिन्दी के उच्चारण की निजी विशेषता है। लिखित वर्ण प्रणाली में भले ही इस का संकेत न मिलता हो परन्तु तथाकथित परिनिष्ठित हिन्दी उच्चारण में इस स्थिति में व्यंजन का द्वित्व हो जाना प्राय: निश्चित सा है। ××× उदाहरण के लिये जब हम ' अन्य ' शब्द का उच्चारण करते हैं तो मात्रा की दृष्टि से ' न् ' का उच्चारण वही नहीं होता जो ' अन्त ' शब्द के ' न् ' का होता है। वस्तुत: ' अन्य ' शब्द के न् का उच्चारण लगभग वैसा ही होता है जैसा ' अन्न ' में न्न् ' का अर्थात्

' अन्न ' = अन्न्
' अन्य ' = अन्न्य
' अन्त ' = अन्त्

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 7

2- जगदेवसिंह : ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970, पृष्ठ 8

32)

इसी प्रकार जब ` उपन्यास ` शब्द में 'न्य' मध्य स्थिति में आता है तब भी ` न् ` का दीर्घीकरण या द्वित्व हो जाएगा जैसे 'उपन्न्यास'।[1]

(2) जैसे कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, (देखिए 1.3.1) जहाँ पर गुच्छ का प्रथम व्यंजन महाप्राण होगा वहाँ द्वित्व का प्रथम व्यंजन अल्पप्राण हो जाएगा,[2] उदाहरणार्थ -

/ सभ्यता/ (सब्भ्यता)

/ कथ्य / (कत्थ्य)

/ बाध्य / (बाद्ध्य)

(3) ऐसी व्यंजन-दीर्घता के लिये यह आवश्यक है कि व्यंजन तथा / य् / का गुच्छ स्वरोपरान्त स्थिति में हो, यदि ऐसे व्यंजन गुच्छ से पूर्व कोई व्यंजन हो तो / य् / से पूर्ववर्ती व्यंजन की दीर्घता उपलब्ध नहीं होती,[3] यथा

/ सन्ध्या/ = (सन्ध्या) ; न कि (सन्द्ध्या)

/ मत्स्य/ = (मत्स्य) ; न कि (मत्स्स्य)

(4) मानक हिन्दी में व्यंजन तथा / य् / के गुच्छ के स्थान पर यदि व्यंजन तथा अन्य अन्तस्थ / व् र् / का गुच्छ हो तो भी दीर्घता की यह प्रवृत्ति उपलब्ध होती है,[4] यथा-

/अद्वितीय/ = (अद्द्वितीय)

/ विद्वान् / = (विद्द्वान्)

/ शुक्र / = (शुक्क्र)

/ तीव्र / = (तीव्व्र)

/ पत्र / = (पत्त्र)

1- सूरजभानसिंह ; हिन्दी में व्यंजन+ य गुच्छ ; केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की त्रैमासिक पत्रिका ` भाषा ` का ` हिन्दी भाषाविज्ञान अंक `, 1973, पृष्ठ 44

2- सूरजभानसिंह ; यथोपरि, पृष्ठ 44-45

3- सूरजभानसिंह ; हिन्दी में व्यंजन + य गुच्छ : केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की त्रैमासिक पत्रिका ` भाषा ` का हिन्दी भाषाविज्ञान अंक; 1973; पृष्ठ 45

4- भाटिया, कैलाशचन्द्र; हिन्दी में अक्षर तथा शब्द की सीमा ; 2027 वि०, पृष्ठ 78

(5) यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि " व्यंजन तथा / य् / के ऐसे गुच्छों में, जिन के पूर्व रूपात्मक उपसर्ग लगे होते हैं, इस प्रकार की दीर्घता की प्रवृत्ति कभी-कभी नहीं दिखाई देती यथा ' सुज्योति ' "[1] परन्तु " ऐसे बहु प्रचलित शब्द जिनमें उपसर्ग शब्द के अभिन्न अंग के रूप में समाविष्ट हो गए हों, दीर्घीकरण की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देगी, जैसे ' अन्याय '; ' अभिज्ञान ' "[1]। हमारे विचार से व्यंजन गुच्छ से पूर्व आन्तरिक संहिता विद्यमान होने के कारण ही ' सुज्योति ' जैसे शब्दों में / य् / पूर्व व्यंजन के दीर्घीकरण का अभाव है। ऐसी स्थिति में व्यंजन-गुच्छ का व्यवहार [illegible]-व्यंजन-गुच्छ के समान हो जाता है।

(6) मानक हिन्दी में व्यंजनों की ऐसी दीर्घता के लिए यह आवश्यक है कि / य् र् व् / से पूर्व आने वाला व्यंजन / य् र् व् / में से किसी एक के साथ व्यंजन गुच्छ का निर्माण करता हो न कि व्यंजन अनुक्रम का। स्वर मध्यग व्यंजन अनुक्रम के सदस्य विभाजित होकर अपने पूर्ववर्ती तथा उत्तरवर्ती स्वर के साथ अक्षर बनाते हैं। उस दशा में व्यंजन दीर्घता उपलब्ध नहीं होती, यथा -

/ विद्रण/ = (विद्-रण) ; न कि (विद्-द्रण)
/ विद्या/ = (विद्-या) ; न कि (विद्-द्या)

(7) मानक हिन्दी में पाई जाने वाली इस व्यंजन-दीर्घता को अनुमेय होने के कारण प्रस्तुत विश्लेषण में स्वनिकीय कहा गया है। डा० कैलाशचन्द्र भाटिया भी ऐसी व्यंजन-दीर्घता को स्वनिकीय मानते हुए लिखते हैं - " अद्वितीय ' के उच्चारण के सम्बन्ध में स्पष्ट किया गया है कि एक व्यंजन अपने उसी रूप में ध्वन्यात्मक स्तर पर दो बार रहता है जबकि ध्वनिग्रामीय रूप में हम सुविधानुसार उसको एक बार ही लिखते हैं "[2]। डा० महावीर सरन जैन भी ऐसी व्यंजन-दीर्घता को स्वनिमीय लेखन में स्थान नहीं देते।[3] दूसरी

1- सुखमान सिंह ; हिन्दी में व्यंजन + य गुच्छ ; केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की त्रैमासिक पत्रिका ' भाषा ' का हिन्दी भाषा विज्ञान अंक, 1973 ; पृष्ठ 46

2- भाटिया, कैलाशचन्द्र ; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा ; 2027 वि०, पृष्ठ 78

3- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन ; 1974 पृष्ठ 154-55 पर दिये गये उदाहरण / सात्त्विक /, / उद्धार /, / प्रच्छन्न /, / अन्याय /, /अच्युत / आदि।

और डा० रमेशचन्द्र मेहरोत्रा ऐसी व्यंजन-दीर्घता को स्वनिमीय मानते हुए स्वनिमीय लेखन में व्यंजन द्वित्व के रूप में अंकित करते हैं।[1]

(8) मानक हिन्दी में चूंकि / म् न् ल् / में से कोई भी स्वनिम किसी अन्तस्थ स्वनिम के पूर्व आकर व्यंजन-गुच्छ नहीं बनाता, इसलिए मानक हिन्दी में इन की स्वनिमीय दीर्घता का अभाव है। जबकि बांगरू में इनकी स्वनिमीय दीर्घता पाई जाती है क्योंकि ये स्वनिमीय दीर्घता वाली परिस्थितियों में उपलब्ध होते हैं, यथा -

बांगरू

/बाम्हण/	(बाम्म्हण)	
/बान्हाँ/	(बान्न्हाँ)	`खेत में हल के निशान ब.व.`
/चुल्हा/	(चुल्ल्हा)	

(9) मानक हिन्दी और बांगरू में पाई जाने वाली स्वनिमीय व्यंजन दीर्घता में मुख्य विभिन्नताएं निम्नलिखित अनुसार हैं -

(i) बांगरू में ऐसी दीर्घता दीर्घ स्वर के उपरान्त भी उपलब्ध होती है जब कि मानक हिन्दी में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं है यथा मानक हिन्दी / कुल्ह् / / उपकृता / आदि में।

(ii) मानक हिन्दी में ऐसी दीर्घता के लिए यह अनिवार्य है कि परवर्ती व्यंजन / य् र् व् / में से कोई एक हो जबकि बांगरू में ऐसी कोई अनिवार्यता नहीं है बल्कि बांगरू में परवर्ती व्यंजन / र् व् / होने की स्थिति में ऐसी दीर्घता उपलब्ध ही नहीं होती। हाँ, ऐसी व्यंजन दीर्घता के परवर्ती / ह् / हो सकता है, यथा बांगरू / गोड्हा / `घुटना`, / गोड्हाँ / `घुटनों` में।

1.3.3 / ऐ औ / के संध्यक्षर उपस्वन :

मानक हिन्दी में तद्भव शब्दों और संस्कृत के प्रचलित शब्दों में / ऐ / तथा / औ / का उच्चारण मूल स्वर के रूप में ही होता है परन्तु जब / य् / तथा / व् / के पूर्व क्रमशः / ऐ / तथा / औ / का प्रयोग होता है तब ये संध्यक्षर का रूप धारण

1- मेहरोत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970 ; पृष्ठ 201-14, 222-26

कर लेते हैं और क्रमशः (अ͜इ) तथा (अ͜उ) के रूप में उच्चरित होते हैं, यथा क्रमशः / भैया / तथा / कौवा / में[1]। डा० कैलाश चन्द्र[2] भाटिया भी ऐसी परिस्थिति में / ऐ / तथा / औ / को स्वन्यात्मक रूप में क्रमशः (अ͜इ) तथा (अ͜उ) बताते हुए इन स्वन्यात्मक रूपों में `इ` तथा `उ` को अनाक्षरिक मानते हैं। बांगरू के स्वरों में संध्यक्षर तत्व का अभाव होने के कारण[3] मानक हिन्दी के संध्यक्षर उपस्वनों के स्थान पर स्वरक्रमों / अ इ / तथा / अ उ / का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार मानक हिन्दी का ऐसा द्व्यक्षर शब्द बांगरू में त्र्यक्षर शब्द बन जाता है, यथा-

	मानक हिन्दी		बांगरू	
`भैया`	(भइ͜ - आ)	`य्` श्रुति	(भ-इ-आ)	`इ-आ` के मध्य `य्` श्रुति
`कौवा`	(कउ͜-आ)	`व्` श्रुति	(क-उ-आ)	`उ-आ` के मध्य `व्` श्रुति

मानक हिन्दी में संस्कृत के आगत शब्दों के विद्वतापूर्ण उच्चारण में भी / ऐ / तथा / औ / का उच्चारण संध्यक्षर के रूप में होता है।[4] बांगरू भाषी के लिए इस कारण उत्पन्न हुई भाषायी बाधा का उल्लेख करते हुए डा० जगदेव सिंह[5] लिखते हैं "हरियाणवी भाषी को ये ध्वनियाँ नए सिरे से सीखनी पड़ेंगी। यदि परिश्रम पूर्वक इन के उच्चारण को सीख न लिया गया तो सम्भावना यही है कि हरियाणवी भाषी इनके स्थान पर मूल स्वरों का ही उच्चारण करेगा"।

इस प्रकार मानक हिन्दी संध्यक्षरों के स्थान पर बांगरू में या तो स्वर अनुक्रमों का प्रयोग होता है या फिर मूल स्वरों का।

1- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ; पृष्ठ 5

2- भाटिया, कैलाशचन्द्र ; हिन्दी में अक्षर तथा शब्द की सीमा ; 2027 वि० ; पृष्ठ 70

3- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 10

4- शर्मा, आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी; 1975 ; पृष्ठ 5

5- जगदेवसिंह ; हिन्दी और हरियाणवी- भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में : कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की पत्रिका `जर्नल आव हरियाणा स्टडीज` 1974; पृष्ठ 59

1.3.4 /म् व्/ के उपस्वन :

(1) मानक हिन्दी में /म्/ के दो उपस्वन हैं। प्रमुख उपस्वन द्व्योष्ठ्य (म्) है और अन्य उपस्वन दन्तोष्ठ्य (ʼम्) है जिसका प्रयोग /व्/ से पूर्व उच्चरित / जैसे शब्दों में होता है।[1] बांगरू में /म्/ और /व्/ के ऐसे संयोग का अभाव है, अतः केवल एक ही उपस्वन द्व्योष्ठ्य (म्) उपलब्ध है। बांगरू भाषी को मानक हिन्दी उपस्वन (ʼम्) सीखने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है।

(2) बांगरू में /स्/ का एक ही उपस्वन (स्) है जबकि मानक हिन्दी में इसका प्रमुख उपस्वन तो (स्) ही है परन्तु शब्द के आदि में जब /स्/ के पश्चात् कोई स्पर्श या नासिक्य व्यंजन होता है तब एक अन्य उपस्वन (ⁱस्) का प्रयोग उपलब्ध होता है।[2] बांगरू भाषी अपनी स्वर भक्ति की प्रवृत्ति के कारण ऐसे आदि-व्यंजन- गुच्छ को खंडित कर लेता है तथा (स्) उपस्वन का ही प्रयोग करता है, यथा

मानक हिन्दी		बांगरू	
/स्कूल/	(ⁱस्कूल)	/सकूल/	(सकूल)
/स्थान्/	(ⁱस्थान्)	/सथान्/	(सथान्)
/स्नान्/	(ⁱस्नान्)	/सनान्/	(सनान्)

मानक हिन्दी में "कुछ भाषी ऐसी स्थिति में भी (स्) ही प्रयुक्त करते हैं और उनका उच्चारण 'शुद्ध' कहा जाता है।"[3]

1.3.5 स्वनिकीय अनुनासिकता

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में नासिक्य व्यंजनों के सामीप्य के कारण स्वनिकीय अनुनासिकता भी उपलब्ध होती है। नासिक्य व्यंजनों के सामीप्य वाले स्वरों

1- मल्होत्रा, रमेश चन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970;पृष्ठ 100-101

2- मल्होत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी तथा ध्वनिमी ; 1970,पृष्ठ 111

3- मल्होत्रा, रमेशचन्द्र ; यथोपरि ; पृष्ठ 111

में पाई जाने वाली सार्थक अनुनासिकता उच्च होती है।[1] मानक हिन्दी और बांगरू में स्वनिकीय अनुनासिकता की दृष्टि से एक विभिन्नता भी पाई जाती है। मानक हिन्दी में सार्थक अनुनासिकता वाले किसी स्वर से पूर्व स्वनिकीय दृष्टि से जो निरनुनासिक स्वर आता है, वह स्वनिकीय दृष्टि से भी निरनुनासिक ही रहता है[2], जबकि बांगरू में ऐसा पूर्ववर्ती स्वर स्वनिकीय दृष्टि से अनुनासिक हो जाता है,[3] यथा-

मानकहिन्दी		बांगरू	
/हाऊँ/	(हाऊँ)	/हाऊँ/	(हाँऊँ)

1.4. वितरण

1.4.1 स्वरों का वितरण

(1) अन्त्य स्थिति में ह्रस्व स्वर: मानक हिन्दी में सभी स्वरों का प्रयोग शब्द की आदि, मध्य तथा अन्त्य स्थिति में उपलब्ध है,[4] जबकि बांगरू में शब्द की आदि और मध्य स्थिति में तो सभी स्वरों का प्रयोग उपलब्ध है परन्तु शब्द की अन्त्य स्थिति में ह्रस्व स्वरों नामत: / अ इ उ / का प्रयोग उपलब्ध नहीं होता।[5]

(2) अन्त्य / अ / : मानक हिन्दी में / न / `नहीं`, / व / `और` जैसे एकाक्षरी अकारान्त शब्दों में तो अन्त्य / अ / की विद्यमानता निर्विवाद है परन्तु अन्य परिस्थितियों में अन्त्य/अ/ के बारे में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद रहा है। कुछ विद्वान[6] मानक हिन्दी में अन्त्य / अ / के लोप की प्रवृत्ति का जोरदार खंडन करते हैं

1- (i) मल्होत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970; पृष्ठ 54
(ii) जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 12

2- मल्होत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970 ; पृष्ठ 19

3- (i) जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 12
(ii) मिलाइन-शर्मा, डी0डी0; फिलोजिक स्ट्रक्चर आव हिन्दी एंड पंजाबी, 1971 अंक 2.6.6.3 ; पृष्ठ 32

4- मल्होत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970 ; पृष्ठ 3-6, [illegible]6, 28

5- (i) जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 20
(ii) शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास; 196, पृ05

6- (i) वाजपेयी, किशोरीदास ; हिन्दी शब्दानुशासन; 2014 वि0; पृ0 593-5
(ii) चौधरी, अनन्त ; नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी ; 1973 ; पृष्ठ 175-

तो अन्य कुछ विद्वान[1] एकल व्यंजन के बाद अन्त्य / अ / का अभाव मानते हैं यथा 'रात' → / रात् / ; 'काम' → / काम् / परन्तु संयुक्त व्यंजन के बाद अन्त्य / अ / की विद्यमानता स्वीकार करते हैं यथा 'धर्म' → / धर्म / ; 'प्रारम्भ' → /प्रारम्भ् / । डा० कैलाश चन्द्र भाटिया[2] समस्थानीय व्यंजन गुच्छ के पश्चात् अन्त्य / अ / की विद्यमानता नहीं मानते यथा / अड्ड् / , / लम्ब् / में, परन्तु उनके अनुसार भिन्न स्थानीय व्यंजन गुच्छ के पश्चात् धीमी गति वाले उच्चारण में तो अन्त्य / अ / सुनाई पड़ता है अन्यथा अन्त्य / अ / का अस्तित्व नहीं । डा० रमेश चन्द्र महरोत्रा[3] के मतानुसार अन्तिम व्यंजन-गुच्छ के बाद लगभग सदा ही हिन्दी में एक अत्यन्त ह्रस्व स्वर श्रुति सुनाई देती है जिसे वे स्वनिम / अ / मानने के पक्ष में नहीं है । हम भी इस स्वर श्रुति को / अ / मानने के पक्ष में नहीं क्योंकि यह बहुत ही कम मुखर स्वर श्रुति है जिसे अक्षर शीर्ष मानना उचित नहीं । यह सदा अनुमेय है, दूसरे शब्दों में इसका अपनी अनुपस्थिति से विरोध नहीं मिलता ।

बांगरू में अन्त्य स्थिति में / अ / के अभाव के कारण मानक हिन्दी के अकारान्त शब्दों का उच्चारण जब किसी बांगरू भाषी द्वारा किया जाता है तब भाषायी बाधा उपस्थित हो जाती है । बांगरू की आम प्रवृत्ति के अनुसार मानक हिन्दी के अकारान्त को ऐकारान्त में बदल दिया जाता है । यह प्रवृत्ति देवनागरी लिपि के वर्णों के नामों में विशेष रूप से लक्षित होती है । बांगरू भाषी स्कूली बच्चों द्वारा / क ख ग घ / के स्थान पर / कै खै गै घै / उच्चारण किया जाता है ।

(3) अन्त्य / इ उ / : मानक हिन्दी में शब्दान्त में / इ उ / प्राय: संस्कृत से गृहीत शब्दों के तत्सम उच्चारण में[4] पाए जाते हैं । हिन्दी की अपनी प्रवृत्ति

1- (i) कैलाग, एस० एच०, ग्रामर आव दि हिन्दी लैंग्वेज; प्रथम भारतीय संस्करण-1972; पृष्ठ 10
(ii) गुरु, कामता प्रसाद; हिन्दी व्याकरण; 2017 वि०, पृष्ठ 36
(iii) शर्मा, आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975; पृष्ठ 2[illegible]
(iv) जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन; 1974, पृष्ठ 20-22

2- भाटिया, कैलाश चन्द्र; हिन्दी में अक्षर तथा शब्द की सीमा; 2027वि०;पृ० [illegible]6-29

3- महरोत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970; पृष्ठ 42

4- हिन्दी में आम बोलचाल में अन्त्य / इ उ / के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति है। देखिए- भाटिया, कैलाश चन्द्र; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा ; 2027 वि० पृष्ठ 26

39)

शब्दान्त में / इ उ / का प्रयोग करने की नहीं है। इसी लिए मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों में इकारान्त एवं उकारान्त शब्दों का अभाव है। मानक हिन्दी में पाए जाने वाले किसी अन्त्य स्वर अनुक्रम के अन्तिम सदस्य के रूप में भी / इ उ / प्रयुक्त नहीं होते। संस्कृत से गृहीत शब्दों के कारण मानक हिन्दी में अन्त्य स्थिति में भी / इ / : / ई / तथा / उ / : / ऊ / का विरोध मिलता है बांगरू में जिसका अभाव है। मानक हिन्दी में ऐसे विरोध को स्पष्ट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्मों के उदाहरण हैं -

/ - इ / : / - ई /

/जाति/ ` ब्राह्मण, वैश्य आदि ` : /जाती/ ` जाना क्रिया का रूप `

/ कि / ` योजक ` : /की / ` करना क्रिया का रूप `

/ कटि / ` कमर ` : /कटी/ ` कटना क्रिया का रूप `

/-उ/ : /-ऊ/

/दारु / ` देवदारु ` : / दारू / ` दवा, शराब `

मानक हिन्दी में अन्त्य / इ उ / का शून्य से विरोध प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म भी उपलब्ध हैं जिन का बांगरू में अभाव है -

/-इ / : ∅

/ कटि / ` कमर ` : /कट् / ` कटना क्रिया का धातु रूप `

/-उ / : ∅

/आयु / ` उम्र ` : / आय् / ` आमदनी `

बांगरू में सामान्य प्रवृत्ति है कि मानक हिन्दी के ऐसे इकारान्त तथा उकारान्त शब्दों को या तो क्रमशः ईकारान्त तथा ऊकारान्त बना दिया जाता है या फिर इन्हें अकारान्त कर दिया जाता है, यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू
/-इ/	/ - ई /
/ मुनि /	/ मुनी/
/ रिषि/	/ रिषी/
/ बुद्धि /	/ बुद्धी /
/ बलि /	/ बली /

40)

/-उ/	/-ऊ/
/धातु/	/धातू/
/प्रभु/	/प्रभू/
/-इ/	ø
/अति/	/अत्/
/मति/	/मत्/
/जाति/	/जात्/
/-उ/	ø
/वस्तु/	/वस्त्/
/धातु/	/धात्/

(4) अन्त्य /ऐ/ : मानक हिन्दी में /ऐ/ का प्रयोग अन्त्य स्थिति में केवल कुछ एकाक्षरी शब्दों में ही पाया जाता है यथा /है/, /कै/। मानक हिन्दी में किसी बहु अक्षरी शब्द के अन्त में /ऐ/ उपलब्ध नहीं होता।[1] जबकि बांगरू में ऐसी कोई पाबन्दी नहीं है। बांगरू में एकाक्षरी और बहु अक्षरी सब प्रकार के शब्दों में अन्त्य स्थिति में/ऐ/ पाया जाता है यथा /है/, /करै/ तथा /कमावै/। अतः बांगरू के ऐकारान्त बहु अक्षरी शब्दों का उच्चारण जब मानक हिन्दी-भाषी द्वारा किया जाता है तब वह उन्हें ऐकारान्त के स्थान पर एकारान्त बना लेता है, यथा-

बांगरू	मानक हिन्दी
/करै/	/करे/
/कमावै/	/कमाए/ (कमाएँ)

बांगरू में बहुअक्षरी शब्द के अन्त्य /ए/ और /ऐ/ में विरोध प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म भी उपलब्ध हैं, यथा -

/करे/ 'करना क्रिया का पूर्ण कृदन्त बहुवचन'

/करै/ 'करना क्रिया का एक रूप, जैसे - के करै है'

1- चौधरी, अनन्त ; नागरी लिपि और हिन्दी- वर्तनी ; 1973 ; पृष्ठ 183

1.4.2 व्यंजनों का वितरण

(1) स्पर्श: मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में पाए जाने वाले सभी स्पर्श व्यंजन ध्वनिम शब्द के आदि, मध्य और अन्त में प्रयुक्त होते हैं। मानक हिन्दी में बांगरू के मुकाबले में पाया जाने वाला गौण व्यवस्था का अतिरिक्त स्पर्श ध्वनिम /क़/ भी शब्द की आदि, मध्य और अन्त्य तीनों स्थितियों में प्रयुक्त होता है, यथा /क़दम/, /हुक़्क़ा/ /वफ़ा/ /हक़/ ।

(2) संघर्षी: मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में उपलब्ध संघर्षी व्यंजन शब्द की तीनों स्थितियों नामतः आदि, मध्य और अन्त्य में पाए जाते हैं। बांगरू में केवल दो संघर्षी व्यंजन /स ह/ हैं, जबकि मानक हिन्दी में इन के अतिरिक्त मूल व्यवस्था का संघर्षी व्यंजन /श/ और गौण व्यवस्था के /ख़ ग़ ज़ फ़/ भी पाए जाते हैं। मानक हिन्दी में उपलब्ध ये सभी अतिरिक्त संघर्षी भी शब्द की तीनों स्थितियों में उपलब्ध होते हैं, यथा

/श/	/शाह/	/नशा/	/पाश/
/ख़/	/ख़ैर/	/नाख़ून/	/रुख़/
/ग़/	/ग़म/	/बाग़ी/	/बाग़/
/ज़/	/ज़ीना/	/सज़ा/	/राज़/
/फ़/	/फ़न/	/सफ़र/	/साफ़/

(3) उत्क्षिप्त: मानक हिन्दी के व्यंजन ध्वनिमों के उल्लेख में पहले यह चर्चा की गई है कि विद्वानों ने /ड़/ : /ढ़/ का विरोध दिखाने के लिए न्यूनतम भेदक युग्म भी दिए हैं (देखिए 1.1.1(क)2, टिप्पणी 2) । परन्तु यहां हम यह उल्लेख करना चाहेंगे कि डा० देवी शंकर द्विवेदी[1] द्वारा जो न्यूनतम भेदक युग्म दिए गए हैं, उन पर स्थानीय प्रभाव है, उन्हें मानक हिन्दी युग्म के रूप में गृहीत करने में कुछ संकोच होता है, उदाहरणतया -

मेंढा - एक पशु विशेष

मेंढ़ा - पालतू पशुओं के गले में बांधा जाने वाला गंडा

1- द्विवेदी, देवी शंकर ; भाषा और भाषिकी : 1964 ; पृष्ठ 57

लौंडा - लड़का
लौंड़ा - लिंग
लौंडिया - लड़की
लौंड़िया - दासी

डा० महावीर सरन जैन[1] ने / ड / तथा / ड़ / का विरोध दिखाने के लिए जो न्यूनतम भेदक युग्म दिये हैं, उनके बारे में स्वयं लिखा है " अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्दों के आधार पर / ड / एवं / ड़ / के कुछ स्वल्पान्तर युग्म इस प्रकार प्रस्तुत किए जा सकते हैं :

/ मौड /
/ मौड़/

संस्कृत में प्रयुक्त शब्दों को भी यदि हम सम्मिलित कर लें तो भी / ड / एवं / ड़ / के स्वल्पान्तर युग्म उपलब्ध हो जाते हैं, यथा :-

/षडा/ = छै पांव
/खड़ा/ = खड़ा हुआ "

वास्तव में मानक हिन्दी में / ड़ / तथा / ढ़ / का प्रयोग तद्भव शब्दों में ही होता है। डा० आर्येन्द्र शर्मा[2] के कथन अनुसार ये शुद्ध हिन्दी ध्वनियां हैं जिनका प्रयोग संस्कृत, फारसी, अरबी या अंग्रेज़ी से ग्रहण किए गए तत्सम शब्दों में नहीं होता। डा० धीरेन्द्र वर्मा[3] ने भी इन्हें हिन्दी में नई विकसित ध्वनियां बताया है।

मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों में / ड / तथा / ड़ / पूरक वितरण में हैं। दूसरी ओर बांगरू में / ड / : / ड़ / का विरोध प्रकट करने के लिए न केवल व्यतिरेकी वितरण उपलब्ध है बल्कि अनेक न्यूनतम भेदक युग्म भी उपलब्ध हैं[4] यथा / बाडा / ` ढेड ` : / बाड़ा / ` घास `। मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों में /ड/ : /ड़ / के व्यतिरेक के अभाव और बांगरू में इसके उपलब्ध होने के कारण भाषान्तरी बाधा उत्पन्न हो जाती है।

1- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन ; 1974; पृष्ठ 66
2- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी; 1975 ; पृष्ठ 10
3- वर्मा, धीरेन्द्र : हिन्दी भाषा का इतिहास ; 1949 ; पृष्ठ 98
4- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू, 1970 :, पृष्ठ 15

मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों में स्वर मध्यग स्थिति में / ड / का अभाव और / ड़/ का प्रयोग पाया जाता है जबकि बांगरू में ऐसी स्थिति में / ड / एवं / ड़ / का व्यतिरेकी वितरण उपलब्ध है। बांगरू में ऐसी स्थिति में /ड़/ के प्रयोग के उदाहरण हैं - / पेड़ा / , / घड़ा /, / पड़ी / , / बाड़ /,/बड़ा/, / घोड़ा / , / माड़ा / आदि। बांगरू में ऐसी स्थिति में / ड / के प्रयोग के उदाहरण प्रस्तुत हैं -

मानक हिन्दी	बांगरू
/गाड़ी/	/ गाडी/ (गाड्डी)
/जाड़ा/	/ जाडा/ (जाँड्डा)
/ एड़ी/	/ एडी / (एँड्डी)
/ छुड़ाना/	/ छुडाना/
/ गड़ाना/	/ गडाना/

भाषायी बाधा: स्वर मध्यग स्थिति में

मानक हिन्दी // /- ड़- / /-ड़-/ तथा / -ड-/ // बांगरू

इसी प्रकार मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों में स्वरोपरान्तीय अन्त्य स्थिति में केवल / ड़ / मिलता है जबकि बांगरू में /ड / तथा /ड़ / का व्यतिरेक उपलब्ध है। बांगरू में ऐसी स्थिति में / ड़ / के प्रयोग के उदाहरण हैं-/ घड़ / , / लड़ / , / कोड़ / आदि। बांगरू में ऐसी स्थिति में / ड / भी उपलब्ध है, यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू
/छोड़/	/छोड /
/उड़/	/उड /
/रड़/	/रड /
/गाड़/	/गाड /

भाषायी बाधा- स्वरोपरान्तीय अन्त्य स्थिति में

मानक हिन्दी // /-ड़ / → /-ड़ / तथा /-ड / // बांगरू

मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों के मध्य के व्यंजन अनुक्रम में यदि दूसरा व्यंजन /ह / तथा / र / से भिन्न है तो पहले व्यंजन के स्थान पर /ड / नहीं आ सकता केव।

44)

/ड़ / भी आ सकता है जबकि बांगरू में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। बांगरू में उक्त स्थिति में / ड़ / के प्रयोग के उदाहरण हैं-/ लड़का /, / मड़का / आदि।

बांगरू में ऐसी स्थिति में / ढ़ / भी उपलब्ध है, यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू
/छोड़ना/	/ छोड़णा/
/उड़ना/	/उड़णा/
/गड़ना/	/गड़णा/

भाषायी बाधा: मध्यवर्ती व्यंजन अनुक्रम के प्रथम सदस्य के रूप में जबकि द्वितीय सदस्य / ड / तथा /ढ / से भिन्न हो -

मानक हिन्दी // /-ड़-/ $\longrightarrow$ /-ड़-/ तथा /-ढ़-/ // बांगरू

मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों में मध्यवर्ती व्यंजन अनुक्रम में दूसरे सदस्य के रूप में / ड / का अभाव और / ड़/ की विद्यमानता पाई जाती है। बांगरू में भी ऐसा ही पाया गया है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/लकड़ी/	/ लाकड़ी/
/ककड़ी/	/ काकड़ी/
/मकड़ी/	/ मकड़ी/
/बछड़ी/	/ बाछड़ी/
-	/करड़ा/
-	/ घरड़ू /

यहाँ यह भी उल्लेख किया जाना उचित होगा कि मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों में जिन परिस्थितियों में /ड़ / उपलब्ध न हो कर /ड / ही उपलब्ध होता है उन सभी परिस्थितियों में बांगरू में भी केवल /ड / ही उपलब्ध होता है। ये परिस्थितियाँ हैं - शब्द के आदि में यथा दोनों में /डर् / ; शब्द के मध्य में आन्तरिक संधि के पश्चात् यथा मानक हिन्दी / निडर् / तथा बांगरू / नीडर् / ; शब्द के मध्य में द्वित्व व्यंजन के रूप में यथा मानक हिन्दी / लड्डू / तथा बांगरू / लाड्डू / ; शब्द के मध्य में

/ ण् / के पश्चात् या / ड् / के पूर्व यथा दोनों में / डण्डा / तथा / बुड्ढा /, शब्दान्त में / ण् / के पश्चात् यथा मानक हिन्दी / दण्ड / तथा बांगरू / डण्ड /।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में प्रयुक्त अंग्रेज़ी के आगत शब्दों में / ड / एवं / ड़ / के पूरक वितरण की बात लागू नहीं होती। अंग्रेज़ी के आगत शब्दों में स्वर मध्यग स्थिति में, स्वरोपरान्त अन्त्य स्थिति में एवं स्वर मध्यग व्यंजन गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में भी सदा / ड / ही प्रयुक्त होता है यथा / रेडियो /, / रोड /, / हाड्डा /।

मानक हिन्दी में जैसा वितरण / ड़ / का है लगभग वैसा ही वितरण / ढ़ / का है। / ढ़ / शब्दादि में या शब्द के मध्य में आन्तरिक संधिता के पश्चात् नहीं आता। ऐसी परिस्थिति में / ढ / का ही प्रयोग होता है यथा / ढब / तथा / बेढब /। स्वर मध्यग स्थिति में तथा स्वरोपरान्तीय अन्त्य स्थिति में / ढ़ / उपलब्ध होता है यथा / बढ़ो / तथा / बाढ़ /। / ड़ / तथा / ढ़ / के वितरण में एक अन्तर अवश्य है। एक ओर जहाँ / ड़ / का प्रयोग मध्यवर्ती व्यंजन अनुक्रम के प्रथम सदस्य के रूप में भी हो सकता है और द्वितीय सदस्य के रूप में भी यथा क्रमशः / लड़्की / तथा / लक्ड़ी / तो दूसरी ओर / ढ़ / मध्यवर्ती व्यंजन अनुक्रम के प्रथम सदस्य के रूप में तो उपलब्ध होता है यथा / ओढ़्नी / परन्तु मध्यवर्ती व्यंजन अनुक्रम के दूसरे सदस्य के रूप में / ढ़ / अनुपलब्ध है।

बांगरू में / ढ़ / का सर्वथा अभाव है। मानक हिन्दी के / ढ़ / के लिए बांगरू में सर्वदा / ढ / का प्रयोग होता है। अतः बांगरू भाषी को मानक हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करते समय मानक हिन्दी में उपलब्ध / ढ / तथा / ढ़ / के वितरण को ध्यान में रखते हुए / ढ़ / की परिस्थितियों में अपने / ढ / के स्थान पर मानक हिन्दी / ढ़ / सीखना होगा।

भाषायी बाधा :-

मानक हिन्दी // / ढ / तथा / ढ़ / → / ढ / // बांगरू

(4) नासिक्य: मानक हिन्दी में चार अल्पप्राण और दो महाप्राण नासिक्य व्यंजन नामतः / ङ् ण् न् म् न्ह् म्ह् / हैं जबकि बांगरू में तीन अल्पप्राण और उन तीनों के महाप्राण नासिक्य नामतः / न् ण् म् न्ह् म्ह् ण्ह् / हैं।

46) / ङ / :- जैसे कि पहले स्पष्ट किया जा चुका है (देखिए अंक 1. 2. 2(6)) बांगरू तथा मानक हिन्दी दोनों में (ङ) स्वन है। मानक हिन्दी में यह / न / के व्यतिरेकी वितरण में होने के कारण स्वतंत्र स्वनिम है जबकि बांगरू में यह / न / के पूरक वितरण में होने के कारण / न / का उपस्वन है। बांगरू में (ङ) का प्रयोग केवल कोमल तालव्य व्यंजनों के पूर्व और सदा ही स्वरोपरान्तीय स्थिति में होता है। बांगरू में ऐसी स्थिति में / न / का प्रयोग नहीं होता। मानक हिन्दी में / ङ / का प्रयोग स्वरोपरान्तीय स्थिति में कोमल तालव्य व्यंजनों और / क् ख् ग् घ् / से पूर्व वाली स्थिति में होता है।

दोनों में ही ' ङ ' का प्रयोग शब्दादि तथा अक्षरादि में नहीं होता। दोनों में ही यह सदा अक्षरांत स्थिति में आता है। स्वर मध्यग स्थिति में इसका प्रयोग नहीं होता।

/ न / तथा / म / :- मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में / न / तथा / म / का प्रयोग समान रूप से शब्द के आदि, मध्य और अन्त में पाया जाता है।

/ ण / :- शब्दादि में / ण / का प्रयोग मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में उपलब्ध नहीं होता। शब्द के मध्य और अन्त में / ण / का प्रयोग दोनों में उपलब्ध होता है। दोनों में / ण / का प्रयोग अक्षरादि में भी उपलब्ध होता है जहां ' ङ ' का प्रयोग नहीं होता।

मानक हिन्दी की अपेक्षा बांगरू में शब्द की मध्य तथा अन्त्य स्थिति में / ण / का बहुत प्रयोग मिलता है। बांगरू में मध्य तथा अन्त्य स्थिति में / न / : / ण / का विरोध प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म भी उपलब्ध है, यथा / आना / 'रुपये का सोलहवां भाग' : / आणा / 'आना क्रिया'; / कान् / 'शरीर का अंग विशेष' : / काण् / 'तिरछापन'; / मन् / 'मन लगाना' : / मण् / 'चालीस सेर का माप'।

मानक हिन्दी में / ण / का प्रयोग केवल संस्कृत के आगत शब्दों में होता है। अतः मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों में / ण / का प्रयोग उपलब्ध न हो कर केवल / न / का

1- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी; 1975 ; पृष्ठ 8

47)

प्रयोग पाया जाता है जबकि बांगरू के तद्नुरूपी शब्दों में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं है। मानक हिन्दी तद्भव शब्दों के समान कुछ बांगरू शब्दों में तो शब्द के मध्य तथा अन्त में / न् / का प्रयोग उपलब्ध है यथा / किनारा /, / आना / `रुपये का सोलहवां भाग`, / मन् / `यथा तन मन धन`, / तन् //धन् /, / पान् /, / धान् / आदि परन्तु अनेक बांगरू शब्दों में मानक हिन्दी / न् / के स्थान पर / ण् / का प्रयोग उपलब्ध होता है, यथा -

हिन्दी	बांगरू
/मन् / `चालीस सेर`	/मण् /
/धन्/	/धण् /
/बन्/	/बण् /
/पट्सन् /	/पट्सण /
/पानी/	/पाणी/
/काना/	/ काणा /
/गाना/	/गाणा/
/होना/	/होणा/
/पीना/	/पीणा/

/ ण्ह् /:- बांगरू में प्रतिवेष्ठित महाप्राण नासिक्य / ण्ह् / स्वनिम उपलब्ध है, जबकि मानक हिन्दी में इस स्वनिम का अभाव है। बांगरू में भी इस स्वनिम के बारे में यह प्रश्न हो सकता है कि इसे पहले से उपलब्ध / ण् / तथा / ह् / का व्यंजन अनुक्रम क्यों नहीं मान लिया जाए। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि शब्द के मध्य में प्रयुक्त दो व्यंजनों का अनुक्रम अक्षर विभाजन के समय दो अलग अलग अक्षरों में खंडित हो जाता है। व्यंजन-अनुक्रम का पहला सदस्य पूर्ववर्ती स्वर के साथ चला जाता है और व्यंजन अनुक्रम का दूसरा सदस्य परवर्ती स्वर के साथ मिलकर अक्षर बनाता है। परन्तु बांगरू में / काण्हा / `कहानी` का जब अक्षर विभाजन किया जाता है तो अक्षर सीमा / का / के उपरान्त आती है अर्थात् / ण्ह् / खंडित न होकर पूर्णतया उत्तरवर्ती स्वर के साथ चला जाता है। इस प्रकार इस का व्यवहार एकल स्वनिम का होता है।

बांगरू में / ण् / का प्रयोग शब्दादि में नहीं होता केवल मध्य और अन्त में होता है यथा / काण्ही / तथा / बाण् / ` बणिक ` ।

/ म्ह् / तथा / न्ह् / : मानक हिन्दी में इन ध्वनियों का प्रयोग शब्दादि में नहीं होता जबकि बांगरू में शब्दादि में उनका प्रयोग पाया जाता है, यथा / म्हारा / ` हमारा `, / म्हैह् / ` मैं `, / म्हाराज् / ` महाराज `, / न्हाणा / ` नहाना `, / न्हेरना / ` नहरनी, नाखून काटने का औज़ार ` । बांगरू के शब्द के आरम्भ में प्रयुक्त / म्ह् / तथा / न्ह् / के लिए मानक हिन्दी में क्रमशः / मह् / तथा नह् / का प्रयोग किया जाता है । यथा -

बांगरू / न्हाणा / ⟶ मानक हिन्दी / नहाना / ; बांगरू
बांगरू / म्हाराज् / ⟶ मानक हिन्दी / महाराज् / ।

शब्द में स्वर मध्यग स्थिति में / म्ह् / और / न्ह् / मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में प्रयुक्त होते हैं यथा मानक हिन्दी / तुम्हे /, / कुम्हार् /, / उन्हे / / कान्हा / ; बांगरू / कुम्हार् / , / बाम्हण् / ` ब्राह्मण `, / बान्हाँ / ` खेत में हल के निशान, बहुवचन `। / न्ह् / का प्रयोग मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में शब्द के अन्त में भी होता है यथा मानक हिन्दी / कान्ह् / ; बांगरू / बान्ह् / ` खेत में हल का निशान `।

मानक हिन्दी में / म्ह् / तथा / न्ह् / का प्रयोग शब्द के मध्य में / ड़् / से पूर्व भी होता है यथा / कुम्हड़ा / , / कान्हड़ा / ।[1] बांगरू में / ड़् / के पूर्व / न्ह् / तथा / म्ह् / का प्रयोग उपलब्ध नहीं है ।

(5) प्रकम्पित: मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में / र् / का प्रयोग समान रूप से शब्द के आदि, मध्य और अन्त में पाया जाता है ।

(6) पार्श्विक : मानक हिन्दी में वर्त्स्य अल्पप्राण और वर्त्स्य महाप्राण पार्श्विक / ल् ल्ह् / हैं जबकि बांगरू में इन के अतिरिक्त प्रतिवेष्टित अल्पप्राण और प्रतिवेष्टित महाप्राण दो पार्श्विक ध्वनि / ळ् ळ्ह् / और हैं ।

1- महरोत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970; पृष्ठ 70

/ल/ : मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में /ल/ का प्रयोग समान रूप से शब्द के आदि, मध्य और अन्त में उपलब्ध है।

/ळ/ : बांगरू में /ळ/ का प्रयोग शब्द के आदि में उपलब्ध नहीं होता। शब्द के मध्य तथा अन्त में इसका प्रयोग पाया जाता है। बांगरू में जिस प्रकार शब्द की मध्य तथा अन्त्य स्थिति में /न/ की अपेक्षा /ण/ का प्रयोग बाहुल्य मिलता है; उसी प्रकार /ल/ की अपेक्षा /ळ/ का भी प्रयोग बाहुल्य मिलता है। बांगरू में /ल/ एवं /ळ/ का विरोध प्रकट करने वाले न्यूनतम भेदक युग्म पहले प्रस्तुत किए जा चुके हैं (देखिए अंक 1.2.2 (8)) ।

मानक हिन्दी में शब्द के मध्य तथा अन्त्य में भी /ळ/ का प्रयोग उपलब्ध न होकर केवल /ल/ ही पाया जाता है, जबकि बांगरू के शब्दों में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं है। बांगरू के कुछ शब्दों में तो मानक हिन्दी के समान शब्द की मध्य तथा अन्त्य स्थिति में /ल/ का प्रयोग मिलता है यथा /फुला/, /फूला/, /कली/, /कमल/, /तेल/, /कील/, /फूल/, /रेल/ आदि। परन्तु कुछ बांगरू शब्दों में मानक हिन्दी /ल/ के स्थान पर शब्द के मध्य तथा अन्त्य स्थिति में /ळ/ का प्रयोग उपलब्ध होता है, यथा–

मानकहिन्दी	बांगरू
/-ल-/, /-ल/	/-ळ-/, /-ळ/
/थाली/	/थाळी/
/माली/	/माळी/
/काला/	/काळा/
/साला/	/साळा/
/बाला/ 'बाड़'	/बाळा/
/गोली/	/गोळी/
/नाली/	/नाळी/
/ताला/	/ताळा/
/चोला/	/चोळा/
/भोला/	/भोळा/
/पीला/	/पीळा/
/दाल/	/दाळ/
/बाल/	/बाळ/

/माद् /   / माड़् /

/गोद्/   / गोड़्/

/मद् /   / मड़् /

/ल्ह / : मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में / ल्ह / का प्रयोग शब्द के मध्य तथा अन्त्य में होता है। बांगरू में शब्दादि में भी / ल्ह / का प्रयोग उपलब्ध होता है जबकि मानक हिन्दी में शब्दादि में / ल्ह / का प्रयोग उपलब्ध नहीं होता बांगरू में शब्दादि में / ल्ह / के प्रयोग के उदाहरण हैं - / ल्हवाई / `कलाई `; / ल्हको / `छिपा `, / ल्हास / ` शव ` आदि।

/ ळ्ह / : बांगरू में उपलब्ध / ळ्ह / का प्रयोग शब्दादि में उपलब्ध नहीं होता। इसका प्रयोग शब्द की मध्य तथा अन्त्य स्थिति में ही उपलब्ध होता है, उदाहरणतया- / माळ्हां / ` शहद के छत्तों ` ; / माळ्ह / ` शहद का छत्ता `।

(7) अर्द्ध व्यंजन: मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में / य् / तथा / व् / दो अर्द्ध व्यंजन हैं।

/ य् / : आदि स्थिति में / य् / का प्रयोग मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में उपलब्ध है। इस सन्दर्भ में एक रोचक तथ्य यह है कि जहां मानक हिन्दी में आदि स्थिति में / य् / का प्रयोग केवल स्वर के पूर्व हो सकता है, यथा / याद् / वहां बांगरू में शब्द के आदि में स्वर के पूर्व तो / य् / का प्रयोग मानक हिन्दी के समान मिलता ही है, साथ ही शब्द की आदि स्थिति में इसका प्रयोग व्यंजन पूर्व भी उपलब्ध होता है। डा० जगदेवसिंह[1] और डा० नानक चन्द शर्मा[2] ने ऐसे प्रयोग का उदाहरण / य्हाली / ` हल का एक     विशेष भाग `दिया है।

1- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 16

2- शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 1968 पृष्ठ 51

51) अन्त्य स्थिति में / य् / का प्रयोग मानक हिन्दी में स्वरोपरान्त तथा व्यंजनोपरान्त दोनों स्थितियों में मिलता है, यथा / जय् / तथा / उदय् / , जबकि डा० जगदेवसिंह[1] के अनुसार बांगरू में अन्त्य स्थिति में / य् / का प्रयोग केवल व्यंजनोपरान्त स्थिति में उपलब्ध होता है यथा / चाल्य् / ` चल `, / हाथ्य् / ` हाथ ` परन्तु डा० नानक चन्द शर्मा का मत है-" पदान्त में ` य् ` का संयोग केवल उस अवस्था में पाया जाता है, जहां अन्तिम वर्ण के तालव्यीकरण का प्रचलन हो । मध्य के निकटवर्ती इलाके में तालव्यीकरण की उक्त प्रवृत्ति नगण्य ही है "।[2] प्रस्तुत विश्लेषक की बांगरू बोली में भी अन्त्य व्यंजन के तालव्यीकरण की प्रवृत्ति का अभाव है । डा० नानक चन्द शर्मा[3] के अनुसार ` य् ` पद के अन्त में नहीं पाया जाता । डा० जगदेव सिंह[4] भी अपने एक लेख में बांगरू व्यंजनों के वितरण की चर्चा करते हुए लिखते हैं-" ` य `पदान्त में नहीं आता "। प्रस्तुत विश्लेषण में भी यह माना गया है कि बांगरू में शब्द की अन्त्य स्थिति में / य् / का प्रयोग नहीं होता ।

मानक हिन्दी में अन्त्य स्थिति में / य् / के उपलब्ध होने और बांगरू में अनुपलब्ध होने के कारण अन्त्य / य् / युक्त मानक हिन्दी - शब्दों के बांगरू उच्चारण में भाषायी बाधाएं उत्पन्न हो जाती हैं ।

यदि मानक हिन्दी में अन्त्य / य् / से पूर्व स्वर हो तो बांगरू उच्चारण में ऐसे शब्दों के अन्त्य / य् / का लोप हो जाता है , यथा

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/ चाय् /	/चा/
/ गाय्/	/गा/
/ नृपाय् /	/ नृपा/

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970,पृष्ठ 16
2- शर्मा, नानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 1968 पृष्ठ 51
3- शर्मा, नानकचन्द ; यथोपरि ; पृष्ठ 50
4- जगदेवसिंह ; हरियाणवी- एक विवरणात्मक परिचय ; कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की छमाही पत्रिका- जर्नल आव हरियाणा स्टडीज़ ; खंड 4, संख्या 1-2 ; 1972 ; पृष्ठ 77

/ भारतीय /	/भारती/
/ नारकीय् /	/नारकी/
/ गोपनीय् /	/गोपनी/
/ ध्येय् /	/ध्ये /
/ पेय् /	/पे /

यदि मानक हिन्दी में अन्त्य / य् / से पूर्व / अ / हो तो बांगरू उच्चारण में अन्त्य / य् / का तो लोप होता ही है, साथ ही चूंकि बांगरू में अन्त्य स्थिति में / अ / का प्रयोग नहीं होता, अतः / अ / के स्थान पर / ऐ / हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/ जय् /	/ जै /
/विजय् /	/विजै/
/अजय् /	/अजै /
/ भय् /	/भै /
/ समय् /	/ समै /
/विनय्/	/ विनै /
/ विद्यालय् /	/विद्याले /
/हिमालय् /	/हिमाले/

मानक हिन्दी के व्यंजनोपरान्तीय अन्त्य / य् / के कारण बांगरू उच्चारण में होने वाली भाषायी बाधाओं का उल्लेख आगे अन्त्य व्यंजन गुच्छ के सन्दर्भ में किया जाएगा (देखिए अंक 1.7.2) ।

मध्य स्थिति में / य् / का प्रयोग मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में उपलब्ध है। व्यंजनोपरान्तीय मध्यस्थिति में / य् / के प्रयोग का उदाहरण `क्यारी' मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में समान रूप से उपलब्ध है। मानक हिन्दी में मध्यवर्ती / य् / का प्रयोग व्यंजन से पूर्व भी मिलता है, परन्तु ऐसी स्थिति में / य् / अक्षर शीर्ष का भाग होता है यथा / शायद् / , / टायर् /, जबकि बांगरू में ऐसे प्रयोग का अभाव है। स्वर मध्यग / य् / के प्रयोग के उदाहरण / आया / , / गया / आदि

53) मानक हिन्दी और बांगरु दोनों में समान रूप से उपलब्ध होते है।

स्वर मध्यग कुछ ऐसी विशेष परिस्थितियां भी है जिन में मानक हिन्दी में तो / य् / का प्रयोग उपलब्ध है, परन्तु बांगरु में नहीं। यदि मानक हिन्दी में / य् / के पूर्व तथा पश्चात् दोनों तरफ / अ / हो तो बांगरु उच्चारण में / य् / के साथ परवर्ती / अ / का भी लोप हो जाता है और पूर्ववर्ती / अ / के स्थान पर / ऐ / हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरु
/नयन्/	/ नैन् /
/ चयन् /	/ चैन् /

इस प्रकार हम देखते है कि मानक हिन्दी में पाया जाने वाला /-अयअ-/ तथा /-ऐ-/ का विरोध बांगरु में लुप्त हो जाता है यथा मानक हिन्दी के / चयन् / `चुनाव` तथा / चैन् / `चैन` दोनों शब्दों का बांगरु उच्चारण / चैण् / होता है।

यदि मानक हिन्दी में मध्यवर्ती / य् / के पूर्व / आ / तथा बाद में / अ / हो तो भी / य् / के साथ परवर्ती / अ / का भी लोप हो जाता है और पूर्ववर्ती / आ / के स्थान पर / ऐ / हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरु
/ रामायण् /	/रमैण् /
/ नारायण्/	/नरैण् /
/ लायक् /	/ लैक् /
/ नालायक् /	/नलैक् /
/ टायर् /	/टैर् /
/ डायरी/	/ डैरी /

मानक हिन्दी में संस्कृत से आगत शब्दों का आदि, मध्य तथा अन्त्य / य् / सुरक्षित रहता है जबकि बांगरु में अन्त्य स्थिति में तो / य् / का वैसे ही अभाव है, संस्कृत से आगत शब्दों का आदि तथा मध्यवर्ती / य् / भी बांगरु उच्चारण में / ज् / हो जाता है, यथा -

56)

मानक हिन्दी	बांगरू
/यकृत्/	/जकृ/
/यजमान्/	/जजमान्/
/यदुवन्शी/	/जदुवन्शी/
/यादव्/	/जादव्/
/यन्त्र्/	/जन्त्र्/
/यमराज्/	/जमराज्/
/युग्/	/जुग्/
/युगल्/	/जुगल्/
/युद्ध्/	/जुध्/
/योग्/	/जोग्/
/योगी/	/जोगी/
/यमुना/	/जमुना/
/योनि/	/जून्/
/यौवन्/	/जोबन्/
/यशोदा/	/जसोदा/
/यतन्/	/जतन्/
/अयोध्या/	/जुधया/
/संयोग्/	/सन्जोग्/
/मर्यादा/	/मर्जादा/

/व्/ : मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में शब्द की आदि स्थिति में /व्/ का प्रयोग स्वर के पूर्व उपलब्ध होता है, यथा मानक हिन्दी /वह/ ; बांगरू /वो/। शब्दादि में /व्/ का प्रयोग व्यंजन पूर्व की स्थिति में भी मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में उपलब्ध होता है। एक ओर जहां यह मानक हिन्दी में /य्/ अथवा /र्/ के पूर्व प्रयुक्त होता है यथा /व्यवहार/, /व्रत/ दूसरी ओर जहां बांगरू में यह केवल /ह्/ के पूर्व प्रयुक्त होता है, यथा /व्हाईं/ `वहाँ` ।

55)

अन्त्य स्वरोपरान्त

मानक हिन्दी में शब्द की अन्त्य स्थिति में / व् / का प्रयोग स्वरोपरान्त भी मिलता है और व्यंजनोपरान्त भी यथा / भाव् / ; / पक्व् / जबकि डा० जगदेव सिंह[1] के अनुसार शब्द की अन्त्य स्थिति में / व् / का प्रयोग स्वरोपरान्त / मेव् / ` एक जाति विशेष ` ; / देव् / ` देवता ` आदि कुछ ही शब्दों में उपलब्ध होता है। डा० मानकचन्द शर्मा[2] के मतानुसार पदान्त में / व् / का प्रयोग नहीं होता। हमारे मतानुसार भी बांगरू में पदान्त में / व् / का प्रयोग नहीं होता, अत: प्रस्तुत विश्लेषण में बांगरू में अन्त्य स्थिति में / व् / की स्विनिमता को स्वीकार नहीं किया गया है।

मानक हिन्दी में अन्त्य स्थिति में / व् / के उपलब्ध होने और बांगरू में उपलब्ध न होने के कारण अन्त्य / व् / युक्त मानक हिन्दी शब्दों के बांगरू उच्चारण में भाषायी बाधा उत्पन्न हो जाती है। यदि मानक हिन्दी में स्वरोपरान्त स्थिति में अन्त्य / व् / का प्रयोग हुआ हो तो बांगरू में / व् / का लोप हो जाता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/ भाव् /	/ भा /
/ घाव् /	/ घा /
/ छुड़ाव् /	/ छुड़ा /
/ बचाव् /	/ बचा /
/ दबाव् /	/ दबा /
/ ताव् /	/ ता /
/ जीव् /	/ जी /
/ घीव् /	/ घी /

मानक हिन्दी में यदि अन्त्य / व् / के पूर्व / अ / हो तो बांगरू उच्चारण में / व् / के लोप के साथ पूर्ववर्ती / अ / के स्थान पर प्राय: / ओ / हो जाता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/ भाव /	/ भावो /

1- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 17

2- शर्मा, मानक चन्द ; हरियाणवी का उद्भव तथा विकास ; 1968 ; पृष्ठ 31

36)

/कौरव् /	/ कोरो/
/ राघव् /	/ राघो/
/ वैष्णव् /	/ वेष्णो/
/ पाण्डव् /	/ पाण्डो/

यद्यपि मध्य स्थिति में / व् / का प्रयोग मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में उपलब्ध है यथा / भावा / , तो भी मानक हिन्दी की अपेक्षा बांगरू में इसके सीमित प्रयोग के कारण मध्यवर्ती / व् / युक्त मानक हिन्दी शब्दों के बांगरू उच्चारण में भाषायी बाधा उत्पन्न हो जाती है। यदि मानक हिन्दी में शब्द के आदि में /अ/ हो और तत्पश्चात् / व् / का प्रयोग हो तो बांगरू में / अव्-/ के स्थान पर / ओ-/ हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू
/ अवगुण/	/ ओगण् /
/ अवतार् /	/ ओतार् /

मानक हिन्दी में आदि व्यंजन गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में / व् / का प्रयोग होने पर बांगरू उच्चारण में जो भाषायी बाधा उत्पन्न होती है उसकी चर्चा आगे व्यंजन गुच्छ के प्रकरण में की जाएगी (देखिए अंक 1.7 .1 (ख) (iii) तथा (v)) ।

मानक हिन्दी के निम्न लिखित अक्षरी ढांचों के शब्दों में यदि आदि अक्षर का शीर्ष / अ / हो तथा तत्पश्चात् / व् / का प्रयोग हो तो बांगरू उच्चारण में / व् / के स्थान पर / उ / हो जाता है और आदि अक्षर के / अ / का लोप हो जाता है यथा -

अक्षरी ढांचा	मानक हिन्दी	बांगरू
`व अ व आ व `	/ सवार् /	/सुआर्/
..	/ सवाद् /	/ सुआद्/
..	/ नवाब् /	/ नुआब् /
` व अ व आ व आ	/सवारी/	/ सुआरी/
..	/ सवाया /	/ सुआया /
..	/ पवाड़ा/	/ पुआड़ा /
..	/ नवाबी /	/ नुआबी /
`वअववअववा `	/ कानूनी /	/ जुवनी /

मानक हिन्दी में संस्कृत के आगत शब्दों में आदि / व् / सुरक्षित रहता है जबकि बांगरू उच्चारण में / व् / के स्थान पर / ब्/ हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू
/वचन् /	/बचन् /
/ वक्र्/	/बकर् /
/ वधू /	/बधू /
/ वन् /	/बण्/
/ वर्/	/बर् /
/ वर्दान्/	/बर्दान् /
/ वक्तार् /	/बक्तार् /
/वसूल /	/बसूल /
/ विष्णु /	/बिश्न् /
/विष् /	/बिष् /
/ व्यापार् /	/ब्योपार्/

1.4.3 अनुनासिकता का वितरण

यद्यपि मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अनुनासिकता शब्द के आदि,मध्य और अन्त तीनों स्थितियों में उपलब्ध है[1], तो भी अनुनासिकता के वितरण के सन्दर्भ में निम्नलिखित तथ्य उल्लेखनीय है -

(1) बांगरू में शब्दान्त में / अ इ उ / का प्रयोग नहीं होता (देखिए अंक 1.4.1), अत: बांगरू में शब्दान्त में ह्रस्व स्वरों के साथ अनुनासिकता के स्वनिम का प्रश्न ही नहीं होता । मानक हिन्दी में यद्यपि शब्दान्त में / अ इ उ / का प्रयोग उपलब्ध होता है (देखिए अंक 1.4.1) तो भी ह्रस्व स्वरों के साथ अनुनासिकता का स्वनिम उपलब्ध नहीं होता ।[2]

1- मिलाइए (i) मल्होत्रा , रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970, पृष्ठ 55-56
(ii) खंडेलवाल, शिव कुमार ; बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन , 1980; पृष्ठ 42

2- मल्होत्रा, रमेश चन्द्र ; यथोपरि; पृष्ठ 54-55

56)

(2) मानक हिन्दी में स्वरान्त एकाक्षरी शब्दों में अनुनासिकता केवल तभी उपलब्ध होती है जब आदि मुखर कोई प्रवाही व्यंजन हो[1] यथा /हाँ/, /हूँ/ बल्कि बांगरू में यह स्पर्श व्यंजनों के साथ भी उपलब्ध होती है, यथा

/काँ/ ` खेल में हारने वाले दल की बारी `

/छाँ/ ` छाया `

/पाँ/ ` पांव `

/धूँ/ ` धू `

(3) बांगरू में सभी स्वरों के साथ अनुनासिकता उपलब्ध होती है।[2] मानक हिन्दी में मूल व्यवस्था के सभी स्वरों के साथ तो अनुनासिकता का स्वनिम उपलब्ध होता है परन्तु गौण व्यवस्था के /ऑ/ के साथ अनुनासिकता उपलब्ध नहीं होती।[3]

1.5 स्वरक्रम

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों के लघु खंड में एकाधिक स्वरों का क्रम बिना व्यंजन या आन्तरिक संहिता की बाधा के बिना प्रयुक्त हो सकता है। ऐसा स्वरक्रम निम्नलिखित चार स्थितियों में प्रयुक्त हो सकता है -

(1) स्वरक्रम जिसके आदि या अन्त में कोई व्यंजन न हो,

(2) आदि-स्वरक्रम

(3) मध्य स्वरक्रम तथा

(4) अन्त्य स्वरक्रम ।

1- शर्मा, डी०डी०; फोनेमिक स्ट्रक्चर आव हिन्दी एंड पंजाबी ; 1971; पृष्ठ 29-30

2- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू; 1970 ; पृष्ठ 12

3- मेहरोत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमिकी ; 1970 ; पृष्ठ 26

1.5.1 स्वरक्रम जिसके आदि तथा अन्त में कोई व्यंजन न हो -

(1) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ऐसी स्थिति में दो तथा तीन स्वरों के क्रम उपलब्ध हैं। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही ऐसे स्वरक्रम का आदि सदस्य सदा /आ/ होता है। दोनों में ऐसे दो स्वरों के क्रम में दूसरा सदस्य /इं ए ऊं ओ/ में कोई एक होता है, यथा /आइं/, /आए/, /आऊँ/ तथा/आओ/। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में समान रूप से पाया जाने वाला ऐसा तीन स्वरों का क्रम है /आइए/।

(2) जिस आधार पर डा० जगदेव सिंह[1] बांगरू अन्त्य स्वरक्रम की चर्चा में /सोऐ/ (सोवै) में /-ओऐ/ स्वरक्रम मानते हैं, उस आधार पर बांगरू में तो वाक्य संज्ञाओं के मध्य /आऐ/ (आवै) स्वरक्रम भी मान्य होना चाहिए परन्तु हमारे विचार में बांगरू में स्वनिमीय रूप से /आवै/ है क्योंकि यहां /व्/ का आगम 'आ' धातु के साथ '-ऐ' प्रत्यय के योग के कारण रूपस्वनिमिक आधार पर हुआ है (देखिए अंक 2.2(5)), न कि किसी पराश्रित श्रुति के रूप में इसका स्वतः आगम है। अतः प्रस्तुत विश्लेषण में /आऐ/ स्वरक्रम को मान्यता नहीं दी जा रही है।

(3) बांगरू में ऐसी स्थिति में तीन स्वरों का क्रम /आइओ/ भी उपलब्ध है, मानक हिन्दी में जिसका अभाव है।

1.5.2 आदि स्वरक्रम :

(1) मानक हिन्दी में इस स्थिति में निम्नलिखित दो ऐसे स्वरक्रम उपलब्ध हैं जिनका बांगरू में अभाव है। बांगरू में मानक हिन्दी के ऐसे स्वरक्रमों के स्थान पर स्वरक्रम के सदस्यों से भिन्न अन्य स्वर का प्रयोग होता है, यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू
/आइ-/	/ऐ-/
/आइस्क्रीम्/	/ऐस्क्रीम्/

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970, पृष्ठ 22

/-आउ-/	/-औ-/
/आउन्स्/	/औन्स्/

(2) मानक हिन्दी में ऐसी स्थिति में संध्यक्षर तथा स्वर का क्रम भी उपलब्ध होता है, यथा

/ऐयाह्/ (अइआह्) 'य' श्रुति का आगम 'ऐयाह'
/औवल/ (अउअल्) 'व्' श्रुति का आगम 'औवल'

बांगरू में संध्यक्षर तथा स्वर के ऐसे क्रम का अथवा आदि स्थिति में /अइआ-/ तथा /अउअ-/ स्वरक्रमों का सर्वथा अभाव है।

1.5.3 मध्य स्वरक्रम -

(1) बांगरू में ऐसी स्थिति में केवल दो स्वरों के ही क्रम उपलब्ध हैं। डा० जगदेव सिंह[1] के मतानुसार बांगरू में ऐसी स्थिति में /-अ अ-/ /-इआ-/ तथा /-उआ-/ तीन स्वरक्रम उपलब्ध हैं यथा /दहिअल/, /पटिआला/ तथा /दुआद/।

(2) मानक हिन्दी में ऐसी स्थिति में दो स्वरों के क्रम के अलावा तीन स्वरों के क्रम भी उपलब्ध हैं। मानक हिन्दी के मध्य स्वरक्रमों में बहुत विविधता भी उपलब्ध होती है। मानक हिन्दी के ऐसे अनेक मध्यवर्ती स्वरक्रमों का जब बांगरू भाषी द्वारा उच्चारण किया जाता है तब भाषायी बाधा उत्पन्न हो जाती है, यथा

	मानक हिन्दी	बांगरू
(i)	/-आइ-/	/-ऐ-/
	/टाइम्/	/टैम्/
	/नुमाइश्/	/नमैश्/
	/पैमाइश्/	/पमैश्/

1- जगदेव सिंह; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू; 1970; पृष्ठ 21

61)

(ii) / आउ- /	/ -औ- /
/ पाउडर् /	/ पौडर् /
/ ब्लाउज़् /	/ ब्लौज़् /
(iii) /-अ व- /	/- आ- /
/तअव्वुब् /[1]	/ ताबुब् /
/ तअल्लुक़् /[1]	/ तालुक़् /
(i) /-उ अ - /	/ - औ - /
/मुअत्तल् /[2]	/ मौतल् /
/ मुअत्तली /[2]	/ मौतली /
( ) / -उ आ-/	/-आ-/
/ मुआफ़् /[2]	/ माफ़् /
/ मुआमला /[2]	/ मामला /
( ) /-उ आइ-/	/- आइ-/
/ मुआइना /[2]	/ माइना /
(i)/- इ आइ- /	/-इ आ-ई /
/बनिआइन् /	/बणिआणी/
/ ठिपुटिआइन्/	/ठिपुटिआणी/

(3) मानक हिन्दी में मध्य स्वरक्रम के रूप में संध्यक्षर तथा स्वरों का क्रम भी उपलब्ध होता यथा

/नैआइक् / (नअुआइक्) `न्याय` शास्त्रियों का ज्ञाता ` नैयायिक `
/ बुद्धिजीव् / (बुद्धिअुजीव्) ` व ` बुद्धि का ज्ञाता ` बुद्धिजीवी `
बांगरू में ऐसे स्वरक्रमों का अभाव है।

1- बृहद हिन्दी कोश; ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी ; चतुर्थ संस्करण 2030 वि०, पृष्ठ 463

2- यथोपरि : पृष्ठ १००

62)

1.5.4 अन्त्य स्वरक्रम -

(1) मानक हिन्दी में अन्त्य स्थिति में केवल तीन स्वरों तक का क्रम उपलब्ध होता है जबकि बांगरू में चार स्वरों के क्रम भी उपलब्ध हैं। डा० जगदेव सिंह[1] के मतानुसार बांगरू में अन्त्य स्थिति में पांच स्वरों के क्रम भी उपलब्ध है जो कि चार स्वरों के क्रम के साथ पुरुषार्थी / ए / के योग से बनता है यथा / हुआइए ना / ` बिल्कुल मत उठाना `। परन्तु हमारे विचारानुसार चूंकि पांच स्वरों के ऐसे अन्त्य स्वर अनुक्रम के अन्तिम सदस्य / ए / से पूर्व आन्तरिक संहिता अवश्य विद्यमान होती है, अत: बांगरू में अन्त्य स्थिति में चार स्वरों तक के स्वरक्रम को ही मान्यता दी जा सकती है। मानक हिन्दी में बांगरू के ऐसे चार स्वरों के अन्त्य क्रम को / ल / अथवा / ह/ व्यंजन द्वारा खंडित कर दिया जाता है, यथा

बांगरू	मानक हिन्दी
/खुआइए/	/खुलाइए /
/धुआइए/	/धुलाइए/
/सुआइए/	/ सुलाइए/
/ पुआइए/	/पिलाइए/
/ नुआइए/	/नहाइए/
/ छुआइए/	/छुआइए/

इस प्रकार बांगरू के अन्त्य चतुर्स्वरक्रम मानक हिन्दी में अन्त्य त्रिस्वरक्रम बन जाते हैं।

(2) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही अन्त्य स्थिति में तीन स्वरों के क्रमों का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। ऐसे कुछ स्वरक्रम दोनों में समान रूप से पाए जाते हैं, यथा

स्वरक्रम	मानक हिन्दी तथा बांगरू दोनों में प्रयोग
/ - आइए /	/ गाइए /
	/ लाइए /
	/ जाइए /

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू: 1970; पृष्ठ 23

63)

/-ओइए/	/ छोइए /
	/ रोइए /
	/धोइए/
/ -ओइया/	/रसोइया/
/ -आइयाँ/	/भाइयाँ/

/-एइए / अन्त्य स्वरक्रम मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में प्राप्य तो होता है परन्तु प्रयोग बाहुल्य की दृष्टि से दोनों में अन्तर है। मानक हिन्दी में इस का प्रयोग बांगरू की अपेक्षा काफी कम है। चाहे यह अन्त्य स्वरक्रम मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में विरल प्रयोग वाले / लेइए / , / देइए/ उदाहरणों में उपलब्ध है तो भी यह स्वरक्रम मानक हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। मानक हिन्दी में अन्त्य स्थिति में तीनों अग्र स्वरों का क्रम प्राय: प्रयुक्त नहीं होता।[1] सम्भवत: इसी लिए बहुल प्रयोग वाली एकारान्त धातुओं `ले' तथा 'दे' के साथ / -इए / परप्रत्यय के योग के समय मानक हिन्दी में धातु के रूप में परिवर्तन हो जाता है जबकि बांगरू में ऐसा नहीं होता, यथा

धातु परप्रत्यय	बांगरू	मानकहिन्दी
ले + इए	/ लेइए/	/ लीजिए /
दे + इए	/ देइए /	/ दीजिए/

/- उआई / स्वरक्रम का प्रयोग भी चाहे मानक हिन्दी और बांगरू दोनों के / धुआई / उदाहरण में उपलब्ध है परन्तु मानक हिन्दी में इस शब्द का वैकल्पिक रूप / धोआई / अधिक प्रचलित है जबकि बांगरू में ऐसा कोई वैकल्पिक रूप उपलब्ध नहीं। इसके अलावा बांगरू में अन्य अनेक क्रियाओं के किए जाने के भाव या उस क्रिया के स्वत्व में उस की मजदूरी के अर्थ में अन्य अनेक शब्द प्रचलित है जिनमें यह स्वर अनुक्रम उपलब्ध

1- शर्मा, डी० डी० ; सिलेबिक स्ट्रक्चर आफ हिन्दी एंड पंजाबी ; 1971 ; पृष्ठ 23

है जबकि मानक हिन्दी में /ल/ अथवा /व/ व्यंजन-आगम द्वारा स्वरक्रम खंडित हो जाता है,यथा -

बांगरू	मानक हिन्दी
/धुआइँ/	/धुलाइँ/
/भुआइँ /	/भुलाइँ/
/गुआइँ/	/गवाइँ/

/-आइओ/ स्वरक्रम वाले मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में /माइओ/, /भाइओ/ , / ताइओ/ उदाहरणों में(जो कि सभी सम्बोधन रूप है) उपलब्ध है परन्तु बांगरू में आकारान्त धातुओं के साथ /-इओ / पर प्रत्यय के योग से बने क्रिया रूपों के कारण इस स्वरक्रम का प्रयोग बाहुल्य है जबकि मानक हिन्दी में ऐसे रूप उपलब्ध नहीं है। बांगरू में / गाइओ /, / लाइओ/, / पाइओ / `डालना`, / खाइओ / , /न्हाइओ/ `नहाना` उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते है।

बांगरू में ऊकारान्त, एकारान्त तथा ओकारान्त धातुओं के साथ / -इओ / परप्रत्यय के योग से बनने वाले क्रियारूपों में /-ऊइओ/, /-एइओ/ तथा /-ओइओ/ स्वरक्रम उपलब्ध होते है यथा / छूइओ/, / लेइओ/, / सोइओ/ जबकि मानक हिन्दी में ऐसे स्वर क्रमों का अभाव है।

मानक हिन्दी में / सोआइँ / में /-ओआइँ / अन्त्य स्वरक्रम उपलब्ध है जबकि बांगरू में इस स्वरक्रम का अभाव है।

बांगरू में /-उआऊँ/ अन्त्य स्वरक्रम का पर्याप्त प्रयोग होता है। मानक हिन्दी में ऐसे स्वरक्रम का अभाव है। मानक हिन्दी में / ल/ या /व/ की बाधा होने से स्वरक्रम खंडित हो जाता है,यथा

बांगरू	मानक हिन्दी
/ धुआऊँ/	/खिलाऊँ/
/सुआऊँ/	/सुलाऊँ/
/रुआऊँ/	/रुलाऊँ/
/ धुआऊँ/	/धुलाऊँ/
/गुआऊँ/ 'गा' के प्रेरणार्थक का क्रिया रूप	/गवाऊँ/

बांगरू में /- उआर/ स्वरक्रम का प्रयोग पाया जाता है । मानक हिन्दी में /ल/ या /व/ की बाधा से स्वरक्रम खंडित हो जाता है, यथा

बांगरू	मानक हिन्दी
/कुआर/	/ किलार/
/बुआर/	/बुलार/
/रुआर/	/रलार/
/फुआर/	/फुलार/
/गुआर/	/ग्लार/
-	/छलार/

बांगरू में /-उआओ/ अन्त्य स्वरक्रम भी उपलब्ध है जबकि मानक हिन्दी में /ल/ अथवा /व/ की बाधा द्वारा स्वरक्रम खंडित हो जाता है, यथा

बांगरू	मानकहिन्दी
/कुआओ/	/किलाओ/
/बुआओ/	/बुलाओ/
/रुआओ/	/रलाओ/
/फुआओ/	/फुलाओ/
/गुआओ/	/ग्लाओ/
-	/छलाओ/

(3) बांगरू में समान स्वरों के कुछ द्विस्वरक्रम भी उपलब्ध हैं यथा /-आआ/, /-ईईं/, /-ऊऊ/, /-एए/ तथा /-ओओ/ उदाहरणार्थ / बाआ पीईं/, /हुऊँ/, /पिएँ / तथा / होओ/ ।[1] मानक हिन्दी में /-एए/ तथा /-ओओ/ स्वरक्रम तो क्रमशः / केए/ तथा / होओ/ में उपलब्ध है परन्तु /-आआ/, /-ईईं / तथा /-ऊऊ/ स्वरक्रमों का अभाव है ।

अन्त्य द्विस्वरक्रम का प्रथम सदस्य बांगरू में /-ईं-/ तथा /-ऊ-/ हो सकता है

1- मिलाउर-जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970 : पृष्ठ 21

66)

जबकि मानक हिन्दी में ऐसी स्थिति में /इ / तथा / उ/ के प्रयोग की सामान्य प्रवृत्ति है।[1] डा० जगदेवसिंह[2] ने ऐसी स्थिति में बांगरू में /ई/ तथा /ऊ/ के प्रयोग के बहुत से उदाहरण दिए हैं यथा / पीऐं/ ` पीने से `, / पीऊ / ` पीने का इच्छुक `, /बीआो/ ` गाय को बुलाने का संकेत `, / बीआँ / ` कीकर वृक्ष का बीज `, / मं आँ / ` अनाज `, / सुई/ ` सुई `, / कूआँ / ` कुआं, / कूएँ / ` कुएं ` जबकि मानक हिन्दी में ऐसी स्थिति में /-इ-/ तथा /-उ-/ के प्रयोग के उदाहरण देखिए /मियाँ/ `मियां `, / सुई / , / सुआ / , / रुई / , / कुआँ/, / कुएँ/, / कुई / आदि।

1.6 व्यंजन दीर्घता अथवा द्वित्व

1.6.1. व्यंजन दीर्घता अथवा द्वित्व सम्बन्धी कुछ तथ्य-

(1) वैसे तो दीर्घ व्यंजन अथवा द्वित्व व्यंजन एक प्रकार के व्यंजन गुच्छ (अथवा व्यंजन अनुक्रम) ही हैं और इन की चर्चा व्यंजन गुच्छों के अन्तर्गत ही होनी चाहिए, परन्तु चूंकि मानक हिन्दी और बांगरू में इन दीर्घ व्यंजनों अथवा द्वित्व व्यंजनों की अपनी अपनी कुछ विशिष्टताएं हैं जिनके कारण कुछ विशेष भाषायी बाधाएं उत्पन्न होती हैं, इस लिए विश्लेषण सुविधा को ध्यान में रखते हुए इनकी चर्चा व्यंजना गुच्छों से अलग की जा रही है।

(2) आम धारणा के अनुसार स्वरों में दीर्घता मानी जाती है जैसे /आ/ को /अ/ का, /ई / को /इ/ का तथा /ऊ/ को /उ/ का दीर्घ रूप माना जाता है जबकि वास्तव में इन युग्मों में मात्रा अर्थात् ह्रस्वता और दीर्घता के भेद के अतिरिक्त गुणात्मक भेद भी है,जैसे /अ/ मध्यम मध्य है तो /आ/ निम्नतर निम्न ; /इ उ / निम्नतर-उच्च है तो / ई ऊ / उच्चतर- उच्च,साथ ही / इ उ / शिथिल हैं तो / ई ऊ/ दृढ़। अब

1- भिलावर- शर्मा, डी०डी० ; सिलेकि स्ट्रक्चर आव हिन्दी एंड पंजाबी ; 1971 ; अंक 2.2.4.2.; पृष्ठ 22

2- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 21-22

67)

प्रकार मानक हिन्दी तथा बांगरू दोनों में ही केवल मात्रा के आधार पर स्वरों में भेदकता नहीं आती जबकि दोनों में ही समान गुणात्मक विशेषताओं वाले व्यंजन में केवल मात्रा-भेद से भेदकता आ जाती है । स्पर्श व्यंजनों में रोध की अवधि को बढ़ा कर एवं प्रवाही व्यंजनों में उच्चारण-अवधि को बढ़ा कर व्यंजन-दीर्घता उत्पन्न की जाती है ।

(3) देवनागरी लिपि में व्यंजन दीर्घता के लिए कोई विशेष संकेत न होने के कारण दीर्घ व्यंजनों को व्यंजन द्वित्व के रूप में लिखने की प्रथा है । अपने विश्लेषण में हम भी व्यंजन दीर्घता को अलग स्वनिम न मान कर इसे व्यंजन द्वित्व के रूप में अंकित कर रहे हैं । यहां यह भी उल्लेखनीय है कि स्वनिमीय स्तर पर व्यंजन द्वित्व एवं व्यंजन दीर्घता का अन्तर सार्थक नहीं होता ।[1] विश्लेषण की सुविधा के लिए प्रो० भल्ल भी इसे द्वित्व व्यंजन के रूप में ही मानते हैं ।[2]

(4) हिन्दी द्वित्व व्यंजनों की चर्चा करते हुए डा० रमेशचन्द्र महरोत्रा[3] और डा० महावीर सरन जैन[4] ने यह मत व्यक्त किया है कि महाप्राण व्यंजनों का द्वित्व उपलब्ध नहीं होता जबकि प्रस्तुत विश्लेषण में महाप्राण व्यंजनों की भेदक दीर्घता को भी माना गया है । कारण यह है कि अल्प व्यंजन और महाप्राण व्यंजन दोनों में दीर्घता की कार्यकारिता समान है । बांगरू व्यंजनों के द्वित्व की चर्चा करते हुए डा० जगदेवसिंह[5] ने भी महाप्राण व्यंजनों को उन व्यंजनों की सूची में शामिल नहीं किया है जिन के द्वित्व प्राप्य नहीं होते । हां जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है (देखिए अंक 1.3.1), मानक

1- जोन्स,डेनियल ; दि फोनीम : इट्स नेचर ऐंड यूज़ ; 1962 ; पृष्ठ 116

2- भल्ल, गोलोक बिहारी ; ध्वनिविज्ञान ; 1958 ; पृष्ठ 227

3- महरोत्रा,रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ;1970 ; पृष्ठ 158

4- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन ;1974 ; पृष्ठ 141

5- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970,पृष्ठ 7

68)

हिन्दी और बांगरू दोनों में ही महाप्राण व्यंजनों की दीर्घता में केवल तदनुरूपी अल्पप्राण रूप में ही दीर्घता आती है। इसी लिए दीर्घ महाप्राण व्यंजनों की दीर्घता दर्शाने के लिये द्वित्व महाप्राण के स्थान पर अल्पप्राण और महाप्राण का प्रयोग किया जाता है यथा /खखा/: / क्खा /[1] ।

(5) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में आदि स्थिति में व्यंजन दीर्घता उपलब्ध नहीं होती।

1.6.2. बांगरू में व्यंजन द्वित्व की परिस्थितियां :

(1) बांगरू की सार्थक व्यंजन दीर्घता के बारे में डा० जगदेवसिंह का मत है कि यह स्वर मध्यग स्थिति में, अधिकांशतया द्व्यक्षरी शब्दों में, ह्रस्व स्वरों के पश्चात् और किसी भी स्वर के पूर्व उपलब्ध होती है।[2] इस सन्दर्भ में हम अपने अनुसन्धान के परिणामस्वरूप डा० जगदेव सिंह द्वारा दिये गये उपर्युक्त सिद्धान्त में कुछ परिवर्तन करना चाहेंगे :-

(क) दीर्घ व्यंजन के बाद वाला स्वर यदि दीर्घ है तो वह शब्द की अन्त्य स्थिति में होना चाहिये, यथा / कट्टा / का /आ/ ।

(ख) दीर्घ व्यंजन के बाद वाला स्वर यदि ह्रस्व है तो वह शब्द के अन्तिम बन्द अक्षर का शीर्ष होना चाहिये यथा / कत्तल् / का दूसरा /अ/ ।

(2) बांगरू की सार्थक व्यंजन दीर्घता वाली उपर्युक्त परिस्थितियों में मानक हिन्दी में भी सार्थक व्यंजन - दीर्घता उपलब्ध होती है यथा

मानक हिन्दी	बांगरू
/पता/ 'पता लगाना'	/कटा/ 'कटना क्रिया का भूत कृदन्त'
/पत्ता/ 'वृक्ष का पत्ता'	/कट्टा/ 'छोटा बोरा जैसे सीमेंट का कट्टा'
/चपल्/ 'चंचल'	/ काल् / 'काल'
/ चप्पल् / 'पैर की चप्पल'	/ कत्तल् / 'टुकड़ा , फांक'

1- मिलाइए- सूरजभानसिंह ; हिन्दी में व्यंजन + य गुच्छ ; 'भाषा' [illegible] का हिन्दी भाषा विज्ञान अंक ; 1973;पृष्ठ 44-45

2- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 7

69)

1.6.3. ऐसी परिस्थितियां जिनमें मानक हिन्दी में व्यंजन द्वित्व उपलब्ध परन्तु बांगरू में अनुपलब्ध :

मानक हिन्दी में कुछ अन्य परिस्थितियों में भी सार्थक व्यंजन दीर्घता उपलब्ध होती है जबकि बांगरू में अभाव है। इस कारण सार्थक व्यंजन दीर्घता वाले बहुत से मानक हिन्दी शब्दों के तद्‌रूपी बांगरू उच्चारण में भाषायी बाधा उत्पन्न हो जाती है।

(1) बांगरू में स्वरोपरान्तीय अन्त्य स्थिति में व्यंजन दीर्घता उपलब्ध नहीं होती[1] जबकि मानक हिन्दी में ऐसी सार्थक व्यंजन दीर्घता पाई जाती है, यथा—

/मत्/ 'नहीं'	:	/मत्त्/	'मस्त'
/मल्/ 'मैल'	:	/मल्ल्/	'पहलवान'

अतः मानक हिन्दी में प्रयुक्त अन्त्य दीर्घ व्यंजन वाले शब्दों के तद्‌रूपी बांगरू उच्चारण में दीर्घ व्यंजनों का ह्रस्वीकरण हो जाता है अर्थात् दीर्घ व्यंजन के स्थान पर साधारण व्यंजन ही प्रयुक्त होता है, जैसे—

मानक हिन्दी	बांगरू
/मत्त्/	/मत्/
/मल्ल्/	/मल्/
/जिन्न्/	/जिन् /
/बुद्ध्/	/बुध्/
/युद्ध्/	/युध्/
/चित्त्/	/चित्/
/पट्ट्/	/पट् /
/उल्ल्/	/उल्/
/अन्न्/	/अन्/

1- डा० शिवकुमार खंडेलवाल ने 'लट्ठ' तथा 'हुक्क' आदि शब्द दिए हैं परन्तु हमारे विचार से उक्त शब्द क्रमशः / लट् / तथा / हुक् / हैं। देखिए खंडेलवाल, शिवकुमार ; बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन ; 1980 ; पृष्ठ 38-40

70)

(2) बांगरू में शब्द के मध्य में अनुनेय व्यंजन दीर्घता केवल ह्रस्व स्वर के पश्चात् उपलब्ध होती है जबकि मानक हिन्दी में संस्कृत से गृहीत समस्त पदों में वह दीर्घ स्वर के पश्चात् भी उपलब्ध होती है यथा / नरोत्तम् / , / पुरुषोत्तर् / आदि । बांगरू में दीर्घ स्वर के पश्चात् पाई जाने वाली व्यंजन दीर्घता सदा अनुनेय अर्थात् स्वनिकीय होती है(देखिए अंक 1.3.1) । इस प्रकार मानक हिन्दी की स्वनिमीय दीर्घता बांगरू में स्वनिकीय रूप धारण कर लेती है,

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/नरोत्तम्/	/नरोतम्/ (नरोत्तम्)
/सर्वोत्तम्/	/सर्वोतम्/ (सर्वोत्तम्)
/पुरुषोत्तर्/	/परुषोतर्/(परुषोत्तर्)
/उत्तरोत्तर् /	/उत्रोतर्/ (उत्रोत्तर्)

(3) बांगरू में सार्थक व्यंजन दीर्घता केवल ऐसे ह्रस्व स्वर के पूर्व आ सकती है जो बन्द अक्षर का केन्द्रक हो यथा /हिम्मत् /, / चक्कर् /, / टक्कर् /, / चप्पल् / ; जबकि मानक हिन्दी में सार्थक व्यंजन-दीर्घता के पश्चात् ऐसा ह्रस्व स्वर भी आ सकता है जो मुक्त अक्षर का केन्द्रक हो ।

मानक हिन्दी में जब / हिम्मत् /, / चक्कर् /, / टक्कर्/, / चप्पल् / जैसे शब्दों के पश्चात् प्रत्यय के रूप में कोई स्वर जोड़ कर उनका विस्तार किया जाता है तब इन शब्दों का अक्षर विन्यास बदल जाता है । और दीर्घ व्यंजन के पश्चात् वाला ह्रस्व स्वर अब बन्द अक्षर के केन्द्रक के स्थान पर मुक्त अक्षर का केन्द्रक हो जाता है परन्तु मानक हिन्दी में ऐसी स्थिति में व्यंजन दीर्घता बनी रहती है जबकि बांगरू में मुक्त अक्षर वाले केन्द्रक के रूप में प्रयुक्त ह्रस्व स्वर के पूर्व ऐसी दीर्घता नहीं रह सकती । अतः व्यंजन दीर्घता का सरलीकरण हो जाता है और साथ परवर्ती ह्रस्व स्वर का भी लोप हो जाता है । इस प्रकार बांगरू में व्यंजन दीर्घता के सरलीकरण के साथ एक अक्षर की भी कमी हो जाती है -

मानक हिन्दी	बांगरू
/हिम्मती/	/हिम्ती/
/चक्करौं/	/चक्रौं/
/ टक्करौं/	/टक्रौं/
/चप्पलौं/	/ चप्लौं/

71) (4) मानक हिन्दी में अननुमेय व्यंजन दीर्घता के पश्चात् आने वाले दीर्घ स्वर के लिए यह अनिवार्य नहीं कि वह शब्द की अन्त्य स्थिति में हो। मानक हिन्दी में ऐसा दीर्घ स्वर अन्य अक्षर का शीर्ष हो सकता है या फिर अन्तिम अक्षर का शीर्ष हो सकता। ऐसी स्थिति में बांगरू के तदनुरूपी शब्दों में व्यंजन दीर्घता का ह्रसीकरण हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू
/उल्लेख/	/उलेख/
/उच्चैन्/	/उचैन्/
/उल्लाघ/	/उलाघ/
/उद्धान् /	/उधान्/
/अल्लाद्/	/अलाद्/
/ उच्चा रण्/	/उचारण् /
/ सम्मेलन् /	/समेलन् /

(5) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सभी व्यंजनों की स्वनिमीय दीर्घता उपलब्ध नहीं होती यथा / ङ्/ की दीर्घता का दोनों में अभाव है। मानक हिन्दी में अनुपलब्ध और बांगरू में उपलब्ध स्वनिमों / ळ ड़् ण् / की दीर्घता भी उपलब्ध नहीं होती। इसी प्रकार बांगरू में स्वनिम स्तर पर अनुपलब्ध और मानक हिन्दी में उपलब्ध स्वनिम / ङ् / की दीर्घता का भी अभाव है। इस सन्दर्भ में यह रोचक तथ्य उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में / ण् / की स्वनिमीय दीर्घता उपलब्ध है जबकि बांगरू में इसकी दीर्घता का अभाव है। मानक हिन्दी में अन्त्य स्थिति में / ण् / : / ण्ण् / का व्यतिरेक / क्षीण् / ' दुबला पतला ' : / क्षुण्ण् / ' खंडित ' में उपलब्ध है।

1.7 व्यंजन गुच्छ

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में शब्द के आदि, मध्य और अन्त में निरन्तर एकाधिक व्यंजन आ सकते हैं। ऐसे निरन्तर व्यंजनों को व्यंजन-गुच्छ कहा जाता है, परन्तु मध्यवर्ती निरन्तर व्यंजनों को दो अक्षरों में विभाजित हो जाने के कारण कुछ विद्वान[1]

1- भाटिया, कैलाशचन्द्र ; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा ; 2017 वि0;पृष्ठ 49

व्यंजन गुच्छ के स्थान पर व्यंजन अनुक्रम कहना अधिक संगत समझते है। दूसरी ओर चूंकि अक्षर विभाजन का महत्व स्वनिमीय नहीं है, इसलिए आर्चिबाल्ड ए० हिल[1] जैसे विद्वान ने स्वर मध्यग निरन्तर व्यंजनों को व्यंजन-गुच्छ ही माना है। प्रस्तुत विश्लेषण में व्यंजन-गुच्छ और व्यंजन-अनुक्रम दोनों के लिए, जब तक कि उन का अन्तर स्पष्ट करना वांछित न हो, व्यंजन-गुच्छ का प्रयोग किया जा रहा है।

बांगरू की अपेक्षा मानक हिन्दी में व्यंजन गुच्छों की विविधता और प्रयोग बाहुल्य है। मानक हिन्दी के तद्भव शब्दों में तो बांगरू के समान ही व्यंजन गुच्छों का प्रयोग काफी सीमित है परन्तु मानक हिन्दी में संस्कृत से गृहीत तत्सम शब्दों के कारण व्यंजन गुच्छों की विविधता और प्रयोग बाहुल्य बहुत बढ़ गया है। मानक हिन्दी में अंग्रेज़ी और अरबी-फारसी से गृहीत शब्दों के तत्सम उच्चारण के कारण भी कुछ नए व्यंजन-गुच्छ मानक हिन्दी में आ गए है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि बांगरू में मानक हिन्दी के मुकाबले में कोई नया व्यंजन-गुच्छ उपलब्ध नहीं। बांगरू में उपलब्ध और मानक हिन्दी में अनुपलब्ध व्यंजन गुच्छों की चर्चा आगे यथा स्थान की जा रही है।

1.7.1. आदि व्यंजन -गुच्छ

आदि व्यंजन गुच्छों को दो भागों में विभाजित किया गया है- (क) आदि त्रिव्यंजन गुच्छ और (ख) आदि द्विव्यंजन गुच्छ।

(क) आदि त्रिव्यंजन-गुच्छ

(1) डा० महावीर सरन जैन[2] के अनुसार मानक हिन्दी के शब्द की आदि स्थिति में अधिकतम दो व्यंजन का गुच्छ आ सकता है, जबकि अन्य अनेक विद्वान[3] मानक हिन्दी में शब्द की आदि स्थिति में अधिकतम तीन व्यंजनों के गुच्छ स्वीकार करते है। डा० महावीर सरन जैन[4] के अनुसार यदि शब्द की आदि स्थिति में /स/ के पश्चात्

1- हिल, ए०ए०; इन्ट्रोडक्शन टु लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर्स; 1958; पृष्ठ 85

2- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन ;1974 पृष्ठ 115,127

3- (i)मल्होत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970 पृष्ठ,164-65
(ii)भाटिया, कैलाशचन्द्र; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा;2028 वि०; पृष्ठ 52

4- जैन, महावीर सरन ; यथोपरि, पृष्ठ 128

/ य् र् ल् व् / से भिन्न कोई अन्य व्यंजन हो तो / स् / के पूर्व / इ / का आगम हो जाता है और इस प्रकार व्यंजन गुच्छ आदि स्थिति का न होकर द्विस्वरान्तर्गत स्थिति का व्यंजन गुच्छ हो जाता है । परन्तु जैसे कि पहले उल्लेख किया जा चुका है (देखिए अंक 1.3.4) ऐसी स्थिति में `इ` के आगम के बिना वाले उच्चारण को मानक हिन्दी में अधिक मान्यता प्राप्त है । अत: प्रस्तुत विश्लेषण में मानक हिन्दी में आदि त्रिव्यंजन-गुच्छों की विद्यमानता स्वीकार की गई है ।

(2) बांगरू के आदि व्यंजनों की चर्चा करते हुए डा० जगदेवसिंह[1] तथा डा० नानक चन्द शर्मा[2] ने आदि त्रिव्यंजन गुच्छ की सत्ता को स्वीकार करते हुए / ल्ह्याफ् / `लिहाफ` शब्द उद्धृत किया है । चूंकि प्रस्तुत विश्लेषण में बांगरू के / ल्ह् / को व्यंजन गुच्छ न मानकर एकल स्वनिम माना गया है (देखिए अंक 1.1.2 क) (2), टिप्पणी 1), अत: हम ऐसे शब्द को द्विव्यंजन गुच्छ में ही स्थान देंगे । हमारे विश्लेषणानुसार बांगरू में आदि स्थिति में अधिकतम दो व्यंजनों के ही गुच्छ उपलब्ध होते हैं ।

(3) मानक हिन्दी में उपलब्ध सभी आदि त्रिव्यंजन गुच्छ /स्/ से आरम्भ होते हैं और प्राय: / र् / में समाप्त होते हैं[3] । ऐसा एक गुच्छ / व् / में भी समाप्त होता है । मानक हिन्दी में ऐसे कुल छ: व्यंजन गुच्छ उपलब्ध होते हैं, उदाहरणतया /स्प्रिहा /, `स्पृहा`, / स्त्री / `स्त्री`, / स्ट्रीट / `स्ट्रीट`, /स्क्रू/ `स्क्रू`, / स्क्वायर् / `स्क्वायर`, / स्म्रिति / `स्मृति` ।

(4) बांगरू भाषी के लिए मानक हिन्दी के आदि-त्रिव्यंजन गुच्छों का उच्चारण बहुत कठिन होता है । वह स्वर भक्ति की सहायता से ऐसे त्रिव्यंजन गुच्छ को खंडित कर लेता है । प्राय: प्रथम व्यंजन के पश्चात् स्वर लगाया जाता है । इससे मानक हिन्दी गुच्छ का दूसरा सदस्य बांगरू में पहले अक्षर के साथ आ कर उसे बन्द अक्षर का रूप दे देता है और गुच्छ का तीसरा व्यंजन बांगरू में दूसरे अक्षर का आदि व्यंजन हो

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 18

2- शर्मा, नानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास; 1968; पृष्ठ 51

3- महरोत्रा, रमेशचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970;पृष्ठ 165

जाता है। इस प्रकार मानक हिन्दी का आदि त्रिव्यंजन गुच्छ बांगरू में इस प्रकार खंडित हो जाता है कि शब्द के आदि या अन्त में दो व्यंजन भी एक साथ नहीं आते, यथा मानक हिन्दी / स्ट्रीट / बांगरू में / सटरीट / होजाता है। बांगरू में स्वर भक्ति के रूप में अधिकांशतया / अ / का प्रयोग किया जाता है। कभी कभी / इ / का प्रयोग भी उपलब्ध होता है यथा मानक हिन्दी / स्मृति / का बांगरू उच्चारण / सिमृती / होता है। यहां बांगरू में पहले तथा दूसरे दोनों व्यंजनों के पश्चात् स्वर का आगम हुआ है जबकि तीसरे व्यंजन के पश्चात् वाला मानक हिन्दी स्वर बांगरू में लुप्त हो गया है।

मानक हिन्दी के आदि त्रिव्यंजन गुच्छ को खंडित करने के लिये बांगरू में स्वरभक्ति के साथ साथ कभी कभी आदि स्वर आगम भी हो जाता है यथा मानक हिन्दी / स्त्री / का बांगरू उच्चारण / इस्तरी / होता है। यहां बांगरू में शब्द के आदि में / इ / तथा गुच्छ के दूसरे व्यंजन के पश्चात् / अ / का प्रयोग हुआ है।

(ख) आदि द्विव्यंजन- गुच्छ

(1) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में आदि द्विव्यंजन गुच्छ उपलब्ध है। प्रस्तुत विश्लेषण के अनुसार बांगरू में आदि व्यंजन गुच्छ के रूप में दूसरा सदस्य सदा / य् / अथवा / व् / होता है। डा० नानक चन्द शर्मा[1] ने भी ऐसा ही माना है जबकि डा० जगदेव सिंह[2] ने बांगरू के आदि द्विव्यंजन गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में / र् / भी स्वीकार किया है जो उन के विचार से केवल / त् / के पश्चात् प्रयुक्त होता है, यथा / त्रेपण् /। परन्तु हमारे विचार में बांगरू में यह शब्द / त्रेपण् / के स्थान पर / तरेपण् / ही चलता है, हां द्रुत गति से बोलने पर पहले अक्षर का / अ / गिर जाता है, ऐसा अन्य उदाहरणों में भी उपलब्ध होता है जैसे / डराबे /। यदि / तरेपण / में आदि अक्षर से / अ / के गिर जाने के कारण / त्र् / का आदि व्यंजन गुच्छ, स्वीकार किया जाता है तो फिर / डराबे / के आदि अक्षर का / अ /

1- शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास ; 1968; पृष्ठ 51

2- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 18

गिरने की स्थिति में / ह्र्- / को भी आदि व्यंजन गुच्छ मानना पड़ेगा । प्रस्तुत विश्लेषण में ऐसी परिस्थिति में / अ / की विकल्पता स्वीकार की गई है ।

(2) आदि व्यंजन गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में / य् / का प्रयोग मानक हिन्दी में भी उपलब्ध है । मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में इस गुच्छ का बहुल प्रयोग है । यहां यह तथ्य उल्लेखनीय है कि बांगरू में / ल्ह्य्-/ का एक ऐसा आदि द्विव्यंजन गुच्छ उपलब्ध होता है, यथा / ल्ह्याव् / `लिहाज`, मानक हिन्दी में जिसका अभाव है । जैसे कि व्यंजनों के वितरण के सन्दर्भ में उल्लेख किया जा चुका है (देखिए अंक 1.4.2(6)) बांगरू में / ल्ह् / का प्रयोग शब्दादि में उपलब्ध है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसी स्थिति में इसका अभाव है ।

(3) मानक हिन्दी में आदि द्विव्यंजन गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में /ह/ का प्रयोग उपलब्ध नहीं होता जबकि बांगरू में / ग्हाली / [1] 'घर का एक विशेष भाग' तथा / ग्हाई ब्याव् / `ब्याह बयाज` शब्दों में इस का प्रयोग उपलब्ध होता है ।

(4) मानक हिन्दी में किसी भी आदि व्यंजन गुच्छ के प्रथम सदस्य के रूप में / ग् / का प्रयोग नहीं होता, जबकि बांगरू में / ग्हाली / में उपलब्ध है । मानक हिन्दी में व्यंजन गुच्छ के प्रथम सदस्य के रूप में / ह् / का प्रयोग केवल / य् र् / के पूर्व ही होता है जबकि बांगरू में / ह्र्-/ गुच्छों का तो अभाव है परन्तु / ह्वाई / में / ह्व्-/ गुच्छ विद्यमान है ।

(5) बांगरू आदि-व्यंजन-गुच्छ के लिये यह प्रतिबन्ध है कि इसका प्रयोग दीर्घ-स्वर के पूर्व ही हो सकता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं है, यथा मानक हिन्दी में / क्षमा / में आदि व्यंजन-गुच्छ के पश्चात् ह्रस्व स्वर / अ / है ।

(6) मानक हिन्दी में आदि-द्विव्यंजन-गुच्छ के रूप में विविध प्रकार के अन्य व्यंजन-संयोग भी उपलब्ध हैं जिनका बांगरू में अभाव है । मानक हिन्दी में बहुत से ऐसे व्यंजन-संयोगों में / र् ल् व् / व्यंजन-संयोग के दूसरे सदस्य के रूप में प्रयुक्त होता है, यथा

1- (i) जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 18

(ii) शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणा की भाषा का उद्गम तथा विकास; 1968; पृष्ठ 51

/स्मरण/, /म्लानि/, /स्मृता/। दूसरे सदस्य के रूप में नासिक्य व्यंजन भी प्रयुक्त होते हैं जिनसे पूर्व /स/ अथवा /म/ ही प्रयुक्त होता है यथा /स्नान/, /स्मरण/; /म्लान/। दूसरे सदस्य के रूप में स्पर्श व्यंजन भी उपलब्ध हैं परन्तु उन से पूर्व केवल /स/ ही प्रयुक्त होता है यथा /स्कूल/, /स्टार/, /स्थिर/ आदि। दूसरे सदस्य के रूप में /व/ का प्रयोग केवल /स/ के पश्चात् होता है यथा /स्वप्न/ ` [illegible] `

(7) मानक हिन्दी में उपलब्ध परन्तु बांगरू में अनुपलब्ध आदि-द्विव्यंजन-गुच्छ वाले मानक हिन्दी शब्दों के बांगरू उच्चारण में अनेक प्रकार की भाषायी बाधाएं उत्पन्न हो जाती हैं, यथा

(i) मानक हिन्दी के अधिकांश आदि-द्विव्यंजन-गुच्छों को बांगरू में स्वरभक्ति के द्वारा खंडित कर लिया जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/कर्म/	/करम/
/क्रिया/	/किरिया/
/ग्रह/	/गरह/
/ट्राम/	/टराम/
/ट्रे/	/टरे/
/ड्रामा/	/डरामा/
/त्रिशूल/	/तिरशूल/
/प्रकाश/	/परकाश/
/प्रेम/	/परेम/
/ब्रेक/	/बरेक/
/भ्रम/	/भरम/
/नृप/	/निरप/
/मृग/	/मिरग/
/श्री/	/सिरी/
/स्रोत/	/सरोत/
/क्लेश/	/कलेश/
/क्लास/	/कलास/
/ग्लानि/	/गिलाण/

77)

/प्लेट /	/पलेट /
/क्लाइ /	/कलाइ/
/क्लाज्म/	/कलोच/
/ प्लेयर/	/पलेअर/
/प्रमाण/	/परमाण/
/प्रेम /	/ परेम /

(ii) बांगरू में आदि-स्वरागम द्वारा भी मानक हिन्दी के आदि द्वि-व्यंजन गुच्छ को तोड़ा कर लिया जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/स्तुति/	/अस्तुती/
/स्टेशन/	/असटेसण/
/स्नान/	/असनाण/
/श्लोक/	/असलोक /

(iii) मानक हिन्दी के आदि-द्वि-व्यंजन-गुच्छ के दूसरे सदस्य के लोप द्वारा भी बांगरू में व्यंजन-गुच्छ का सरलीकरण हो जाता है, यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/क्या/	/का/
/स्वप्न /	/सपन/
/ब्राह्मण/	/बाम्हण/

(iv) यदि मानक हिन्दी में शब्दादि में / स्थ-/ व्यंजन गुच्छ हो तो बांगरू उच्चारणमें / स्थ-/ के स्थान पर एकल व्यंजन / थ-/ या / ठ-/ के प्रयोग द्वारा व्यंजन-गुच्छ का सरलीकरण हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/ स्थीगुणाकर/	/ ठीगुणाकर/
/स्थान/	/ थाण/
/ स्थार/	/ थार/

78)

(v) बांगरू में मानक हिन्दी के आदि व्यंजन गुच्छ के दूसरे सदस्य /व्/ के स्वरीकरण द्वारा अर्थात् /व्/ के स्थान पर /उ/ का प्रयोग करके भी व्यंजन गुच्छ का सरलीकरण कर लिया जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/ख्वाब्/	/खुवाब्/
/स्वराज्य्/	/सुराज्/
/द्वारा/	/दुवारा/
/ज्वाला/	/जुवाला/
/क्वारा/	/कुवारा/
/क्वार्टर्/	/कुवाटर्/

(vi) बांगरू में मानक हिन्दी के आदि-व्यंजन-गुच्छों के उच्चारण में होने वाली भाषायी बाधाओं के कारण कई बार मानक हिन्दी के सार्थक विरोध भी लुप्त हो जाते हैं, यथा मानक हिन्दी में उपलब्ध /प्रवाह्/ 'प्रवाह' ; /परवाह्/ 'परवाह' का विरोध बांगरू में अभाव हो जाता है और मानक हिन्दी के दोनों भिन्न शब्द बांगरू उच्चारण में एक रूप /परवाह्/ हो जाते हैं। इसी प्रकार मानक हिन्दी /स्थिर्/ 'स्थिर' : /अस्थिर्/ 'अस्थिर' का विरोध भी बांगरू उच्चारण में लुप्त हो जाता है और ये दोनों शब्द /अस्थिर्/ हो जाते हैं।

1.7.2. अन्त्य व्यंजन-गुच्छ

यदि मानक हिन्दी में अन्त्य व्यंजन- गुच्छ के पश्चात् /अ/ की विकल्पता स्वीकार की जाए (देखिए अंक 1.4.1(2)) तो मानक हिन्दी में अन्त्य व्यंजन-गुच्छ होने का प्रश्न ही नहीं होता क्योंकि ऐसी स्थिति में ये व्यंजन-गुच्छ द्विस्वरान्तर्गत व्यंजन-गुच्छ हो जाते हैं। चूंकि प्रस्तुत विश्लेषण में अन्त्य स्थिति में व्यंजन-गुच्छ के पश्चात् स्वनिमीय दृष्टि से /अ/ की सत्ता स्वीकार नहीं की गई है(देखिए अंक 1.4.1.(2), अतः प्रस्तुत विश्लेषण में मानक हिन्दी में अन्त्य व्यंजन-गुच्छों को मान्यता दी गई है।

बांगरू के अन्त्य व्यंजन-गुच्छों की चर्चा करते हुए डा० जगदेवसिंह[1] तथा

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970; पृष्ठ 19

डा० नानकचन्द शर्मा,[1] ने अन्त्य व्यंजन- गुच्छों के रूप में / म्ह् /, / ण्ह् /, तथा / ल्ह् / का उल्लेख भी किया है, परन्तु चूंकि प्रस्तुत विश्लेषण में इन हकार व्यंजनों के महाप्राण रूपों को व्यंजन-गुच्छ न मानकर एकल व्यंजन माना गया है(देखिए-अंक 1.1.2 (क)(2), टिप्पणी 1), अतः प्रस्तुत विश्लेषण में इन अन्त्य व्यंजन-गुच्छों की सत्ता स्वीकार नहीं की जा सकती।

यद्यपि डा० जगदेवसिंह[2] ने बांगरू अन्त्य व्यंजन गुच्छों के अन्तिम सदस्य के रूप में / य् / को मान्यता दी है तथापि प्रस्तुत विश्लेषण में अन्त्य / य् / वाले व्यंजन-गुच्छों को मान्यता नहीं दी जा सकती क्योंकि प्रस्तुत विश्लेषण में / य् / के वितरण के सन्दर्भ में अन्त्य स्थिति में / य् / की सत्ता स्वीकार नहीं की गई है(देखिए -अंक 1.4.2 (7))।

मानक हिन्दी के अन्त्य व्यंजन-गुच्छों के सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत विश्लेषण में ' सत्य ' आदि शब्दों में /त/ की स्वनिमीय दीर्घता भी स्वीकार की गई है (देखिए अंक 1.3.2.), अतः ऐसे शब्दों के दो व्यंजनों के अन्त्य व्यंजन-गुच्छों के रूप में ही स्वनिमित किया गया है, यथा / सत्य/, यद्यपि कुछ विद्वानों[3] ने ऐसे शब्दों में / य् र् व् / के पूर्व वाले व्यंजन की दीर्घता को स्वनिमीय मानते हुए इन्हें अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छों के रूप में अंकित किया है यथा / सत्त्य /।

मानक हिन्दी में अन्त्य स्थिति में द्विव्यंजन -गुच्छों के अतिरिक्त त्रिव्यंजन गुच्छ और चतुर्व्यंजन-गुच्छ भी उपलब्ध होते हैं। बांगरू के अन्त्य व्यंजन-गुच्छों की चर्चा में डा० जगदेवसिंह[4] ने अन्त्य त्रिव्यंजन -गुच्छ को भी स्वीकार किया है। उनके मतानुसार ऐसे गुच्छ का प्रथम सदस्य / म् ण् न् ङ् / में से कोई एक, दूसरा सदस्य / ह् / तथा तीसरा सदस्य / य् / होता है। चूंकि प्रस्तुत विश्लेषण में अन्त्य /य/ को मान्यता नहीं दी गई है (देखिए अंक 1.4.2(7)) तथा / म्ह् ण्ह् न्ह् ल्ह् / को एकल व्यंजन माना गया है

1- शर्मा, नानकचन्द; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास; 1968; पृ० 51

2- जगदेवसिंह; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970; पृष्ठ 9, 19

3- मेहरोत्रा, रमेशचन्द; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970; पृष्ठ 122

4- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970; पृष्ठ 19

(देखिए अंक 1.1.1(क) (2), टिप्पणी 1), अतः बांगरू में अन्त्य त्रिव्यंजन-गुच्छों को मान्यता नहीं दी जा रही है। प्रस्तुत विश्लेषणानुसार बांगरू में अन्त्य स्थिति में केवल द्विव्यंजन गुच्छ ही उपलब्ध होते हैं।

मानक हिन्दी में अन्त्य स्थिति में प्रयुक्त द्विव्यंजन-गुच्छों की अपेक्षा त्रिव्यंजन-गुच्छों में और त्रिव्यंजन-गुच्छों की अपेक्षा चतुर्व्यंजन-गुच्छों में विविधता कम पाई जाती है और प्रयोग भी कम होता है।

मानक हिन्दी में अन्त्य चतुर्व्यंजन गुच्छों को अन्त्य त्रिव्यंजन-गुच्छों का और अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छों को अन्त्य द्विव्यंजन-गुच्छों का विस्तार कहा जा सकता है, यथा / स्वातन्त्र्य/ में प्रयुक्त व्यंजन गुच्छ /-न्त्र्य/ को / स्वतन्त्र् / में प्रयुक्त व्यंजन गुच्छ /-न्त्र् / का विस्तार और /-न्त्र्/ गुच्छ को / सन्त् / में प्रयुक्त / -न्त् / का विस्तार कहा जा सकता है।

अन्त्य चतुर्व्यंजन-गुच्छ:

मानक हिन्दी में अन्त्य चतुर्व्यंजन गुच्छ के रूप में / -न्त्र्य / और /-र्त्स्य /, उदाहरण क्रमशः: / स्वातन्त्र्य / और / मार्त्स्य /, उपलब्ध होते हैं। डा० रमेशचन्द्र महरोत्रा,[1] ने चतुर्व्यंजन गुच्छ के रूप में /-न्स्त्र / और /-न्द्र्द् /, उदाहरण क्रमशः: / पुन्स्त्र / (~ / पुन्स्त्र /) और दन्द्र्द् / (~/ दन्द्र्दा/), भी उद्धृत किये हैं। /-न्स्त्र / और /-न्द्र्द् / दो ऐसे चतुर्व्यंजन गुच्छ हैं जो अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छों के विस्तृत रूप नहीं हैं अर्थात् मानक हिन्दी में अन्त्य स्थिति में /-न्स्त् / और /-न्द्र्द /
व्यंजन गुच्छ उपलब्ध नहीं होते।

मानक हिन्दी के अन्त्य चतुर्व्यंजन गुच्छ वाले शब्दों के तद्नुरूपी बांगरू उच्चारण में स्वर भक्ति का समावेश अवश्यमेव हो जाता है। अन्त्य/ य् / का लोप हो जाता है और यदि अन्त्य / य् / का सप्रयत्न उच्चारण किया जाए तो बांगरू में उसके पश्चात् / ऐ / का आगम हो जाता है। स्वरभक्ति के रूप में / अ / का आगम व्यंजन गुच्छ के दूसरे

1- महरोत्रा, रमेशचन्द्र ; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970 ; पृष्ठ 226

81) सदस्य के पश्चात् अथवा तीसरे सदस्य के पश्चात् होता है यथा

मानक हिन्दी	बांगरू सम्भावित उच्चारण
/ [illegible] /	/ [illegible] /
/ [illegible] /	/ [illegible] /

अन्त्य त्रिव्यंजन-गुच्छ : मानक हिन्दी में प्रयुक्त अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छ का अन्तिम सदस्य, जिसकी सहायता से अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ विस्तृत होकर अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छ बनता है, सदा ही अल्पप्राणी होता है। ऐसे अल्पप्राणी हैं / म्, ण्, ल्, [illegible], र्, व् /। अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छ के अन्तिम सदस्य के रूप में / व् / का प्रयोग सर्वाधिक होता है और / म्, ण् / का प्रयोग केवल एक एक गुच्छ में। / म्, ण् / से बनने वाले अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छ हैं / [illegible] / उदाहरण / [illegible] /, और / [illegible] / उदाहरण / [illegible] /। अन्त्य सदस्य के रूप में / ल् / जिन गुच्छों में प्रयुक्त होता है, वे हैं / [illegible] / उदाहरण / [illegible] /, / [illegible] / उदाहरण / [illegible] /। अन्तिम सदस्य के रूप में / व् / जिन अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छों में प्रयुक्त होता है वे हैं / [illegible] / / [illegible] /, / [illegible] /, उदाहरण क्रमशः / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /। / र् / वाले अन्त्य व्यंजन गुच्छों के उदाहरण हैं – / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] / / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /। / व् / युक्त अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छ वाले शब्दों के उदाहरण हैं / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] / / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /, / [illegible] /।

मानक हिन्दी में कोई भी अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छ तीनों स्पर्श व्यंजनों का नहीं हो सकता। ऐसे गुच्छ में एक स्पर्श व्यंजन अवश्य रहता है जो गुच्छ के प्रथम सदस्य के रूप में प्रयुक्त हो सकता है यथा / [illegible] / उदाहरण / [illegible] / या फिर द्वितीय सदस्य के रूप में भी यथा / [illegible] / उदाहरण / [illegible] /। स्पर्श व्यंजन अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छ के अन्तिम सदस्य के रूप में कभी प्रयुक्त नहीं होता। / [illegible] / में / [illegible] / का ऐसा अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छ देखने में आया है जिसके प्रथम दो सदस्य स्पर्श व्यंजन हैं। दो स्पर्श

केवल /ष/ से पूर्व आ सकते हैं।

मानक हिन्दी के अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छ वाले शब्दों के तदनुरूपी बांगरू उच्चारण में भाषायी बाधाएं उत्पन्न हो जाती हैं। प्रायः, विशेषतया ऐसे अन्त्य त्रिव्यंजन-गुच्छों में जिनका अन्तिम सदस्य / र् / होता है, गुच्छ के दूसरे सदस्य के पश्चात् / अ / का आगम हो जाता है, जैसे :

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/इन्द्र्/	/इन्दर्/
/ मन्त्र्/	/मन्तर्/
/राष्ट्र्/	/राषटर्/
/ वस्त्र्/	/वस्तर्/
/ चिन्द्र्/	/चिन्दर्/

कुछ अन्य अन्त्य त्रिव्यंजन गुच्छों में भी ऐसी ही भाषायी बाधा की सम्भावना रहती है, यथा –

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/ तीक्ष्ण् /	/ तीक्षण्/
/ सूक्ष्म्/	/सूक्षम्/
/ मत्स्य/	/ मतस्य/

मानक हिन्दी के जिन अन्त्य त्रिव्यंजन-गुच्छों का अन्तिम सदस्य/य् / होता है, उनके बांगरू उच्चारण में प्रायः /य/ का लोप हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/कण्ठ्य/	/ कण्ठ/
/ अन्त्य/	/अन्त् /
/ मत्स्य/	/ मत्स् /

यदि बांगरू भाषी अपवाद अन्त्य / य् / का उच्चारण करे तो वह / य् / के पश्चात् बचाने में /इ / का आगम कर बैठता है; यथा

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/ मनुष्य/	/ मनुषे/

यदि मानक हिन्दी में अन्त्य / य् / से पूर्व ऐसे दो व्यंजन हों जो बांगरू में अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ के रूप में प्राप्य न होते हों तो बांगरू उच्चारण में स्वरभक्ति की प्रवृत्ति द्वारा व्यंजन -गुच्छ खंडित हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू
/ मनुष्य /	/ मनख /

अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ: मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अन्त्य स्थिति में द्विव्यंजन-गुच्छ उपलब्ध तो होते हैं परन्तु मानक हिन्दी में इनकी जितनी विविधता एवं प्रयोग बाहुल्य है, उतनी विविधता एवं प्रयोग बाहुल्य बांगरू में नहीं है। हमारे इस कथन का यह भाव नहीं है कि बांगरू में मानक हिन्दी की अपेक्षा कोई नया अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ उपलब्ध नहीं।

बांगरू में निम्नलिखित ऐसे अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ देखने में आए हैं, जिनका मानक हिन्दी में अभाव है। बांगरू के इन व्यंजन-गुच्छों के उदाहरण भी प्रस्तुत हैं :-

/-हर् /[1]	/ बाहर् /	' बाहर '
	/ पीहर् /	' पीहर '
/-ह्ल /[2]	/ कुहल् /	' कुल्ह '
/- हण् /[3]	/ बाहण् /	' बहिन '

बांगरू में उपलब्ध अन्त्य द्विव्यंजन-गुच्छों के सन्दर्भ में डा० जगदेवसिंह[4] ने समस्थानीय नासिक्य तथा स्पर्शों के केवल कुछ व्यंजन-गुच्छों का उल्लेख किया है, यथा / खण्ड/ ' कमाड '; / अन्त् / ' अन्त '। हमारे विश्लेषणानुसार बांगरू में नासिक्य का योग केवल समस्थानीय स्पर्शों से ही नहीं होता बल्कि बांगरू में शब्दान्त में

1-2 मिलाइए - शर्मा, मानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास; 1968; पृष्ठ 151

3. मिलाइए- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970; पृष्ठ 249

4. यथोपरि : पृष्ठ 19

84)

नासिक्य तथा संघर्षी द्विव्यंजन-गुच्छ भी उपलब्ध है, यथा / हन्स् / ` हंस ` ।

मानक हिन्दी में बांगरू के समान अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ के सदस्यों के रूप में समस्थानीय नासिक्य तथा स्पर्श एवं नासिक्य तथा संघर्षी व्यंजनों वाले गुच्छ तो उपलब्ध हैं ही साथ में विभिन्न स्थानीय नासिक्य और स्पर्श का अन्त्य द्विव्यंजन-गुच्छ भी उपलब्ध होता है, यथा अरबी-फारसी का आगत शब्द / जिन्स् / ` जिंस ` । बांगरू में ऐसे अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ का सर्वथा अभाव है ।

मानक हिन्दी में अन्य भी अनेक प्रकार के अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ उपलब्ध हैं जिनका बांगरू में अभाव है । मानक हिन्दी में अन्त्य द्विव्यंजन-गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में / व् र् ल् य् / का बहुत प्रयोग उपलब्ध है यथा / स्वत्व् / , / वक्र्/, / शुक्ल् /, / पद्य् / । अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ के पहले सदस्य के रूप में / र् ल् श् / का प्रयोग होता है यथा / वर्ण् /, / शल्य्/, /तीव्र् / । अन्त्य व्यंजन गुच्छ में स्पर्श तथा स्पर्श, स्पर्श तथा नासिक्य, स्पर्श तथा संघर्षी; नासिक्य तथा नासिक्य, संघर्षी तथा संघर्षी, संघर्षी तथा स्पर्श, संघर्षी तथा नासिक्य आदि अनेक प्रकार के संयोग उपलब्ध हैं, यथा क्रमशः / सप्त् /, / रत्न् /, / टैक्स् /, / निम्न् / , / तख़्त् / , / कष्ट् / / ग्रीष्म् / आदि ।

मानक हिन्दी में उपलब्ध परन्तु बांगरू में अनुपलब्ध अन्त्य द्विव्यंजन-गुच्छ वाले शब्दों का जब बांगरू-भाषी द्वारा उच्चारण किया जाता है, तब स्वरभक्ति, व्यंजन लोप, अन्त्य स्वरागम जैसी विभिन्न भाषायी बाधाएं उत्पन्न हो जाती हैं ।

मानक हिन्दी के अधिकांश अन्त्य द्विव्यंजन-गुच्छों का बांगरू की स्वरभक्ति की प्रवृत्ति के कारण सरलीकरण हो जाता है, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/जिन्स्/	/जिनस/
/शीर्ष्/	/शीरष/
/पूर्व् /	/पूरब /
/वर्ण्/	/वरण/
/मित्र्/	/मितर/
/वक्त /	/वखत/
/शुक्र/	/शुकर/

मानकहिन्दी	बांगरू उच्चारण
/ उम्र्/	/ उमर् /
/ अक़्ल्/	/ अकल् /
/ उज़्र्/	/ उजर् /
/ सब्र्/	/ सबर् /
/ रत्न् /	/ रतन् /
/ पद्म् /	/ पदम् /
/ नक़्ल् /	/ नकल् /
/ जन्म्/	/ जनम् /
/ लफ़्ज़् /	/ लफज़्/

व्यंजन लोप की प्रवृत्ति द्वारा भी मानक हिन्दी के अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छों का बांगरू उच्चारण में सरलीकरण हो जाता है, यथा

मानकहिन्दी	बांगरू
/भाग्य् /	/ भाग् /
/राज्य् /	/ राज् /
/सत्य् /	/ सत् /
/विद्य् /	/ बैद् /
/मुख्य् /	/ मुख् /

मानक हिन्दी में उपलब्ध / भाग्य् / ` किस्मत ` : / भाग् / ` भागना क्रिया `; / मुख्य् / ` बड़ा `: / मुख् / ` शरीर का एक अंग ` आदि का सार्थक विरोध बांगरू में व्यंजन लोप की इस प्रवृत्ति के कारण लुप्त हो जाता है।

मानक हिन्दी में यदि अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ/-र्य् / हो तो बांगरू उच्चारण में शब्द के अन्त में /-ए / का आगम हो जाता है और इस प्रकार मानक हिन्दी का अन्त्य व्यंजन गुच्छ बांगरू में मध्य व्यंजन गुच्छ का रूप धारण कर लेता है।

मानकहिन्दी	बांगरू
/ धार्य्/	/ धार्ये/
/ कार्य्/	/ कार्ये/
/ वीर्य्/	/ वीर्ये/

बांगरू में उपलब्ध स्वरभक्ति की प्रवृत्ति के कारण मानक हिन्दी का अन्त्य द्विव्यंजन गुच्छ खंडित तो हो ही जाता है साथ में कभी कभी मानक हिन्दी में पाया जाने वाला सार्थक भेद भी लुप्त हो जाता है, यथा मानक हिन्दी में / जल्द / ` शीघ्र `: / जलद / ` बादल ` में पाया जाने वाला विरोध बांगरू की स्वरभक्ति की प्रवृत्ति के कारण लुप्त हो जाता है। इन दोनों शब्दों का बांगरू उच्चारण / जलद / ही होगा।

1.7.3. मध्य व्यंजन-गुच्छ

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में द्विस्वरान्तर्गत एकाधिक व्यंजन उपलब्ध होते हैं। डा० जगदेवसिंह[1] के मतानुसार बांगरू में आदि एवं अन्त्य व्यंजन गुच्छों के मुकाबिले में मध्य व्यंजन गुच्छों में अधिक स्वतंत्रता, विविधता तथा प्रयोग बाहुल्य उपलब्ध है। मानक हिन्दी में भी ऐसा ही है।

वैसे तो बांगरू की अपेक्षा मानक हिन्दी में आदि तथा अन्त्य व्यंजन गुच्छों के समान मध्य व्यंजन गुच्छों में भी अधिक विविधता मिलती है परन्तु ऐसा भी देखने में आया है कि बांगरू में उपलब्ध मध्य व्यंजन गुच्छ मानक हिन्दी में अनुपलब्ध है। डा० महावीर सरन जैन मानक हिन्दी के मध्य व्यंजन गुच्छ की चर्चा करते हुए लिखते हैं, ` गुच्छ के दूसरे सदस्य के रूप में जब / ड़ / आता है तो प्रथम सदस्य के रूप में मूर्द्धन्य स्पर्श व्यंजन नहीं आते `,[2] जबकि बांगरू में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है, यथा / कट्ड़ा / ` कटरा `।

कुल मिलाकर मानक हिन्दी की अपेक्षा बांगरू में व्यंजन-गुच्छों के कम प्रयोग की प्रवृत्ति है। इसी कारण मानक हिन्दी में प्रयुक्त मध्यवर्ती त्रिव्यंजन तथा चतुर्व्यंजन गुच्छों को बांगरू उच्चारण में प्रायः स्वर भक्ति के माध्यम से खंडित कर लिया जाता है। ऐसा विशेष रूप से मानक हिन्दी के उन त्रिव्यंजन गुच्छों में होता है जिन में गुच्छ का अन्तिम सदस्य / र् / हो और प्रथम दोनों सदस्य स्पर्श हों या प्रथम सदस्य नासिक्य और दूसरा सदस्य स्पर्श हो, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/ फैक्ट्री /	/ फैकटरी /
/ चिपुराम्/	/ चिगुराम्/

1- डा० जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970, पृष्ठ 19

2- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन ; 1974 ; पृष्ठ 154

87)

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/उत्प्रेक्षा/	/ उतपरेक्षा/
/ अपभ्रंश/	/ अपभरंस/
/ नम्रता/	/नमरता/
/ अभ्युराष्ट्र /	/अभ्म राष्ट्र /

मानक हिन्दी के मध्य त्रिव्यंजन गुच्छ के प्रथम दो सदस्य यदि क्रमशः /क् / तथा / ष/ हों तो तदनुरूपी बांगरू शब्दों के उच्चारण में /-क्ष-/ के स्थान पर /-छ-/ प्रतिस्थापित कर दिया जाता है। इस प्रकार मानक हिन्दी का मध्य त्रिव्यंजन गुच्छ बांगरू में मध्य द्विव्यंजन -गुच्छ का रूप धारण कर लेता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/लक्ष्मण/	/लछमण/
/लक्ष्मी /	/लछमी/

मानक हिन्दी के मध्य त्रिव्यंजन गुच्छ का अन्तिम सदस्य यदि /य्/ हो तो बांगरू के तदनुरूपी शब्द में / य् / का लोप हो जाता है और मानक हिन्दी का मध्य त्रिव्यंजन-गुच्छ बांगरू में मध्य द्विव्यंजन गुच्छ बन जाता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/ईर्ष्या/ ` ईर्ष्या `	/ईरषा/
/ अन्त्येष्टि /	/ अन्तेष्टी/

मानक हिन्दी के चतुर्व्यंजन गुच्छ भी बांगरू उच्चारण में स्वरभक्ति की सहायता से खंडित कर लिये जाते हैं, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू उच्चारण
/अन्त स्फूर्ति/	/अन्तसफिरती/
/अन्तस्स्मृति/	/अन्तसमिरती/

1.8 अक्षर

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अक्षर वह स्वनिम या स्वनिम समुदाय है जो एक आघात या झटके में बोला जाता है, जिसमें एक स्वर का होना अनिवार्य है। उस स्वर के पूर्वांग तथा / या परांग बन कर एक या अनेक व्यंजन आ सकते हैं। दोनों में अक्षर स्वरान्त भी है और व्यंजनान्त भी, दूसरे शब्दों में दोनों में मुक्त अक्षर भी है और बन्द अक्षर भी। दोनों में सभी स्वर अक्षर के शीर्ष के रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं और सभी व्यंजन(तथाकथित अर्द्ध-स्वर/य् व्/सहित) अनाक्षरिक हैं अर्थात् वे अक्षर के शीर्ष के रूप में प्रयुक्त नहीं हो सकते। अक्षर की रचना में स्वर के महत्त्व के कारण व्यंजन को माला के मोतियों से उपमा देते हुए स्वर को माला का वह सूत्र बताया गया है जिसमें मोती पिरोए रहते हैं।[1]

1.8.1. अक्षर सीमा :

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही एकाक्षरी और बहु-अक्षरी दोनों प्रकार के शब्द उपलब्ध होते हैं। एकाक्षरी शब्दों में तो अक्षर विभाजन का प्रश्न ही नहीं होता। बहु अक्षरी शब्द में अक्षर सीमा के बारे में डेनियल जोन्स[2] के अनुसार 'किसी शब्द में कितने अक्षर हैं, यह उस शब्द में मुखरता के आधार पर निश्चित शिखरों से पहचाना जा सकता है, पर यह पहचानना दुष्कर कार्य है कि एक अक्षर कहाँ से आरम्भ हो रहा है और कहाँ समाप्त हो रहा है'। फिर भी यह कहा जा सकता है कि मानक हिन्दी और बांगरू बहुअक्षरी शब्दों में भी अक्षर विभाजन के कारण कोई विशेष कठिनाई उत्पन्न नहीं होती। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में शब्द के मध्य में आन्तरिक संहिता वाले स्थान पर अक्षर सीमा अवश्य होती है, यथा मानक हिन्दी / सु-ज्योति / में / सु / के पश्चात् और बांगरू / बीर् -बाला / में / र् / के पश्चात्। स्वनिम-सीमा अक्षर-सीमा हो भी सकती है, यथा / आओ / में / आ / तथा / ओ / के मध्य स्वनिम सीमा भी है और अक्षर सीमा भी, परन्तु / करो / में स्वनिम सीमा / र् / के पश्चात् है जबकि अक्षर-सीमा / क / के पश्चात्। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही

1- वर्मा, सिद्धेश्वर(अनुवादक- देवीदत्त शर्मा) ; प्राचीन भारतीय वैयाकरणों के ध्वन्यात्मक विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन ; 1973 ; पृष्ठ 68

2- जोन्स, डेनियल ; एन आउटलाइन आफ इंगलिश फ़ोनैटिक्स ; 1976 ; अंक 212, पृष्ठ 55

अक्षर विभाजन अनुमेय है ।

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही बहुअक्षरी शब्द में जितने स्वर होंगे, उतने ही अक्षर होंगे । अक्षर सीमा निरन्तर स्वरों के मध्य में रहती है । शब्द के आदि का व्यंजन या व्यंजन गुच्छ अपने परवर्ती स्वर के साथ अक्षर रचना में भाग लेता है और शब्द की अन्त्य स्थिति में पाया जाने वाला व्यंजन या व्यंजन गुच्छ अपने पूर्ववर्ती स्वर के साथ अक्षर बनाता है ।

स्वर मध्यग अकेला व्यंजन मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अपने परवर्ती स्वर के साथ अक्षर बनाता है, यथा / बात / में स्पर्शव्यंजन / त् / परवर्ती स्वर / आ / के साथ अक्षर बनाता है और इस प्रकार अक्षर-सीमा ऐसे स्वर मध्यग व्यंजन के पूर्व होती है । परन्तु जब बांगरू में स्वर मध्यग व्यंजन स्वनिकीय रूप से दीर्घ होता है (देखिए अंक 1.3.1) तब ऐसे व्यंजन का कुछ आरम्भिक भाग पूर्ववर्ती स्वर के साथ मिल कर उस स्वर से बनने वाले अक्षर को व्यंजनांत बना देता है । मानक हिन्दी में स्वर मध्यग एकल व्यंजन की ऐसी स्वनिकीय दीर्घता उपलब्ध न होने के कारण वह सदा ही परवर्ती स्वर के साथ अक्षर रचना करता है । इस तथ्य को उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है ।

बांगरू	मानकहिन्दी
/ दादा / (दाँद्-दा)	/ दादा/ (दा-दा)
/ मामा / (माँम्-मा)	/ मामा/ (मा-मा)
/ माता / (माँत्-ता)	/ माता/ (मा-ता)

बांगरू में जब ऐसी स्वनिकीय दीर्घता प्राप्त नहीं होती तब मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में समान रूप से अक्षर विभाजन होता है, यथा-

बांगरू	मानकहिन्दी
/ राणा/ (रा-णा)	/राणा/(रा-णा)
/ बाड़ा/ (बा-ड़ा)	/बाड़ा/ (बा-ड़ा)

स्वर मध्यग दो व्यंजनों की स्थिति में मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही अक्षर सीमा व्यंजनों के मध्य में होती है। पहला व्यंजन पूर्ववर्ती स्वर के साथ और दूसरा व्यंजन परवर्ती स्वर के साथ अक्षर बनाता है । परन्तु जब मानक हिन्दी में / य, र, ल, व / में किसी से पूर्व आकर कोई व्यंजन मध्यवर्ती व्यंजन-गुच्छ, न कि व्यंजन-अनुक्रम बनाता हो तो उस व्यंजन में स्वनिकीय आधार पर दीर्घता आ जाती है(देखिए

अंक 1.3.2) और उस दीर्घ व्यंजन का कुछ अंश पूर्ववर्ती स्वर के साथ मिलकर उसको व्यंजनांत अक्षर का रूप प्रदान करता है और गुच्छ के दोनों सदस्य परवर्ती स्वर के साथ अक्षर बनाते हैं,[1] उदाहरणार्थ -

/विद्या/ (विद्-द्या)

/ ब्राह्मण/ (ब्राह्-ह्म् -मण्)

/ अह्लाद्/ (अह्-ह्लाद्)

/विद्वान् / (विद्-द्वान्)

स्वर मध्यग दो से अधिक व्यंजनों की स्थिति में अक्षर सीमा व्यंजनों के मध्य में ही नहीं होती है। डा० आर्येन्द्र शर्मा[2] का मत है कि यह प्रथम व्यंजन के उपरान्त होती है, जबकि हमारे विचार से डा० रमेशचन्द्र मेहरोत्रा[3] का मत अधिक संगत है जिस के अनुसार यह सीमा अन्यत्र मिलने वाले आदि-व्यंजन-गुच्छ और अन्त्य-व्यंजन-गुच्छ के आधार पर निश्चित होती है। डा० मेहरोत्रा की यह बात मानक हिन्दी और बांगरू दोनों पर समान रूप से लागू होती है। मानक हिन्दी में आदि-व्यंजन-गुच्छों और अन्त्य- व्यंजन-गुच्छों में बांगरू की अपेक्षा पर्याप्त विविधता पाई जाती है, इसलिए मानक हिन्दी में मध्यवर्ती व्यंजन गुच्छ का विभाजन बहुत सी परिस्थितियों में वैकल्पिक रूप से पहले व्यंजन अथवा दूसरे व्यंजन के पश्चात् हो सकता है। बांगरू में ऐसा वैकल्पिक अक्षर विभाजन देखने में नहीं आया। उदाहरणार्थ मानक हिन्दी में /-त्प्र-/ व्यंजन गुच्छ, जैसे / उत्प्रेक्षा / में केवल प्रथम व्यंजन और दूसरे व्यंजन के बीच के स्थान

1- मिलाइए- भाटिया, कैलाश चन्द्र ; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा , 2027 वि०, पृष्ठ 78

2- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी ; 1975 ; अंक 45(डी); पृष्ठ 17

3- मेहरोत्रा, रमेशचन्द्र : हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970 ; पृष्ठ 134

पर भी संहिता हो सकता है, यथा- (उत् - पूरेस् -ता), क्योंकि ऐसा करने से / त् / पहले अक्षर का अन्त होगा और / पुर् / दूसरे अक्षर का आदि भाग होगा जोकि मानक हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल है। अकेला / त् / तो / अत् / आदि अनेक शब्दों में अक्षर के अन्त में आता ही है, /पुर् / भी आदि व्यंजन गुच्छ के रूप में / पूरेन / आदि उदाहरणों में उपलब्ध है। यह दूसरे तथा तीसरे व्यंजन के मध्य स्थान पर संहिता नहीं हो सकता क्योंकि ऐसा करने से / तप् / अन्त्य गुच्छ का रूप धारण कर लेंगे जोकि मानक हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं है। मानक हिन्दी में / -तप् / अन्त्य व्यंजन गुच्छ के रूप में उपलब्ध नहीं होता। परन्तु / -त्स्न् - / व्यंजन-गुच्छ, जैसे / कुपोत्स्ना / में, वैकल्पिक रूप से प्रथम और द्वितीय व्यंजनों के बीच के स्थान पर भी और द्वितीय और तृतीय व्यंजनों के बीच के स्थान पर भी संहिता हो सकता है, यथा / कुपोत्स्ना / = (कुपोत्-स्ना) ~ (कुपोत्स्-ना), क्योंकि मानक हिन्दी में / स्न्-/ आदि-व्यंजन-गुच्छ के रूप में उपलब्ध होता है, जैसे / स्नान् / में और /-त्स् / अन्त्य व्यंजन गुच्छ के रूप में, यथा / वत्स् / में।

1.8.2 एकाक्षरी शब्दों के विभिन्न अक्षरी ढांचे -

मानक हिन्दी और बांगरू की अक्षर-संरचना को स्पष्ट करने के लिए दोनों में एकाक्षरी शब्दों के सभी उपलब्ध ढांचे उदाहरण सहित प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ढांचों में केवल खंडात्मक स्वनिमों का उल्लेख किया जा रहा है। अखंडात्मक स्वनिम इन ढांचों में अतिरिक्त स्वनिमों के रूप में आ सकते हैं।

संकेत - (संकेत-सूची पृष्ठ viii)

अ = ह्रस्व स्वर

आ = दीर्घ स्वर

व = व्यंजन

\- = ढांचे का अभाव

अक्षरी ढांचा[1]	मानक हिन्दी उदाहरण	बांगरू उदाहरण
एक स्वनिमीय		
अ	-	-
आ	/आ/	/आ/
द्विस्वनिमीय		
अव	/उग्/	/उग् /
व अ	/न/ 'और'	-
आव	/आप्/	/आप्/
वआ	/ ना/	/ना/
त्रिस्वनिमीय		
अ व व	/अक्ल/	/अक्ल/
व अ व	/कर्/	/कर्/
व व अ	-	-
आ व व	/आम्र्/	-
व आ व	/ मार्/	/मार्/
व व आ	/क्या/	/म्हुँ/

1- मिलाइए-

(i) तिवारी, उदय नारायण ; हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास; 2018 वि०, पृष्ठ 313

(ii) महरोत्रा, रमेशचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी तथा ध्वनिमी; 1970; पृष्ठ 123-124

(iii) भाटिया, कैलाशचन्द्र; हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा ; 2027 वि०; पृष्ठ 83-93

(iv) जैन, महावीर शरण ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन; 1974 ; पृष्ठ 184-185

(v) जगदेवसिंह; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 17-18

(vi) खंडेलवाल, शिवकुमार, बांगरू बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन ; 1980 ; पृष्ठ 63-64

चतुर्स्वनिमीय

अ ह ह ह	/अन्दर् /	-
ह अ ह ह	/सन्दूर /	/सन्दूर /
ह ह अ ह	/मुरग् /	-
ह ह ह अ	-	-
आ ह ह ह	/बिन्दर् /	-
ह आ ह ह	/मात्तु /	/सान्दूर / ` शांत ` /पुयार्/
ह ह आ ह	/पुयार् /	
ह ह ह आ	/सदरी /	-

पंचस्वनिमीय

अ ह ह ह ह	-	-
ह अ ह ह ह	/मन्दल/	-
ह ह अ ह ह	/चलवल् /	-
ह ह ह अ ह	/चमरिल /	-
ह ह ह ह अ	-	-
आ ह ह ह ह	-	-
ह ह आ ह ह	/किन्दर्/	-
ह ह आ ह ह	/चमारुव /	-
ह ह ह आ ह	/चबरीण /	-
ह ह ह ह आ	-	-

षट्स्वनिमीय

अ ह ह ह ह ह	-	-
अअ ह ह ह ह	/मदुवन्द/	-
ह ह अ ह ह ह	-	-
ह ह ह अ ह ह	/एपूरिवट/	-
ह ह ह ह अ ह	-	-
ह ह ह ह ह अ	-	-

आ अ अ अ अ अ	-	-
अ आ अ अ अ अ	-	-
अ अ आ अ अ अ	/[illegible]/	-
अ अ अ आ अ अ	/[illegible]/	-
अ अ अ अ आ अ	-	-
अ अ अ अ अ आ		

मानक हिन्दी और बांगरू में उपलब्ध एकाक्षरी शब्दों के विभिन्न ढाँचों के विश्लेषण से कुछ रोचक तथ्य सामने आते हैं:-

(i) मानक हिन्दी में छः खंडीय ध्वनियों तक के अक्षर उपलब्ध हैं, जबकि बांगरू में केवल चार खंडीय ध्वनियों तक के अक्षर उपलब्ध हैं ।

(ii) मानक हिन्दी में अक्षर के आरम्भ में द्विव्यंजन गुच्छों के अलावा त्रिव्यंजन गुच्छ भी उपलब्ध होते हैं, जबकि बांगरू में अक्षर के आदि में केवल द्विव्यंजन गुच्छ ही आ सकता है ।

(iii) मानक हिन्दी में अक्षर के अन्त में दो व्यंजनों के गुच्छ के अलावा तीन व्यंजनों और चार व्यंजनों के गुच्छ भी उपलब्ध होते हैं, जबकि बांगरू में अक्षरांत स्थिति में केवल दो व्यंजनों का गुच्छ ही प्राप्त हो सकता है ।

(iv) मानक हिन्दी में अक्षर के आदि का व्यंजन-गुच्छ दीर्घ स्वर और ह्रस्व स्वर दोनों के पूर्व आ सकता है, जबकि बांगरू में अक्षर के आदि का व्यंजन गुच्छ केवल दीर्घ स्वर के पूर्व ही आ सकता है ।

(v) मानक हिन्दी में स्वरांत अक्षर वाला एकाक्षरी शब्द ह्रस्व स्वर में समाप्त हो सकता है जबकि बांगरू में नहीं (देखिए अंक 1.4.1) ।

1.8.3. बहु अक्षरी शब्दों के अक्षरी ढाँचे :

एकाक्षरी शब्दों में अक्षर के जो-जो ढाँचे अनुपलब्ध हैं, वे बहुअक्षरी शब्दों के अन्तिम अक्षर में भी अनुपलब्ध हैं, जैसे मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में कोई अकेला ह्रस्व स्वर एकाक्षरी शब्द नहीं आता इसलिये किसी बहुअक्षरी शब्द का अन्त्य अक्षर भी अकेले ह्रस्व स्वर वाला नहीं हो सकता ।

अक्षर के कुछ ढाँचे जो एकाक्षरी शब्दों में अनुपलब्ध हैं वे बहुअक्षरी शब्दों के अनन्तिम अक्षर में उपलब्ध हो सकते हैं। मानक हिन्दी के एकाक्षरी शब्दों में एक - स्वनिमीय, त्रिस्वनिमीय और चतुर्स्वनिमीय अक्षरों के सभी सम्भव ढाँचों में एक एक ढाँचे नामत: `अ`, `सस` तथा `स स स अ` का अभाव है परन्तु ये सभी ढाँचे बहु अक्षरी शब्दों के अनन्तिम अक्षर में उपलब्ध हो सकते हैं, यथा `अ` ढाँचा / [illegible] /, / गाअर / शब्दों में ; `स स अ` ढाँचा / कृष्ण / शब्द में ; `स स स अ` ढाँचा / स्त्रियों / शब्द में उपलब्ध हो जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मानक हिन्दी में चार स्वनिमों तक के अक्षरों में सभी सम्भव ढाँचे उपलब्ध हैं, जबकि बांगरू में चार स्वनिमों युक्त के अक्षरों के जो ढाँचे एकाक्षरी शब्द में अनुपलब्ध हैं उन में से केवल `अ` तथा `सअ` ढाँचे ही बहु अक्षरी शब्दों के अनन्तिम अक्षर में उपलब्ध होते हैं, यथा `अ` ढाँचा / गाअर / में, और `स अ` ढाँचा / करा / में उपलब्ध होता है। बांगरू के बहु अक्षरी शब्दों के अनन्तिम अक्षरों में भी `ससअ`, `अससस`, `ससअस` तथा `सससअ` ढाँचे उपलब्ध नहीं होते।

1.9 बलाघात

1.9.1. सार्थक बलाघात शब्द स्तर पर ही-

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सार्थक बलाघात की सत्ता शब्द स्तर[1] पर है अर्थात् वाक्य में किसी शब्द पर बलाघात का स्वनिम होने या न होने से तो अर्थ भेद हो जाता है परन्तु शब्द में किसी अक्षर पर बलाघात कम है या अधिक, इस बात से अन्तर नहीं पड़ता। वैसे डा० रमेशचन्द्र महरोत्रा, के अनुसार, " हिन्दी में ऐसा भी होता है, भले ही अपेक्षाकृत बहुत कम बार, कि बलाघात का अन्तर ही शाब्दिक इकाइयों का कोशगत अर्थ बदलने वाला बन जाता है, उदाहरणार्थ हम बलाघात के साथ / मना / 'मना का अर्थ होता है `मना करना` और `मना(ना)` भी, लेकिन /'मना / `पका

1- मिलाइए (i) महरोत्रा, रमेशचन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी ; 1970; पृष्ठ 242

(ii) जगदेवसिंह, ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970, पृष्ठ 12

96)

के लिए है, जबकि /म'ना / का अर्थ ` ( म0 पु0 एक0 बलपूर्वक आज्ञा0) मना ` है ।[1]
डा0 विद्या भास्कर अरुण[2] ने भी शब्द के विभिन्न अक्षरों पर बलाघात की विभिन्नता को सार्थक बताते हुए //'गला / ` कंठ ` : / ग'ला / ` पिघलाना का आज्ञार्थक मध्यम पुरुष एक वचन ` तथा //'घटा / ` घने बादल ` : /घ'टा / ` घटाना का आज्ञार्थक मध्यम पुरुष एक वचन ` भेदक-युग्म उद्धृत किए हैं । डा0 डी0 डी0 शर्मा[3] ने हिन्दी में ऐसी परिस्थिति में भी बलाघात के कारण पाए जाने वाले भेद को अनुमेय बताया है । उन के मतानुसार आज्ञार्थक मध्य पुरुष की परिस्थिति में ही ऐसा अन्तर उपलब्ध है । प्रस्तुत विश्लेषण में हम भी मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अक्षर स्वर पर पाए जाने वाले बलाघात को भेदक नहीं मान रहे हैं ।

1.9.2. अक्षर स्वर पर बलाघात अनुमेय :-

सामान्यतः शब्द में केवल एक अक्षर पर ही बलाघात होता है और मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही यह अनुमेय होता है । शब्द के विभिन्न अक्षरों में से किस अक्षर पर अनुमेय बलाघात होगा, इस सम्बन्ध में विद्वानों[4] द्वारा जो विचार मानक हिन्दी के बारे में प्रकट किये गये हैं, वे ही बांगरू के अनुमेय बलाघात पर भी लागू होते हैं ।

1.9.3. अक्षर स्तरीय बलाघात का प्रभाव

मानक हिन्दी की अपेक्षा बांगरू में अनुमेय बलाघात अपेक्षाकृत सबल होता है । बांगरू में ऐसी सबलता के कारण बलाघातित अक्षर का स्वरूप मानक हिन्दी के तद्रूपी अक्षर की अपेक्षा कुछ भारी हो जाता है और बलाघातित अक्षर से पूर्ववर्ती अक्षर का स्वरूप मानक हिन्दी की अपेक्षा कुछ हल्का हो जाता है ।

1- मल्होत्रा, रवीन्द्र; हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी; 1970; पृष्ठ 224

2- भास्कर, विद्या अरुण ; ए कम्पैरेटिव फोनोलाजी आव हिन्दी एंड पंजाबी ; 1961, पृष्ठ 21

3- शर्मा, डी0डी0; सिलेबिक स्ट्रक्चर आव हिन्दी एंड पंजाबी; 1971; पृष्ठ 143

4- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी; 1975 ;पृष्ठ 17-18

अनुमेय बलाघात के फलस्वरूप बांगरू शब्द के स्वरूप में कुछ विभिन्नता आ जाती है और वह अपने अनुरूपी मानक हिन्दी शब्द से भिन्न रूप धारण कर लेता है। ऐसी कुछ विभिन्नताएं निम्न लिखित अनुसार हैं -

(1) मानक हिन्दी में यदि बलाघातित अक्षर मुक्त है तो बांगरू में वह स्वनिकीय रूप से बन्द अक्षर का रूप धारण कर सकता है,[1] यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/मोटा/ (मो-टा)	/मोटा/ (मोट्-टा)

(विस्तार तथा अपवादों के लिये देखिए अंक 1.3.1) ।

(2) मानक हिन्दी का ह्रस्व स्वर वाला बलाघातित अक्षर बांगरू में दीर्घ स्वर वाला अक्षर हो जाता है,यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/बगुला/	/बागुला/
/लकड़ी/	/लाकड़ी /
/ककड़ी/	/काकड़ी/
/चिकना/	/चीकणा/
/चिकनी/	/चीकणी/
/कठपुतली/	/कठपूतली/

(3) मानक हिन्दी का बलाघात रहित बन्द अक्षर बांगरू में मुक्त अक्षर का रूप धारण कर लेता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/मदद/	/मदद /
/ मज़दूर /	/मजूर/

---

1. मिलाइए- शर्मा, डी०डी० ; लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर आफ हिन्दी एंड पंजाबी ; 1971 ; अंक 9.12.1, पृष्ठ 151

(4) मानक हिन्दी का बलाघात रहित अक्षर यदि दीर्घ स्वर वाला मुक्त अक्षर हो तो तदनुरूपी बांगरू अक्षर में स्वर का ह्रस्वीकरण हो जाता है।[1] ऐसे ह्रस्वीकरण में मानक हिन्दी के / आ ऐ / बांगरू में / अ /; मानक हिन्दी के / ई ए / बांगरू में / इ /, मानक हिन्दी के / ऊ ओ औ / बांगरू में / उ / रूप धारण कर लेते हैं, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/बाज़ार्/	/बज़ार्/
/मामूली/	/ममूली/
/मैदान्/	/मदान्/
/शैतान्/	/शतान्/
/बीमार्/	/बिमार्/
/ईसाई/	/इसाई/
/बेचारा/	/बिचारा/
/तूफान्/	/तुफान्/
/दोबारा/	/दुबारा/
/चौख्तर्/	/चुख्तर्/

(5) मानक हिन्दी में बलाघातित अक्षर से पूर्ववर्ती अक्षर यदि केवल ह्रस्व स्वर हो तो बांगरू उच्चारण में ऐसे बलाघात रहित अक्षर का लोप हो जाता है।[2] इसी के अनुसार बांगरू में आदि-स्वर-लोप की व्यापक प्रवृत्ति है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/अनाज्/	/नाज्/
/अमीर्/	/मीर्/

1- मिलाइए- शर्मा, डी०डी० ; सिलेबिक स्ट्रक्चर आव हिन्दी एंड पंजाबी ; 1971 ; अंक 9.15.1.1, पृष्ठ 153

2- मिलाइए- बाहरी, हरदेव; लहन्दी फोनेटिक्स ;1962 ; पृष्ठ 13

मानक हिन्दी	बांगरू
/अमावस/	/मावस/
/इकट्ठा/	/कट्ठा/
/इक्यावन/	/क्यावन/
/इक्यासी/	/क्यासी/
/इक्यानवे/	/क्यानवे/
/उठा/	/ठा/
/उधार/	/धार/

(6) मानक हिन्दी में यदि शब्द का आक्षरिक ढांचा ` [illegible] ` है मानक हिन्दी में सामान्य नियमानुसार[1] तीसरा अक्षर बलाघातित होगा। मानक हिन्दी के ऐसे बलाघातित अक्षर के पूर्ववर्ती अक्षर पर बलाघात के अभाव के कारण बांगरू उच्चारण में उपर्युक्त ढांचे के दूसरे अक्षर के शीर्ष का लोप हो जाता है और बांगरू में शब्द त्रि-अक्षरी के स्थान पर द्वि-अक्षरी हो जाता है[2], यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/गिरिजा/	/गिर्जा/
/नलिनी/	/नल्नी/
/जमुना/	/जम्ना/
/मथुरा/	/मथ्रा/
/जनता/	/जन्ता/

उपर्युक्त बांगरू शब्दों में आक्षरिक ढांचा ` [illegible] ` हो जाता है और इस कारण सामान्य नियमानुसार बलाघात प्रथम बन्द अक्षर पर हो जाता है, जबकि मानक हिन्दी में बलाघात अन्तिम मुक्त अक्षर पर है।

(7) बांगरू में जब बलाघात युक्त अक्षर के पूर्ववर्ती अक्षर के शीर्ष के रूप ।

1- शर्मा, आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी; 1975 ; पृष्ठ 17

2- मिलाइए- शर्मा, डी०डी० ; सिलेबिक स्ट्रक्चर आफ हिन्दी ऐंड पंजाबी ; 1971 ; अंक 9.15.2.1 ; पृष्ठ 154

/इ उ/ प्रयुक्त हुए हों तो अक्षर-शीर्ष का केन्द्रीयकरण हो जाता है[1] और ऐसे केन्द्रीयकृत /इ उ/ का प्राय: /अ/ से विरोध भी लुप्त हो जाता है, यथा

/कसाई/ (कंसाई) ~ /असाई/ ‘ कसाई ’
/बिमार्/ (बिंमार) ~ /बमार्/ ‘ बीमार् ’
/तुफान्/ (तुंफान्) ~ /तफान्/ ‘ तूफान ’

(२) मानक हिन्दी में यदि शब्द का अक्षरी ढांचा ‘ [illegible] ’ हो और द्वितीय अक्षर का शीर्ष /इ/ अथवा /उ/ हो तो बांगरू में मानक हिन्दी के समान बलाघात प्रथम अक्षर पर होता है और बलाघातित अक्षर के परवर्ती अक्षर का शीर्ष /इ उ/ के स्थान पर /अ/ हो जाता है, यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू
/मालिन्/	/मालण्/
/मालिक्/	/मालक्/
/कातिक्/	/कातक्/
/दाड़िम्/	/दाडम्/
/चाकुर्/	/चाकण्/
/ठाकुर्/	/ठाकर्/
/गोकुल्/	/गोकल्/
/मानुष्/	/माणष्/

1.10 अनुनासिकता

अनुनासिकता के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में पाई जाने वाली स्वनिमीय तथा वितरण सम्बन्धी विभिन्नताओं का उल्लेख पहले किया जा चुका है (देखिए अंक 1.3.5 तथा अंक 1.4.3) ।

1.10.1 मानक हिन्दी की स्वनिमीय अनुनासिकता की परिस्थिति विशेष में बांगरू में स्वनिमीय अनुनासिकता:

यहाँ एक ऐसी रोचक परिस्थिति का उल्लेख किया जा रहा है जिसमें उपलब्ध

1- मिलाहर- आर्, डी०डी० ; फिलोलिक स्ट्रक्चर आफ हिन्दी ऐंड पंजाबी , 1971 ; अंक 9.15.1.3 ; पृष्ठ 154

101)

अनुनासिकता मानक हिन्दी में सर्वदा स्वनिमीय होती है जबकि बांगरू में स्वनिमीय भी हो सकती है। डा० महावीर सरन जैन[1] ने मानक हिन्दी की स्वनिमीय अनु-नासिकता की विभिन्न परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए ऐसी एक परिस्थिति शब्द के अन्त में नासिक्य व्यंजन के पश्चात् की बताई है,यथा-

/ काना/ (कानाँ)

/ क्या / (क्याँ)

इस प्रकार डा० जैन के विश्लेषणानुसार उक्त परिस्थिति में स्वनिमीय अनुनासिकता का अभाव है, जबकि डा० जगदेव सिंह[2] ने ऐसी स्थिति में स्वनिमीय अनुनासिकता के उदाहरण के रूप में

/ ना/ ` नाव ` : / नाँ / ` नाम `

का व्यतिरेकी युग्म दिया है।

1.10.2. मानक हिन्दी अनुनासिकता के स्थान पर बांगरू नासिक्य व्यंजन

डा० आर्येन्द्र शर्मा[3] के मतानुसार मानक हिन्दी में दूसरी भाषाओं के आगत शब्दों के सिवाय मानक हिन्दी में दीर्घ स्वर के पश्चात् अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिक का ही प्रयोग होता है जबकि बांगरू में दीर्घ स्वर के साथ ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/ ऊँची/	/ ऊन्ची/
/ काँटा/	/ काण्टा/
/ ताँबा/	/ ताम्बा/
/ काँची/	/ कान्ची/

—०—

1- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन ;1974; पृष्ठ 88

2- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू; 1970 ; पृष्ठ 12

3- शर्मा ,आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी; 1975 ; पृष्ठ 16

2. रूपस्वनप्रक्रिया

2.1 स्वनिम का लोप

2.2 स्वनिम का आगम

2.3 स्वनिम का परिवर्तन

४. रूपस्वनप्रक्रिया

जब एकाधिक रूपिम साथ जुड़ते हैं तब विभिन्न रूपप्रक्रियाओं के फलस्वरूप कुछ रूपिमों के परिवर्त उपलब्ध होते हैं। कुछ परिवर्त स्वनिमाश्रित होते हैं और कुछ रूपिमाश्रित। परिवर्तों में स्वनिमों का लोप, आगम और परिवर्तन हो जाता है। मानक हिन्दी और बांगरू में रूपस्वनप्रक्रिया सम्बन्धी बहुत सी विभिन्नताएं उपलब्ध होती हैं।

४.१. स्वनिम का लोप

४.१.१ /-अ-/ का लोप: (1) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ` [illegible] ` अक्षरी ढांचे के शब्द में यदि अन्त्य अक्षर का शीर्ष / अ / हो और ऐसे शब्द के साथ परप्रत्यय के रूप में स्वर जोड़ा जाए तो प्रातिपदिक के अन्त्य अक्षर का शीर्ष लुप्त हो जाता है, यथा मानक हिन्दी / कमल्-/ + /-ओं / → /कम्लों / ; बांगरू / करम्-/ + /-आँ / → / कर्माँ / । इस प्रकार / कमल् / तथा/करम् / के बद्ध परिवर्त क्रमशः /कम्ल् / तथा / कर्म् / उपलब्ध होते हैं। यहां परिवर्तों में स्वनिम का लोप हुआ है। ये परिवर्त स्वनिमाश्रित हैं। यदि मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में शब्द का अक्षरी ढांचा ` [illegible] ` हो तो अन्त्य अक्षर के शीर्ष / अ / का लोप नहीं होता, यथा मानक हिन्दी / बरतन्-/ + /-ओं / → / बरतनों / ; बांगरू / बरतण्-/ + /-आँ/ → / बरतणाँ / ।

बांगरू में यदि शब्द का अक्षरी ढांचा ` [illegible] ` हो और आदि अक्षर का शीर्ष / अ / हो तो ऐसे शब्द के साथ ह्रस्व स्वरान्त पूर्वप्रत्यय लगाए जाने पर प्रातिपदिक के आदि अक्षर का /अ/ लुप्त हो जाता है, यथा / कु-/ + /-करम् / --> / कुक्रम् / ।[1] इस प्रकार बांगरू में / करम् / का बद्ध परिवर्त / क्रम् / भी उपलब्ध होता है। मानक हिन्दी में प्रातिपदिक के आदि अक्षर के / अ / के लोप की प्रवृत्ति का अभाव है।

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 25

103

बांगरू में भी यदि पूर्वप्रत्यय दीर्घस्वरान्त है तो प्रातिपादिक के आदि अक्षर का /अ/ लुप्त नहीं होता यथा /बे/ + सरम् /→/ बेसरम् ।

(2) बांगरू में जब /जा/ धातु से बने भूतकालिक कृदन्त /गया/ का प्रयोग मुख्य क्रिया के रूप में न होकर संयुक्त क्रिया में गौण क्रिया के रूप में होता है तब /गया/ के आदि अक्षर के शीर्ष /अ/ का लोप हो जाता है और इस प्रकार /ग्या/ परिवर्त उपलब्ध होता है, यथा /कर् ग्या/, /डर् ग्या/, /हट् ग्या/ आदि । मानक हिन्दी में ऐसे स्वनिम लोप की प्रवृत्ति का अभाव है । मानक हिन्दी में गौण क्रिया के रूप में प्रयुक्त होने पर भी /गया/ के आदि अक्षर का शीर्ष /अ/ बना रहता है, यथा /कट् गया/, /डर् गया/, /हट् गया/ आदि ।

2.1.2. /ले/ तथा /दे/ धातुओं के /ए/ का लोप

मानक हिन्दी में /ले/ तथा /दे/ धातुओं के साथ जब /-ऊँ, -ओ, -ए, -एँ/ परप्रत्यय जोड़े जाते हैं तब इन धातुओं के स्वर /ए/ का लोप हो जाता है और इस प्रकार इन के रूपिमाश्रित परिवर्त क्रमशः /ल्/ तथा /द्/ उपलब्ध होते हैं, यथा

/ले/ + /ऊँ/ → /लूँ/
/ले/ + /ओ/ → /लो/
/ले/ + /ए/ → /ले/
/ले/ + /एँ/ → /लें/
/दे/ + /ऊँ/ → /दूँ/
/दे/ + /ओ/ → /दो/
/दे/ + /ए/ → /दे/
/दे/ + /एँ/ → /दें/

जबकि बांगरू में[1] /ले/ तथा /दे/ के क्रमशः

1- मिलाइए- जगदेवसिंह, ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू; 1970; पृष्ठ 27

104)

/ स्यू / तथा / द्यू / परिवर्त उपलब्ध होते हैं ; यथा

/से/ + /ऊँ/ → /स्यूँ/

/से/ + /ओ/ → /स्यो/

/से/ + /ऐ/ → /स्यै/

/से/ + /आँ/ → /स्याँ/

/दे/ + /ऊँ/ → /द्यूँ/

/दे/ + /ओ/ → /द्यो/

/दे/ + /ऐ/ → /द्यै/

/दे/ + /आँ/ → /द्याँ/

2.1.3 भूतकालिक कृदन्त में / ई / का लोप

मानक हिन्दी में जब ईकारान्त धातुओं के साथ भूतकालिक कृदन्त का स्त्रीलिंग परप्रत्यय / -ई / लगाया जाता है तब / ई / तथा/ई/ के योग में एक / ई / लुप्त हो जाता है जबकि बांगरू में ऐसा लोप नहीं होता, यथा

मानक हिन्दी	बांगरू
/पी/ + /ई/ → /पी/	/पी/ + /ई/ → /पीई/
/सी/ + /ई/ → /सी/	- - - -
/जी/ + /ई/ → /जी/	/जी/ + /ई/ → /जीई/

2.1.4 द्वित्व व्यंजन का ह्रस्वीकरण

(1) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में रूपिमाश्रित परिवर्तन के रूप में द्वित्व व्यंजन के ह्रस्वीकरण का उदाहरण / [illegible] / + / ई / → /[illegible]/ उपलब्ध है ; परन्तु मानक हिन्दी में स्वनिमाश्रित परिवर्तन के रूप में द्वित्व व्यंजन के ह्रस्वीकरण के उदाहरण उपलब्ध नहीं, जबकि बांगरू में ऐसा ह्रस्वीकरण उपलब्ध होता है। जैसेकि पहले उल्लेख किया गया है(देखिए अंक 1.6.3(3)) बांगरू में द्वित्वव्यंजन के ह्रस्वीकरण के साथ साथ द्वित्वव्यंजन के परवर्ती ह्रस्व स्वर / अ / का भी लोप हो जाता है। ऐसा ह्रस्वीकरण तब होता है जब ` xxxxxx ` अक्षरी रचि के शब्द में बलात् दीर्घों के मध्य-

यहाँ द्वित्व-व्यंजन हो, अन्त्य अक्षर का शीर्ष / अ / हो और प्रत्यय के रूप में कोई स्वर जोड़ा जाए, जैसे -

मानक हिन्दी	बांगरू
/ टक्कर / + / ओं / → / टक्करों /	/ टक्कर / + / आँ / → / टक्राँ /

इस प्रकार {टक्कर} रूपिम का मानक हिन्दी में एक ही उपरूप / टक्कर् / उपलब्ध है, जबकि बांगरू में / टक्कर् / तथा / टक्र् / दो उपरूप उपलब्ध हैं, जिन में / टक्र् / बद्ध उपरूप है।

(२) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही प्रातिपदिक के अन्त में जो व्यंजन हो यदि परप्रत्यय के आदि में भी वही व्यंजन हो तो एक व्यंजन का लोप हो जाता है यथा / नाक् / + / कटा / → /नकटा/, / खरीद् / + / दार् / → / खरीदार् / । बांगरू में पूर्वप्रत्यय के सन्दर्भ में भी ऐसी ही परिस्थिति होने पर अर्थात् पूर्वप्रत्यय के अन्त में जो व्यंजन हो वही व्यंजन प्रातिपदिक के आरम्भ में भी होने पर एक व्यंजन का लोप हो जाता है, यथा / सक् / + / कड़िया / → / सकड़िया / जबकि मानक हिन्दी में पूर्वप्रत्यय के योग के कारण ऐसे व्यंजन लोप का उदाहरण उपलब्ध नहीं होता।

२.1.5. / ह / का लोप

(1) मानक हिन्दी में जब / यह्, वह् ; इह् , उह् / सर्वनामों के साथ बलात्मक निपात / ही / का योग होता है तब बलात्मक निपात के / ह् / का लोप हो जाता है, जबकि बांगरू में बलात्मक निपात / ए / है जिसके योग के कारण इस प्रकार परप्रत्यय के व्यंजन-लोप का प्रश्न ही नहीं उठता, यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू
/यह्/ + /ही/ → /यही/	योह् - ए /योहे/
/वह्/ + /ही/ → /वही/	वोह् - ए /वोहे/
/इह्/ + /ही/ → /इही/	इह् - ए /इहे/
/उह्/ + /ही/ → /उही/	उह् - ए /उहे/

(२) मानक हिन्दी में / यहाँ, वहाँ / क्रिया-विशेषणों के साथ जब बलात्मक निपात / ही / का योग होता है तब क्रियाविशेषण का / आ / तथा बलात्मक निपात

का हकार लुप्त हो जाते हैं और क्रियाविशेषण के अन्त्य स्वर की अनुनासिकता स्थानान्तरित होकर बलात्मक निपात की / ई / के साथ हो जाती है, जबकि बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति लागू नहीं होती-

मानक हिन्दी	बांगरू	
/यहाँ/ +/ही/ → /यहीं/	इड़ै-ए	/इड़ै ए/
/वहाँ/ +/ही/ → /वहीं/	ओड़ै-ए	/ओड़ै ए/

2.2 स्वनिम का आगम

2.2.1 सरल व्यंजन का द्वित्वीकरण:

(1) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में यदि पूर्ववर्ती शब्द या उसका परिवर्त अकारान्त हो और उत्तरवर्ती शब्द के आरम्भ में सरल व्यंजन हो तो दोनों का योग होने पर उत्तरवर्ती शब्द के आदि व्यंजन का द्वित्व हो जाता है यथा दोनों में / स/ + / वीर् / = / सव्वीर् / ।

कई बार ऐसा भी होता है कि मानक हिन्दी में पूर्व शब्द का परिवर्त व्यंजनांत होने के कारण इस प्रकार व्यंजन का द्वित्व नहीं होता, जबकि बांगरू में पूर्व शब्द का परिवर्त अकारान्त होने के कारण व्यंजन का ऐसा द्वित्वीकरण उपलब्ध होता है, यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू
/उन्/ + /वीर्/ → /उन्वीर/	/उन/ + /वीर/ → /उनव्वीर/
/ इन्/ + /वीर/ → /इन्वीर/	/ इन/ + /वीर/ → /इनव्वीर/

(2) डा० जगदेवसिंह[1] के अनुसार बांगरू में यदि प्रातिपादिक के अन्त्य व्यंजन के पूर्व ह्रस्व स्वर हो और उसके साथ /-या, -यैं, -आँ, - ऊँ, - ईं, - ऊ, - आ, - ई, - अण्-ओ / परप्रत्यय लगाए जाएं तो प्रातिपादिक के अन्त्य व्यंजन का द्वित्व हो जाता है

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 27

डा० जगदेवसिंह[1] ने अपने मत के समर्थन में बांगरू के निम्न लिखित उदाहरण दिए हैं -

/कट/ + /-ऐ/ → /कट्टै/

/मिल/+ /-ऊँ/ → /मिल्लूँ/

/मुक/ + /ओं/ → /मुक्कों/

/ पढ/+ /ऊ/ → / पढ्ढू/

/नाच/+ /ऊ/ → / नच्चू/

/नद/ + /ई/ → /नद्दी/

/खोद/+ /आ/ → /खुद्दा/

/ठग/ + /अण/ → /ठग्गण/

/छिक/+ /या/ → /छिक्क्या/

/दख/ + /ऐं/ → /दक्खैं/

/बात/+ /ओ/ → /बत्तो/

परन्तु हमारे विश्लेषणानुसार बांगरू में भी अन्त्य व्यंजन के द्वित्व का क्षेत्र इतना व्यापक नहीं है जितना कि डा० जगदेव सिंह द्वारा उपर्युक्त उदाहरणों में बताया गया है। हमारे मतानुसार एक ओर जहां / पढ्ढू /, /नच्चू /, / ठग्गण / , / बत्तो / आदि में प्रातिपदिक के अन्त्य व्यंजन का द्वित्व उपलब्ध है वहां दूसरी ओर प्राति-पादिक के अन्त्य व्यंजन के द्वित्व के बिना भी / कटै /, /मिलूं /, / नदी / आदि रूप प्रचलित हैं।

2.2.2. विभिन्न व्यंजनों का आगम-

मानक हिन्दी और बांगरू में विभिन्न रूपस्वनप्रक्रियाओं के फलस्वरूप विभिन्न व्यंजनों का आगम हो जाता है। इस सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में निम्नलिखित नियमों के अनुसार भिन्नता उपलब्ध होती है -

(1) बांगरू में व्यंजनांत धातु के साथ भूतकालिक कृदन्त का परप्रत्यय /-आ/ का योग होने पर /य/ का आगम हो जाता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा नहीं होता, यथा -

---

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 27-2

106)

मानक हिन्दी	बाँगरू
/मर्/ + /आ/ → /मरा/	/मर्/ + /आ/ → /मर्या/
/डर्/ + /आ/ → /डरा/	/डर्/ + /आ/ → /डर्या/
/घट्/ + /आ/ → /घटा/	/घट्/ + /आ/ → /घट्या/
/तोड़्/+ /आ/ → /तोड़ा/	/तोड़्/ + /आ/ → /तोड़्या/
/काट्/+ /आ/ → /काटा/	/काट्/ + /आ/ → /काट्या/

(2) बाँगरू में 'घोड़ा' वर्ग की आकारान्त संज्ञाओं के साथ जब बहुवचन का परप्रत्यय /-आँ/ लगाया जाता है तब /य्/ का आगम हो जाता है जबकि मानक हिन्दी में अनुरूपी परप्रत्यय /-ओं/ लगाया जाने पर /य्/ का आगम नहीं होता, यथा —

मानक हिन्दी	बाँगरू
/घोड़ा/ + /ओं/ → /घोड़ों/	/घोड़ा/ + /आँ/ → /घोड़्याँ/
/गधा/ + /ओं/ → /गधों/	/गधा/ + /आँ/ → /गध्याँ/
/लोटा/ + /ओं/ → /लोटों/	/लोटा/ + /आँ/ → /लोट्याँ/

(3) बाँगरू में हकारान्त से भिन्न अन्य सभी व्यंजनांत धातुओं के साथ वर्तमान-कालिक कृदन्त के लिये /-दा/ परप्रत्यय लगाया जाता है, यथा /मर्दा/, /डर्दा/; परन्तु जब स्वरान्त धातु या हकारान्त धातु के साथ यह परप्रत्यय लगाया जाता है तब /न्/ का आगम हो जाता है, जबकि मानक हिन्दी में वर्तमानकालिक कृदन्त के परप्रत्यय /ता/ के योग के समय किसी व्यंजन के आगम की प्रवृत्ति नहीं है, यथा —

मानक हिन्दी	बाँगरू
/आता/	/आ/ + /दा/ → /आन्दा/
/खाता/	/खा/ + /दा/ → /खान्दा/
/पीता/	/पी/ + /दा/ → /पीन्दा/
/जीता/	/जी/ + /दा/ → /जीन्दा/
/छूता/	/छु/ + /दा/ → /छुन्दा/
/देता/	/दे/ + /दा/ → /देन्दा/
/लेता/	/ले/ + /दा/ → /लेन्दा/

(109)

/ सोता/ /सो/ + /दा/ → /सोन्दा/

/ बहता/ /बह/ + /दा/ → /बहन्दा/

/सहता/ /सह/ + /दा/ → /सहन्दा/

(4) बांगरू में अकारान्त से भिन्न अन्य व्यंजनान्त धातुओं के साथ सम्भाव्य भविष्यत काल के रूप बनाने के लिये /-रे,-रें -आँ / परप्रत्ययों का प्रयोग होता है परन्तु जब इन परप्रत्ययों का प्रयोग आकारान्त तथा ओकारान्त धातुओं के साथ होता है तब /व/ का आगम हो जाता है, जबकि मानक हिन्दी में इन धातुओं के साथ जब अनुरूपी परप्रत्यय लगाए जाते हैं तब ऐसा व्यंजन-आगम नहीं होता, यथा—

	मानक हिन्दी		बांगरू
	खा-ए	/खाए/	/खा/ + /रे/ → /खावे/
(अ०पु०)	खा-एँ	/खाएँ/	/खा/ + /रें/ → /खावें/
(उ०पु०)	खा-एँ	/खाएँ/	/खा/ + /आँ/ → /खावाँ/
	सो-ए	/सोए/	/सो/ + /रे/ → /सोवे/
(अ०पु०)	सो-एँ	/सोएं/	/सो/ + /रें/ → /सोवें/
(उ०पु०)	सो-एँ	/सोएं/	/सो/ + /आँ/ → /सोवाँ/

ईकारान्त धातुओं की स्थिति में भी बांगरू में उपर्युक्तानुसार /व/ का आगम होता है जबकि मानक हिन्दी के अन्त्य स्वर का ह्रस्वीकरण हो जाता है और साथ ही /य/ का आगम भी हो जाता है, यथा –

	मानक हिन्दी	बांगरू
	/पी/ + /ए/ → /पिये/	/पी/ + / रे/ → /पीवे/
(अ०पु०)	/पी/ + /एँ/ → /पियें/	/पी/ + /रें/ → /पीवें/
(उ०पु०)	/पी/ + /एँ/ → /पियें/	/पी/ + /आँ/ → /पीवाँ/

(5) मानक हिन्दी में जब स्वरान्त धातुओं के साथ प्रेरणार्थक क्रिया का परप्रत्यय /-आ/ लगाया जाता है तब अधिकांशतः /ल/ का आगम हो जाता है, जबकि बांगरू में ऐसी परिस्थिति में /ल/ का आगम नहीं होता, यथा –

मानक हिन्दी	बांगरू
/खा/ + /वा/ → /खिला/	/खा/ + /वा/ → /खुवा/
/पी/ + /वा/ → /पिला/	/पी/ + /वा/ → /पुवा/
/दे/ + /वा/ → /दिला/	/दे/ + /वा/ → /दुवा/
/धो/ + /वा/ → /धुला/	/धो/ + /वा/ → /धुवा/

मानक हिन्दी में कुछ स्वरान्त धातुओं के साथ प्रेरणार्थक का परप्रत्यय /वा/ जोड़ा जाने पर /व/ का आगम होता है, जबकि बांगरू में ऐसे आगम का अभाव है, यथा –

मानक हिन्दी	बांगरू
/छा/ + /वा/ → /छवा/[1]	/छा/ + /वा/ → /छुवा/
/छू/ + /वा/ → /छुवा/[1]	/छू/ + /वा/ → /छुवा/
/गा/ + /वा/ → /गवा/[1]	/गा/ + /वा/ → /गुवा/
/ला/ + /वा/ → /लवा/[1]	/ला/ + /वा/ → /लुवा/

(6) मानक हिन्दी में जब कोई धातु ईकारान्त होया किसी धातु का परिवर्त ईकारान्त हो तो /-इए/ परप्रत्यय जोड़ा जाने पर /ज्/ का आगम होता है, जबकि बांगरू में ऐसी परिस्थिति में /ज्/ का आगम नहीं होता, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू	
/पी/ + /इए/ → /पीजिए/	पी-इए	/पीइए/
/ले/ + /इए/ → /लीजिए/	ले-इए	/लिइए/
/दे/ + /इए/ → /दीजिए/	दे-इए	/दिइए/
/कर्/ + /इए/ → /कीजिए/	कर्-इए	/करिए/

मानक हिन्दी में उपर्युक्त उदाहरणों में /ले/ का परिवर्त /ली/, /दे/ का परिवर्त /दी/ तथा /कर्/ का परिवर्त /की/ उपलब्ध होता है।

1- कालरा, सुधा ; 'भाषा' त्रैमासिक ; हिन्दी भाषाविज्ञान अंक ; 1973 ; पृष्ठ 219

2.3. स्वनिम परिवर्तन

2.3.1 स्वर परिवर्तन

(1) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही रूप स्वनप्रक्रिया के रूप में स्वर परिवर्तन का भी पर्याप्त प्रयोग होता है। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही अग्र स्वरों को /इ/ में; केन्द्रीय स्वरों को /अ/ में और पश्च स्वरों को /उ/ में परिवर्तित करने का सामान्य नियम है। धातुओं से बनने वाले प्रेरणार्थक रूपों द्वारा हमारे कथन की पुष्टि होती है, यथा—

ई, इ, ए, ऐ → इ

/पीस्/ + /आ/ → /पिसा/
/पिट्/ + /आ/ → /पिटा/
/सेक्/ + /आ/ → /सिका/
/बैठ्/ + /आ/ → /बिठा/

आ, अ → अ

/मार्/ + /वा/ → /मर्वा/
/कर्/ + /वा/ → /कर्वा/

ऊ, उ, ओ → उ

/लूट्/ + /आ/ → /लुटा/
/लुट्/ + /आ/ → /लुटा/
/खोद्/ + /आ/ → /खुदा/

उपर्युक्त व्यंजनांत धातुओं में तो मानक हिन्दी और बांगरू में प्रायः रूपस्वनिम परिवर्तन की समानता पाई जातीहै परन्तु स्वरांत धातुओं में धातु के अन्त्य स्वर का परिवर्तन मानक हिन्दी और बांगरू में अपने अपने ढंग से होते हैं।

मानक हिन्दी में स्वर परिवर्तन प्रायः उपर्युक्त सामान्य नियमानुसार ही होता है, जबकि बांगरू में अन्तिम स्वर के स्थान पर /उ/ हो जाता है, यथा प्रेरणार्थकरूप बनाने के लिए धातु के साथ /–आ/ परप्रत्यय लगने पर –

मानक हिन्दी			बांगरू	
धातु	उपरूप	प्रेरणार्थक रूप	उपरूप	प्रेरणार्थक रूप
/सी/	/सिल/	/सिला/	/सु/	/सुआ/
/दे/	/दिल/	/दिला/	/दु/	/दुआ/
/ले/	/लिव/	/लिवा/	/लु/	/लुआ/
/छू/	/छुल/	/छुला/	/छु/	/छुआ/
/धो/	/धुल/	/धुला/	/धु/	/धुआ/
/रो/	/रुल/	/रुला/	/रु/	/रुआ/
/गा/	/गव/	/गवा/	/गु/	/गुआ/

मानक हिन्दी में 'खा' तथा 'ला' धातुएं और बांगरू में 'पी' धातु में रूपस्वनिमिक परिवर्तन उपर्युक्त ढंग से भिन्न होता है, यथा प्रेरणार्थक रूप बनाने के लिए / – आ / परप्रत्यय लगने पर–

मानक हिन्दी			बांगरू	
धातु	उपरूप	प्रेरणार्थक	उपरूप	प्रेरणार्थक
/खा/	/खिल/	/खिला/	/खु/	/खुआ/
/ला/	/लिव/	/लिवा/	/लु/	/लुआ/
/पी/	/पिल/	/पिला/	/प्यु/	/प्या/

ऐसी स्थिति में बांगरू में हकारान्त धातुओं का व्यवहार भी स्वरान्त धातुओं के समान होता है। अन्त्य हकार से पूर्ववर्ती स्वर को / उ/ में परिवर्तित कर दिया जाता है, यथा –

धातु		उपरूप	प्रेरणार्थक
/बाह/	'खेत जोतना'	/बुह/	/बुआ/
/टोह/	'तलाश करना'	/टुह/	/टुआ/
/दूह/	'दूध दुहना'	/दुह/	/दुआ/

113

(२) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में `व्याप्त` बताने वाली सकर्मक धातुओं में उत्तर दीर्घ /ओ/ हो तो अकर्मक धातु के लिए स्वर परिवर्तन /ओ/→/ऊ/ के रूप में भी पाया जाता है, यथा-

सकर्मक		अकर्मक
मानकहिन्दी	बांगरू	
/छोड़/	/छोड़/	/छूट/
/तोड़/	/तोड़/	/टूट/
/फोड़/	/फोड़/	/फूट/

मानक हिन्दी में /ओ/→/ऊ/ तब ही मिलता है जब साथ में /ड़/→/ट/ भी उपलब्ध हो परन्तु बांगरू में ऐसी शर्त नहीं है। बांगरू में /डोब्/→/डूब/ उदाहरण भी उपलब्ध है, जबकि मानक हिन्दी में /डूब/ का सकर्मक रूप /डुबो/ या /डुबा/ उपलब्ध होता है।

(3) बांगरू में आकारान्त सकर्मक धातु का अकर्मक रूप बनाने के लिए अन्त्य /आ/ → /ऐ/ में परिवर्तित हो जाता है जैसे /ता/ `पिघलाना` → /तै/ `पिघलना` मानक हिन्दी में ऐसे रूपस्वनिम परिवर्तन की प्रवृत्ति उपलब्ध नहीं है।

(4) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही धातु के दीर्घ स्वर का ह्रस्वीकरण कर के अकर्मक क्रिया बनाने की प्रवृत्ति है जैसे, दोनों में ही /पीट्/→/पिट्/, परन्तु बांगरू में कुछ अकर्मक क्रियाओं में भी दीर्घ स्वर प्रयुक्त होता है, जबकि मानक हिन्दी में अनुरूपी अकर्मक धातुओं में ह्रस्व स्वर ही प्रयुक्त होते हैं, यथा-

सकर्मक अथवा प्रेरणार्थक धातु		अकर्मक धातु	अकर्मक धातु
मानक हिन्दी	बांगरू	मानक हिन्दी	बांगरू
/उतार्/	/तार्/	/उतर्/	/ऊतर्/[1]
/उठा/	/ठा/	/उठ/	/ऊठ/[1]
/बिगाड़/	/बिगाड़/	/बिगड़/	/बीगड़/[1]

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 26-27

114)

सकर्मक अथवा प्रेरणार्थक धातु		अकर्मक धातु	अकर्मक धातु
मानक हिन्दी	बांगरू	मानक हिन्दी	बांगरू
/उखेड़्/	/उखेड़्/	/उखड़् /	/ऊखड़्/[1]
/छेद्/	/ छेद्/	/ छिद्/[2]	/छीद्/[1]

(5) बांगरू में / धो / तथा / खो/ `गुम करना` सकर्मक धातुओं के स्वर को / ऊ / करने से अकर्मक रूप / धू / तथा / खू / बन जाते हैं। मानक हिन्दी में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है।

(6) मानक हिन्दी में संस्कृत के आगत शब्दों से संज्ञापद या विशेषणपद बनाते समय आदि अक्षर का / इ,ई,ए /→/ ऐ / ; / अ /→ / आ / तथा / ऊ,उ,ओ/→ /औ / हो जाता है, यथा-

मूलपद	व्युत्पन्न संज्ञा अथवा विशेषण
/ इन्द्र/	/ऐन्द्र/
/ इतिहास/	/ऐतिहासिक/
/ ईश्वर/	/ ऐश्वर्य /
/ एक /	/ ऐक्य/
/ समाज/	/सामाजिक/
/ उचित/	/औचित्य/
/उद्योग/	/औद्योगिक/
/भूगोल/	/भौगोलिक/

बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है।

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 26-27

2- मानक हिन्दी में /छिद् / के सम्बन्ध में मतैक्य नहीं है। किशोरीदास वाजपेयी /छिद् / के पक्ष में हैं, जबकि डा० आर्येन्द्र शर्मा / छीद् / के पक्ष में हैं। देखिए:
(i) वाजपेयी, किशोरीदास; हिन्दी शब्दानुशासन ; 2014 वि०; पृष्ठ 472
(ii) शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ;पृष्ठ 136

/ /

15)

(7) मानक हिन्दी में गुण[1] सन्धि के फलस्वरूप दूसरे शब्द का आदि /इ/ परिवर्तित होकर /ए/ हो जाता है जबकि बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/नर्/ + /इन्द्र्/ → /नरेन्द्र्/	/नर्/ + /इन्द्र्/ → /नरिन्द्र्/
/सुर्/ + /इन्द्र्/ → /सुरेन्द्र्/	/सुर्/ + /इन्द्र्/ → /सुरिन्द्र्/
/महा/ + /इन्द्र्/ → /महेन्द्र्/	/महा/ + /इन्द्र्/ → /महिन्द्र्/

वैसे बांगरू में भी / गणेश /, / महेश /, / नरेश /, / रमेश / आदि शब्द प्रचलित हैं परन्तु बांगरू में ये रूढ़ शब्द के रूप में अपनाए गए हैं, यौगिक शब्द के रूप में नहीं, जबकि मानक हिन्दी में इनके अनुरूपी शब्द यौगिक शब्द हैं, यथा-

/ गण/ + /ईश/ → /गणेश/
/ महा/ + /ईश / → /महेश/
/नर/ + /ईश/ → /नरेश/
/रमा/ + /ईश / → /रमेश/

मानक हिन्दी के उपर्युक्त उदाहरणों में दूसरे शब्द का आदि / ई / परिवर्तित होकर / ए / हो गया है।

(8) मानक हिन्दी में गुण सन्धि के फलस्वरूप दूसरे शब्द का आदि / उ ऊ / परिवर्तित होकर / ओ / हो जाता है, बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है। मानक हिन्दी के उदाहरण-

/ सूर्य/ + / उदय/ → / सूर्योदय/
/ चन्द्र/ + / उदय/ → / चन्द्रोदय/
/ नव/ + / ऊढ़ा/ → / नवोढ़ा/
/ महा/ + / ऊर्मि/ → / महोर्मि/

1- गुरु, कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि० ; पृष्ठ 45

116) (9) मानक हिन्दी में वृद्धि[1] सन्धि के फलस्वरूप दूसरे शब्द का आदि /ए/ तथा /ओ/ क्रमशः / ऐ / तथा / औ / में परिवर्तित हो जाते है, जबकि बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है। मानक हिन्दी के उदाहरण-

/ एक / + /एक/ → / एकैक /

/ अधर/ + /ओष्ठ/ → / अधरौष्ठ /

(10) बांगरू में / ले / , / दे /तथा/ जा / धातुओं का प्रयोग जब संयुक्त क्रिया की गौण क्रिया के रूप में होता है तब इन धातुओं का अन्त्य स्वर परिवर्तित हो कर / अ / हो जाता है जबकि मानक हिन्दी में / ले /, / दे /तथा/ जा / धातुएं चाहे गौण क्रिया के रूप में प्रयुक्त हों तो भी इन में ऐसा स्वर परिवर्तन नहीं होता, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
/ कर् लेने दे/	/ कर् लण् दे /
/ कर् देने दे /	/ कर् दण् दे /
/कर् जाने दे/	/ कर् जण् दे /

2.3. 2 व्यंजन-परिवर्तन

(1) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में रूपस्वनिमिक परिवर्तन के रूप में व्यंजन का प्रतिस्थापन भी उपलब्ध होता है। दोनों में यह प्रति स्थापन रूपिमाश्रित है, यथा -

/ड़/→/ट/	यथा	/ फोड़/→/फुट /
/ ड़/→/ट/	यथा	/तोड़/ → /टूट/
/ च/→/क/	यथा	/बेच/ → /बिक/
/ख/→/ष/	यथा	/रख/(बांगरू / राख /) → / रष /
/ठ/→/ड़/	यथा	/आठ/→/अड़/ जैसे `अड़तीस` में
/ त/→/ड़/	यथा	/सात/→/सड़/ जैसे `सड़सठ` में

1- गुरु , कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि0 ; पृष्ठ 45

117)

व्यंजन प्रतिस्थापन के कुछ ऐसे उदाहरण भी हैं जो बांगरू में उपलब्ध हैं,[1] परन्तु मानक हिन्दी में देखने में नहीं आए, यथा—

/ड/ → /ट/ यथा /छोड़/ → /छूट/
/ग्/ → /व/ यथा /गाय्/ → /गँवार्/
/थ्/ → /ड/ यथा /माथ्/ → /मथोड़ा/

(2) मानक हिन्दी में / अब्, तब्, जब् / क्रियाविशेषणों के साथ जब बलात्मक निपात / ही / लगाया जाता है तब बलात्मक निपात / ही / का हकार तो लुप्त हो ही जाता है, साथ ही क्रियाविशेषण के अन्त्य अल्पप्राण व्यंजन का महाप्राणीकरण भी हो जाता है, जबकि बांगरू में ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं है, यथा—

मानक हिन्दी	बांगरू
/अब्/ + /ही/ → /अभी/	इब्-ए /इबे/
/तब्/ + /ही/ → /तभी/	- - - -
/जब्/ + /ही/ → /जभी/	जद्-ए /जदे/

(3) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में व्यंजन का परिवर्तन समीकरण के भी होता है। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में ऐसा समीकरण प्रायः उन व्यंजनान्त शब्दों की स्थिति में ही होता है जो संस्कृत में भी व्यंजनान्त हैं, यथा / जगत् / + / ईश / → /जगदीश/, /जगत्/ + / नाथ / → / जगन्नाथ /, /वाक् / + / ईश / → / वागीश /, / वाक् / + / मय् / → / वाङ्मय् / आदि। संस्कृत के अकारान्त शब्दों का उच्चारण भी मानक हिन्दी में व्यंजनान्त के रूप में होता है, परन्तु ऐसे शब्दों में समीकरण का यह सिद्धान्त लागू नहीं होता, यथा / पुस्तक् / + / आलय् / / पुस्तकालय् /। यहाँ पूर्व शब्द के अन्त्य / क् / के पश्चात् स्वर होने पर भी / क् / का घोषीकरण नहीं होता। बांगरू में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है, यथा—

/ डाक् / + /घर्/ → /डाग्घर्/
/ एक् / +/गाडी/ → /एग्गाडी/

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970; पृष्ठ 29

118

/बाघ्/ + /घेर्/ → /बाद्घेर्/

/पण्ड्ह/ + /बी/ → /पण्ड्ह्बी/

यद्यपि हिन्दी की आम बोलचाल में ऐसा समीकरण उपलब्ध होता है,[1] तथापि मानक हिन्दी में ऐसे उच्चारण को स्थान प्राप्त नहीं है।

-0-

1- मिलाइए - शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ; पृष्ठ 24

3. रूपप्रक्रिया

3.1 संज्ञा

3.2 सर्वनाम

3.3 विशेषण

3.4 क्रिया

3.5 क्रियाविशेषण

3.6 परसर्ग तथा परसर्गात्मक शब्द

3.7 समुच्चयबोधक

3.8 विस्मयादिबोधक

3.9 व्युत्पन्न प्रातिपदिक

3. रूपप्रक्रिया

प्रातिपदिक: रूपप्रक्रिया सम्बन्धी अध्ययन में मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में एक समस्या यह उत्पन्न होती है कि /घोड़ा/ वर्ग के पदों को एक रूपिम वाले पद माना जाए या / घोड़्-/ + /आ/ के रूप में दो रूपिम वाले पद। इन्हें दो रूपिम वाले पद मानने पर प्रातिपदिक के रूप में / घोड़्-/ आदि को अपनाया जाता है। इस मत के पक्ष में यह तर्क दिया जा सकता है कि /-ए/ आदि प्रत्यय / घोड़्-/ प्रातिपदिक में ही जुड़ते हैं न कि / घोड़ा / में, क्योंकि / घोड़ा/ के साथ /-ए/ जोड़ने पर / घोड़ाए/ पद बनना चाहिये, जबकि वास्तव में / घोड़े/ पद ही प्रचलित है। इस मत के पक्ष में एक तर्क यह भी दिया जा सकता है कि / घोड़ा, घोड़े, घोड़ी / इत्यादि पदों का जब कोई विश्लेषण कर्ता रूपिम विश्लेषण करने के लिये उद्यत होता है तब वह सभी पदों में प्राप्त समान रूप /घोड़्- / को ही पाता है। डा० लक्ष्मीनारायण मिश्र[1] ने हिन्दी के प्रातिपदिकों की चर्चा में `लड़का` पद में प्रातिपदिक के रूप में / लड़्क्-/ को ही मान्यता दी है। डा० मुरारीलाल उप्रैति ने / लड़का, कोड़ा, दस्ताना, पसीना, बगीचा, घसियारा, गाना, बताशा, रुपया / इत्यादि में '-आ' को विभक्ति मानकर संज्ञा मूल प्रातिपदिक क्रमश: / लड़्क्-, कोड़्-, दस्तान्-, पसीन्-, बगीच्-, घसियार्-, गान्-, बताश्-, रुपय्- / जैसे व्यंजनांत रूपों को माना है।[2] यहाँ एक आपत्ति यह हो सकती है कि / लड़्क् / जैसे रूप परिकल्पित है, भाषा में उनका इस रूप में प्रयोग नहीं मिलता।[3] "संज्ञा कोटि के व्यावहारिक महत्व को दृष्टिपथ में रखते हुए यह आवश्यक है कि उस का मूल प्रातिपदिक मुक्त रूप हो, जिस को शब्दकोषीय अर्थ दिया जा सके। / लड़का / में /-आ/ को तो हम ने अधिकारी कारक एकवचन पुल्लिंग व्याकरणिक अर्थ प्रदान कर दिया, किन्तु प्रश्न यह है

1- मिश्र, लक्ष्मीनारायण ; हिन्दी के संज्ञा प्रातिपदिकों का रूपप्रक्रियात्मक वर्गीकरण ; `भाषा` त्रैमासिक का हिन्दी भाषाविज्ञान अंक, 1973; पृष्ठ 140 पर पादटिप्पणी 1.

2- उप्रैति,मुरारीलाल ;हिन्दी में प्रत्यय विचार ; 1964 ; पृष्ठ 215

3- अग्रवाल, रामेश्वरप्रसाद ; बुन्देली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन ; 1963 ; पृष्ठ 63

120)

कि शेष रूप /लड़क्-/ को क्या अर्थ दें ?"[1] सी0 एफ0 हाकेट[2] ने भी रिश्ता-द्योतक अंग्रेजी शब्दों 'सिस्टर', 'ब्रादर', 'फादर', 'मदर' आदि में /-अर्/ को रूपिम इसी लिए नहीं माना है कि इन शब्दों के शेष भाग इन अर्थों में प्रयुक्त नहीं होते। /लड़का/ को विभक्तिमय मानने के कारण /बालक्, सुनार्, कवि, मुनि, प्रभु/ जैसे एक रूपिम पद भी डा0 उप्रेति[3] को दो रूपिमों वाले पद मानने पड़े हैं। डा0 रमेशचन्द्र मेहरोत्रा के कथनानुसार— "ठीक है जी। एकदम सुविधा हो जाती है, अविकारी एकवचन संज्ञा में से विभक्ति प्रत्यय न निकाल कर। वरना हिन्दी के अच्छे खासे शब्दों को रेड़ लग जाती है, कट-छंट कर और मातृभाषी के मन पर करारी चोट भी पड़ती है। यह तो जिद है 'स्ट्रक्चुरल लिंग्विस्टिक्स' की कि उदाहरण 'लड़का' को बेस फार्म नहीं मानने देते।"[4] /लड़क्-/ को प्रातिपदिक मानने से विश्लेषण में कोई सुविधा नहीं होती। यदि /लड़क्-/ को प्रातिपदिक माना जाए तो /-पन्/ परप्रत्यय लगाने पर /लड़क्-/ — /लड़क/ हो जाता है, अर्थात् तथाकथित प्रातिपदिक में /अ/ का आगम हो जाता है, फिर क्यों न हम मुक्त रूप में उपलब्ध /लड़का/ को ही प्रातिपदिक मानकर यथावश्यक परप्रत्ययों के योग में इसके अन्त्य /-आ/ के लोप को स्वीकार कर लें, अतः प्रस्तुत विश्लेषण में मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही /घोड़ा/ आदि को प्रातिपदिक माना गया है, न कि /घोड़्-/ आदि को।

विभक्ति प्रत्यय तथा व्युत्पादक प्रत्यय: मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में विभक्ति तथा व्युत्पादक दोनों प्रकार के प्रत्यय उपलब्ध हैं। व्युत्पादक प्रत्ययों के बाद विभक्ति प्रत्यय

1- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978 ; पृ0 9

2- हाकेट, सी0 एफ0 ; ए कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक्स ; भारतीय संस्करण 1970 ; पृष्ठ 125

3- उप्रेति, मुरारीलाल ; हिन्दी में प्रत्यय विचार ; 1964 ; पृष्ठ 213

4- 5.10.1965 को डा0 रमेशचन्द्र मेहरोत्रा द्वारा डा0 महावीर सरन जैन के नाम भेजे गए पत्र से उद्धृत। देखिए- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978 ; पृष्ठ 8

आ सकते हैं, परन्तु विभक्ति प्रत्ययों के बाद व्युत्पादक प्रत्यय नहीं आ सकते ।[1] विभक्ति प्रत्ययों के अध्ययन में परम्परागत व्याकरणों में दिया गया शब्द-भेद पर्याप्त लाभदायक होता है । कुछ व्युत्पादक प्रत्ययों का अध्ययन भी विभिन्न शब्दभेदों के विभक्ति प्रत्ययों की चर्चा के दौरान होता रहा है, यथा संज्ञा के रूपान्तरण के प्रकरण में विभिन्न विभक्ति प्रत्ययों के साथ साथ स्त्रीलिंग व्युत्पादक प्रत्ययों की चर्चा भी वैयाकरणों द्वारा की जाती रही है ।[2] प्रस्तुत विश्लेषण में भी सुविधा के लिए विभक्ति प्रत्ययों एवं व्युत्पादक प्रत्ययों के अध्ययन के लिए दोनों के बीच कोई लक्ष्मण-रेखा न खींच कर रूपप्रक्रिया अध्ययन मुख्यतया विभिन्न शब्द-भेदों के आधार पर ही किया जा रहा है । व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का अध्ययन इसी अध्याय के अन्त में (देखिए अंक 3.9) अलग से किया जा रहा है ।

3.1. संज्ञा

3.1.1 अन्त्यध्वनि के आधार पर संज्ञाओं का स्वरूप:

व्यंजनान्त और स्वरान्त संज्ञाओं की विद्यमानता की दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में समानता होते हुए भी निम्नलिखित तथ्य ध्यान देने योग्य हैं ।

1. बांगरू में ह्रस्व स्वरान्त शब्दों का अभाव है(देखिए अंक 1.4.1), अत: बांगरू में अकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त संज्ञाओं की विद्यमानता का प्रश्न ही नहीं उठता । मानक हिन्दी में यद्यपि कुछ एकाक्षरी शब्दों यथा ` न ` (नहीं), ` व `(और) आदि में अन्तिम ` अ ` विद्यमान है फिर भी अकारान्त संज्ञाओं का अभाव है ।

1- मिलाइए- (i) तिवारी , उदयनारायण; भाषाशास्त्र की रूपरेखा ; 2020 वि0; पृष्ठ 171
(ii) ठक्कर, मुरारीलाल ; हिन्दी में प्रत्यय विचार ; 1964 ;पृष्ठ 29

2- यद्यपि कामता प्रसाद गुरु ने अपने ` हिन्दी व्याकरण ` (2017वि0) के दूसरे भाग के तीसरे परिच्छेद में ` व्युत्पत्ति ` प्रकरण में व्युत्पादक प्रत्ययों का अलग से उल्लेख किया है फिर भी उन्होंने अपने व्याकरण के दूसरे भाग के दूसरे परिच्छेद में ` रूपान्तर ` के प्रकरण में संज्ञा के सन्दर्भ में ही स्त्रीलिंग व्युत्पादक प्रत्ययों का उल्लेख किया है ।

122)

2. जैसेकि पहले कहा जा चुका है(देखिए अंक 1.4.1) मानक हिन्दी में प्रचलित इकारान्त तथा उकारान्त शब्द प्राय: संस्कृत से गृहीत तत्सम शब्द ही हैं। ` कि ` आदि कुछ विरल-शब्दों के अतिरिक्त अन्य ऐसे सभी शब्द संज्ञाओं के रूप में ही अपनाए गए हैं।

3. बांगरू में एक विशेष प्रकार की ओकारान्त स्त्रीलिंग व्यक्तिवाचक संज्ञाएं मिलती हैं जिनका मानक हिन्दी में अभाव है। ये संज्ञाएं अन्य संज्ञा या विशेषण शब्दों से व्युत्पन्न होती हैं और व्यक्तिवाचक स्त्रीलिंग संज्ञाओं के रूप में रूढ़ हो गई हैं, उदाहरणार्थ: बादळी → बादळो (बादळी गांव की स्त्री) ; काळी → काळो (काले रंग की स्त्री) ; तेलू → तेलो (नाम विशेष)। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि ऐसे ओकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों का प्रयोग संज्ञा रूप में ही हो सकता है, अर्थ की दृष्टि से विशेषण जैसे - प्रतीत होने वाले इन शब्दों का प्रयोग विशेषण के रूप में नहीं होता। ` काळो आगी ` (काळो नामक स्त्री आ गई) प्रयोग चलता है। ` काळो लुगाई आ गी ` प्रयोग ग्राह्य नहीं है।

4. बांगरू में उकारांत पुल्लिंग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की प्रवृत्ति भी पाई जाती है यथा ` छोटू , सम्भू , कालु , लीलु, लालु, मन्नु, गन्नु, रामू ` आदि। व्यक्तिवाचक पुल्लिंग शब्दों के ऐसे ऊकारान्त रूप मानक हिन्दी में यदि कहीं मिलते भी हैं तो वे उपेक्षा, तिरस्कार आदि की भावना को अभिव्यक्त करते हैं, जैसे मानक हिन्दी प्रयोगानुसार नौकरों के नाम ` रामू, मुंडू ` आदि होते हैं, जबकि बांगरू में ऐसी कोई विशेष भावना न हो कर इनका सामान्य प्रयोग होता है जैसे ` मन्नू ताऊ `, ` रामू बाबा ` आदि।

5. मानक हिन्दी की व्यंजनान्त पुल्लिंग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को बांगरू में आकारान्त रूप प्रदान करने की भी प्रवृत्ति पाई जाती है यथा राम → रामा ; भगत → भगता ; परस(+राम) → परसा।

6. बांगरू लोकसाहित्य में एकारान्त स्त्रीलिंग व्यक्तिवाचक संज्ञाएं भी उपलब्ध हैं, यथा- निहालदे, सरणा दे, चम्पादे आदि। मानक हिन्दी में ऐसी एकारान्त स्त्रीलिंग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का अभाव है। वास्तव में बांगरू में भी प्रयत्न लाघव को लागू कर के ` देवी ` शब्द का संक्षिप्त रूप ` दे ` अपनाया गया है।

7. बांगरू में उपर्युक्त व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के विषय में यह भी उल्लेखनीय है कि बांगरू की उपर्युक्त प्रवृत्तियों के कारण व्यक्तिवाचक नामों के दूसरे खंड का लोप हो जाता है या उसका संक्षिप्तरूप प्रथम खंड से ही मिल जाता है, यथा प्रकाश देवी → परकाशो ; चम्पादेवी → चम्पो ; रामकुमार → रामू या रामा ; जगतराम → जगतू या जगता ; निर्मल देवी → निर्मलदे । हाँ कभी कभी बांगरू में भी किसी डाक्टर, वकील आदि प्रतिष्ठित व्यक्ति की प्रतिष्ठा के कारण ऐसे अकारान्त नाम के साथ भी 'राम' आदि का प्रयोग सुनने में आ जाता है, यथा 'कालु राम वकील के गया था' (कालु राम वकील के पास गया था) ।

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही संज्ञाओं का रूपान्तरण लिंग, वचन तथा कारक के कारण होता है ।

3.1.2. लिंग

1. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दो लिंग हैं । दोनों में लिंग व्यवस्था व्याकरणिक है । भौतिक लिंग व्यवस्था और व्याकरणिक लिंग व्यवस्था का मेल यत्र-तत्र हो जाता है, सर्वत्र नहीं । जैसे 'घोड़ा' तथा 'घोड़ी' में व्याकरणिक लिंग व्यवस्था भौतिक लिंग व्यवस्था से मेल खा जाती है परन्तु 'सवारी' (बांगरू —सुवारी) शब्द 'यात्री' के अर्थ में व्याकरणिक रूप से स्त्रीलिंग है, जबकि भौतिक रूप में यात्रा करने वालों में पुरुष भी शामिल हो सकते हैं ।

2. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में संज्ञा शब्दों का अपना कोई लिंग अवश्य होता है, परन्तु प्रत्येक संज्ञा शब्द के दोनों लिंगों में जोड़े शब्द उपलब्ध नहीं होते, उदाहरणार्थ 'दाल' (बां० - दाल) स्त्रीलिंग है और 'चावल' (बां० - चौल) पुल्लिंग है परन्तु दोनों शब्दों में लिंग परिवर्तन सम्भव नहीं है ।

3. कुछ संज्ञाएं मानक हिन्दी और बांगरू में उभयलिंगी हैं अर्थात् उन का प्रयोग यथास्थिति पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों में हो सकता है, जैसे 'मंत्री' ।

4. कुछ संज्ञाएं दोनों लिंगों में प्रयुक्त होती हैं परन्तु मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही लिंग भेद से अर्थ-भेद भी हो जाता है, यथा 'हार' शब्द का पुल्लिंग में

24)

प्रयोग होने से अर्थ होगा `माला` और स्त्रीलिंग में प्रयोग होने से अर्थ होगा `पराजय`।

5. कुछ संज्ञाओं में व्युत्पादी प्रत्ययों के संयोग से लिंग परिवर्तन हो जाता है। ऐसे व्युत्पन्न शब्दों का अपना स्वतंत्र व्याकरणिक अस्तित्व होता है, जैसे `घोड़ा` → `घोड़ी`। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही `घोड़ा` संज्ञा के समान `घोड़ी` संज्ञा के भी अपने रूप बनते हैं।

6. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में प्रायः पुल्लिंग संज्ञाओं से स्त्रीलिंग संज्ञाओं की व्युत्पत्ति होती है, यथा `घोड़ा` → `घोड़ी` परन्तु कुछ पुल्लिंग संज्ञाओं की व्युत्पत्ति स्त्रीलिंग संज्ञाओं से भी होती है, यथा `बहिन` → `बहनोई` (बां० `भाण`~ `भैण` → `भणोई`)

7. आकार की लघुता प्रदर्शित करने के लिए भी मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में स्त्रीलिंग का प्रयोग किया जाता है, यथा `टोकरा` → `टोकरी`।

8. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में कुछ मनुष्येतर प्राणिवाचक संज्ञाओं से पुरुष और स्त्री दोनों जातियों का बोध होता है परन्तु ये संज्ञाएं व्यवहार के अनुसार पुल्लिंग या स्त्रीलिंग के रूप में ही प्रयुक्त होती हैं। इन शब्दों के प्रयोग में लोग इस बात की चिन्ता नहीं करते कि इनके वाच्य प्राणी पुरुष है या स्त्री, उदाहरणार्थ -

पुल्लिंग :- खटमल, चीता, भेड़िया, उल्लू, कौआ(बां० -कागा), नेवला (बां०- न्यौला),

स्त्रीलिंग:- चील (बां०-चील्ह), मैना, मक्खी(बां० -माखी), मछली आदि।

9. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में संज्ञाओं का लिंग निर्धारण प्रायः समान रूप से होता है परन्तु इस मामले में सर्वथा एकरूपता हो ऐसी बात नहीं है। इस सम्बन्ध में एक रोचक उदाहरण है `दही`। मानक हिन्दी में इस शब्द का शुद्ध प्रयोग पुल्लिंग में माना जाता है,[1] जबकि बांगरू में यह शब्द स्त्रीलिंग में ही चलता है। मानक हिन्दी `बवकाया` का बांगरू अनुरूपी शब्द `मका` है। मानक हिन्दी में `बवकाया`

1- गुरु, कामता प्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि० ; पृष्ठ 192

25)

पुल्लिंग में चलता है, जबकि बांगरू में ` मका ` स्त्रीलिंग में, यथा मानक हिन्दी : ` उस के बहकावे में आ गया ` ; बांगरू : ` उसकी मका में आ गया ` । इसी प्रकार मानक हिन्दी में शरीर का एक अंग ` नाक ` स्त्रीलिंग में चलता है, यथा ` नाक कट गई `, जबकि बांगरू में यह पुल्लिंग में, यथा ` नाक कट गया ` ।

10. मानक हिन्दी और बांगरू में लिंग परिवर्तन सम्बन्धी व्युत्पादी प्रत्ययों में पाए जाने वाले स्वन-व्यवस्था के अन्तरों की यदि उपेक्षा कर दी जाए तो बहुत से बहु प्रचलित प्रत्यय मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में समान कहे जा सकते हैं, उदाहरणार्थ मानक हिन्दी के प्रत्यय ` -ई, - इया, -इन, - नी, - आनी ` तथा इन के बांगरू अनुरूपी प्रत्यय क्रमशः ` - ई , - इया( - ई ), -अण, -णी, -आणी ` ।

	मानक हिन्दी		बांगरू
-ई:	घोड़ा — घोड़ी	-ई:	घोड़ा — घोड़ी
	बन्दर — बन्दरी		बान्दर— बांदरी
-इया:	कुत्ता — कुतिया	-इया(ई) :	कुत्ता — कुतिया(~ कुत्ती)
	बुढ़ा — बुढ़िया		बुढ़ा — बुढ़िया(~ बुढ़ी)
-इन :	माली — मालिन	- अण:	माली— मालण
	नाग — नागिन		नाग — नागण
-नी :	जाट — जाटनी	- णी:	जाट — जाटणी
-आनी:	सेठ — सेठानी	- आणी:	सेठ — सठाणी
			सेठ — सेठाणी

मानक हिन्दी और बांगरू के उपर्युक्त साझे प्रत्ययों के सम्बन्ध में निम्नलिखित तथ्य द्रष्टव्य हैं ।

(i) स्वन-व्यवस्था के अन्तरों के अनुसार बांगरू में ` ण ` के बहुल प्रयोग के कारण ही मानक हिन्दी प्रत्ययों ` -इन , -नी, -आनी ` में प्रयुक्त ` न ` बांगरू में

`ण` में बदल जाता है(देखिए अंक 1.4.2(4)) और `धोबिन` आदि ढाँचे के शब्दों का दूसरे अक्षर का `इ` स्वर बाँगरू में `अ` में परिवर्तित हो जाता है(देखिए अंक 1.9.3(6)) ।

(ii) बाँगरू में यद्यपि उपर्युक्तानुसार `-इया` प्रत्यय विद्यमान है फिर भी इस के वैकल्पिक रूप `-ई` प्रत्यय का भी बहुल प्रयोग पाया जाता है, यथा-

कुत्ता — कुत्ती
बूढा — बूढी

(iii) मानक हिन्दी में व्यवसाय सूचक ईकारान्त और व्यंजनांत दोनों प्रकार के शब्दों में `-इन` प्रत्यय का संयोग होता है, जबकि बाँगरू में ईकारान्त शब्दों में तो `-अण` प्रत्यय लगाया जाता है, यथा धोबी — धोबण, परन्तु व्यंजनांत व्यवसाय-वाची संज्ञाओं के स्त्रीलिंग रूप प्रायः `-ई` प्रत्यय के योग से बनाए जाते हैं, यथा-

मानक हिन्दी	बाँगरू
सुनार — सुनारिन	सुनार — सुनारी
लुहार — लुहारिन	लुहार — लुहारी
चमार — चमारिन	चमार — चमारी

(iv) मानक हिन्दी में `-आनी` प्रत्यय के स्थान पर कुछ शब्दों में `-आइन` प्रत्यय का प्रयोग विकल्प के रूप में होता है और कुछ में केवल `-आइन` का ही प्रयोग प्रचलित है, जबकि बाँगरू में ऐसे शब्दों में `-आणी` प्रत्यय ही प्रयुक्त होता है, यथा -

मानक हिन्दी	बाँगरू
-आनी ~ -आइन	-आणी
पंडित — पंडितानी~पंडिताइन	पंडत — पंडताणी
-आइन	-आणी
ठाकुर — ठकुराइन	ठाकर — ठकराणी
मिसिर — मिसिराइन	मिसर — मिसराणी

11. मानक हिन्दी में स्त्रीलिंग के कुछ ऐसे प्रत्यय पाए जाते हैं जिनका बाँगरू में सर्वथा अभाव है । ऐसा प्रायः मानक हिन्दी में अन्य भाषाओं से गृहीत तत्सम शब्दों की स्थिति में होता है ।

127)

(i) मानक हिन्दी में संस्कृत से गृहीत कुछ तत्सम पुल्लिंग शब्दों के साथ `-आ` प्रत्यय के योग से स्त्रीलिंग रूप बनाए जाते हैं। बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है। मानक हिन्दी के उदाहरण हैं —

सुत — सुता
बाल — बाला
प्रिय — प्रिया
महाशय — महाशया
पंडित — पंडिता
शिव — शिवा
शूद्र — शूद्रा
वैश्य — वैश्या

(ii) मानक हिन्दी में अरबी-फारसी से गृहीत कुछ शब्दों के साथ भी `-आ` प्रत्यय लगा कर स्त्रीलिंग रूप बनाए जाते हैं। बांगरू में यह प्रवृत्ति उपलब्ध नहीं है। मानक हिन्दी में प्रयुक्त उदाहरण[1] हैं —

वालिद — वालिदा
मलिक — मलिका
साहब — साहबा

(iii) मानक हिन्दी में संस्कृत से गृहीत अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग रूप बनाने के लिए `-आ` प्रत्यय जोड़ने से पूर्व मूल शब्द का अन्त्य `-अक` बदल कर `-इक` कर दिया जाता है। बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का भी सर्वथा अभाव है। मानक हिन्दी में प्रयुक्त ऐसे शब्दों के उदाहरण हैं —

अध्यापक — अध्यापिका
उपदेशक — उपदेशिका
शिक्षक — शिक्षिका

1- गुरु, कामता प्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि0 ; पृष्ठ 203

128)

नायक —— नायिका
गायक —— गायिका
संचालक —— संचालिका

(iv) मानक हिन्दी में संस्कृत से गृहीत कुछ पुल्लिंग संज्ञा शब्द ऐसे हैं जिनका संस्कृत प्रातिपदिक ऋकारान्त है और जो मानक हिन्दी में ताकारान्त हो गए हैं। इन के स्त्रीलिंग रूप बनाने के लिए इन्हें ताकारान्त के स्थान पर त्रीकारान्त में परिवर्तित कर दिया जाता है। बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का भी अभाव है। मानक हिन्दी में प्रयुक्त उदाहरण[1] हैं :-

कर्ता —— कर्त्री
धाता —— धात्री
दाता —— दात्री

12. बांगरू में स्त्रीलिंग रूप बनाने की कुछ ऐसी प्रवृत्तियाँ हैं जिनका मानक हिन्दी में अभाव है। बांगरू की प्रवृत्ति के अनुसार व्यक्तिवाचक नामों में ऊकारान्त रूप पुल्लिंग का परिचायक है जबकि ओकारान्त रूप स्त्रीलिंग का परिचायक है। मानक हिन्दी में ऐसी प्रवृत्ति का सर्वथा अभाव है। बांगरू उदाहरण हैं-

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
लम्बू	लम्बो
मोटू	मोटो
कालू	कालो
धन्नू	धन्नो
तेलू	तेलो
छोटू	छोटो
लीलू	लीलो

1- गुरु, कामता प्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि० ; पृष्ठ 201

129)

13. बांगरू में ससुराल सम्बन्धी अनेक स्त्रीलिंग वाची रिश्ते सकारान्त है जिन का पुल्लिंग रूप बांगरू में -रा प्रत्यय के योग से बनाया जाता है। मानक हिन्दी में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है। मानक हिन्दी में ऐसे रिश्ते अभिव्यक्त करने के लिये विभिन्न रिश्तों के साथ 'सास' अथवा 'ससुर' शब्द प्रयुक्त किया जाता है, यथा —

मानक हिन्दी			बांगरू		
दादी-सास	—	दादा-ससुर	दादस	—	दादसरा
चाची-सास	—	चाचा-ससुर	पीतस	—	पीतसरा
बुआ-सास	—	फूफा-ससुर	फूफस	—	फूफसरा
मामी-सास	—	मामा-ससुर	मोसूस	—	मोसूसरा
मौसी-सास	—	मौसा-ससुर	मौसस	—	मौससरा

14. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में लिंग-भेद पर आधारित पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के जोड़ों में सर्वदा यह आवश्यक नहीं कि लिंग परिवर्तन प्रत्यय की सहायता से ही हो। दोनों में अनेक उदाहरण ऐसे भी है जिनमें सर्वथा भिन्न शब्द दूसरे लिंग में प्रयुक्त होते है, यथा -

मानक हिन्दी			बांगरू		
बाप	—	माँ	बाबू	—	माँ
साहब	—	मैम	साहब	—	मैम
पुरुष	—	स्त्री	माणस	—	बीरबानी

3.1.3 वचन:

1. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में वचन के दो भेद- एकवचन और बहुवचन उपलब्ध है। वचन के आधार पर मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में संज्ञाओं को संख्यावाची और संख्येतर दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। संख्यावाची शब्दों के बहुवचन रूप उपलब्ध होते है, यथा घोड़ा — घोड़े ; परन्तु संख्येतर संज्ञाओं के बहुवचन रूप उपलब्ध नहीं होते, यथा पानी(बां० पाणी), चांदी। ऐसी संख्येतर संज्ञा की यदि विभिन्न किस्में अभिव्यक्त करनी अभिप्रेत हो तब उन का बहुवचन रूप प्रयुक्त हो सकता है, यथा मानकहिन्दी: 'सभी प्रकार के सोनों को मिला लो'; बांगरू : 'सारे ढाल के स्योना नै मिला लो' परन्तु ऐसे बहुवचन प्रयोग विरल ही होते है।

2. लिंग के समान वचन का प्रयोग भी मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में व्याकरणिक है। यह आवश्यक नहीं कि मानक हिन्दी और बांगरू में बहुवचन का जो प्रयोग होता है उसका भौतिक वचन के बहुवचन से पूर्णतया सामंजस्य हो। दोनों में कुछ संज्ञाएं ऐसी हैं जिन का व्याकरणिक प्रयोग बहुधा बहुवचन में होता है, यथा ` प्राण ' ( बां० पराण ), ` दर्शन ` (बां० दरसण) आदि। कुछ संज्ञाएं ऐसी हैं जो मानक हिन्दी में एकवचन में प्रयुक्त होती, जबकि बांगरू में बहुवचन में, उदाहरणार्थ -

मानक हिन्दी	बांगरू
उसे पसीना आ गया।	उस के पसे आगे।

3. व्याकरणिक वचन और भौतिक वचन में अन्तर तब भी पाया जाता है जब एक व्यक्ति के लिये सम्मान प्रदर्शन की भावना से व्याकरणिक बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। मानक हिन्दी में बहुवचन का ऐसा प्रयोग बहुत व्यापक है। मानक हिन्दी में आदर प्रदर्शनार्थ प्रयुक्त होने पर संज्ञा का रूपान्तर भी हो जाता है, परन्तु ऐसा रूपान्तर केवल कर्तृ एकवचन में ऐसी आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं का होता है जो कर्तृ बहुवचन में भी आकारान्त के स्थान पर एकारांत हो जाती हैं, यथा बेटा→बेटे। मानक हिन्दी में एक व्यक्ति के आने पर भी सम्मान प्रदर्शन के लिए यह प्रयोग चलेगा - ` उन के बेटे आए हैं `।[1] एक अन्य उदाहरण देखिए ` तुम ने इन को पहचाना नहीं? ये उमेशचन्द्र जी हैं; सुरेशचन्द्र जी के लड़के ( ` लड़का ` नहीं ) `।[2] बांगरू में सम्मान प्रदर्शन के लिए ऐसा कोई रूपान्तर नहीं होता।

4. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में वचन के प्रत्यय कारक के प्रत्ययों से घुले मिले हैं। उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। जैसे ` घोड़ा ` संज्ञा का तिर्यक बहुवचन मानक हिन्दी में `-ओं ` प्रत्यय के योग से ` घोड़ों ` तथा बांगरू में ` -आं ` प्रत्यय के योग से ` घोड़ां ~ घोड़्यां ` बनता है, परन्तु `-ओं ` अथवा `-आं ` प्रत्यय के खंड कर के यह नहीं बताया जा सकता कि कौन सा खंड बहुवचन से सम्बद्ध है तथा कौन सा खंड तिर्यक

1- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी ; 1975 ; पृष्ठ 165

2- द्विवेदी, देवीशंकर ; भाषा और भाषिकी ; 1964 ; पृष्ठ 71

कारक का परिचायक है। अतः वचन के प्रत्ययों का उल्लेख आगे कारक के प्रकरण में किया जा रहा है।

5. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में वचन तथा कारक के कारण लगने वाले प्रत्ययों में लिंग के आधार पर अन्तर पड़ जाता है, यथा कर्ता बहुवचन रूप बनाते समय मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में आकारान्त पुल्लिंग संज्ञा 'घोड़ा' का अन्तिम 'आ' लुप्त हो जाता है और '-ए' प्रत्यय जुड़ जाता है परन्तु आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा 'माला' का कर्ता बहुवचन बनाते समय मानक हिन्दी में अन्तिम 'आ' का लोप किए बिना '-एं' प्रत्यय जोड़ा जाता है और इस प्रकार 'मालाएं' रूप बनता है जो कि 'घोड़े' से रचनात्मक विभिन्नता रखता है। बांगरू में भी जहां तक एक ओर आकारान्त पुल्लिंग शब्द कर्ता बहुवचन में एकारान्त रूप धारण कर लेते हैं वहां स्त्रीलिंग 'माला' संज्ञा कर्ता बहुवचन में उसी रूप में रहती है अर्थात् उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता।

3.1.4 कारक

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में तीन कारक नामतः कर्ता कारक, तिर्यक कारक तथा सम्बोधन कारक उपलब्ध हैं। वचन तथा कारक के आधार पर मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में कर्ता एकवचन, कर्ता बहुवचन, तिर्यक एकवचन, तिर्यक बहुवचन, सम्बोधन एकवचन तथा सम्बोधन बहुवचन छः वर्ग बनते हैं। इनमें भी आगे पुल्लिंग और स्त्रीलिंग एवं अन्त्य स्वनिम के आधार पर लगने वाले भिन्न प्रत्ययों के कारण आगे और उपवर्ग बन जाते हैं। इस दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू में पाई जाने वाली विभिन्नताओं का ब्यौरा प्रस्तुत है।

1. कर्ता एकवचन: कर्ता एकवचन की दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में पूरी समानता है। दोनों में संज्ञा का मूल रूप कर्ता एकवचन के रूप में प्रयुक्त होता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि दोनों में कर्ता एकवचन का प्रत्यय शून्य है।

2. कर्ता बहुवचन: विश्लेषण की सुविधा के लिए लिंग के आधार पर कर्ता बहुवचन को दो खंडों में विभाजित किया जा रहा है -

(क) पुल्लिंग संज्ञाएं और (ख) स्त्रीलिंग संज्ञाएं।

<u>(क) पुल्लिंग संज्ञाएं-</u>

(1) आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं के अतिरिक्त अन्य सभी पुल्लिंग संज्ञाओं के

कर्तृ बहुवचन मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में कर्तृ एकवचन के अनुसार होते हैं अर्थात् उनमें बहुवचन का कोई प्रत्यय नहीं जोड़ा जाता ।

(2) आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं को मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में कर्तृ बहुवचन के लिए आकारान्त से एकारान्त में बदल दिया जाता है, यथा घोड़ा — घोड़े । दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि पुल्लिंग आकारान्त संज्ञाओं में कर्तृ बहुवचन का प्रत्यय ` -ए ` है और सन्धि के नियम से मूल शब्द के अन्त्य ` -आ ` का लोप हो जाता है ।

(3) सभी आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं के कर्तृ बहुवचन रूपों पर उपर्युक्त नियम लागू नहीं होता । मानक हिन्दी में कुछ आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएं ऐसी हैं जो कर्तृ बहुवचन में भी अपने मूल रूप के समान ही रहती हैं, जबकि बांगरू में इन में से कुछ का रूपान्तर नहीं होता और कुछ का वैकल्पिक रूप से रूपान्तर होता है ।

(i) जो सम्बन्ध वाचक संज्ञाएं रूप में आवृत्ति मूलक हैं, यथा मामा, नाना,[1] चाचा आदि, उन का कर्तृ बहुवचन रूप मानक हिन्दी में अविकृत ही रहता है, जबकि बांगरू में विकल्प से विकृत तथा अविकृत दोनों रूप प्रचलित हैं । बांगरू में स्थान-भेद से भी इस विषय में अन्तर पड़ जाता है । कुछ स्थानों पर इनके विकृत रूप सुनाई पड़ते हैं तथा कुछ पर अविकृत ।

मानक हिन्दी

एकवचन		कर्तृ बहुवचन
चाचा	—	चाचा
काका	—	काका
दादा	—	दादा
नाना	—	नाना
मामा	—	मामा

बांगरू

एकवचन		कर्तृ बहुवचन
चाचा	—	चाचा ~ चाचे
काका	—	काका ~ काके
दादा	—	दादा ~ दादे
नाना	—	नाना ~ नाने
मामा	—	मामा ~ मामे

1- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी ; 1975 ; पृष्ठ 32

(ii) जो सम्बन्ध वाचक संज्ञाएं रूप में आवृत्ति मूलक नहीं है, उनके कर्त्तृ बहुवचन रूप दोनों में एकारान्त ही होते है यथा बेटा— बेटे, भतीजा — भतीजे , भानजा — भानजे ।

(iii) संस्कृत से आगत आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएं मानक हिन्दी में कर्त्तृ बहुवचन के लिए रूपान्तरित नहीं होती, जबकि बांगरू में ऐसी कुछ संज्ञाएं वैकल्पिक रूप में रूपान्तरित होती है और कुछ अविकृत रूप में ही चलती है, उदाहरणार्थ-

मानक हिन्दी		बांगरू	
एक वचन	कर्त्तृ बहुवचन	एक वचन	कर्त्तृ बहुवचन
राजा	राजा	राजा	राजा ~ राजे

उपर्युक्त उदाहरण में बांगरू में वैकल्पिक रूप है, जबकि निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार बांगरू में भी मानक हिन्दी के समान अविकृत रूप ही चलते है, यथा-

मानक हिन्दी		बांगरू	
एक वचन	कर्त्तृ बहुवचन	एकवचन	कर्त्तृ बहुवचन
धर्मात्मा	धर्मात्मा	धर्मात्मा	धर्मात्मा

(iv) कुछ अन्य फुटकर संज्ञाएँ और कई एक उर्दू आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएं भी मानक हिन्दी में अविकृत रहती है, जबकि बांगरू में ऐसी संज्ञाओं में कुछ का वैकल्पिक रूप से रूपान्तरण होता है और कुछ अविकृत रूप में ही प्रयुक्त होती है, उदाहरणार्थ-

मानक हिन्दी	बांगरू
(अविकृत)	(वैकल्पिक रूप)
अगुआ — अगुआ	अगुआ — अगुआ ~ अगुए
मुखिया — मुखिया	मुखिया— मुखिया ~ मुखिये
दारोगा — दारोगा	दरोगा— दरोगा ~ दरोगे
(अविकृत)	(अविकृत)
दरिया — दरिया	दरिया — दरिया

(4) पुल्लिंग संज्ञाओं के कर्त्तृ बहुवचन रूपों के सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि

132)

अरबी-फारसी से गृहीत शब्दों के बहुवचन रूप बहुधा मानक हिन्दी में अपने व्याकरणिक नियमों के अनुसार ही बनाए जाते हैं, परन्तु कानूनी हिन्दी के लेखक कभी कभी इन में अरबी-फारसी के बहुवचन के प्रत्यय लगाकर भी बहुवचन बनाते हैं। बांगरू में ऐसे बहुवचन रूपों का प्रचलन नहीं है। ऐसे कुछ प्रमुख प्रत्ययों के उदाहरण[1] हैं -

- आन	मालिक	मालिकान
	साहब	साहबान
	काश्तकार	काश्तकारान
- आत	कागज़	कागज़ात
	ख्याल	ख्यालात
	मकान	मकानात

(ख) स्त्रीलिंग संज्ञाएं :-

(1) मानक हिन्दी में अधिकांशतया[2] स्त्रीलिंग संज्ञाएं ऋजु बहुवचन के लिए रूपान्तरित होती हैं जबकि बांगरू में अविकृत ही रहती हैं।[3] मानक हिन्दी में अन्त्य स्वनिम (या स्वनिमों) के आधार पर ऋजु बहुवचन में दो विभिन्न प्रकार के प्रत्यय लगते हैं।

(2) मानक हिन्दी में ईकारान्त तथा इकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ -आं प्रत्यय लगता है, उदाहरणार्थ-

लड़की	लड़कियां
शक्ति	शक्तियां

1- गुरु, कामता प्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि० ; पृष्ठ 211

2- मानक हिन्दी में विरल प्रयोग वाली एकारान्त संज्ञाएं यथा ` दे `; ऐकारान्त संज्ञाएं यथा ` कै `;ओकारान्त संज्ञाएं यथा ` लाड़ो `, ` फोटो `;औकारान्त संज्ञाएं यथा ` सरसों ` ऋजु बहुवचन के लिये रूपान्तरित नहीं होतीं। मिलाइए-

(i) गर्ग, महेशचन्द्र ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978; पृ 21-23

(ii) जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन;197[illegible] ; पृष्ठ 126

(iii) गुरु, कामताप्रसाद; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि०; पृष्ठ 234

3- (i) कौशिक, डं०; जाट्टू साहरी ; 1910 ; भाग 1, अंक 3(बी)

(ii) जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 37

35) `-ओं` प्रत्यय के योग से पूर्व प्रातिपदिक में अन्त्य `-ई` तथा `-इ` का रूप `-इय` हो जाता है।

(3) मानक हिन्दी याकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के ऋजु बहुवचन रूपों के बारे में विद्वानों में काफी मतभेद है। डा० महेशचन्द्र गर्ग लिखते हैं, "यद्यपि हिन्दी में `बुढ़ियाँ`, `चिड़ियाँ` जैसे रूप भी चलते हैं, पर खड़ी बोली प्रदेश में इन की अपेक्षा `बुढ़िएं`, `चिड़िएं` रूप अधिक प्रचलित हैं; उदाहरणार्थ, (क) छत पर बहुत सी चिड़िएं दाना चुग रही थीं। (ख) आज उसके घर बहुत सी बुढ़िएं बैठी हैं। अतः `याकारान्त` - जैसा कोई अलग वर्ग बनाने की आवश्यकता नहीं।"[1] डा० बलदेव सिंह ने अपने लेख `हिन्दी में रूपिम-निर्धारण की कुछ समस्याएं` में `चिड़िया` का ऋजु बहुवचन रूप `चिड़ियाएं` दिया है।[2] डा० महावीर सरन जैन के मतानुसार[3] `चिड़िया` का ऋजु बहुवचन वैकल्पिक रूप से `चिड़ियाएं` तथा `चिड़ियाँ` होता है। हमारे विचारानुसार मानक हिन्दी में `चिड़िया` का ऋजु बहुवचन `चिड़ियाँ` ही अधिक मान्य है। अनेक विद्वानों[4] का मत `चिड़ियाँ` के पक्ष में है।

1- गर्ग, महेशचन्द्र ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978 ; पृष्ठ 19-20 पर पादटिप्पणी

2- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की त्रैमासिक पत्रिका `भाषा`, हिन्दी भाषा-विज्ञान अंक ; 1973 ; पृष्ठ 128

3- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978 ; पृष्ठ 126

4- देखिए- (i) गुरु, कामता प्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि० ; पृष्ठ 132

(ii) वाजपेयी, किशोरीदास ; हिन्दी शब्दानुशासन ; 2014 वि० ; पृष्ठ 197

(iii) शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ; अंक 80 (ड); पृष्ठ 33

(iv) व्यास, नरेन्द्र ; `भाषा` त्रैमासिक ; हिन्दी भाषाविज्ञान अंक ; 1973 ; पृष्ठ 128 पर सम्पादकीय टिप्पणी।

(4) शेष स्त्रीलिंग संज्ञाओं के साथ मानक हिन्दी में कर्तृ बहुवचन के लिए `-एं` प्रत्यय लगाया जाता है। प्रत्यय के योग से पूर्व अन्त्य दीर्घ `ऊ` का ह्रस्वीकरण हो जाने से `उ` में परिवर्तन हो जाता है। अन्य स्वरों में कोई परिवर्तन नहीं होता केवल `-एं` का योग हो जाता है। प्रातिपदिक का अन्त्य `अ` बना रहता है। उदाहरणार्थ -

रात	रातें
लता	लताएं
वस्तु	वस्तुएं
बहू	बहुएं
लौ	लौएं

(5) स्त्रीलिंग संज्ञाओं का मानक हिन्दी में कर्तृ बहुवचन के लिए रूपान्तरण होने तथा बांगरू में इन के अविकृत प्रयोग के कारण निम्नलिखित अनुसार भाषायी बाधा उत्पन्न हो जाती है -

मानक हिन्दी	बांगरू
कथाएं सुनीं ।	कथा सुणी ।
बहुएं बैठी हैं ।	बहू बैठी सैं ।
लड़कियां बैठी हैं ।	छोहरी बैठी सैं ।
जुएं चल रही हैं ।	जू चालैं सैं ।
गौएं बैठी हैं ।	गां बैठी सैं ।
लौएं उठ रही हैं ।	लौ उठै सैं ।

(6) बांगरू में कभी कभी कर्तृ बहुवचन में `-आं` प्रत्यय के योग वाले वैकल्पिक रूप भी सुने जाते हैं, यथा—

बहू बैठी सैं ।	बहुआं बैठी सैं ।
छोहरी गावैं सैं ।	छोहरियां गावैं सैं ।
जू चालैं सैं ।	जुआं चालैं सैं ।

(7) बांगरू स्त्रीलिंग संज्ञाओं के कर्तृ बहुवचन रूप के सम्बन्ध में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण

37)

कथन है कि कुछ परिस्थितियों में संज्ञा के साथ -आं प्रत्यय का योग अनिवार्य रूप से होता है और ऐसी रूपान्तरित संज्ञा का मूल संज्ञा से व्यतिरेक भी उपलब्ध होता है, यथा 'घणी रात बीतगी' (बहुत रात बीत गई) तथा 'घणी रातां बीतगी' (बहुत रातें बीत गईं)।

यहां दूसरे वाक्य में कर्तृ बहुवचन के लिए 'रात' संज्ञा का अनिवार्य रूप से रूपान्तरण होता है।

3. तिर्यक एकवचन : (1) ऐसी आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं के अतिरिक्त जो कर्तृ बहुवचन में रूपान्तरित होती हैं, शेष सभी संज्ञाओं का मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में तिर्यक एकवचन के लिए मूलरूप ही प्रयुक्त होता है अर्थात् उन संज्ञाओं के साथ तिर्यक एकवचन का प्रत्यय शून्य है।

(2) तिर्यक एकवचन के लिये रूपान्तरणशील संज्ञाओं के लिये मानक हिन्दी में (कर्तृ बहुवचन के समान ही) '-ए' प्रत्यय लगाया जाता है। बांगरू में डॉ० जोसेफ[1] तथा डा० जगदेवसिंह[2] के अनुसार '-ए' प्रत्यय ही प्रयुक्त होता है जबकि डा० नानक चन्द शर्मा[3] के अनुसार यह प्रत्यय -ऐ है। हमारे विश्लेषणानुसार भी बांगरू में -ऐ प्रत्यय का ही अधिक प्रयोग है। इस प्रकार हम पाते हैं कि मानक हिन्दी में पुल्लिंग संज्ञाओं के कर्तृ-बहुवचन तथा तिर्यक एकवचन रूपों में पूर्णतया एकरूपता है जबकि बांगरू में कर्तृ बहुवचन में '-ए' प्रत्यय तथा तिर्यक एकवचन में '-ऐ' प्रत्यय प्रयुक्त होने के कारण इनके रूपों में विभिन्नता आ गई है। तिर्यक एकवचन के कारण उत्पन्न भाषायी बाधा के उदाहरण हैं—

मानक हिन्दी		बांगरू
-ए	—	-ऐ
घोड़े ने		घोड़ै नै
लड़के ने		छोहरै नै
बेटे से		बेटै तै

1- जोसेफ, ई० ; जाटू ग्रामर ; 1910 ; भाग 1, अंक 3

2- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 38

3- शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास ; 1968 ; पृष्ठ 191

(3) विशिष्ट स्थानों का बोध कराने वाली व्यक्तिवाचक संज्ञाएं तिर्यक एकवचन में मानक हिन्दी में अविकृत रूप में ही प्रयुक्त होती हैं, जबकि बाँगरू में भारतीय नामों का प्राय: विकृत रूप तथा विदेशी नामों का प्राय: अविकृत रूप प्रयुक्त होता है, उदाहरणार्थ-

मानक हिन्दी   बाँगरू

नाभा से   नाभै तै

कोटा से   कोटै तै

आगरा से   आगरै तै

कलकत्ता से   कलकत्तै तै

नरवाना से   नरवाने तै

टोहाना से   टुहाने तै

परन्तु निम्नलिखित उदाहरणों में -

लंका से   लंका तै

अमेरिका से   अमरीका तै

अफ्रिका से   अफरीका तै

(4) कुछ आकारान्त विशेषण शब्दों के साथ मानक हिन्दी `-पन` (बाँ० -पण ~ -पणा) प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाएं बनाई जाती हैं। ऐसी भाववाचक संज्ञाएं आकारान्त न होते हुए भी जब तिर्यक एकवचन के रूप में प्रयुक्त होती हैं तब उन संज्ञाओं में `-पन` (बाँ० -पण ~ पणा) से पूर्व का आकारान्त रूपान्तरित हो जाता है, यथा -

मानक हिन्दी   बाँगरू

गुंडापन — गुंडेपन का   गुंडापणा — गुंडेपणा का

बहिरापन — बहिरेपन का   बहरापणा — बहरेपणा का

(5) तिर्यक एकवचन के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बाँगरू में महत्वपूर्ण विभिन्नता क्रियार्थक संज्ञा के तिर्यक रूप के विषय में उपलब्ध होती है। मानक हिन्दी में क्रियार्थक संज्ञा का तिर्यक एकवचन रूप अन्य आकारान्त संज्ञाओं के समान एकारान्त ही होता है, जबकि बाँगरू में अन्त्य `आ` का लोप हो जाने के कारण यह व्यंजनान्त हो जाता है, यथा —

मानक हिन्दी	बांगरू
खाने को	खाण नै
जाने दे	जाण दे
होने पर	होण पै
पीने दे	पीण दे
लेने दे	लेण दे

4. तिर्यक बहुवचन : (1) सभी संज्ञाओं के तिर्यक बहुवचन के लिए मानक हिन्दी में -ओं प्रत्यय तथा बांगरू में -आं प्रत्यय लगाया जाता है, यथा –

मानक हिन्दी	बांगरू
खेतों का	खेतां का
दिनों का	दिनां का
रातों का	रातां का
हाथियों का	हाथियां का
लड़कियों का	छोरियां का
चिड़ियों का	चिड़ियां का
बहुओं का	बहुआं का
डाकुओं का	डाकुआं का
घोड़ों का	घोड़्यां का
दादाओं का	दाद्यां का

(2) प्रस्तुत विश्लेषण में जिस प्रकार मानक हिन्दी की इयाकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा ` चिड़िया ` का कर्तृ बहुवचन रूप ` चिड़ियां ` माना गया है, उसी प्रकार तिर्यक बहुवचन में ` चिड़ियों ` रूप स्वीकृत किया जा रहा है।

(3) मानक हिन्दी में ` घोड़ा ` वर्ग तथा ` दादा ` वर्ग की आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं के तिर्यक बहुवचन रूपों में अन्तर बना रहता है। ` घोड़ा ` वर्ग की संज्ञाओं में तो प्रातिपदिक का अन्त्य ` आ ` लुप्त हो जाता है परन्तु ` दादा ` वर्ग की संज्ञाओं में यह बना रहता है, जबकि बांगरू में तिर्यक बहुवचन में ` घोड़ा ` वर्ग तथा ` दादा ` वर्ग का अन्तर समाप्त हो जाता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
घोड़ों ने	घोड़यां ने
गधों ने	गध्यां ने
दादाओं ने	दाद्यां ने
मामाओं ने	माम्यां ने

(4) डा० जगदेवसिंह[1] ने बांगरू स्त्रीलिंग आकारान्त शब्द `माला` का तिर्यक बहुवचन `मालायां` बताया है। हमने विभिन्न बांगरू भाषियों द्वारा तिर्यक बहुवचन के रूप में `मालां` रूप भी सुना है। प्रस्तुत विश्लेषक की अपनी बांगरू बोली में भी `मालां` रूप ही है।

(5) मानक हिन्दी में एकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं का तिर्यक बहुवचन बनाते समय प्रातिपदिक के अन्त्य `ए` का लोप वैकल्पिक रूप में होता है, जबकि बांगरू में यह अनिवार्य रूप से होता है, यथा-

	मानक हिन्दी	बांगरू
चौबे	चौबों ~ चौबेओं	चौबां

5. सम्बोधन एक वचन: (1) बांगरू में सम्बोधन एकवचन में केवल वे ही पुल्लिंग आकारान्त संज्ञाएं रूपान्तरित होती हैं जो तिर्यक एकवचन के रूप में भी रूपान्तरित होती हैं। मानक हिन्दी की तद्भव संज्ञाओं में भी यही प्रवृत्ति पाई जाती है। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सम्बोधन एकवचन का प्रत्यय `-ए` है। मानक हिन्दी में तिर्यक एकवचन का प्रत्यय भी `-ए` होने के कारण सम्बोधन एकवचन और तिर्यक एकवचन दोनों में पूरी एकरूपता पाई जाती है, जबकि बांगरू में तिर्यक एकवचन का प्रत्यय `-ऐ` होने के कारण तिर्यक एकवचन तथा सम्बोधन एकवचन के रूपों में विभिन्नता पाई जाती है, उदाहरणार्थ-

	मानक हिन्दी		बांगरू	
	तिर्यक एकवचन	सम्बोधन एकवचन	तिर्यक एकवचन	सम्बोधन एकवचन
घोड़ा	घोड़े	घोड़े	घोड़ै	घोड़े
भतीजा	भतीजे	भतीजे	भतीजै	भतीजे

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 38

जो संज्ञाएं सम्बोधन एकवचन में रूपान्तरित होती हैं उनका रूपान्तरित रूप मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में कर्त्ता बहुवचन रूप से पूरा साम्य रखता है। यह रूप एकारान्त होता है।

(2) मानक हिन्दी में प्रयुक्त कुछ संस्कृत की तत्सम संज्ञाओं के सम्बोधन एकवचन रूप उनके तिर्यक एकवचन के समान तो होते ही हैं साथ ही वैकल्पिक अन्य रूप भी मिलते हैं। बांगरू में ऐसे वैकल्पिक अन्य रूपों की प्रवृत्ति नहीं है। मानक हिन्दी में प्रयुक्त उदाहरण -

	सम्बोधन एकवचन
राजा	राजा ~ राजन्
स्वामी	स्वामी ~ स्वामिन्
बाला	बाला ~ बाले
प्रिया	प्रिया ~ प्रिये
सीता	सीता ~ सीते
राधा	राधा ~ राधे
मुनि	मुनि ~ मुने
सीतापति	सीतापति ~ सीतापते
हरि	हरि ~ हरे
बन्धु	बन्धु ~ बन्धो
प्रभु	प्रभु ~ प्रभो
साधु	साधु ~ साधो

(3) यहां यह भी उल्लेखनीय है कि डा० महावीर सरन जैन[1] के अनुसार मानक हिन्दी की `घोड़ा` वर्ग की आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं में भी सम्बोधन कारक एकवचन में प्रातिपदिक का ही प्रयोग होता है, यथा लड़का → लड़का। डा० महावीर सरन जैन इसी आधार पर `घोड़ा` वर्ग की पुल्लिंग आकारान्त संज्ञा के सम्बोधन एकवचन के साथ `काला` वर्ग के विशेषण को भी अरूपान्तरित दशा में ही प्रयुक्त करते हैं, यथा-

---

1- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978 ; पृष्ठ 123

142)

/ काला लड़का ! यहाँ आ /[1] जबकि बांगरू में ऐसा प्रयोग उपलब्ध नहीं होता । मानक हिन्दी के सन्दर्भ में भी डा० महावीर सरन जैन के उपर्युक्त विचार से हम सहमत नहीं है । हमारे विचारानुसार मानक हिन्दी में / काला लड़का ! यहाँ आ / के स्थान पर / काले लड़के ! यहाँ आ / प्रयोग ही चलता है । अनेक विद्वानों[2] ने मानक हिन्दी में ` घोड़ा ` वर्ग की आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं का सम्बोधन एकवचन का प्रत्यय `-ए ` माना है ।

6. सम्बोधन बहुवचन : (1) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सम्बोधन बहुवचन का प्रत्यय `-ओ ` है, यथा -

	मानक हिन्दी	बांगरू
` घोड़ा `	घोड़ो	घोड़ुओ
` गधा `	गधो	गधुओ

मानक हिन्दी और बांगरू में उपर्युक्तानुसार अन्तर सन्धि नियमों का ही है(मिलाइए अंक 2.2.2(1) तथा (2)) ।

(2) मानक हिन्दी में ` घोड़ा ` वर्ग तथा ` दादा ` वर्ग की आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं के सम्बोधन बहुवचन के रूपों में अन्तर बना रहता है । ` घोड़ा ` वर्ग की संज्ञाओं का अन्त्य ` -आ ` लुप्त हो जाता है,जबकि ` दादा ` वर्ग की संज्ञाओं के प्रातिपदिक का अन्त्य `-आ ` बना रहता है । बांगरू में ` घोड़ा ` वर्ग तथा ` दादा ` वर्ग की संज्ञाओं के सम्बोधन बहुवचन में पूरी समानता है, यथा -

	मानक हिन्दी	बांगरू
` घोड़ा `	घोड़ो	घोड़ुओ
` दादा `	दादाओ	दादुओ

1- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978 ; पृष्ठ 138

2- मिलाइए - (i) गुरु, कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि० ;पृष्ठ 221
(ii) शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ; पृष्ठ 5
(iii) वर्मा, महेशचन्द्र, परिनिष्ठित हिन्दीका रूप ग्रामिक अध्ययन; 1978 ; पृष्ठ 6
(iv) जगदेवसिंह ; हिन्दी में रूपिम निर्धारण की कुछ समस्याएं ; ` भाषा ` त्रैमासिक ; हिन्दी भाषाविज्ञान अंक ; 1973 ; पृष्ठ 127

7. संक्षेप में मानक हिन्दी और बांगरू में वचन तथा कारक के कारण होने वाले रूपान्तरों को निम्नलिखित परप्रत्ययों के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है :-

	मानक हिन्दी	बांगरू
कर्तृ एकवचन	ø	ø
कर्तृ बहुवचन	ø, ए, एं, आँ	ø, ए, आँ
तिर्यक एकवचन	ø, ए	ø, रे ए
तिर्यक बहुवचन	ओं	आँ
सम्बोधन एकवचन	ø, ए	ø, ए
सम्बोधन बहुवचन	ओ	ओ

3.2 सर्वनाम

3.2.1 सर्वनाम तालिका :

सर्वनामों तथा उनके रूपान्तर के सम्बन्ध में मानक हिन्दी और बांगरू में पाई जाने वाली विभिन्नताओं की चर्चा से पूर्व दोनों में प्रयुक्त होने वाले सभी सर्वनामों के कर्तृ कारक में प्रयुक्त रूपों की तुलनात्मक सारणी प्रस्तुत की जा रही है :-

	मानक हिन्दी	बांगरू
पुरुषवाचक, उ०पु०, ए०व०	मैं	मैं
पुरुषवाचक, उ०पु०, ब० व०	हम	हम, आपाँ
पुरुषवाचक, म०पु०, ए०व०	तू	तैं ~ तूं, तोह
पुरुषवाचक, म०पु०, ब०व०	तुम	थम, तम
संकेतवाचक दूरवर्ती, ए०व०	वह	पु० वोह स्त्री० वा
संकेतवाचक निकटवर्ती, ए०व०	यह	पु० योह स्त्री० या
संकेतवाचक दूरवर्ती, ब०व०	वे	वे
संकेतवाचक निकटवर्ती, ब०व०	ये	ये

44)

मानकहिन्दी	बांगरू
आदर सूचक आप	आप
निजवाचक आप	आप
सम्बन्ध सूचक जो	जो, जोण
सम्बन्ध सूचक सो	सो,
अनिश्चय सूचक कोई	कोए
अनिश्चय सूचक कुछ	किम्मी
प्रश्न सूचक कौन	कोण~कूण
प्रश्न सूचक क्या	के

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सर्वनामों की व्याकरणिक कोटियां है,लिंग, वचन, पुरुष तथा कारक ।[1]

1- सर्वनामों की विभिन्न व्याकरणिक कोटियों के कारण सर्वनामों में होने वाले रूपान्तरण के विषय में विद्वानों ने अपने अपने विश्लेषणानुसार विभिन्न मत दिए है ।

(क) हिन्दी सर्वनामों के बारे में विभिन्न विद्वानों के मत-

(i) `सर्वनाम रूपान्तर रहित होते है, उनमें किसी व्याकरणिक संवर्ग के लिए कोई विभक्ति संयुक्त नहीं होती । `-
जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ;1978 पृष्ठ 132

(ii) `हिन्दी सर्वनामों में वचन और कारक के कारण रूपान्तर होता है । लिंग-भेद-ज्ञान क्रिया या विशेषण के लिंग से होता है । `
कालरा, सुधा; हिन्दी वाक्य-विन्यास ; 1971 ;पृष्ठ 84

(iii) `द हिन्दी प्रोनाउन इज लाइक द नाउन,इन्फ्लेक्टिड फार नम्बर एंड केस, बट नाट फार जैंडर (व्हिच इज इन्डिकेटिड बाई दि वर्बल फार्म्स ऑर बाई दि एड्जेक्टिव्ज ) । ` -
शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ;पृष्ठ 46

(iv) `संज्ञाओं के समान सर्वनामों में वचन और कारक है , परन्तु लिंग के कारण इसका रूप नहीं बदलता । `-
गुरु, कामता प्रसाद, हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि0,पृष्ठ 238

(ख) बांगरू सर्वनामों के बारे में

(i) `दि प्रोनाउन्स फार्म ए पैराडिग्मैटिक क्लास लाइक नाउन्स । `
जगदेवसिंह, ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू, 1970 , पृष्ठ 53

3.2.2 लिंग :

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सर्वनामों में पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दो लिंग हैं, परन्तु मानक हिन्दी में सर्वनामों में लिंग की व्याकरणिक कोटि केवल अन्तर्निहित है। इसके कारण सर्वनामों में कोई रूपान्तर नहीं होता, जबकि बांगरू में पुरुषवाचक सर्वनामों के अन्य पुरुष एकवचन कर्तृकारक में लिंग के कारण रूपान्तर भी पाया जाता है, यथा -

	मानक हिन्दी	बांगरू
पु०	वह आया ।	वोह् आया ।
स्त्री०	वह आई ।	वा आई ।
पु०	यह आया ।	योह् आया ।
स्त्री०	यह आई ।	या आई ।

3.2.3 वचन

1. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सर्वनाम का वचन-भेद व्याकरणिक है अर्थात् सर्वत्र एक व्यक्ति या वस्तु के लिये एकवचन ही प्रयुक्त नहीं होता परन्तु मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में व्याकरणिक तथा भौतिक वचन का अन्तर अपने अपने ढंग का है।

2. मानक हिन्दी में सम्पादन या लेखन में और अधिकार, अभिमान या क्रोध प्रदर्शन में एक व्यक्ति द्वारा अपने लिये उत्तम पुरुष बहुवचन सर्वनाम `हम` का प्रयोग भी शुद्ध माना जाता है,[1] जबकि बांगरू में `हम` के प्रयोग की ऐसी प्रवृत्ति नहीं है।

3. बांगरू में श्रोता के प्रति उपेक्षा भाव दिखाते हुए अपने लिए उत्तम पुरुष बहुवचन सर्वनाम 'आपां'[2] का प्रयोग उपलब्ध है, यथा `आपां तो जांगे, तेरी मरजी है` । मानक हिन्दी में ऐसा प्रयोग उपलब्ध नहीं होता।

1- मिलाइए(i) गुरु , कामता प्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि०,पृष्ठ 76
(ii) शर्मा, आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी; 1975; पृष्ठ 46

2- मिलाइए - शर्मा, स्थाणुदत्त ; हरियाणी की भाषा; भाषा विभाग,पंजाब की 1958-59 की वार्षिक-गोष्ठी में पढ़ा गया निबन्ध ; पृष्ठ 29

4. मानक हिन्दी में मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम `तू` का प्रयोग निरादर या हल्कापन प्रकट कर सकता है, जबकि बांगरू में मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम `तैं` के प्रयोग से निरादर की कोई भावना व्यक्त नहीं होती। मानक हिन्दी में परमात्मा, छोटे बच्चों, शिष्यों और घनिष्ठ मित्रों के लिए `तू` का प्रयोग चलता है। प्यार में बहिन-भाई और माता तक के लिए भी `तू` का प्रयोग चल जाता है या फिर क्रोध प्रदर्शन के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।[1] बांगरू में `बापू! तैं चालैगा के` (पिता जी क्या आप चलेंगे) में `तैं` के प्रयोग से अनादर की कोई भावना व्यक्त नहीं होती, जबकि इसके अनुरूपी मानक हिन्दी वाक्य `पिता! क्या तू चलेगा` से घोर अनादर की भावना अभिव्यक्त होती है।

5. मानक हिन्दी में एक व्यक्ति के लिए मध्यम पुरुष बहुवचन सर्वनाम `तुम` का प्रयोग परिवार के सदस्यों, समानता वाले परिचित व्यक्तियों तथा नौकरों के लिए चलता है। शिष्टता एवं सम्मान प्रदर्शन के लिए मानक हिन्दी में एक व्यक्ति के लिए भी आदरसूचक बहुवचन सर्वनाम `आप` का प्रयोग पाया जाता है, जबकि बांगरू में, चाहे आदरसूचक 'आपंगा' भी कुछ प्रयोग चलने लगा है, बहुधा एक व्यक्ति के लिए मध्यम पुरुष बहुवचन सर्वनाम `थम` का प्रयोग ही आदर तथा सत्कार का परिचायक है यथा `पंडत जी, थम बी चालो` (पंडित जी, तुम भी चलो)।

6. मानक हिन्दी में एक व्यक्ति के लिए अन्य पुरुष में भी एकवचन का प्रयोग तभी किया जा सकता है जब उसे `तू` से सम्बोधित किया जा सके अन्यथा एकवचन का प्रयोग तिरस्कार या अनादर का परिचायक हो जाता है, जबकि बांगरू में एक व्यक्ति के लिये ऐसे एकवचन के प्रयोग से तिरस्कार या अनादर की भावना की कोई अभिव्यक्ति नहीं होती, यथा एक व्यक्ति के लिये प्रयुक्त होने पर-

मानक हिन्दी	बांगरू
सम्मान सूचक — वे आए।	सामान्य अर्थ में — वोह आया।
असम्मान सूचक - वह आया।	सामान्य अर्थ में — वोह आया।

1- मानकहिन्दी में `तू` के प्रयोग के लिए देखिए-
(i) गुरु, कामताप्रसाद; हिन्दी व्याकरण 2017 वि० ; पृष्ठ 77-78
(ii) शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ;पृष्ठ 46

147)

7. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में कर्तृ कारक में केवल पुरुषवाचक तथा संकेत वाचक सर्वनामों का वचन के कारण रूपान्तर होता है। अन्य सभी सर्वनाम नामत: आदर सूचक ' आप ', निज वाचक ' आप ', सम्बन्ध वाचक, प्रश्नवाचक तथा अनिश्चय-वाचक सर्वनाम वचन के कारण कर्तृ कारक में रूपान्तरित नहीं होते।

3.2.4 पुरुष

1. पुरुष मानक हिन्दी तथा बांगरू दोनों के सर्वनाम में पाई जाने वाली एक व्याकरणिक कोटि है जिसकी अन्विति क्रिया से होती है। बोलने वाला उत्तम पुरुष, सुनने वाला मध्यम पुरुष, शेष सभी अन्य पुरुष— भौतिक रूप से पुरुष के ये तीन भेद हैं। मानक हिन्दी तथा बांगरू दोनों में प्राय: भाषायी एवं भौतिक पुरुष का सामंजस्य बैठ जाता है परन्तु सर्वत्र ऐसा सामंजस्य अनिवार्य नहीं। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ' हम ' व्याकरणिक रूप से उत्तम पुरुष है, जबकि इसमें वक्ता के अतिरिक्त श्रोता के भी शामिल हो सकने से भौतिक वक्ता के उत्तम पुरुष के अलावा मध्यम पुरुष भी शामिल हो सकता है।

2. बांगरू में मध्यम पुरुष समावेशी उत्तम पुरुष के रूप में ' हम ' के स्थान पर ' आपां '[1] सर्वनाम का प्रयोग अधिक पाया जाता है। मानक हिन्दी में ' हम ' के अतिरिक्त ऐसा कोई अन्य सर्वनाम प्रयुक्त नहीं होता। बांगरू में मध्यम पुरुष समावेशी का उदाहरण- ' आपां दोनूं चालेंगे। '

3. आदरसूचक सर्वनाम ' आप ' के प्रयोग के विषय में यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में व्याकरणिक रूप से अन्य पुरुष के रूप में प्रयुक्त आदरसूचक ' आप ' भौतिक जगत के मध्यम पुरुष के अलावा भौतिक जगत के अन्य पुरुष के लिये भी प्रयोग में लाया जाता है। मानक हिन्दी में विषय-व्यक्ति की उपस्थिति में प्रयुक्त होकर निश्चित रूप से यह ' वे ' की अपेक्षा अधिक सम्मान सूचक होजाता है। इस प्रसंग में ' आप ' से अभिहित व्यक्ति हमारे विशिष्ट अर्थ में ' श्रोता ' (सम्बोधित व्यक्ति) भले ही न हो, हमारे वक्तव्य का अवश्य वह अवश्य कर रहा होता है। उदाहरणार्थ-

---

1- मिलाइए- शर्मा, स्थाणुदत्त ; हरियाणा की भाषा ; भाषा विभाग पंजाब की 1958-59 की वार्षिक लेखक-गोष्ठी में पढ़ा गया निबन्ध ; पृष्ठ 29

" आज की सभा के मुख्य वक्ता श्री प्रकाशदेव मीमांसक हैं। आप की विद्वता के सम्बन्ध में कौन नहीं जानता। सौभाग्यवश हमारी इस विशाल शिक्षा-संस्था के जन्मदाता भी आप ही हैं"।[1] बांगरू में आदर सूचक ` आप ` का प्रयोग व्याकरणिक दृष्टि से तो मध्यम पुरुष में होता ही है साथ ही यह मौखिक मध्यम पुरुष तक ही सीमित है ; यथा ` आप चालो `। बांगरू में व्याकरणिक या मौखिक किसी भी दृष्टि से ` आप ` का प्रयोग अन्य पुरुष के रूप में नहीं होता।

4. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही उत्तम तथा मध्यम पुरुष सर्वनामों को छोड़ कर शेष सभी सर्वनाम और सब संज्ञाएं अन्य पुरुष में आती हैं। इस अनिश्चित समूह को संक्षेप में व्यक्त करने के लिए प्राय: संकेतवाचक सर्वनामों को ही अन्य पुरुष के उदाहरण के रूप में ले लिया जाता है।

3.2.5 <u>कारक</u>

1. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में रूपान्तरण की दृष्टि से सर्वनाम के मूल तथा तिर्यक दो कारक हैं। संज्ञाओं के विपरीत सर्वनामों में सम्बोधन कारक उपलब्ध नहीं होता। संज्ञाओं में तो सभी परसर्गों से पूर्व तिर्यक रूप एक ही रहता है, परन्तु मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में विभिन्न परसर्गों से पूर्व सर्वनामों के तिर्यक रूपों में विभिन्नता पाई जाती है।

2. मानक हिन्दी में कर्ता कारक में उत्तम तथा मध्यम पुरुष सर्वनाम यदि परसर्ग सहित प्रयुक्त होते हैं तो उन के रूपों में कोई परिवर्तन नहीं होता, जबकि बांगरू में एकवचन के ऐसे रूपों में विकार आ जाता है और बहुवचन के रूप मूल रूप के समान ही होते हैं, उदाहरणार्थ -

मानकहिन्दी	बांगरू
मैं + ने = मैंने	मैं + नै = मन्नै
तू + ने = तूने	तैं + नै = तन्नै
हम + ने = हमने	हम + नै = हमनै
तुम + ने = तुमने	थम + नै = थमनै

1- द्विवेदी, देवी शंकर ; भाषा और भाषिकी ; 1964 ; पृष्ठ 72

149)

बांगरू में एकवचन के तिर्यक रूप उपर्युक्तानुसार संश्लिष्ट रूप भी धारण कर लेते हैं अर्थात् परसर्ग प्रातिपदिक में घुलमिल गए हैं।

3. सम्बन्ध कारक में मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही उत्तम तथा मध्यम पुरुष के रूप 'का' परसर्ग के स्थान पर '-रा' प्रत्यय के योग से बनते हैं। दोनों में ही सम्बन्ध कारक में इनके रूप संश्लिष्ट होते हैं। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में एकवचन सम्बन्ध कारक में उत्तम पुरुष का रूप 'मेरा' तथा मध्यम पुरुष का रूप 'तेरा' है, जबकि बहुवचन रूपों में अन्तर पाया जाता है। मानक हिन्दी में उत्तम तथा मध्यम पुरुष के रूप क्रमशः 'हमारा' तथा 'तुम्हारा' हैं, जबकि बांगरू में ये रूप क्रमशः 'म्हारा' तथा 'थारा' होते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी 'हमारा' और बांगरू 'म्हारा' का मूलरूप दोनों में 'हम' है। सम्बन्ध कारक में प्रयुक्त '-रा' प्रत्यय लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार परिवर्तनशील है।

4. कर्ता तथा सम्बन्ध कारकों से भिन्न अन्य सभी कारकों में एकवचन उत्तम पुरुष तथा एकवचन मध्यम पुरुष सर्वनामों के तिर्यक रूप मानक हिन्दी में क्रमशः 'मुझ' और 'तुझ' होते हैं जबकि बांगरू में ऐसे विभिन्न कारकों में इन के रूपों में विभिन्नता पाई जाती है। बांगरू में कर्म कारक के संश्लिष्ट रूप कर्ता कारक के समान ही क्रमशः 'मन्नै' तथा 'तन्नै' हैं, जबकि कर्ता तथा कर्म से भिन्न अन्य कारकों में तिर्यक रूप 'मेरै' तथा 'तेरै' के साथ परसर्ग का प्रयोग किया जाता है। बांगरू में करण तथा अपादान कारकों में एक वैकल्पिक रूप 'मत्' का भी प्रयोग होता है जिसके साथ परसर्ग मिलकर संश्लिष्ट रूप 'मतै' बन जाता है।

5. उत्तम तथा मध्यम पुरुष सर्वनामों के बहुवचन तिर्यक रूप मानक हिन्दी में क्रमशः 'हम' तथा 'तुम' होते हैं अर्थात् उनके रूप में कारक के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता, जबकि बांगरू में कर्ता तथा कर्म कारक में तो इन के तिर्यक रूप निर्विकार होते हैं परन्तु अन्य कारकों में (सम्बन्ध कारक के अलावा) इन के तिर्यक रूप क्रमशः 'म्हारै' तथा 'थारै' होते हैं। 'तै' परसर्ग के पूर्व वैकल्पिक रूप से 'हम' तथा 'थम' निर्विकार रूप में भी प्रयुक्त होते हैं, यथा-

हम + तै	म्हारैतै ~ हमतै
थम + तै	थारैतै ~ थमतै

150)

6. आदर सूचक ` आप ` का तिर्यक रूप मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही निर्विकार रहता है ।

7. निजवाचक ` आप ` का सम्बन्ध कारक का रूप मानक हिन्दी में ` अपना ` और बांगरू में ` आपणा ` होता है । मानक हिन्दी में प्रातिपदिक का रूप संकुचित हो जाता है और `-ना ` प्रत्यय का योग होता है,जबकि बांगरू में प्रातिपदिक का रूप संकुचन नहीं होता और `-णा ` प्रत्यय का योग होता है । अन्य कारकों में मानक हिन्दी में निजवाचक आपका तिर्यक रूप ` अपने ` होता है,जबकि बांगरू में ` आपणे ` होता है,यथा मानक हिन्दी में ` अपने पर `; बांगरू में ` आपणे पै ` ।

8. मानक हिन्दी में कर्ता कारक में निजवाचक ` आप ` का तिर्यक रूप प्रयुक्त नहीं होता और न ही उसके साथ ` ने ` परसर्ग का प्रयोग होता है,[1] जबकि बांगरू में कर्ता कारक में निजवाचक ` आप ` के साथ ` ने ` परसर्ग का प्रयोग वैकल्पिक रूप में होता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
उसने आप कर के देखा ।	उसने आप कर के देख्या ।
	~ उसने आपने कर के देख्या ।

यदि निजवाचक ` आप ` के स्थान पर ` खुद ` प्रतिस्थापित कर दिया जाए तब भी उपर्युक्त कथन लागू होता है, यथा —

मानक हिन्दी	बांगरू
उसने खुद कर के देखा ।	उसने खुद कर के देख्या ।
	~ उसने खुदने कर के देख्या ।

9. संकेत वाचक, सम्बन्ध वाचक तथा प्रश्न वाचक सर्वनामों के कर्तृ कारक में एक वचन वाले मानक हिन्दी और बांगरू में अलग अलग हैं परन्तु तिर्यक कारक में यह विभिन्नता समाप्त हो जाती है । इन सर्वनामों के तिर्यक कारक एकवचन के रूप समानरूप से सभी परसर्गों के पूर्व प्रयुक्त होते हैं । मानक हिन्दी के ` यह `, ` वह `, ` जो `, ` कौन ` और इनके अनुरूपी बांगरू सर्वनामों के तिर्यक कारक एकवचन क्रमशः ` इस `, ` उस `, ` जिस `,

---

1- मिलाइए- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ; पृष्ठ 49

` किस ` होते हैं ।

10. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में संकेतवाचक, सम्बन्ध वाचक तथा प्रश्न वाचक सर्वनामों के बहुवचन तिर्यक रूप ` इन `, ` उन `, ` जिन `, ` किन ` बनते हैं । मानक हिन्दी में कर्ता कारक में परसर्ग ` ने ` के साथ इनके तिर्यक रूप क्रमश: ` इन्हों `, `उन्हों `, ` जिन्हों `, ` किन्हों `, होते हैं जबकि बांगरू में ` ने ` परसर्ग के साथ ये क्रमश: ` इन्हां `, ` उन्हां `, ` जिन्हां `, ` किन्हां ` हो जाते हैं ।

11. प्रश्नवाचक सर्वनाम मानक हिन्दी ` क्या ` और बांगरू तदनुरूप ` के ` का प्रयोग परसर्ग रहित कर्ता तथा कर्म कारकों में ही होता है । इन के तिर्यक रूप नहीं बनते ।

12. अनिश्चयवाचक सर्वनाम का तिर्यक एकवचन तथा बहुवचन रूप मानक हिन्दी में क्रमश: ` किसी ` तथा ` किन्हीं ` होता है जबकि बांगरू में क्रमश: ` किसे ` तथा ` किन्हें ` ।

3.2.6 कर्मकारक के वैकल्पिक संश्लिष्ट रूप :

1. सर्वनामों के तिर्यक रूपों के विषय में यह भी उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में कर्म कारक में तिर्यक रूपों के वैकल्पिक रूप भी उपलब्ध होते हैं जिनमें ` को ` परसर्ग के स्थानापन्न `-ए ` (एकवचन में) तथा `-हें ` (बहुवचन में) प्रत्यय अपने प्रातिपदिकों के साथ घुलमिल कर संश्लिष्ट रूप बनाते हैं, यथा इसको→इसे, उसको → उसे ; इन को — इन्हें आदि, जबकि बांगरू में ऐसे वैकल्पिक रूप उपलब्ध नहीं होते । मानक हिन्दी में भी अनिश्चयवाचक सर्वनामों के ऐसे वैकल्पिक रूपों का अभाव है । उनके परसर्ग सहित कर्म कारक रूप एकवचन तथा बहुवचन में क्रमश: ` किसी को ` तथा ` किन्हीं ` को ` ही बनते हैं । मानक हिन्दी में ` सब ` का कर्म कारक संश्लिष्ट रूप ` सबे ` बनता है, अन्य बहुवचन सर्वनामों के समान `-हें ` प्रत्यय के योग से नहीं बनता ।

2. बांगरू में भी मानक हिन्दी के ` इसे `, ` उसे ` रूपों से पर्याप्त समता रखने वाले रूप `इसे `, ` उसे ` प्रचलित हैं परन्तु मानक हिन्दी में ये कर्ता/कर्मकारक के संश्लिष्ट रूप हैं जबकि, बांगरू में बलसूचक निपात ` ए ` के संयोग से बने हुए रूप हैं । इस प्रकार मानक हिन्दी और बांगरू के इन मिलते जुलते रूपों में अर्थ की विभिन्नता है ।

3. बांगरू में परसर्ग रहित सर्वनाम के कर्ता तथा कर्म कारक एकवचन के

संश्लिष्ट रूपों का उल्लेख पहले किया जा चुका है (देखिए अंक 3.2.5.2.)।

3.3 विशेषण

3.3.1 अविकारी तथा विकारी विशेषण

1. रूपान्तर की दृष्टि से विशेषणों को मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में विकारी और अविकारी दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। सामान्यतया आकारान्त विशेषण विकारी होते हैं और अन्य विशेषण अविकारी।

2. आकारान्त विशेषणों में भी कुछ ऐसे विशेषण हैं जो विकारी नहीं हैं यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
घटिया लड़का	घटिया छोहरा
घटिया लड़के	घटिया छोहरे
घटिया लड़के ने	घटिया छोहरे नै
घटिया लड़की	घटिया छोहरी

इस प्रकार हम देखते हैं कि `घटिया` विशेषण आकारान्त होते हुए भी विशेष्य के लिंग, वचन तथा कारक से प्रभावित नहीं होता। इसी प्रकार के अन्य उदाहरण हैं- बढ़िया(बां० बढिया), दुखिया आदि। यहां यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अविकारी आकारान्त विशेषण प्राय: इयाकारान्त होते हैं।

3. मानक हिन्दी में ऐसे भी आकारान्त विशेषण हैं जो इयाकारान्त न होते हुए भी वैकल्पिक रूप में या अनिवार्यतया अविकारी हैं, जबकि बांगरू में इयाकारान्त तथा गणनासूचक आकारान्त विशेषणों से भिन्न अन्य आकारान्त विशेषण अविकारी विशेषणों की श्रेणी में नहीं आते। मानक हिन्दी में `ताज़ा` विशेषण वैकल्पिक रूप से अविकारी भी रहता है, जबकि बांगरू में `ताजा` सर्वदा विकारी विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है, यथा मानक हिन्दी में `आज की ताज़ा-खबर`[1] प्रयोग भी चलता है जबकि ऐसी स्थिति में बांगरू में विशेषण का अविकारी रूप

1- शर्मा, हरिकुमार ; `भाषा` त्रैमासिक, हिन्दी भाषाविज्ञान अंक :1973, पृष्ठ 291

में प्रयोग नहीं पाया जाता । मानक हिन्दी में इयाकारान्त से भिन्न आकारान्त अविकारी विशेषण के रूप में ` उमदा ` भी उद्धृत किया जा सकता है । मानक हिन्दी में यह सर्वदा अविकारी विशेषण के रूप में ही प्रयुक्त होता है । बांगरू में इस विशेषण का प्रचलन नहीं है ।

4. मानक हिन्दी में आकारान्त गणनात्मक संख्यावाची विशेषणों का अभाव है, जबकि बांगरू में ग्यारह से अठारह तक की संख्याएं आकारान्त[1] है,(देखिये अंक 3.3.6 .1 (क) (1)) परन्तु ये भी अविकारी आकारान्त विशेषणों की श्रेणी में आती है और विशेष्य के लिंग और कारक से प्रभावित नहीं होतीं, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
ग्यारह लड़के	ग्यारा छोहरे
ग्यारह लड़कियां	ग्यारा छोहरी
ग्यारह लड़कों ने	ग्यारा छोहरयां नै
ग्यारह लड़कियों ने	ग्यारा छोहरियां नै

वचन की दृष्टि से तो एक से अधिक होने के कारण ये संख्याएं बहुवचन है ही ।

5. मानक हिन्दी में सामान्य प्रवृत्ति के अनुसार आकारान्त से भिन्न विशेषण अविकारी श्रेणी में आते है परन्तु संस्कृत से गृहीत कुछ तत्सम विशेषणों में वैकल्पिक रूप से उनके स्त्रीलिंग रूप भी कभी कभी प्रयोग में आते देखे गए हैं । यहां यह उल्लेखनीय है कि संस्कृत के विपरीत मानक हिन्दी में अधिकांश तत्सम विशेषण अविकारी ही रहते है । मानक हिन्दी में `सुन्दर बालक ` के साथ ` सुन्दर बालिका ` प्रयोग ही चलता है । संस्कृत की पद्धति पर बना ` सुन्दरी बालिका ` प्रयोग मानक हिन्दी में ग्राह्य नहीं है । मानक हिन्दी में ` सुन्दरी ` शब्द संज्ञा हो जाता है जिसका अर्थ है ` सुन्दर स्त्री ` । परन्तु ` वाला ` अर्थ को अपने में संजोने वाले कुछ संस्कृत तत्सम विशेषणों के विकारी रूप भी देखने में आए है, यथा -

हितकारी — हितकारिणी(सभा)
पुरवासी — पुरवासिनी (स्त्रियां)
वर्षीय — (सोलह) वर्षीया (लड़की)

1- शर्मा, मानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 1968 ; पृष्ठ 211

बांगरू में ऐसे तत्सम विशेषणों का अभाव है। वैसे मानक हिन्दी में भी ऐसे विशेषणों को अविकारी के रूप में प्रयुक्त करने की प्रवृत्ति अधिक प्रचलित है, यथा सर्व हितकारी सभा, पुरवासी स्त्रियां, गौर वर्णीय लड़की।

3.3.2 विशेषणों का रूपान्तरण

1. सभी विकारी आकारान्त विशेषणों में अन्त्य '-आ' का लोप करके स्त्रीलिंग व्युत्पादी प्रत्यय '-ई' जोड़ने से उनके स्त्रीलिंग रूप बन जाते हैं, यथा गन्दा ⟶ गन्दी

इस प्रकार व्युत्पन्न स्त्रीलिंग विशेषणों में विशेष्य के वचन तथा कारक के कारण कोई विकार नहीं होता यथा भूरी घोड़ी, भूरी घोड़ी के (बां० कै), भूरी घोड़ियां, भूरी घोड़ियों का (बांगरू-घोड़ियां का)।

2. विकारी आकारान्त विशेषण के साथ विशेष्य यदि पुल्लिंग कर्ता एकवचन हो तो विशेषण आकारान्त ही रहता है, विशेष्य यदि पुल्लिंग बहुवचन (कर्ता या तिर्यक किसी भी कारक में) हो तो विशेषण के अन्त्य '-आ' का लोप हो जाता है और '-ए' का योग हो जाता है। विशेष्य यदि पुल्लिंग एकवचन तिर्यक कारक में हो तो मानक हिन्दी और बांगरू में विशेषण के रूप में विभिन्नता आ जाती है। मानक हिन्दी में विशेषण एकारान्त होता है, जबकि बांगरू में यह ऐकारान्त हो जाता है, यथा-

मानक हिन्दी		बांगरू
पु०,ए०व०,कर्ता रूप	काला घोड़ा	काला घोड़ा
पु०,ब०व०,कर्ता रूप	काले घोड़े	काले घोड़े
पु०,ब०व०,तिर्यक रूप	काले घोड़ों का	काले घोड़यां का
पु०,ए०व० तिर्यक रूप	काले घोड़े ने	काले घोड़े नै
पु०,ए० व०,तिर्यक रूप	काले घोड़े को	काले घोड़े नै
पु०,ए०व०,तिर्यक रूप	काले घोड़े से	काले घोड़े तै
पु०,ए०व०, तिर्यक रूप	काले घोड़े पर	काले घोड़े पै
पु०,ए०व०, तिर्यक रूप	काले घोड़े में	काले घोड़े मैं

3.3.3. सर्वनामों से व्युत्पन्न विशेषण

1. सर्वनामों के साथ व्युत्पादी प्रत्यय लगाकर प्रकारवाचक तथा मात्रावाचक विशेषण बनाए जाते हैं। ये विशेषण संकेतवाचक, सम्बन्धवाचक, और प्रश्न वाचक सर्वनामों से बनाए जाते हैं। इस प्रकार व्युत्पन्न विशेषणों के रूप मानक हिन्दी और बांगरू में कुछ विभिन्नता लिए होते हैं।

2. प्रकार वाचक विशेषण व्युत्पादी प्रत्यय `-सा` के योग से बनाए जाते हैं, परन्तु इस प्रत्यय से पूर्व आने वाले प्रातिपदिक परिवर्त मानक हिन्दी और बांगरू में अलग अलग हैं, यथा-

	मानकहिन्दी	बांगरू
निकटवर्ती संकेत वाचक सर्वनाम	यह — ऐ + सा = ऐसा	योह — इ + सा = इसा
दूरवर्ती संकेत वाचक सर्वनाम	वह — वै + सा = वैसा	वोह — उ + सा = उसा
सम्बन्ध वाचक सर्वनाम	जो — जै + सा = जैसा	जो — जि + सा = जिसा
प्रश्नवाचक सर्वनाम	कौन — कै + सा = कैसा	कोण — कि + सा = किसा

3. मात्रावाचक व्युत्पन्न विशेषणों के रूप मानक हिन्दी और बांगरू में लगभग समान हैं। केवल इतना अन्तर है कि मानक हिन्दी `-न-` बांगरू में `-ण-` हो जाता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
इतना	इतणा
उतना	उतणा
जितना	जितणा
कितना	कितणा

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रकारवाची व्युत्पन्न विशेषणों में प्रातिपदिक के परिवर्तन का जो अन्तर मानक हिन्दी और बांगरू में उपलब्ध होता है, वह मात्रावाचक व्युत्पन्न विशेषणों में समाप्त हो जाता है।

4. प्रकारवाचक एवं मात्रावाचक ये व्युत्पन्न विशेषण विकारी विशेषण की श्रेणी में आते हैं और अपने विशेष्य के लिंग, वचन तथा कारक से प्रभावित होते हैं।

3.3.4 `सा` का प्रयोग:-

1. `सा` के योग से भी विशेषण पद व्युत्पन्न होते हैं। यह `सा` मानक हिन्दी `जैसा` और बांगरू `जिसा` दोनों का ही संक्षिप्त रूप है। इस से पूर्व संज्ञाएं अपने विकारी रूप में आती हैं, यथा `बकरा + सा` → `बकरे सा`। सर्वनामों के तिर्यक रूप के साथ भी `सा` का प्रयोग पाया जाता है, यथा 'मुझ सा' (बांगरू 'मेरे सा')। संज्ञा अथवा सर्वनाम के बाद `सा` से पूर्व `के` परसर्ग भी प्रयुक्त होता है, यथा `राम सा`, `राम के सा`, `तुझ सा` (बांगरू 'तेरे सा'), 'तेरे सा' (बां० 'तेरे के सा')। बांगरू में `तेरे के सा` वाला `प्रयोग में दोहरे सम्बन्ध कारक प्रयोग दिखायी देते हैं। वास्तव में बांगरू में भी यहां सम्बन्ध कारक का एक ही परसर्ग `के` प्रयुक्त हुआ है, `तेरे` शब्द यहां परसर्ग रहित तिर्यक कारक का रूप है यथा `तेरे पै` `तेरे में` आदि। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि बांगरू में `सा` के बदले में `बरगा` भी प्रयुक्त किया जाता है, यथा `राम बरगा`, `राम के बरगा`, `तेरे बरगा` परन्तु `तेरे के सा` के समानान्तर `तेरे के बरगा` प्रयोग उपलब्ध नहीं होता। बांगरू में इसी अर्थ में `मान` भी प्रयुक्त होता है जो कि मानक हिन्दी `समान` का ही बांगरू रूप कहा जा सकता है, यथा बांगरू 'तेरे मान' (मानक हिन्दी -- 'तेरे समान')।

2. विशेषणों के पश्चात् `सा` के प्रयोग से उनके भाव में न्यूनता या आधिक्य आ जाता है, यथा `काला (बांगरू काला ) सा` का अर्थ है `कुछ कुछ कालापन लिए हुए`, परन्तु `थोड़ा सा` का अर्थ होगा `बहुत थोड़ा`।

3. `सा` के प्रयोग के बारे में यह भी उल्लेखनीय है कि बांगरू भाषियों द्वारा `सा` का बहुधा अनावश्यक प्रयोग भी किया जाता है या यह कहा जा सकता है कि `सा` के प्रयोग से वे कुछ उपेक्षा भाव की अभिव्यक्ति करते हैं, जैसे 'बरात सी गया था'। यहां जाने वाला `बारात` में ही गया था परन्तु अनावश्यक रूप से या कुछ उपेक्षा भाव की अभिव्यक्ति के लिये `सा` जोड़ दिया गया है।

3.3.5 विशेषण के रूप में कृदन्तों का प्रयोग

1. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में वर्तमान कालिक तथा भूतकालिक कृदंत

का प्रयोग विशेषण के रूप में पाया जाता है । ये दोनों आकारान्त हैं और विशेष्य के लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार परिवर्तनशील हैं । इनके साथ ` हो ` धातु का भूतकालिक कृदन्त भी प्रयोग में लाया जाता है जोकि मुख्य कृदन्त के समान ही लिंग वचन तथा कारक के अनुसार परिवर्तनशील है -

मानक हिन्दी	बांगरू
चलता इंजन	चालदा इंजन
चलता हुआ इंजन	चालदा होया इंजन
चलती गाड़ी	चालदी गाड़ी
चलती हुई गाड़ी	चालदी होई गाडी
गिरा पत्ता	पड़्या पत्ता
गिरा हुआ पत्ता	पड़्या होया पत्ता

2. बांगरू में ` हो ` धातु के भूतकालिक कृदन्त के स्थान पर एक अन्य रूप ` होड़ ` भी प्रयोग में लाया जाता है । व्यंजनांत होने के कारण यह विशेष्य के लिंग, वचन तथा कारक से अप्रभावित रहता है, यथा ` कर्‌या होड़ काम `, ` करी होड़ बात `, ` करे होड़ काम ` ।

3. बांगरू में क्रियार्थक संज्ञा का भी प्रयोग विशेषण के रूप में पाया जाता है, यथा ` चालणा कुत्ता `, ` मारनी गां ` जबकि मानक हिन्दी में ऐसे प्रयोग देखने में नहीं आते । मानक हिन्दी में क्रियार्थक संज्ञा के स्थान पर कर्तृवाचक कृदन्त प्रयुक्त होता है, यथा ` चलनेवाला बैल `, ` मारनेवाली गां ` । बांगरू में कर्तृवाचक कृदन्त के योग से भी विशेषण-पद बनते हैं । बांगरू में कर्तृवाचक कृदन्त के साथ बनने वाले रूप होंगे, चालण-आला कुत्ता `, ` मारन-आली गां ` । बांगरू में क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त वाले रूप ही अधिक चलते हैं ।

3.3.6 संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाचक विशेषणों के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में पाई जाने वाली विभिन्नताएं गणनावाचक, क्रमवाचक तथा समुदायवाचक संख्याओं में अलग अलग दिखाई जा रही हैं

1. गणनात्मक संख्या:- मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में गणनात्मक संख्याओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है- (क) पूर्णांक संख्याएं, तथा (ख) अपूर्णांक संख्याएं ।

(क) पूर्णांक संख्याएं - (1) मानक हिन्दी और बांगरू की गणनात्मक संख्याएं लगभग समान है । अधिकांशतया अन्तर स्वनप्रक्रिया सम्बन्धी है, यथा मानक हिन्दी ` औ ` के स्थान पर बांगरू में ` ओ ` उदाहरणार्थ मानक हिन्दी ` नौ ` → बांगरू ` नो ` (देखिए अंक 1.2.1) ; मानक हिन्दी में प्रयुक्त आदि स्वर का बांगरू में लोप उदाहरणार्थ मानक हिन्दी ` अठावन ` → बांगरू ` ठावण ` (देखिए अंक 1.9.(3); मानक हिन्दी में प्रयुक्त आदि अक्षर के दीर्घ स्वर का बांगरू में ह्रस्वीकरण उदाहरणार्थ मानक हिन्दी ` चौरासी ` → बांगरू ` चुरासी ` (देखिए अंक 1.9.(4)) ; मानक हिन्दी एकारान्त के स्थान पर बांगरू ऐकारान्त, उदाहरणार्थ मानक हिन्दी ` बावने ` → बांगरू ` बाणवै ` (देखिए अंक 1.4.1) । कुछ अन्य अन्तर निम्नलिखित अनुसार हैं -

मानक हिन्दी	बांगरू
चार	च्यार
छह	छै
तिरपन	तरेपण
तिरसठ	तरेसठ
पचास	पनचास
उनचास	उनन्चास
इक्तीस	इकतीस
उन्तीस	उनतीस

(2) मानक हिन्दी ग्यारह से अठारह तक की संख्याएं अकारान्त हैं जबकि बांगरू की विभिन्न उपबोलियों में इन के रूप अलग अलग हैं । डा० जगदेव सिंह[1] ने मानक हिन्दी ` ग्यारह ` के स्थान पर अपनी बोली के आधार पर बांगरू में ` ग्यारह ` का या

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 30

है। डा० नानक चन्द शर्मा[1] के अनुसार ये रूप ग्यारा, बारा, तेरा आदि आकारान्त है। प्रस्तुत विश्लेषक की बोली में ये ग्यारां, बारां, तेरां आदि आंकारान्त हैं।[2]

(3) बांगरू में कुछ गणना सूचक संख्यावाचकों में महाप्राण स्वनिम के प्रभाव के कारण 'ब' का आगम भी हो जाता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
छियालीस	छिबालीस
छियासठ	छिबासठ
छियत्तर	छिबत्तर — छिबन्तर
छियासी	छिबासी
छियानबे	छिबाणवे

(4) बांगरू की कुछ गणनासूचक संख्याओं में 'न' का आगम हो जाता है, यथा –

मानक हिन्दी	बांगरू
पचास	पनचास
उनचास	उनन्चास
छियत्तर	छिबन्तार
सत्तर	सतन्तर
सत्तर	सत्तर

(5) अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित बांगरू भाषी लोगों में गिनती का आधार '20' और '100' की संख्याएं हैं, यथा उन द्वारा '60' के लिए तीन बीसी, '18' के लिये 'दोघाट बीस', '90' के लिये 'दस घाट सौ' कहना पसन्द किया जाताहै। मानक हिन्दी में इस प्रवृत्ति का अभाव है।

1- शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास, 1968; पृष्ठ 211

2- मिलाइए- शर्मा, जितरामसिंह ; खड़ी बोली हिन्दी और पंजाब में उसका व्यवहृत रूप ; 'सप्तसिन्धु' का उपभाषा विशेषांक, नवम्बर-दिसम्बर-जनवरी, 1965; पृष्ठ 38

(6) यद्यपि बांगरू में भी मानक हिन्दी के समान सौ से ऊपर की संख्याएं बिना किसी संयोजक पद की सहायता के लिये बना ली जाती हैं, यथा ` 101 ` के लिए ` एक सौ एक `, 1001 के लिये ` एक हजार एक ` आदि, तथापि 101 के लिये बांगरू में ` कोतर सौ ` भी मिलता है जिस पर संस्कृत की ` एकोत्तर ` वाली प्रथा का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। मानक हिन्दी में ऐसा प्रचलन नहीं है। बांगरू भाषियों द्वारा पहाड़े में 144 के लिये ` चवालसौ ` का प्रयोग भी चलता है।

(ख) <u>अपूर्णांक संख्याएं:</u> (1) अपूर्णांक सूचक संख्याओं के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में पाए जाने वाले अन्तर भी पर्याप्त सीमा तक स्वनप्रक्रिया पर ही आधारित हैं, यथा बांगरू में अन्त्य ` व ` का लोप (देखिये अंक 1.4.2(7)), उदाहरणार्थ मानक हिन्दी ` पाव ` — बांगरू ` पा `; मानक हिन्दी ` औ ` के स्थान पर बांगरू ` ओ ` का प्रयोग(देखिए अंक 1.2.1(1) और मानक हिन्दी ` न ` के स्थान पर बांगरू ` ण ` का प्रयोग (देखिए अंक 1.4.2.(4)) उदाहरणार्थ मानक हिन्दी ` पौने दो ` → बांगरू ` पोणे दो `; बांगरू में बलाघातित अक्षर से पूर्ववर्ती अक्षर में स्वर का ह्रस्वीकरण, उदाहरणार्थ मानक हिन्दी चौथाई ` — बांगरू ` चुथाई ` ( देखिए अंक 1.[illegible](4)); बलाघात के प्रभावस्वरूप बांगरू में आदि स्वर का लोप(देखिए अंक 1.9.(5)) और मानक हिन्दी ` ढ़ ` के स्थान पर बांगरू में ` ढ ` का प्रयोग ( देखिए 1.2.2.(3)) उदाहरणार्थ मानक हिन्दी ` अढ़ाई ` → बांगरू ` ढाई ` ।

(2) मानक हिन्दी और बांगरू में $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{4}$ के लिये क्रमशः आधा, तिहाई, चौथाई (बां० चुथाई) रूप चलते हैं। मानक हिन्दी में इन्हें क्रमशः एक बटा दो, एक बटा तीन, एक बटा चार के रूप में भी अभिव्यक्त किया जाता है, जबकि बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है।

(3) बांगरू में $\frac{1}{5}$, $\frac{1}{8}$, $\frac{1}{10}$ आदि के लिये क्रमशः पांचमा हिस्सा, आठमा हिस्सा, दसमा हिस्सा आदि चलते हैं, जबकि मानक हिन्दी में इनके लिए क्रमशः पांचवां हिस्सा, आठवां हिस्सा, दसवां हिस्सा आदि के अलावा क्रमशः एक बटा पांच, एक बटा आठ, एक बटा दस आदि भी चलते हैं।

(4) मानक हिन्दी में सभी तथा बटा शब्दों की सहायता से किसी भी अपूर्णां

संख्या की अभिव्यक्त किया जा सकता यथा दो घटा पांच ; तीन सही दो बटा पांच, जबकि बांगरू में ऐसी अपूर्ण संख्याओं को अभिव्यक्त करने की कोई विधि नहीं है ।

2. क्रमसूचक संख्याएं : (1) मानक हिन्दी में एक, दो, तीन, चार और छ गणनासूचक संख्याओं के अतिरिक्त अन्य सभी संख्याओं के क्रमवाचक रूप बनाने के लिये उन के साथ `-वां ` प्रत्यय जोड़ा जाता है, जबकि बांगरू में `-मा ` प्रत्यय का प्रयोग पाया जाता है, यथा–

मानक हिन्दी	बांगरू
पांचवां	पांचमा
सातवां	सातमा
आठवां	आठमा
दसवां	दसमा
बीसवां	बीसमां

(2) मानक हिन्दी में गणनावाचक ` छः ` का क्रमवाचक ` छठा ` बनता है, जबकि बांगरू में मानक हिन्दी के अनुसार ` छटा ` भी प्रचलित है और वैकल्पिक रूप ` छैंा ` भी ।

(3) अपवाद स्वरूप उल्लिखित गणनात्मक संख्याओं के मानक हिन्दी और बांगरू क्रमवाचक रूप निम्नलिखित अनुसार है :

मानक हिन्दी		बांगरू
पहिला	पहला	पहला ~ पहलड़ा
	दूसरा	दूसरा ~ दूजा
	तीसरा	तीसरा~तीजा
	चौथा	चौथा

(4) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सभी क्रमवाचक संख्याएं विकारी विशेषणों के अन्तर्गत है ।

3. समुदाय सूचक संख्याएं: (1) मानक हिन्दी में समुदायवाचक संख्याएं `-ओं ` प्रत्यय के प्रयोग से व्युत्पन्न होती है, जबकि बांगरू में इसके लिये `-ऊं ` प्रत्यय प्रयुक्त होता है , यथा –

मानक हिन्दी	बांगरू
तीन + ओं = तीनों	तीन + ऊं = तीनूं
चार + ओं = चारों	चार + ऊं = चारूं
पांच + ओं = पांचों	पांच + ऊं = पांचूं
सात + ओं = सातों	सात + ऊं = सातूं

यदि प्रातिपदिक स्वरान्त हो तो मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में प्रत्यय से पूर्व `न्` का आगम हो जाता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
दो + ओं = दोनों	दो + ऊं = दोनूं

(2) इन समुदायसूचक संख्याओं में सम्पूर्णता का बोध होता है, यथा `आठों लड़के चले गए` से यह भाव व्यक्त होता है कि `आठ लड़के थे, वे सभी चले गए`। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में बड़ी संख्याओं की सम्पूर्णता दिखाने के लिए संख्या की आवृत्ति की जाती है और उनके मध्य में `के` का प्रयोग होता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
इक्यावन के इक्यावन	क्यावण के क्यावण
अड़सठ के अड़सठ	अड़सठ के अड़सठ

(3) मानक हिन्दी में गणनात्मक संख्याओं के साथ `-ओं` प्रत्यय का प्रयोग अनिश्चित बड़ी संख्या व्यक्त करने के लिये भी होता है यथा लाख — लाखों, करोड़ — करोड़ों,। `लाखों` का अर्थ है `अनिश्चित ऐसी बड़ी संख्या जो लाखों में है`। बांगरू में ऐसा भाव व्यक्त करने के लिये `-आं` प्रत्यय का प्रयोग पाया जाता है जैसे `लाखां` `करोड़ां` आदि। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में इस प्रत्यय से पूर्व `100` के लिए `सैकड़ा` परिवर्त प्रयुक्त होता है, प्रत्यय के योग के समय जिसके अन्त्य `आ` का लोप हो जाता है। बांगरू में `सैकड़ां` का मुक्त परिवर्त `सैकड़ै` भी उपलब्ध है, यथा `सैकड़ां माणस कट्ठे हो गये` या `सैकड़ै माणस कट्ठे हो गये` (अर्थात् सैकड़ों आदमी इकट्ठे हो गए)।

3.3.7 उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था

1. मानक हिन्दी में संस्कृत से आगत कुछ विशेषणों की उत्तरावस्था में `-तर`

प्रत्यय और उत्तमावस्था में `-तम ` प्रत्यय का प्रयोग उपलब्ध होता है, जबकि बांगरू में इन प्रत्ययों का अभाव है। मानक हिन्दी में इन प्रत्ययों के उदाहरण हैं -

दृढ़ + तर —— दृढ़तर
घोर+ तर —— घोरतर
उच्च+ तर —— उच्चतर
उच्च+ तम —— उच्चतम
प्राचीन+ तम —— प्राचीनतम

2. मानक हिन्दी में अरबी-फारसी से आगत कुछ विशेषणों की उत्तरावस्था एवं उत्तमावस्था में क्रमश: `-तर ` तथा `-तरीन ` प्रत्ययों का प्रयोग उपलब्ध होता है जबकि बांगरू में ऐसे प्रयोग उपलब्ध नहीं होते। मानक हिन्दी में ऐसे प्रयोगों के उदाहरण हैं -

बद + तर —— बदतर
ज़्यादा+ तर —— ज़्यादातर
कम + तरीन —— कमतरीन

3.4. क्रिया

3.4.1 अन्त्य स्वनिम

मानक हिन्दी में यद्यपि ह्रस्वस्वरान्त शब्दावली उपलब्ध है(देखिए अंक 1.4.1) तथापि किसी भी क्रिया का धातुरूप अथवा सिद्धरूप ह्रस्वस्वरान्त नहीं है। बांगरू में ह्रस्वस्वरान्त शब्दावली का वैसे ही पूर्णतया अभाव है(देखिए अंक 1.4.1) ।

मानक हिन्दी में दीर्घ स्वरान्त धातुओं में भी ऐकारान्त तथा औकारान्त धातुओं का अभाव है। बांगरू में / औ / स्वनिम के अभाव के कारण (देखिए अंक 1.1.2 (ख) (1)) औकारान्त धातुओं का तो प्रश्न नहीं उठता, परन्तु ऐकारान्त धातुएं उपलब्ध हैं, यथा तै-णा (पिघलना) ; डै-णा(गिरना) ।

व्यंजनान्त धातुएं तथा व्यंजनान्त सिद्ध क्रियारूप मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में उपलब्ध है।

3.4.2 क्रिया का साधारण रूप:-

मानक हिन्दी में क्रिया का साधारण रूप नाकारान्त होताहै, जबकि बांगरू में णाकारान्त, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
जाना	जाणा
खाना	खाणा
देना	देणा
सोना	सोणा
काटना	काटणा

मानक हिन्दी में क्रिया के साधारण रूप से अन्त्य `-ना ` का तथा बांगरू में अन्त्य `-णा ` का लोप करने पर क्रिया का धातु अंश रह जाता है, यथा मानक हिन्दी जाना → जा ; बांगरू जाणा → जा ।

3.4.3 अकर्मक तथा सकर्मक क्रिया :-

कर्म की दृष्टि से धातुओं को मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही दो वर्गों में विभाजित किया जाता है - अकर्मक तथा सकर्मक । कुछ धातुएं अपने मूल रूप में अकर्मक है, यथा- `सो `, `कूद ` आदि और कुछ सकर्मक, यथा `मार `, `दे ` आदि। सकर्मकों में भी आगे दो उपवर्ग है -(i) एककर्मक, यथा- `मार ` तथा (ii) द्विकर्मक, यथा- `दे `। कुछ धातुएं ऐसी भी है जो अपने प्रयोग के अनुसार अकर्मक तथा सकर्मक दोनों वर्गों में शामिल हो सकती है। इन्हें कामताप्रसाद गुरु[1] ने उभयविद धातु कहा है। इनके उदाहरण के रूप में `भर ` का उल्लेख किया जा सकता है, यथा- `घड़ा भरता है ` (बांगरू `मटका भरै सै `) में `भर ` अकर्मक है, जबकि `मैं घड़ा भरता हूं ` (बांगरू - मैं मटका भरूं हूं `) में `भर ` सकर्मक है। बहुत सी सकर्मक धातुओं को अकर्मक धातुओं

1- गुरु, कामता प्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि0; पृष्ठ 128

रूपान्तरित किया जा सकता है। मानक हिन्दी और बांगरू में ऐसे रूपान्तरण में निम्नलिखित उल्लेखनीय अन्तर भी उपलब्ध होते हैं :-

1. स्वरान्त सकर्मक धातुओं को अकर्मक धातुओं में रूपान्तरित करने के लिये मानक हिन्दी में उन के अन्त्य स्वर का ह्रस्वीकरण हो जाता है तथा धातु के ऐसे परिवर्तित रूप के बाद लकार जुड़ जाता है, यथा- `धो` सकर्मक धातु से `धुल` अकर्मक रूप तथा `सी` सकर्मक धातु से `सिल` अकर्मक रूप बनता है (मिलाइए- अंक 2.3.1(1)), जबकि बांगरू में स्वरान्त सकर्मक धातु को अकर्मक धातु में रूपान्तरित करते समय अन्त्य स्वर में परिवर्तन तो आ जाता है परन्तु वह दीर्घ ही रहता है और उस के बाद किसी व्यंजन का आगम अनिवार्य नहीं, (मिलाइए अंक 2.3.1(5)) यथा- धो — धू ; खो (खुल-करना) — खू ; पो (पकाना) — पू ; ता (पिघलाना) — तै। बांगरू की इस प्रवृत्ति का मानक हिन्दी में सर्वथा अभाव है। बांगरू में व्युत्पन्न अकर्मक धातु के अन्त में व्यंजन के आगम का भी उदाहरण उपलब्ध है, यथा- भे (भिगोना) — भीज (भीगना)।

2. व्यंजनांत सकर्मक धातु के दीर्घ स्वर के ह्रस्वीकरण द्वारा मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अकर्मक रूप निष्पादित किए जाने की सामान्य प्रवृत्ति है, इस सामान्य प्रवृत्ति के अनुसार आ → अ ; — ए, ई → इ ; ओ, ऊ → उ हो जाते हैं, यथा काट → कट ; बेध → बिध ; मोड़ → मुड़ ; लूट → लुट (मिलाइए-अंक 2.3.1 (1)), परन्तु इस कथन का यह अर्थ नहीं है कि व्यंजनान्त सकर्मक धातुओं के अकर्मक रूप बनाए जाने के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में पूर्ण समानता है।

3. मानक हिन्दी में `निचोड़` तथा `सिकोड़` सकर्मक धातुओं के अकर्मक रूप सामान्य प्रवृत्ति के अनुसार क्रमशः `निचुड़` तथा `सिकुड़` बनते हैं जबकि बांगरू में अनुरूपी सकर्मक धातु `नचोड़` तथा `सकोड़` के अकर्मक रूप क्रमशः `नुचड़` तथा `सुकड़` बनते हैं। यहां पर बांगरू अकर्मक रूपों में स्वर ह्रस्वीकरण के साथ साथ स्वर विपर्यय भी हो गया है।

4. मानक हिन्दी में द्वि-अक्षरी व्यंजनांत सकर्मक धातु के अन्तिम अक्षर के स्वर के ह्रस्वीकरण का प्रभाव आदि युक्त अक्षर पर नहीं पड़ता, जबकि बांगरू में कुछ द्विअक्षरी

व्यंजनान्त सकर्मक धातुओं के आदि युक्त अक्षर का ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर में परिवर्तित हो जाता है (मिलाइए अंक 2.3.1(4)), यथा -

मानक हिन्दी	बांगरू
बिगाड़ → बिगड़	बिगाड़ → बीगड़
उतार → उतर	तार → ऊतर
	उलाल(एक तरफ झुकाना) → ऊलल
	उछाल(ऊपर उठाना) → ऊछल
उखेड़ → उखड़	उखेड़ → ऊखड़

5. यदि बांगरू में द्विअक्षरी व्यंजनांत सकर्मक धातु में प्रथम अक्षर बन्द अक्षर हो तो प्रथम अक्षर के स्वर के दीर्घीकरण का उपर्युक्त सिद्धान्त लागू नहीं होता, यथा मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ` सिंगार ` का अकर्मक समान रूप से ` सिंगर ` ही होता है।

6. इस सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि बांगरू में अकर्मक ` डूब ` का सकर्मक रूप ` डोब ` होता है, जबकि मानक हिन्दी में अकर्मक ` डूब ` का सकर्मक रूप ` डुबो ` उपलब्ध होता है (मिलाइए अंक 2.3.1.(2)) । मानक हिन्दी में इसी ढांचे के अनुसार अकर्मक ` भीग ` का सकर्मक रूप ` भिगो ` होता है, जबकि तद्रूपी अकर्मक बांगरू ` भी[illegible] ` का सकर्मक रूप ` भे ` उपलब्ध होता है। बांगरू में अकर्मक ` मिट ` का सकर्मक रूप ` मेट ` है जब कि मानक हिन्दी में ` मिट ` का सकर्मक रूप ` मिटा ` है। ` देख ` सकर्मक धातु का अकर्मक रूप मानक हिन्दी में सामान्य नियमानुसार ` दिख `[1] बनता है, जबकि बांगरू में ` दीख ` होता है।

1- मानक हिन्दी में ` दिख ` तथा ` दीख ` दोनों ही रूप प्रयोग में लाए जाते हैं। डा० आर्येन्द्र शर्मा, ` दीख ` के पक्ष में हैं तथा किशोरीदास वाजपेयी ` दिख ` रूप का समर्थन करते हैं। देखिए-
(i) शर्मा आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी ; 1975 ; अंक 289 (बी); पृष्ठ 136
(ii) वाजपेयी, किशोरीदास ; हिन्दी शब्दानुशासन; 2014 वि० ; पृष्ठ 4[illegible]2

3.4.4 प्रेरणार्थक क्रिया

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में मूल अकर्मक तथा मूल सकर्मक धातुओं के साथ प्रत्ययों के योग से प्रेरणार्थक धातुएं निष्पादित होती हैं। सभी प्रेरणार्थक धातुएं सकर्मक होती हैं।

1. प्रेरणार्थक रूप निष्पादित करने के लिये मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही व्यंजनांत धातुओं के साथ `-आ` प्रत्यय के योग से प्रथम प्रेरणार्थक रूप तथा `-वा` प्रत्यय के योग से द्वितीय प्रेरणार्थक रूप सम्पन्न किए जाते हैं, यथा `सिख` से प्रथम प्रेरणार्थक `सिखा` तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप `सिखवा` सम्पन्न होता है। प्रेरणार्थक प्रत्यय के योग से पूर्व व्यंजनान्त मूल धातु के स्वर में परिवर्तन भी हो जाता है। इस परिवर्तन के प्रभावस्वरूप आ → अ, ई, ए → इ, ऊ, ओ → उ में परिवर्तित हो जाते हैं, यथा काट → कटा ; पीस → पिसा ; बेच → बिकवा, छूट → छुटा ; खोल → खुला (देखिए अंक 2.3.1 (1))। मानक हिन्दी में `औ` स्वर अपरिवर्तित रहता है। यथा `खौल` (उबलना) से प्रथम प्रेरणार्थक `खौला` तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप `खौलवा` बनता है। बांगरू में `औ` का अभाव ही है। `ऐ` स्वर मानक हिन्दी में कभी अविकृत रूप में रहता है और कभी `इ` में रूपान्तरित हो जाता है, यथा तैर → तैरा; बैठ → बिठा, जबकि बांगरू में `ऐ` स्वर अविकृत रूप में उपलब्ध नहीं होता। यह `अ` अथवा `इ` में रूपान्तरित हो जाता है यथा तैर → तरा ~ तिरा ; बैठ → बठा ~ बिठा।

2. मानक हिन्दी की मूल स्वरान्त धातु में प्रेरणार्थक प्रत्यय के योग से पहले अनिवार्य रूप से व्यंजन का आगम हो जाता है। यह व्यंजन अधिकांश स्थितियों में लकार होता है। कुछ परिस्थितियों में यह वकार हो सकता है। जबकि बांगरू में व्यंजन के आगम के बिना भी प्रेरणार्थक रूप निष्पन्न होते हैं (मिलाइए- अंक 2.2.2(5), यथा-

	मानक हिन्दी		बांगरू	
लकार का आगम	रो →	रुला	रो →	रुवा
	सो	सुला	सो	सुवा
	धो	धुला	धो	धुवा

	मानक हिन्दी		बाँगरू	
	दे →	दिला	दे →	दुवा
	सी	सिला		
	खा	खिला	खा	खुवा
	धो	धुला (~ धुवा)	धो	धुवा
वकार का आगम	ला	लिवा	ला	लुवा
	गा	गवा	गा	गुवा
	छा	छवा	छा	छुवा
	छू	छुवा (~ छुला)	छू	छुवा

जैसे कि उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि मानक हिन्दी में `धो` तथा `छू` धातुओं के प्रेरणार्थकों में भिन्नता है, जबकि बाँगरू में दोनों धातुओं के प्रेरणार्थक एकरूपता लिए हुए हैं। उपर्युक्त उदाहरणों से यह भी स्पष्ट है कि बाँगरू में ईकारान्त से भिन्न अन्य सभी स्वरान्त धातुओं का अन्त्य स्वर → `उ` हो जाता है, जबकि मानक हिन्दी में ई, ए → इ; ऊ, ओ → उ हो जाते हैं और `आ` कभी `इ` हो जाता है और कभी `अ`।

3. बाँगरू में ईकारान्त धातुओं के प्रेरणार्थक रूप निष्पादित करते समय यकार अथवा वकार का आगम हो जाता है, जबकि मानक हिन्दी में लकार का आगम होता है यथा–

मानक हिन्दी		बाँगरू	
पी —	पिला	पी —	प्या[1]
सी —	सिला	सी —	सिवा[2]

1- मिलाइए- शर्मा, नानक चन्द ; भिवानी की भाषा और खड़ी बोली के क्रियापदों का तुलनात्मक अध्ययन ; भाषा विभाग हरियाणा की वार्षिक गोष्ठी - वर्ष 1974 में पढ़ा गया निबन्ध ; अंक 2.2.(i)(ख) ; पृष्ठ 8

2- मिलाइए, यथोपरि ; अंक 2.2.(i) (ख) , पृष्ठ 7

मानक हिन्दी के उपर्युक्त उदाहरणों में धातु के अन्त्य स्वर का केवल ह्रस्वीकरण होता है, लोप नहीं, जबकि बाँगरू के ` खिला ` प्रेरणार्थक रूप में जहाँ धातु के अन्त्य स्वर का ह्रस्वीकरण है, वहाँ ` प्या ` प्रेरणार्थक धातु में मूल धातु के अन्त्य स्वर का लोप हो गया है।

4. मानक हिन्दी में ` खा `, ` खेल ` तथा ` खिल ` तीनों धातुओं का प्रथम प्रेरणार्थक रूप ` खिला ` बनता है, जबकि बाँगरू ` खा ` का प्रेरणार्थक रूप ` खुवा ` होता है और ` खेल ` तथा ` खिल ` का प्रेरणार्थक रूप ` खिला `।

5. मानक हिन्दी में कुछ व्यंजनांत धातुओं के प्रेरणार्थक विकल्प से लकार सहित तथा लकार रहित दोनों रूपों में उपलब्ध होते हैं, जबकि बाँगरू में लकार रहित रूप ही उपलब्ध होते हैं, यथा-

मानक हिन्दी		बाँगरू	
कह	कहा ~ कहला	कह	कुहा
देख	दिखा ~ दिखला	देख	दिखा
सीख	सिखा ~ सिखला	सीख	सिखा

6. बाँगरू में हकारान्त धातु का प्रेरणार्थक रूप स्वरान्त धातुओं के ढाँचे पर ही धातु के स्वर को ` उ ` में बदल कर बनाया जाता है। धातु का अन्त्य हकार बना रहता है, यथा कह → कुहा ; दाह (जल जलाना) → दुहा आदि। मानक हिन्दी में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है।

7. बाँगरू में सभी स्वरान्त तथा हकारान्त धातुओं का केवल एक प्रेरणार्थक रूप निष्पादित होता है,जबकि मानक हिन्दी में प्रथम प्रेरणार्थक तथा द्वितीय प्रेरणार्थक दोनों रूप निष्पादित हो सकते हैं।

मानक हिन्दी			बाँगरू	
धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक	धातु	प्रेरणार्थक
खा	खिला	खिलवा	खा	खुवा
पी	पिला	पिलवा	पी	प्या
दे	दिला	दिलवा	दे	दुवा

	मानकहिन्दी		बांगरू	
धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक	धातु	प्रेरणार्थक
धो	धुला	धुलवा	धो	धुवा
पी	पिला	पिलवा	पी	पिवा
कह	कहला	कहलवा	कह	कुहा

8. मानकहिन्दी में भी कुछ स्वरान्त धातुओं के केवल एक ही प्रेरणार्थक रूप निष्पादित होते हैं, जो संरचना में द्वितीय प्रेरणार्थक रूपों के समान हैं, यथा- गा → गवा ; ले → लिवा ; दे → दिवा

9. मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में कुछ व्यंजनान्त धातुओं के प्रथम तथा द्वितीय दोनों प्रेरणार्थक रूप उपलब्ध होते हैं, परन्तु इनके प्रथम तथा द्वितीय प्रेरणार्थक रूप अर्थ की दृष्टि से समान हैं। वास्तव में अर्थ की दृष्टि से इनके द्वितीय प्रेरणार्थक रूप नहीं बनते, यथा,

कर — करा , करवा
काट — कटा, कटवा
खोल — खुला, खुलवा
गाड़ — गड़ा, गड़वा
बांध — बंधा, बंधवा
रख — रखा, रखवा
छोड़ — छुड़ा, छुड़वा
तोड़ तुड़ा, तुड़वा

10. मानक हिन्दी में कुछ स्वरान्त धातुओं के दोनों प्रेरणार्थक रूपों में भी अर्थ की अभिन्नता होती है, जबकि बांगरू में प्रेरणार्थक रूप बनते ही केवल एक प्रकार से हैं, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
धो — धुला, धुलवा	धो — धुवा
दे — दिला, दिलवा	दे — दुवा
रो — रुला, रुलवा	रो — रुवा

3.4.5 नामधातु

1. मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में क्रियेतर शब्दों के साथ प्राय: `-आ ` प्रत्यय लगाकर नामधातु की निष्पत्ति की जाती है, यथा दुख + आ = दुखा ; गरम + आ= गरमा । कभी कभी `-आ ` के स्थान पर `-इया ` प्रत्यय का प्रयोग भी उपलब्ध होता है, यथा साठ + इया = सठिया । कभी कभी शून्य प्रत्यय के योग से भी नामधातु की निष्पत्ति होती है, यथा खेल ⟶ खेल, बोल ⟶ बोल, शर्म ⟶ शर्म आदि ।

2. नामधातु के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में पाई जाने वाली विभिन्नता का एक रोचक उदाहरण बांगरू में विशेषण `थोड़ा ` से व्युत्पन्न नामधातु `थुड़ ` है । यहां शून्य प्रत्यय का योग है और साथ ही प्रातिपदिक का `ओ ` परिवर्तित होकर ` उ ` हो गया है । यहां यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में प्रातिपदिक में शून्य प्रत्यय के योग से जब नामधातु की निष्पत्ति होती है, तब प्रातिपदिक के स्वर में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता । मानक हिन्दी में `थुड़ ` नामधातु का अभाव है ।

3. नामधातु की विभिन्नता के सन्दर्भ में `हाथ ` प्रातिपदिक से बनी मानक हिन्दी और बांगरू नामधातुएं भी रोचक उदाहरण हैं । मानक हिन्दी में `हाथ ` से `हथिया `नामधातु निष्पन्न होती है, जबकि बांगरू में `धुया ` नामधातु । यहां मानक हिन्दी और बांगरू नामधातुओं में स्वरूप की विभिन्नता के साथ साथ अर्थ की भी कुछ विभिन्नता है । मानक हिन्दी में `हथिया ` नामधातु का अर्थ है - `छीनना `, जबकि बांगरू नामधातु `धुया ` का अर्थ है - `हाथ लगना ` ।

3.4.6 कृदन्त

1. क्रियार्थक संज्ञा-(1) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में क्रिया का साधारण रूप ही क्रियार्थक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है यथा मानक हिन्दी `जाना `, `बांगरू जाणा ` ।

(2) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में यह कृदन्त संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है । यहां यह उल्लेखनीय है कि संज्ञा के रूप में इस कृदन्त में वचनभेद उपलब्ध नहीं होता ।इस

का प्रयोग एकवचन में ही होता है। संज्ञा के रूप में तिर्यक कारक में मानक हिन्दी में तो इस कृदन्त के रूप ` घोड़ा ` वर्ग की आकारान्त संज्ञाओं के समान ही एकारान्त होते हैं, जबकि बांगरू में क्रियार्थक संज्ञा का तिर्यक रूप ` घोड़ा ` वर्ग की आकारान्त संज्ञाओं से भिन्न व्यंजनान्त रूप धारण कर लेता है (देखिए - अंक 3.1.4.3 (5)), यथा—

मानकहिन्दी	बांगरू
जाने में	जाण में
खाने में	खाण में
चलने में	चालण में
बकने में	बकण में

(3) बांगरू में क्रियार्थक संज्ञा का प्रयोग विशेषण के रूप में भी होता है, यथा चालणा बुलद (चलने वाला बैल) ; भौंकणा कुत्ता (भौंकने वाला कुत्ता) ; मारणी गाँ (मारने वाली गाय), जबकि मानक हिन्दी में ऐसा नहीं होता (देखिए अंक 3.3.5.3 तथा अंक 4.1) ।

(4) बांगरू में विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने पर इस कृदन्त का रूपान्तर आकारान्त विशेषणों के समान होता है (देखिये 3.3.2) ।

2. वर्तमानकालिक कृदन्त- (1) मानक हिन्दी में वर्तमान कालिक कृदन्त निष्पादित करने के लिये धातु के साथ `-ता ` प्रत्यय लगाया जाता है, जबकि बांगरू में `-दा ` प्रत्यय प्रयोग में लाया जाता है, यथा—

मानक हिन्दी	बांगरू
करता	करदा
डरता	डरदा
मरता	मरदा
काटता	काटदा
मारता	मारदा

(2) बांगरू में स्वरान्त धातुओं की स्थिति में `-दा' के स्थान पर `-न्दा ` प्रत्यय प्रयोग में लाया जाता है, जबकि मानक हिन्दी में ` -ता ` प्रत्यय का ही प्रयोग किया जाता है (देखिए- अंक 2.2.2(3)), यथा—

मानकहिन्दी	बांगरू
जाता	जान्दा
खाता	खान्दा
पीता	पीन्दा
चूता	चून्दा
लेता	लेन्दा
सोता	सोन्दा

(3) बांगरू में हकारान्त धातु के साथ भी स्वरान्त धातुओं के समान `-न्दा` प्रत्यय का प्रयोग होता है, जबकि मानक हिन्दी में `-ता` प्रत्यय का ही प्रयोग (2.2.2(3)) उपलब्ध होता है, यथा—

मानकहिन्दी	बांगरू
कहता	कहन्दा
रहता	रहन्दा
सहता	सहन्दा
बहता	बहन्दा

(4) डा० जगदेव सिंह[1] ने दिल्ली-रोहतक रेलवे लाइन पर आसौदा स्टेशन के निकट आसौदा ग्राम की बांगरू बोली के नमूने के आधार पर वर्तमान कालिक कृदन्त के रूप `करदा`, `होन्दा`, `जीउन्दा` भी दिये हैं। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि बांगरू बोली के कुछ क्षेत्र में वर्तमानकालिक कृदन्त का प्रत्यय `-दा` है, जोकि स्वरान्त धातुओं की स्थिति में `-न्दा` हो जाता है, यथा - हो → होन्दा। वर्तमानकालिक कृदन्त `जीउन्दा` में धातु के पश्चात् `-उ-` का आगम भी हो गया है। डा० रणवीर सिंह[2] के मतानुसार भी `वर्तमानकालिक कृदन्त बांगरू में धातु के अन्त में विकल्प से `-दा` या `-न्दा` लगाने से बनता है।` स्थान-भेद से बांगरू बोली के रूपों

1- जगदेव सिंह ; भाषा और उसका अध्ययन तथा बांगरू की ध्वन्यात्मक संरचना ; हिन्दी विभाग, पंजाब की मासिक लेखक गोष्ठी 1962-63 में पढ़ा गया शोध-निबन्ध ; पृष्ठ 30

2- रणवीरसिंह ; `बांगरू` शीर्षक लेख ; हरियाणा की उपभाषाएं, प्रथम संस्करण ; पृष्ठ 32

में ऐसी विभिन्नता आनी स्वाभाविक ही है, परन्तु विश्लेषण सुविधा के लिये प्रस्तुत अध्ययन में वर्तमानकालिक कृदन्त के ऊपर(1),(2) तथा (3) में वर्णित रूपों को ही मान्यता दी जा रही है।

(5) मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में वर्तमानकालिक कृदन्त का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण के रूप में होता है और तब यह आकारान्त संज्ञा तथा आकारान्त विशेषण के अनुसार रूपान्तरित होता है (देखिए अंक 3.1.2, 3.1.3, 3.1.4 तथा 3.3.2)।

3. भूतकालिक कृदन्त- (1) भूतकालिक कृदन्त का प्रत्यय मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही `-आ` है। दोनों में अकारान्त धातुओं से भिन्न अन्य स्वरान्त धातुओं की स्थिति में धातु तथा प्रत्यय के मध्य यकार का आगम भी हो जाता है, यथा-
खा + आ — खाया ; पी + आ — पिया ;
से + आ — सेया ; हो + आ — होया ।

बांगरू में व्यंजनान्त धातुओं की स्थिति में भी धातु तथा प्रत्यय के मध्य यकार का आगम हो जाता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा नहीं होता (देखिए - अंक 2.2.2.(1)) यथा -

धातु	मानकहिन्दी	बांगरू
मर	मरा	मर्‍या
डर	डरा	डर्‍या
काट	काटा	काट्या
लिख	लिखा	लिख्या

(2) इस कृदन्त का प्रयोग मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में संज्ञा तथा विशेषण के रूप में होता है और तब यह आकारान्त संज्ञा तथा आकारान्त विशेषण के समान रूपान्तरित होता है।

(3) मानकहिन्दी में `कर` धातु से `किया` तथा `हो` धातु से `हुआ` रूप निष्पन्न होते हैं, जबकि बांगरू में सामान्य नियमानुसार `कर` से `कर्‍या` तथा `हो` से `होया` भूतकालिक कृदन्त निष्पन्न होते हैं।

4. अपूर्णताबोधक कृदन्त-(1) क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त के तिर्यक रूप के साथ मानक

हिन्दी में `-वाला ` तथा बांगरू में ` -वाळा ` प्रत्यय के योग से कर्तृवाचक कृदन्त की निष्पत्ति होती है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
खानेवाला	खाणवाळा
जानेवाला	जाणवाळा
कातनेवाला	कातणवाळा

(2) इस कृदन्त का प्रयोग संज्ञा तथा विशेषण रूपों में होता है और तब यह आकारान्त संज्ञा तथा आकारान्त विशेषण के समान रूपान्तरित होता है।

5. अपूर्ण कृदन्त- मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में वर्तमानकालिक कृदन्त के अन्त्य `-आ ` को `-ए ` में परिवर्तित करने से इस कृदन्त की निष्पत्ति होती है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
करते	करदे
डरते	डरदे
मरते	मरदे
काटते	काटदे
जाते	जान्दे
पीते	पीन्दे
लेते	लेन्दे

दोनों में इस कृदन्त का प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में होता है।

6. पूर्णकालिक कृदन्त- मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में भूतकालिक कृदन्त के अन्त्य `-आ ` को `-ए ` में परिवर्तित करने से पूर्णकालिक कृदन्त की निष्पत्ति होती है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
खाये	खाये
पिये	पिये
लेये	लेये
सोये	सोये

मानकहिन्दी	बांगरू
मरे	मर्‌ये ~ मरे
डरे	डर्‌ये ~ डरे
लिखे	लिख्ये ~ लिखे

दोनों में इस कृदन्त का प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में होता है ।

7. तात्कालिक कृदन्त- मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में तात्कालिक कृदन्त की निष्पत्ति अपूर्णकालिक कृदन्त के साथ बलात्मक निपात के योग से होती है, जोकि मानक हिन्दी में ` ही ` और बांगरू में ` ए ` है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
जाते ही	जान्दे ए
खाते ही	खान्दे ए
करते ही	करदे ए

दोनों में इस कृदन्त का प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में होता है ।

8. पूर्वकालिक कृदन्त- (1) मानकहिन्दी में धातु के साथ `-कर ` के योग से पूर्वकालिक कृदन्त की निष्पत्ति होती है, जबकि बांगरू में धातु के साथ `-कै ` लगाया जाता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
खा कर	खा कै
काट कर	काट कै
मार कर	मार कै

(2) मानकहिन्दी में ` कर ` धातु के साथ `-के ` का प्रयोग होता है, जबकि बांगरू में अन्य धातुओं के समान `-कै ` ही प्रयुक्त होता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
करके	करकै

(3) बांगरू में इस कृदन्त के साथ `-नै ` का प्रयोग भी वैकल्पिक रूप से उपलब्ध

होता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा नहीं होता, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
जा कर	जाके नै
खा कर	खाके नै
काट कर	काटके नै

दोनों में इस कृदन्त का प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में किया जाता है।

3.4.7 लिंग, वचन तथा पुरुष

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों की क्रियाओं में उपलब्ध विभिन्न व्याकरणिक कोटियों में लिंग, वचन तथा पुरुष की व्याकरणिक कोटियां भी शामिल हैं। क्रियाओं की इन व्याकरणिक कोटियों के अनुसार मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में क्रिया के कर्तृ, कर्मणि तथा भावे तीन प्रयोग उपलब्ध होते हैं। यह आवश्यक नहीं कि मानक हिन्दी के किसी वाक्य में क्रिया का जो 'प्रयोग' हो, ठीक वही 'प्रयोग' बांगरू में भी हो, यथा मानक हिन्दी 'राम ने मुझे बुलाया' का बांगरू अनुरूपी वाक्य 'राम नै मैं बुलाया' अथवा 'राम नै मैं बुलाई' होगा। यहां मानक हिन्दी वाक्य में क्रिया भाव प्रयोग में है, जबकि बांगरू में क्रिया कर्मणि प्रयोग में है।

1. लिंगभेद- मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में क्रिया का लिंगभेद क्रियापद में प्रयुक्त कृदन्त में उपलब्ध होता है। चूंकि यह अनिवार्य नहीं कि मानक हिन्दी में यदि कृदन्त का प्रयोग हुआ हो तो बांगरू में भी कृदन्त का ही प्रयोग हो, इसलिए क्रिया में लिंगभेद की दृष्टि से मानकहिन्दी और बांगरू में अन्तर पड़ जाता है, यथा-

मानकहिन्दी (लिंगभेद की विद्यमानता)	बांगरू (लिंगभेद का अभाव)
राम जाता है।	राम जावै है।
सीता जाती है।	सीता जावै है।
वे जाते हैं।	वे जावैं हैं।
वे जाती हैं।	वे जावैं हैं।
लड्डू बांटे जाते हैं।	लाड्डू बांडिए हैं।
जलेबियां बांटी जाती हैं।	जलेबी बांडिए हैं।
यदि मैं जाता -	जे मैं जाऊं है - -

उपर्युक्त उदाहरणों में मुख्य क्रिया के रूप में मानक हिन्दी कृदन्त के स्थान पर बांगरू में तिङन्त का प्रयोग हुआ है। सहायक क्रिया दोनों में ही तिङन्त है। का[रण] मानक हिन्दी क्रिया रूप से तो लिंगभेद प्रकट होता है जबकि बांगरू में इसका अभाव है।

2. वचन भेद: क्रिया में वचन-भेद की दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू में पाए जाने वाले कुछ उल्लेखनीय अन्तर निम्नलिखित अनुसार हैं -

(1) जब क्रियापद में कृदन्त के पश्चात् कोई सहायक क्रिया न हो तो स्त्री लिंग के दोनों वचनों में बांगरू में निरनुनासिक ईकारान्त रूप उपलब्ध होता है, जबकि मानक हिन्दी में एकवचन में निरनुनासिक ईकारान्त और बहुवचन में सानुनासिक ईकारान्त रूप प्रयुक्त होता है, यथा-

वचन	मानकहिन्दी	बांगरू
ए० व०	लड़की आई।	छोहरी आई।
ब० व०	लड़कियाँ आई।	छोहरी आई।
ए० व०	यदि लड़की जाती - -	जे छोहरी जान्दी - -
ब० व०	यदि लड़कियाँ जातीं - -	जे छोहरी जान्दी - -

(2) इसी प्रकार स्थिति-दर्शक ` हो ` धातु के भूतकालिक रूप ` था ` के स्त्रीलिंग में मानकहिन्दी में वचन-भेद उपलब्ध होता है, जबकि बांगरू में नहीं। बांगरू में एकवचन तथा बहुवचन दोनों में समान रूप से ` थी ` का प्रयोग उपलब्ध होता है, यथा-

वचन	मानकहिन्दी	बांगरू
ए० व०	लड़की आई थी	छोहरी आई थी।
ब० व०	लड़कियाँ आई थीं।	छोहरी आई थी।
ए० व०	लड़की जाती थी।	छोहरी जावै थी।
ब० व०	लड़कियाँ जाती थीं।	छोहरी जावै थी।

(3) इस सन्दर्भ में ` चाह ` धातु से बना रूप ` चाहिए ` भी उल्लेखनीय है। मानक हिन्दी में यह अपेक्षा भाव प्रयोग में भी प्रयुक्त किया जाता है[1], अत: मानक हिन्दी

1- मिलाइए- (i) वाजपेयी, किशोरीदास ; हिन्दी शब्दानुशासन ; 2014 वि०; पृष्ठ 419
(ii) शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी ; 1975 ; अंक 270 (सी) तथा 277 ; पृष्ठ 137,142

में यह सदा एकवचन में रहता है, जबकि बांगरू में ` चाहिए ` क्रियारूप कर्म के वचन से प्रभावित होकर बहुवचन में ` चाहिएं ` हो जाता है, यथा-

वचन	मानकहिन्दी	बांगरू
ए० व०	मुझे लड्डू चाहिए ।	मन्नै लाडू चाहिए ।
ब० व०	मुझे लड्डू चाहिए ।	मन्नै लाडू चाहिएं ।

3. पुरुषभेद: पुरुषभेद की दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू में पाया जाने वाला अन्तर आदर सूचक ` आप ` के साथ प्रयुक्त क्रिया रूप में उपलब्ध होता है। मानक हिन्दी में ` आप ` के साथ अन्य पुरुष का प्रयोग होता है जबकि बांगरू में मध्यम पुरुष (3.2.4.3) का, यथा —

मानकहिन्दी	बांगरू
आप चलें।	आप चालो।
आप भी आएं।	आप बी आवो।

3.4.8 काल

मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में काल तीन हैं, नामत: वर्तमान, भूत और भविष्य, यथा—

	मानकहिन्दी	बांगरू
वर्तमानकाल	राम आता है	राम आवै है
भूतकाल	राम आया	राम आया
भविष्यकाल	राम आएगा	राम आवैगा

इस प्रकार काल की दृष्टि से मानकहिन्दी और बांगरू में कोई अन्तर उपलब्ध नहीं होता। काल के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में कुछ समान विशिष्टताएं निम्नलिखित अनुसार हैं —

1. मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में ` आया ` आदि भूतकालिक कृदन्त के रूप काल निरपेक्ष हैं। ये भूत काल के अलावा भौतिक समय के धरातल पर भविष्य की ओर भी संकेत कर सकते हैं, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
तू चल, मैं आया।	तै चाल, मैं आया।

यहां ` आया ` भौतिक समय के धरातल पर भूतकाल की क्रिया नहीं हो सकती क्योंकि आने का काम अभी शुरू ही नहीं हुआ ।

2. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अधिकांशतया काल की अभिव्यक्ति कालसूचक सहायक-क्रिया की सहायता से होती है, यथा ` है ` (बांगरू ` है `), ` था ` आदि । यथास्थिति लिंग, वचन तथा पुरुष के आधार पर इन का रूपान्तरण हो जाता है ।

3. काल विशेष की सूचक सहायक-क्रिया का प्रयोग होने पर भी यह आवश्यक नहीं कि व्याकरणिक काल और भौतिक समय के धरातल में पूरा तालमेल हो यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
तू चल, मैं आता हूं ।	तैं चाल, मैं आऊं हूं ।

यहां ` आता हूं ` क्रिया व्याकरणिक रूप से वर्तमान काल है परन्तु भौतिक समय के धरातल पर यह भविष्यकाल का संकेत करती है ।

3.4.9 पक्ष

1. क्रिया के पक्ष की दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू में एक महत्वपूर्ण अन्तर यह है कि जहां मानक हिन्दी में व्यापक पक्ष[1] तथा अपूर्णकालिक पक्ष[1] के रूपों में पार्थक्य बना रहता है, वहां बांगरू में इन दोनों पक्षों का अन्तर लुप्त भी हो सकता है, यथा –

मानकहिन्दी		बांगरू
व्यापक पक्ष	आता है	आवै है
अपूर्णकालिक पक्ष	आ रहा है	आवै है
व्यापक पक्ष	आता था	आवै था
अपूर्णकालिक पक्ष	आ रहा था	आवै था

2. मानक हिन्दी अपूर्णकालिक पक्ष के प्रयोग ` आ रहा है ` से बाहरी

1- देखिए - शर्मा, आर्येन्द्र; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ; अंक 170 ; पृष्ठ 75-76

समानता रखनेवाला प्रयोग `हा रह्या है ` बांगरू में भी उपलब्ध होता है, परन्तु बांगरू में प्राय: ऐसे प्रयोग अपूर्णकालिक पक्ष में न हो कर भिन्न अर्थ में होते हैं, यथा–

बांगरू	मानकहिन्दी
वोह किम्मे हा रह्या है ।	उसने कुछ खाया हुआ है ।
पटेळ आ रह्या है ।	मेहमान आया हुआ है ।
मैं दिल्ली जा रह्या हूं ।	मैं दिल्ली गया हुआ हूं ।

3. बांगरू में अपूर्णकालिक पक्ष का पूर्णतया अभाव हो, ऐसी बात भी नहीं है । जब कोई काम पिछले समय से चला आ रहा हो तब बांगरू में भी अपूर्णकालिक पक्ष का प्रयोग उपलब्ध होता है, यथा–

मानकहिन्दी	बांगरू
वह प्रात: से पढ़ रहा है ।	वोह तड़के का पढ़ण लाग रह्या है ।

3.4.10 वृत्ति

मानकहिन्दी और बांगरू में क्रिया की विभिन्न वृत्तियां यथा: निश्चय, आज्ञा, सम्भावना, सन्देह और संकेत उपलब्ध हैं । वृत्ति के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में एक उल्लेखनीय अन्तर है-बांगरू में संकेतार्थक वृत्ति में वैकल्पिक रूपों की विद्यमानता और मानक हिन्दी में वैकल्पिक रूपों का अभाव । मानक हिन्दी में संकेतार्थ वृत्ति के रूप वर्तमानकालिक कृदन्त से ही बनते हैं, जबकि बांगरू में वर्तमानकालिक कृदन्त रूपों के अलावा सम्भावनार्थक रूपों के साथ ` है ` सहायक क्रिया के योग से भी बनते हैं, यथा–

मानकहिन्दी	बांगरू
यदि मैं जाता	(1) जे मैं जान्दा
	(2) जे मैं जाऊं है
यदि मैं जाती	(1) जे मैं जांदी
	(2) जे मैं जाऊं है
यदि हम जाते	(1) जे हम जान्दे
	(2) जे हम जावें है
यदि हम जातीं	(1) जे हम जान्दी
	(2) जे हम जावें है

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि जब बांगरू संकेतार्थक वृत्ति के रूप वर्तमानकालिक

कृदन्त से न कर अन्य विधि से निष्पन्न होते हैं तब उन पर लिंगभेद का प्रभाव नहीं होता, जबकि मानक हिन्दी में संकेतार्थ वृत्ति के रूपों में सदा लिंगभेद होता है।

3.4.11. सहायकक्रिया

मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में क्रियाओं की काल-रचना में सहायक क्रिया का बहुत महत्व है। काल रचना में सहायक ये सहायक क्रियाएं उन क्रियाओं से भिन्न हैं, जिन का प्रयोग संयुक्तक्रिया में गौणक्रिया के रूप में होता है और जो मुख्यक्रिया के अर्थ में विशिष्टता ला देती हैं। मूलक्रियाओं के समान संयुक्त क्रियाओं के साथ भी कालरचना में सहायक क्रियाओं का प्रयोग होता है।

1. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सत्तार्थक क्रिया `हो` के वर्तमान कालिक रूपों का प्रयोग कालरचना में सहायक क्रिया के रूप में होता है। साथ ही दोनों में ही इन रूपों का प्रयोग स्वतंत्र क्रिया के रूप में भी उपलब्ध है। मानक हिन्दी और बांगरू में ये रूप निम्नलिखित अनुसार हैं -

	मानकहिन्दी		बांगरू	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हूं	हैं	हूं	सां / हैं
मध्यम ,,	है	हो	है	हो
अन्य ,,	है	हैं	है	हैं

उपर्युक्त रूपों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि मानक हिन्दी के हकार के स्थान पर बांगरू में सकार हो जाता है, साथ ही मानकहिन्दी में उत्तम पुरुष बहुवचन में एक ही रूप है, जबकि बांगरू में वैकल्पिक रूप उपलब्ध है। बांगरू का उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप `हैं` मानक हिन्दी `हैं` के सांचे का है, जबकि बांगरू `सां` का रूप मानक हिन्दी `हैं` से भिन्न है। उपर्युक्त रूपों में पुरुष-वचन भेद उपलब्ध है, लिंग-भेद का अभाव है।

2. सत्तार्थक `हो` धातु के भूतकालिक रूपों का प्रयोग भी मानक हिन्दी और बांगरू दोनों की काल रचना में सहायक-क्रिया के रूप में होता है। साथ ही ये क्रिया रूप

स्वतन्त्र क्रिया के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। इन रूपों में लिंग तथा वचन-भेद उपलब्ध होता है, पुरुष भेद नहीं।

	मानकहिन्दी		बांगरू	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	था	थे	था	थे
स्त्रीलिंग	थी	थीं	थी	थी

उपर्युक्त क्रिया रूपों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बांगरू में स्त्रीलिंग में भी वचन भेद है जबकि बांगरू में नहीं।

3. भविष्यकाल में मानकहिन्दी और बांगरू दोनों में सहायकक्रिया के रूप में `गा` के लिंग तथा वचन से प्रभावित रूपों का प्रयोग होता है, यथा-

	मानकहिन्दी		बांगरू	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	गा	गे	गा	गे
स्त्रीलिंग	गी	गी	गी	गी

वर्तमान कालिक तथा भूतकालिक सत्तार्थक क्रिया-रूपों के विपरीत इन रूपों का प्रयोग स्वतंत्र क्रिया के रूप में नहीं होता। मानकहिन्दी में भूतकालिक सत्तार्थक क्रिया के स्त्रीलिंग बहुवचन में तो सानुनासिक ईकारान्त का प्रयोग होता है परन्तु भविष्यकाल में ऐसा नहीं होता। ये रूप मानकहिन्दी और बांगरू में पूर्णरूपेण समान हैं।

4. बांगरू में `से` सहायक क्रिया का भी प्रयोग उपलब्ध है जो संकेतार्थक वृत्ति की अभिव्यक्ति में प्रयुक्त होती है। इस सहायक क्रिया में लिंग, वचन तथा पुरुष के भेद उपलब्ध नहीं होते। इसका प्रयोग स्वतंत्र क्रिया के रूप में भी नहीं होता। मानकहिन्दी में संकेतार्थक वृत्ति की अभिव्यक्ति में ऐसी कोई सहायक क्रिया प्रयुक्त नहीं होती। बांगरू में इस सहायक क्रिया का उदाहरण है- `जे मैं जाऊं से` (अर्थात् यदि मैं जाता)।

5. बांगरू में वर्तमानकालिक कृदन्त के पश्चात किसी भी सहायक क्रिया का प्रयोग नहीं होता, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है। मानक हिन्दी में

वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ वर्तमानकालिक तथा भूतकालिक सहायकक्रिया का प्रयोग उपलब्ध होता है। ऐसी परिस्थितियों में बांगरू में वर्तमानकालिक कृदन्त के स्थान पर सम्भाव्य भविष्यत् का रूप प्रयुक्त होता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
राम जाता है।	राम जावै है।
राम जाता था।	राम जावै था।

6. बांगरू में सम्भाव्य भविष्यत् के रूप के पश्चात् सभी सहायक क्रियाओं का प्रयोग हो सकता है, जबकि मानक हिन्दी में केवल भविष्यसूचक सहायक-क्रिया ही प्रयुक्त हो सकती है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
राम जाएगा।	राम जावै गा।
(राम जाता है।)	राम जावै है।
(राम जाता था।)	राम जावै था।
(यदि राम जाता)	जे राम जावै है

7. सहायक क्रियाओं के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि मानक हिन्दी में किन्हीं दो सहायक क्रियाओं का प्रयोग एक साथ कभी नहीं होता, जबकि बांगरू में वर्तमान कालिक सहायक क्रिया का स्वतंत्र प्रयोग होने पर इस के साथ भविष्यकालिक सहायक क्रिया का प्रयोग भी उपलब्ध होता है। ऐसे दोहरे प्रयोग से बांगरू में निश्चयात्मकता आ जाती है[1], यथा-

'राम घरां सैगा' का अर्थ होता - निश्चय ही राम घर में है।

3.4.12 वाच्य

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों की क्रियाओं में वाच्य की व्याकरणिक

1- शर्मा, मानक चन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 1968 ; पृष्ठ 14

कोटि भी उपलब्ध है। दोनों में तीन वाच्य हैं, कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य। भाववाच्य वास्तव में अकर्मक क्रिया के लिए प्रयुक्त कर्मवाच्य ही होता है।[1]

वाच्य के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में एक महत्वपूर्ण अन्तर कर्मवाच्य की संरचना के सम्बन्ध में पाया जाता है। मानक हिन्दी में कर्मवाच्य के रूप मुख्य क्रिया के भूतकालिक कृदन्त के साथ 'जा' धातु के योग से निष्पन्न होते हैं, जबकि बांगरू में मानक हिन्दी के समान तो कर्मवाच्य के रूप निष्पन्न होते ही हैं, साथ में 'जा' धातु की सहायता के बिना भी मुख्य क्रिया की धातु में एक वचन के लिए '- इए' प्रत्यय तथा बहुवचन के लिये '- इएं' प्रत्यय लगाकर भी कर्मवाच्य के रूप निष्पन्न किए जाते हैं, यथा—

मानक हिन्दी	बांगरू
काम किया जाता है।	काम करिए है।
काम किए जाते हैं।	काम करिएं हैं।
बात की जाती है।	बात करिए है।
बातें की जाती हैं।	बात करिएं हैं।

जैसे कि उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है, बांगरू में जब 'जा' धातु की सहायता के बिना ही कर्मवाच्य के रूप निष्पन्न होते हैं तब मुख्य क्रिया में लिंगभेद उपलब्ध नहीं होता क्योंकि ऐसी स्थिति में मुख्यक्रिया का तिङन्तीय प्रयोग होता है,जबकि मानक हिन्दी में कर्मवाच्य में मुख्य क्रिया का कृदन्तीय प्रयोग होने के कारण मुख्य क्रिया में लिंगभेद उपलब्ध होता है।

3.4.13 काल-रचना

कामताप्रसाद गुरु ने हिन्दी काल-रचना के प्रकरण में हिन्दी के भिन्न भिन्न कालों[2] का उल्लेख किया है, उनके आधार पर डा० मानक चन्द शर्मा ने अपने एक निबन्ध[3]

1- मिलाइए- 'शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी;1975; अंक 278, पृष्ठ 143

2- गुरु,कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि0 पृष्ठ 276-77

3- शर्मा, मानकचन्द ; भिवानी की भाषा और खड़ी बोली के क्रियापदों का तुलनात्मक अध्ययन ; भाषा विभाग,हरियाणा की वार्षिक/लेखक गोष्ठी वर्ष 1974 में पढ़ा गया निबन्ध ; पृष्ठ 16-32

में मानक हिन्दी और बांगरू की काल-रचना का विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। यहां हम काल रचना की दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू में पाई जाने वाली मुख्य-मुख्य विभिन्नताओं का ही वर्णन कर रहे हैं।

सम्भाव्य भविष्यत काल के लिए धातु में लगने वाले प्रत्ययों में निम्नलिखित अनुसार विभिन्नता पाई जाती है -

	मानकहिन्दी		बांगरू	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	- ऊं	- एं	-ऊं	-आं ~ ऐं
मध्यमपुरुष	- ए	- ओ	- ऐ	-ओ
अन्यपुरुष	- ए	- एं	- ऐ	- ऐं

` कर ` धातु के साथ उपर्युक्त प्रत्ययों का प्रयोग निम्नलिखित अनुसार होता है -

उत्तमपुरुष	करूं	करें	करूं	करां / करैं
मध्यमपुरुष	करे	करो	करै	करो
अन्यपुरुष	करे	करें	करै	करैं

उपर्युक्त क्रिया-रूपों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि मानक हिन्दी उत्तम पुरुष बहुवचन में एक ही रूप चलता है,जबकि बांगरू में वैकल्पिक रूप प्रचलित हैं। मानक हिन्दी के -ए, -एं प्रत्ययों के स्थान पर बांगरू में क्रमश: -ऐ, -ऐं प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं (मिलाइए-अंक 1.4.1(4))। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि बांगरू में वर्तमानकालिक सहायकक्रिया में हकार के साथ लगने वाले प्रत्ययों की उपर्युक्त बांगरू प्रत्ययों से पूर्ण एकरूपता है जबकि मानक हिन्दी में वर्तमानकालिक सहायक क्रिया में हकार के साथ उपर्युक्त मानक हिन्दी प्रत्यय -ए, -एं के स्थान पर -ऐ, - ऐं का प्रयोग होता है।

प्रत्यक्षविधि काल के साधारण रूप के लिये मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में मध्यम पुरुष एकवचन में बिना किसी प्रत्यय के धातु का ही प्रयोग होता है दूसरे पुरुषों तथा वचनों के रूप सम्भाव्य भविष्यत के समान हैं। प्रत्यक्षविधि -काल के आदर सूचक रूप के लिये मानक हिन्दी और बांगरू में धातु के साथ लगने वाले प्रत्ययों में विभिन्नता पाई जाती है, यथा-

मानकहिन्दी	एकवचन	बहुवचन	बाँगरू एकवचन	बहुवचन
मध्यमपुरुष	-	- इए	-इए	- इयो
'जा' धातु	-	जाइए	जाइए	जाइयो

उपर्युक्त उदाहरणों से ज्ञात होता है कि मानक हिन्दी में प्रत्यक्षविधि काल के आदरसूचक रूपों में वचन-भेद नहीं होता । ये सदा बहुवचन में ही होते हैं, जबकि बाँगरू में इन में वचन-भेद भी उपलब्ध होता है ।

डा० मानक चन्द शर्मा[1] के मतानुसार बाँगरू के प्रत्यक्षविधि काल के आदर-सूचक रूप केवल मध्यम पुरुष बहुवचन में ही आते हैं जबकि डा० जगदेव सिंह[2] ने बाँगरू के प्रत्यक्षविधि काल के आदरसूचक रूपों में वचन-भेद को मान्यता दी है ।

वास्तव में बाँगरू के प्रत्यक्षविधि काल के आदरसूचक रूपों में भविष्यता की भावना भी अन्तर्निहित होती है[3] और ये रूप परोक्षविधि काल के रूपों से पूर्णतया एकरूपता रखते हैं ।

परोक्षविधि काल में मानक हिन्दी में धातु के साथ- ना प्रत्यय का प्रयोग होता है । इस में वचन-भेद नहीं होता जबकि बाँगरू में एकवचन में - इए तथा बहुवचन में -इयो प्रत्यय से बने क्रिया रूप प्रयुक्त होते हैं, यथा-

मानकहिन्दी (वचन-भेद का अभाव)	बाँगरू एकवचन	बहुवचन
जा + ना = जाना	जा+ इए = जाइए	जा + इयो = जाइयो

मानक हिन्दी में परोक्षविधि का आदरसूचक रूप धातु के साथ -इएगा प्रत्यय के योग से बनता है, यथा जा + इएगा = जाइएगा, जबकि बाँगरू में आदरसूचक किसी अन्य क्रिया रूप का अभाव है । बाँगरू में परोक्षविधि काल का बहुवचन रूप ही आदर सूचक के रूप में प्रयुक्त होता है ।

1- शर्मा, मानकचन्द ; भिवानी की भाषा और खड़ी बोली के क्रियापदों का तुलनात्मक अध्ययन ; भाषाविभाग हरियाणा की वार्षिक लेखक गोष्ठी-वर्ष 1974 में पढ़ा गया निबन्ध ; पृष्ठ 21

2- जगदेव सिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बाँगरू ; 1970 ; पृष्ठ 58

3- जगदेव सिंह ; यथोपरि ; पृष्ठ 59

मानक हिन्दी में संकेतार्थकाल की रचना वर्तमानकालिक कृदन्त से होती है,जबकि बांगरू में मानक हिन्दी के समान वर्तमानकालिक कृदन्त से तो होती है है साथ ही सम्भाव्य भविष्यत के रूपों के साथ ' से ' सहायक क्रिया के योग से भी ये रूप निष्पन्न होते है (देखिए अंक 3.4.10), यथा–

	मानकहिन्दी		बांगरू	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरूष	जाता	जाते	जाऊं से	जावां / जावें से
मध्यमपुरूष	जाता	जाते	जावे से	जाओ से
अन्य पुरूष	जाता	जाते	जावे से	जावें से

मानक हिन्दी में सामान्य वर्तमानकाल और अपूर्ण भूतकाल की रचना वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ सहायक क्रिया लगाकर की जाती है जबकि बांगरू में सम्भाव्य भविष्यत के रूपों के साथ(देखिए अंक 3.4.11), यथा

सामान्य वर्तमानकाल

	मानकहिन्दी		बांगरू	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरूष	जाता हूं	जाते हैं	जाऊं हूं	जावां सां
मध्यमपुरूष	जाता है	जाते हो	जावे से	जाओ सो
अन्यपुरूष	जाता है	जाते हैं	जावे से	जावें सें

अपूर्ण भूतकाल

उत्तमपुरूष	जाता था	जाते थे	जाऊं था	जावां थे
मध्यमपुरूष	..	..	जावे था	जाओ थे
अन्य पुरूष	..	..	जावे था	जावें थे

3.4.14 संयुक्तक्रिया

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग पाया जाता है । संयुक्तक्रिया में मुख्यक्रिया के पश्चात् एक या एकाधिक गौणक्रियाओं का प्रयोग

हो सकता है। ये गौण क्रियाएं मुख्यक्रिया के अर्थ में विशिष्टता लाती हैं। संयुक्त-क्रियाओं की सहायता से मानक हिन्दी और बांगरू दोनों की अभिव्यंजना-शक्ति का बहुत विकास हो गया है। संयुक्तक्रियाओं की रचना में मानक हिन्दी और बांगरू में कुछ विभिन्नताएं उपलब्ध होती हैं।

1. मानक हिन्दी में कोई क्रिया चाहे मुख्य क्रिया के रूप में प्रयुक्त हो चाहे गौणक्रिया के रूप में, उसके स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं होता, जबकि बांगरू में क्रियाओं का स्वरूप गौणक्रिया के रूप में प्रयुक्त होने पर कुछ बिगड़ जाता है, (देखिए अंक 2.3.1 (2) तथा 2.3.1 (10)), यथा—

मानकहिन्दी	बांगरू
लेने दे।	लेणा दे।
कर लेने दे।	कर लणा दे।
देने दे।	देणा दे।
कर देने दे।	कर दणा दे।
जाने दे।	जाणा दे।
कर जाने दे।	कर जणा दे।

मानक हिन्दी में 'ले', 'दे', 'जा' धातुओं के मुख्यक्रिया रूपों तथा गौणक्रिया रूपों में एकरूपता है, जबकि बांगरू के मुख्यक्रिया रूप 'लेणा', 'देणा', 'जाणा' गौणक्रिया के रूप में क्रमशः 'लणा', 'दणा', 'जणा', हो जाते हैं।

2. डा० आर्येन्द्र शर्मा [1] द्वारा संयुक्तक्रियाओं के रूप में दिये गये उदाहरणों में से यहाँ ऐसे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं, जिनका प्रयोग उसी रूप में बांगरू में उपलब्ध नहीं होता, यथा

मानकहिन्दी	बांगरू
वह गा उठा।	वोह गाण लाग ग्या।
वह रो उठा।	वोह रोण लाग ग्या।
वह आना चाहते हैं।	वह आणा चाहे हैं।

1- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ; पृष्ठ 123-129

मानकहिन्दी	बांगरू
वह बना जाते है ।	वह बणजावे है ।
लड़की गिरी पड़ती है ।[1]	छोहरी गिरणवाली है ।
मैं नदी में कूदा पड़ता हूं ।[2]	मैं नदी मैं कूदणवाला हूं ।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह विदित होता है कि यह आवश्यक नहीं कि संयुक्तक्रिया की रचना में मानक हिन्दी में मुख्यक्रिया तथा गौणक्रिया का जो स्वरूप हो, वही स्वरूप बांगरू में भी हो । साथ ही यह भी आवश्यक नहीं कि गौणक्रियाओं के रूप में मानकहिन्दी में जिन धातुओं का प्रयोग हो बांगरू में भी उन्हीं या उनके समकक्ष बांगरू धातुओं का प्रयोग हो । बांगरू तथा मानक हिन्दी की गौणक्रियाओं की विभिन्नता के कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत है :-

मानकहिन्दी	बांगरू
बनवानी चाहिए थी ।	बणवा हो थी ।
बनवाई जानी चाहिये थी ।	बणवा हो थी ।
खाया जा सका तो ...	खाया गया तो ...
जाना चाहिए था ।	जाणा बणी था ।

3.5. क्रियाविशेषण

3.5.1 रूपान्तरण

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही क्रियाविशेषण सामान्यतया रूपान्तरणशील नहीं होते, परन्तु कुछ ऐसे शब्द जो मूलत: विशेषण है, क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने पर रूपान्तरणशील होते है, जैसेकि मानक हिन्दी ` टेढ़ा ` (बांगरू टेढा) शब्द क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होने पर पुल्लिंग बहुवचन में एकारान्त तथा स्त्रीलिंग में ईकारान्त हो जाता है, यथा क्रमश:' टेढ़े गाड़े गये `(बां० टेढे गाडे गये)

1-2, हमारे विचारानुसार ये वाक्य मानक हिन्दी में प्रचलित नहीं है ।

तथा टेढ़ी गाड्डी गई ` ( मा० टेढ़ी गाड़ी गई ) । इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में केवल उन्हीं क्रियाविशेषणों का रूपान्तरण होता है जो विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, जबकि बाँगरू में ` तोला ` ऐसा क्रियाविशेषण भी उपलब्ध है जो मूलत: विशेषण न होने पर भी क्रियाविशेषण के रूप में रूपान्तरणशील है, यथा-

मानकहिन्दी	बाँगरू
लड़के । जल्दी चल ।	छोहरे । तोला चाल ।
लड़को । जल्दी चलो ।	छोहरो । तोले चालो ।
लड़की । जल्दी चल ।	छोहरी । तोली चाल ।
लड़कियों । जल्दी चलो ।	छोहरियों । तोली चालो ।

3.5.2 सार्वनामिक क्रियाविशेषण:

मानक हिन्दी और बाँगरू दोनों में सर्वनामों से व्युत्पन्न सार्वनामिक क्रिया-विशेषण उपलब्ध हैं । ऐसे क्रियाविशेषणों में कालबोधक, स्थानबोधक, दिशाबोधक तथा रीतिबोधक क्रियाविशेषण शामिल हैं । मानक हिन्दी और बाँगरू के ऐसे क्रियाविशेषणों में पाए जाने वाले अन्तर निम्नलिखित अनुसार हैं -

(1) कालबोधक क्रियाविशेषण

सर्वनाम	मानकहिन्दी	बाँगरू
निकटवर्ती	अब	इब
दूरवर्ती	-	-
सम्बन्धवाचक	जब	जद
नित्यसम्बन्धी	तब	-
प्रश्नवाचक	कब	कद

मानकहिन्दी और बाँगरू दोनों में दूरवर्ती संकेतवाचक सर्वनाम के साम्य में कोई क्रियाविशेषण नहीं है । मानक हिन्दी में नित्यसम्बन्धी सर्वनाम के साम्य वाला क्रियाविशेषण भी इस रिक्त स्थान की पूर्ति करता है । बाँगरू में सम्बन्धवाचक सर्वना

से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण ही दूरवर्ती संकेतवाचक सर्वनाम और नित्यसम्बन्धी सर्वनाम के स्तम्भों के रिक्त स्थानों की पूर्ति करता है ।

मानक हिन्दी में कालबोधक क्रियाविशेषण का बद्ध रूपिम `-ब` है, जबकि `बांगरू में यह रूपिम `-द` है और इस का एक उपरूप- `ब` भी उपलब्ध होता है जोकि वर्तमानकालिक क्रियाविशेषण में प्रयुक्त होता है ।

काल बोधक क्रियाविशेषण में निकटवर्ती सर्वनाम का परिवर्त मानक हिन्दी में `अ-` है जबकि बांगरू में `इ-` ।

(2) स्थानबोधक क्रियाविशेषण

सर्वनाम	मानक हिन्दी	बांगरू
निकटवर्ती	यहां	अडै
दूरवर्ती	वहां	ओडै
सम्बन्धवाचक	जहां	जडै
नित्य सम्बन्धी	तहां	-
प्रश्नवाचक	कहां	कडै

मानक हिन्दी में स्थानबोधक क्रियाविशेषणों में सभी स्तम्भ भरे हुए हैं, जबकि बांगरू में नित्य सम्बन्धी सर्वनाम वाला स्तम्भ रिक्त है । बांगरू में इस रिक्त स्थान की पूर्ति दूरवर्ती संकेतवाचक सर्वनाम से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण द्वारा की जाती है । मानक हिन्दी में भी 'जहां-तहां' आदि वाक्य-खंडों में ही `तहां` का सीमित प्रयोग उपलब्ध होता है । बहुधा मानक हिन्दी में भी बांगरू के समान इस के स्थान पर दूरवर्ती संकेतवाचक सर्वनाम से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण ही प्रयुक्त होता है, यथा `जहां चाह, वहां राह` ।

मानक हिन्दी में स्थानबोधक क्रियाविशेषण का बद्ध रूपिम `-हां` है, जबकि बांगरू में `-डै` ।

मानक हिन्दी में निकटवर्ती तथा दूरवर्ती सर्वनामों के परिवर्त क्रमश: `य-` तथा `व-` है, जबकि बांगरू में क्रमश: `अ-` तथा `ओ-` ।

बांगरू में स्थानबोधक क्रियाविशेषणों के वैकल्पिक रूप भी उपलब्ध होते हैं, यथा- इत, उत, जित, कित । इन वैकल्पिक रूपों में स्थानबोधक क्रियाविशेषण का बद्ध रूपिम

`-त ` है और इससे पूर्व प्रयुक्त निकटवर्ती, दूरवर्ती, सम्बन्धवाचक, नित्यसम्बन्धी, प्रश्नवाचक सर्वनामों के परिवर्त क्रमश: इ- , उ- , जि- , कि- हैं ।

(3) दिशाबोधक क्रियाविशेषण

सर्वनाम	मानकहिन्दी	बांगरू
निकटवर्ती	इधर	इत्थोड़
दूरवर्ती	उधर	उत्थोड़
सम्बन्धवाचक	जिधर	जित्थोड़
नित्यसम्बन्धी	तिधर[1]	-
प्रश्नवाचक	किधर	कित्थोड़

बांगरू में दिशाबोधक क्रियाविशेषणों में नित्यसम्बन्धी सर्वनाम वाला स्तम्भ रिक्त है जिस की पूर्ति दूरवर्ती सर्वनाम से व्युत्पन्न दिशाबोधक क्रियाविशेषण द्वारा की जाती है ।

मानक हिन्दी में दिशाबोधक क्रिया-विशेषणों का बद्ध रूपिम ` -धर ` है जबकि बांगरू में ` -थोड़ ` । मानक हिन्दी में इस बद्ध रूपिम से पूर्व प्रयुक्त निकटवर्ती सर्वनाम, दूरवर्ती सर्वनाम, सम्बन्धवाचक सर्वनाम, नित्यसम्बन्धी सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम के परिवर्त क्रमश: `इ- `, उ- जि-, ति- , कि- हैं जबकि बांगरू में दिशाबोधक क्रियाविशेषण में `-थोड़ ` बद्ध रूपिम से पूर्व स्थानबोधक क्रियाविशेषण 'इत, उत, जित , कित' का प्रयोग होता है ।

(4) रीतिवाचक क्रियाविशेषण

सर्वनाम	मानकहिन्दी	बांगरू
निकटवर्ती	यों	यूं ~ न्यू
दूरवर्ती	-	-

1- मानक हिन्दी के वैयाकरणों ने दिशाबोधक क्रियाविशेषणों में ` तिधर ` भी शामिल किया है । देखिए-
(i) गुरु, कामताप्रसाद; हिन्दी व्याकरण; 2017 वि0,पृष्ठ 140
(ii) शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975 ; पृष्ठ 146

सर्वनाम	मानक हिन्दी	बांगरू
सम्बन्धवाचक	ज्यों	ज्यूं ~ ज्यूंकर
नित्य सम्बन्धी	त्यों	-
प्रश्नवाचक	(क्योंकर)	क्यूंकर

रीतिवाचक क्रियाविशेषणों में मानक हिन्दी में केवल दूरवर्ती सर्वनाम का स्तम्भ रिक्त है, जबकि बांगरू में दूरवर्ती सर्वनाम तथा नित्यसम्बन्धी सर्वनाम के स्तम्भ रिक्त है ।

मानक हिन्दी में रीतिबोधक क्रियाविशेषण का बद्ध रूपिम ‘-यों’ है, जबकि बांगरू में ‘-यूं’। बांगरू में प्रश्नवाचक सर्वनाम के स्तम्भ में अनिवार्य रूप से और सम्बन्धवाचक सर्वनाम के स्तम्भ में वैकल्पिक रूप से ‘यूं’ के पश्चात् ‘कर’ का भी प्रयोग होता है । मानक हिन्दी में प्रश्नवाचक सर्वनाम के स्तम्भ में सादृश्य के आधार पर रीतिवाचक क्रियाविशेषण ‘क्यों’ होना चाहिये परन्तु वास्तव में ‘क्यों’ का अर्थ ‘किस रीति से’ अथवा ‘किस प्रकार से’ न होकर ‘किस कारण से’ होता है । मानक हिन्दी में ‘क्योंकर’ का अर्थ ‘किस रीति से’ अथवा ‘किस प्रकार से’ होता है परन्तु मानक हिन्दी में ‘क्योंकर’ का प्रयोग अब प्रचलित नहीं रहा[1]। मानक हिन्दी में निकटवर्ती सर्वनाम का परिवर्त शून्य है, जबकि बांगरू में यह शून्य भी है और वैकल्पिक रूप में ‘न्’ भी ।

मानक हिन्दी में रीतिवाचक क्रियाविशेषण के वैकल्पिक रूप, ‘ऐसे’, ‘वैसे’, ‘जैसे’, ‘तैसे’, ‘कैसे’ उपलब्ध है । इन में रीतिवाचक क्रियाविशेषण का बद्ध रूपिम ‘-से’ है । इस बद्ध रूपिम से पूर्व निकटवर्ती, दूरवर्ती, सम्बन्धवाचक, नित्यसम्बन्धी और प्रश्नवाचक सर्वनाम के परिवर्त क्रमशः ‘ऐ-, वै-, जै-, तै-, कै-’ प्रयुक्त होते है ।

1- मिलाइए- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी ; 1975 ; अंक 285 (एल) ; पृष्ठ 140

3.5.3 संज्ञा से क्रियाविशेषण

1. मानकहिन्दी में कुछ आकारान्त संज्ञाओं के अन्त्य आकार को एकार में बदलने से क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते हैं, जबकि बांगरू में अन्त्य आकार को ऐकार में परिवर्तित किया जाता है(मिलाइए अंक 1.4.1), यथा -

मानकहिन्दी	बांगरू
पीछे	पीछै
आगे	आगै
सामने	सामणै
सवेरे	सवेरै

2. बांगरू में कुछ संज्ञाओं के साथ '-आं ' पर प्रत्यय के योग से भी क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते हैं, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा नहीं होता । मानक हिन्दी में ऐसी स्थिति में प्राय: क्रियाविशेषण पदबन्ध का प्रयोग होता है, उदाहरणार्थ-

मानकहिन्दी	बांगरू
कुहनी के बल	कुहण्यां
तरह से	ढालां

3. मानक हिन्दी में कुछ संज्ञाओं के साथ ` -पूर्वक `, ` -वश `, ` -तन प्रत्ययों के योग से क्रियाविशेषण बनाए जाते हैं, यथा—

ध्यान + पूर्वक	——	ध्यानपूर्वक
प्रेम + पूर्वक	——	प्रेमपूर्वक
भय + वश	——	भयवश
आलस्य +वश	——	आलस्यवश
आदत + तन	——	आदतन
कानून + तन	——	कानूनन

बांगरू में ऐसे क्रियाविशेषणों का अभाव है ।

4. मानक हिन्दी में कुछ संज्ञाओं के साथ `ब-` पूर्व प्रत्यय लगाकर भी क्रियाविशेषण बनाए जाते हैं, यथा-

ब + खुशी — बखुशी

ब + खूबी — बखूबी

बांगरू में संज्ञा के साथ `ब-` पूर्व प्रत्यय के योग से क्रियाविशेषणों की व्युत्पत्ति नहीं होती। बांगरू में संज्ञा के साथ पूर्वप्रत्यय लगाकर क्रियाविशेषण बिल्कुल न बनते हों, यह बात नहीं है। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में संज्ञा के साथ `बे-` पूर्वप्रत्यय लगाकर क्रियाविशेषण की निष्पत्ति होती है, यथा-

मानकहिन्दी बे + शक — बेशक ; बांगरू बे + शक — बेशक

3.5.4 क्रियाविशेषण के रूप में कृदन्त

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अपूर्णकालिक, पूर्णकालिक, पूर्व-कालिक तथा तात्कालिक कृदन्तों का प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में उपलब्ध होता है। बांगरू में पूर्णकालिक कृदन्त के साथ `-एं` प्रत्यय के योग से बने[1] पदों का प्रयोग भी क्रियाविशेषण के रूप में होता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसे प्रयोगों का अभाव है। मानक हिन्दी में बांगरू के ऐसे प्रयोगों के स्थान पर क्रियाविशेषण पदबन्ध का प्रयोग किया जाता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
खाने से पता चलेगा।	खायें बेरा पाटैगा।
खाने पर पता चलेगा।	खायें बेरा पाटैगा।
खाने के बाद पता चलेगा।	खायें बेरा पाटैगा।
खाने से पता चला।	खायें बेरा पाट्या।
खाने पर पता चला।	खायें बेरा पाट्या।
खाने के बाद पता चला।	खायें बेरा पाट्या।

1- देखिए - जगदेवसिंह ; हिन्दी और हरियाणी - भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में ; जर्नल आव हरियाणा स्टडीज़ ; खंड 6, अंक 1-2, 1974 ; पृष्ठ 69

बांगरू में प्रयुक्त ऐसे पदों की रचना निम्नलिखित अनुसार होती है -

/करे/ + /एं/	— /करें/	` करने से, करने पर या करने के बाद `
/डरे/ + /एं/	— /डरें/	` डरने से, डरने पर या डरने के बाद `
/मरे/ + /एं/	— /मरें/	` मरने से, मरने पर या मरने के बाद `
/कटे/ + /एं/	— /कटें/	` कटने से, कटने पर या कटने के बाद `
/होये/ + /एं/	— /होयें/	` होने से, होने पर या होने के बाद `
/धोये/ + /एं/	— /धोयें/	` धोने से, धोने पर या धोने के बाद `

3.5.5 निषेधात्मक क्रियाविशेषण

1. मानक हिन्दी में प्रत्यक्ष विधिकाल तथा परोक्ष विधि काल[1] में निषेधात्मक क्रियाविशेषण के रूप में ` मत ` या ` न ` का प्रयोग होता है, जबकि बांगरू में क्रमश: अनुरूपी निषेधात्मक क्रियाविशेषण ` मत ` तथा ` ना ` का अकेले अकेले भी प्रयोग होता है और ` मतना ` के रूप में दोनों निषेधात्मक क्रियाविशेषण इकट्ठे भी प्रयुक्त होते हैं, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
न जा	ना जा ~ मतना जा
मत जा	मत जा ~ मतना जा
न जाना	ना जाइए~मतना जाइए
मत जाना	मतजाइए ~ मतना जाइए

2. मानक हिन्दी ` नहीं ` के बांगरू में दो रूप ` न्हाई ` तथा ` कोन्या ` उपलब्ध हैं। बांगरू में ` न्हाई ` तथा ` कोन्या ` के वितरण में निम्नलिखित अनुसार अन्तर है। बांगरू में ` वोह आया न्हाई ` वाक्य में ` न्हाई ` के स्थान पर ` कोन्या ` का प्रयोग हो सकता है, यथा ` वोह आया कोन्या ` परन्तु ` वोह न्हाई से ` वाक्य में ` न्हाई ` के स्थान पर ` कोन्या ` का प्रयोग करने पर ` से ` का लोप हो जाता है, यथा ` वोह कोन्या `।

1- गुरु, कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि0 ; पृष्ठ 277

3.5.6 बलात्मक निपात का योग

सर्वनामों से व्युत्पन्न कालबोधक तथा स्थानबोधक क्रियाविशेषणों के साथ मानक हिन्दी और बांगरू में बलात्मक निपात क्रमशः `ही` तथा `ए` का प्रयोग उपलब्ध होता है। मानक हिन्दी में ऐसा प्रयोग उपलब्ध होने पर क्रिया-विशेषण तथा निपात में सन्धि हो जाती है (देखिए अंक 2.3.2(2) तथा 2.1.5( )), जबकि बांगरू में सन्धि नहीं होती, यथा-

मानकहिन्दी					बांगरू				
अब	+	ही	=	अभी	इब	+	ए	=	इबए
जब	+	ही	=	जभी	जद	+	ए	=	जदए
तब	+	ही	=	तभी	-	-			-
यहाँ	+	ही	=	यहीं	आड़ै	+	ए	=	आड़ैए
वहाँ	+	ही	=	वहीं	ओड़ै	+	ए	=	ओड़ैए
जहाँ	+	ही	=	जहीं	जड़ै	+	ए	=	जड़ैए

3.6 परसर्ग तथा परसर्गात्मक शब्द

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में परसर्ग वे शब्द हैं जिन से किसी संज्ञा या सर्वनाम का किसी संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया से सम्बन्ध व्यक्त होता है।[1] इस शब्दावली के अन्तर्गत `ने`, `को`, `से` आदि (बांगरू नै, तै आदि) कारक-चिन्हों[2] के अलावा पार, तले, आदि सम्बन्धसूचक[3] भी शामिल हैं। `ने`, `को`, `से` आदि (बांगरू नै, तै आदि) कारक चिन्ह एक प्रकार के परसर्ग हैं।[4] कुछ विद्वानों[5]

1- मिलाइए- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी; 1975 ; अंक 66 ; पृष्ठ 28

2- मिलाइए- यथोपरि ; अंक 95 ; पृष्ठ 38

3- मिलाइए - गुरु, कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि0:, पृ0154-166

4- मिलाइए- शर्मा, आर्येन्द्र ; यथोपरि ; अंक 296 ; पृष्ठ 158

5- मिलाइए-अग्रवाल, कैलाशचन्द्र; हिन्दी परसर्ग तथा पदबन्ध संरचना ; `भाषा` त्रैमासिक ; हिन्दी भाषा विज्ञान अंक, 1973 ; पृष्ठ 184

ने कारकचिन्हों के लिए ` परसर्ग ` तथा सम्बन्धसूचकों के लिए ` परसर्गात्मक शब्द ` शब्दावली प्रयुक्त की है। ` परसर्ग ऐसे शब्द है जिनका व्याकरणिक प्रकार्य तो होता है लेकिन कोशीय अर्थ नहीं। इस के विपरीत परसर्गात्मक शब्द का कोशीय अर्थ होता है, व्याकरणिक नहीं।[1] ` प्रस्तुत विश्लेषण में कारक चिन्हों के लिए ` परसर्ग ` तथा अन्य सम्बन्धसूचकों के लिए ` परसर्गात्मक शब्द ` प्रयोग में लाए जा रहे है।

3.6.1 परसर्ग

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में परसर्गों का प्रयोग संज्ञा के तिर्यक रूपों के साथ किया जाता है। परसर्गों के प्रयोग की विभिन्नता के सम्बन्ध में निम्नलिखित तथ्य द्रष्टव्य है।

1. मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही सम्बन्ध कारक का परसर्ग ` का ` है और दोनों में ही यह धारित संज्ञा के लिंग, वचन और कारक से प्रभावित होता है। धारित संज्ञा अकर्मकारक पुल्लिंग एकवचन हो तो यह मूल रूप में प्रयुक्त होता है। धारित संज्ञा स्त्रीलिंग होने की स्थिति में इसका रूप ` की ` और धारित संज्ञा अकर्मकारक पुल्लिंग बहुवचन होने पर इसका रूप ` के ` हो जाता है। परन्तु यदि धारित संज्ञा पुल्लिंग हो और वह तिर्यक कारक में हो तो दोनों वचनों में मानक हिन्दीमें इस का रूप ` के ` और बांगरू में ` के ` होता है, उदाहरणार्थ-

मानकहिन्दी	बांगरू
के	के
राम के घोड़े को	राम के घोड़े नै
राम के घोड़ों को	राम के घोड़यां नै
राम के साथी को	राम के साथी नै
राम के साथियों को	राम के साथियां नै

2. सम्बन्ध कारक में धारित संज्ञा के लिंग तथा वचन से अप्रभावित परसर्ग के रूप में मानक हिन्दी में ` के ` प्रयुक्त होता है, जबकि बांगरू में ऐसी स्थिति में ` के `

1- अग्रवाल, कैलाशचन्द्र ; हिन्दी परसर्ग तथा सम्बन्ध संरचना ; ` भाषा ` त्रैमासिक ; हिन्दी भाषाविज्ञान अंक ; 1973 ; पृष्ठ 184

का प्रयोग पाया जाता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
के	कै
राम के एक बेटा है।	राम कै एक बेटा सै।
राम के दो बेटे हैं।	राम कै दो बेटे सैं।
राम के एक बेटी है।	राम कै एक बेटी सै।
राम के दो बेटियां हैं।	राम कै दो बेटी सैं।

3. बांगरू में ‘कै’ का प्रयोग मानक हिन्दी ‘के’ से अधिक व्यापक है। एक ओर तो बांगरू ‘कै’ मानक हिन्दी ‘के पास’ अथवा ‘के घर’ अर्थों में प्रयुक्त होता है, दूसरी ओर कुछ परिस्थितियों में मानक हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले ‘को’ परसर्ग के स्थान पर भी इस का प्रयोग पाया जाता है, उदाहरणार्थ-

मानकहिन्दी	बांगरू
राम के पास (के घर) जाना।	राम कै जाइए।
लड़की के पास (के घर) जाना।	छोहरी कै जाइए।
राम को बुखार है।	राम कै ताप सै।
राम को याद है।	राम कै याद सै।
राम को थप्पड़ मार।	राम कै थापड़ मार।

पंडित स्थाणुदत्त शर्मा[1] ने बांगरू में प्रयुक्त इस अपरिवर्तनशील ‘कै’ को विशेषण कारक में प्रयुक्त माना है।

4. डा० जगदेवसिंह[2] ने बांगरू में ‘कुत्ते नै ईंट कै मार’ (कुत्ते को ईंट से मार) उदाहरण में ‘कै’ का प्रयोग मानक हिन्दी ‘से’ के स्थान पर करण कारक में भी बताया है।

1- शर्मा, स्थाणुदत्त ; हरियाणा की भाषा; 1958-59 ; पृष्ठ 25-27
2- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 69

5. मानक हिन्दी में ` ने ` परसर्ग का प्रयोग कर्ता कारक तक ही सीमित है, जबकि बांगरू में इसके स्थान पर प्रयुक्त होने वाले ` नै ` परसर्ग का क्षेत्र कर्ताकारक के अतिरिक्त कर्म तथा सम्प्रदान कारकों तक भी व्याप्त है, यथा-

	मानकहिन्दी	बांगरू
कर्ता कारक	ने	नै
	राम ने पानी पिया।	राम नै पाणी पिया।
	लड़के ने रोटी खाई।	छोहरे नै रोटी खाई।
कर्म कारक	को	नै
	लड़के को दे।	छोहरे नै दे।
	राम को पता है।	राम नै बेरा है।
सम्प्रदान कारक	को	नै
	खाने को लड्डू मिलेंगे।	खाण नै लाडू मिलैंगे।
	पीने को पानी नहीं मिलता।	पीण नै पाणी कोन्या मिलदा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानक हिन्दी में तो कर्म तथा सम्प्रदान कारकों में ` को ` परसर्ग का समान रूप से प्रयोग होता है, जबकि बांगरू में कर्ता, कर्म तथा सम्प्रदान तीनों कारकों के लिये समान रूप से ` नै ` परसर्ग का प्रयोग होता है।

6. बांगरू में कर्ता तथा कर्म दोनों कारकों के लिये ` नै ` परसर्ग का समान रूप से प्रयोग होता है, परन्तु दोनों कारकों में एक साथ ` नै ` परसर्ग के प्रयोग से बांगरू में ठीक अर्थ समझने में बाधा होने की सम्भावना के कारण दोनों कारकों के लिए एक साथ ` नै ` प्रयोग में नहीं आता ; उदाहरणार्थ-

मानकहिन्दी	बांगरू
(प्रचलित प्रयोग)	(अप्रचलित प्रयोग)
साहिब ने राम को मारा	साहब नै राम नै मार्या [1]
राम को साहिब ने मारा	राम नै साहब नै मार्या [1]

1- मिलावर – जोसेफ, ई० ; भाटू लाहरी ;
1910 ; भाग 1, अंक 2

बांगरू में उपर्युक्त वाक्य भ्रांतिपूर्ण होने के कारण प्रयोगार्ह नहीं है। ऐसी परिस्थिति में बांगरू में कर्मकारक कर्तृ रूप में परसर्ग रहित प्रयुक्त होता है यथा ` साहब ने राम मार्या ` (साहिब ने राम को मारा) ; ` राम साहब ने मार्या ` (राम को साहब ने मारा) ।

7. बांगरू में ` देना ` आदि कुछ क्रियाओं के साथ एक ही वाक्य में कर्ता तथा कर्म दोनों के परसर्ग एक साथ प्रयुक्त हो सकते हैं परन्तु ऐसी दशा में गौण कर्म का प्रयोग परसर्ग ` ने ` के स्थान पर ` नै ` अथवा ` तीं ` के साथ होता है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
बाप ने बेटे को रुपया दिया ।	बाबू ने छोरे नै (तीं) रुपइया दिया ।

यदि बांगरू में एक ही वाक्य में परसर्ग सहित गौण कर्म के साथ परसर्ग सहित कर्ता न हो तो बांगरू में गौण कर्म के लिये ` नै ` (तीं) और ` ने ` परसर्ग का विकल्प उपलब्ध है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
` लड़के को रुपया दे दो `	` छोरे नै रुपइया दे दो `
	या ` छोरे ने रुपइया दे दो `

8. मानक हिन्दी में अपादान तथा करण कारकों में ` से ` परसर्ग प्रयुक्त होता है, जबकि बांगरू में इन दोनों कारकों में ` तै ` परसर्ग प्रयोग में लाया जाता है, यथा-

	मानकहिन्दी	बांगरू
अपादान कारक	राम घोड़े से गिर गया ।	राम घोड़े तै पड़ गया ।
करणकारक	चाकू से काट ले ।	चाकू तै काट ले ।

9. मानक हिन्दी ` अब, कब, जब, तब ` के साथ प्रयुक्त ` से ` परसर्ग के स्थान पर बांगरू में ` का ` प्रयोग में लाया जाता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
अब से	इब का
कब से	कद का
जब से	जद का
तब से	तद का

10. मानक हिन्दी में कर्मणि तथा भावे प्रयोग में जहां कर्ता के साथ ` से ` परसर्ग प्रयुक्त होता है, बांगरू में वहां ` तै ` परसर्ग का प्रयोग पाया जाता है, यथा -

मानकहिन्दी	बांगरू
राम से पानी पिया नहीं जाता ।	राम तै पाणी पिया कोन्या जान्दा ।
राम से रोटी खाई नहीं जाती ।	राम तै रोटी कोन्या खाई जान्दी ।
राम से उठा नहीं जाता ।	राम तै ऊठा कोन्या जान्दा ।

11. बांगरू में स्थान-भेद से उपर्युक्त परिस्थिति में ` पै ` परसर्ग का प्रयोग भी पाया जाता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
राम से खाया नहीं जाता ।	राम पै खाया कोन्या जान्दा ।
राम से आया नहीं जाता ।	राम पै आया कोन्या जान्दा ।
राम से उठा नहीं जाता ।	राम पै ऊठा कोन्या जान्दा ।

12. वैसे बांगरू में ` पै ` परसर्ग मुख्यतया अधिकरण कारक में प्रयुक्त मानक हिन्दी ` पर ` परसर्ग का प्रतिस्थापन है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
राम घोड़े पर बैठा है ।	राम घोड़े पै बैठ्या सै ।
लोटा मेज पर रख दे ।	लोटा मेज पै धर दे ।

13. मानकहिन्दी में अधिकरण कारक के लिए जहां ` में ` परसर्ग प्रयुक्त होता है बांगरू में उसके स्थान पर ` मैं ` परसर्ग प्रयुक्त होता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
घर में	घर मैं
नगर में	नगर मैं
लोटे में	लोटे मैं

3.6.2 परसर्गात्मक शब्द

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में परसर्गात्मक शब्दों का प्रयोग संज्ञा अथवा सर्वनाम के तिर्यक रूप के पश्चात् होता है। दोनों में परसर्गात्मक शब्दों के दो भेद हैं - (1) सम्बद्ध तथा (2) असम्बद्ध। सम्बद्ध परसर्गात्मक शब्द परसर्गों अर्थात् कारक चिन्हों के पश्चात् आते हैं, यथा ` धन के बिना ` जबकि असम्बद्ध परसर्गात्मक शब्दों का प्रयोग सीधे ही संज्ञा या सर्वनाम के तिर्यक रूप के साथ होता है, यथा ` बैठे समेत `।

1. परसर्गात्मक शब्दों के सन्दर्भ में मानक हिन्दी और बांगरू में पाए जाने वाले अन्तर के विषय में यह रोचक तथ्य उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी के कुछ सम्बद्ध परसर्गात्मक शब्द बांगरू में असम्बद्ध परसर्गात्मक शब्दों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। दूसरे शब्दों में यों कहा जा सकता है कि मानक हिन्दी में कुछ परसर्गात्मक शब्दों से पूर्व कारक चिन्हों का प्रयोग होता है, जबकि बांगरू में अनुरूपी परसर्गात्मक शब्द कारक चिन्हों के बिना ही प्रयोग में लाए जाते हैं, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
इसे दीपक के नीचे रख दे।	इसनै दीवे तलै धर दे।
उस लड़के के बिना मेरा काम नहीं चलेगा।	उस छोरे बिना मेरा काम कोन्या चालै।
राम उसके पास गया।	राम उस धोरै गया।
उस के पास क्या है ?	उस धोरै के है ?
राम के साथ गया।	राम सेती गया।

2. इस सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि कई बार ऐसा भी होता है कि उपर्युक्त प्रवृत्ति के ठीक उलट मानक हिन्दी में प्रयुक्त एक कारक चिन्ह के स्थान पर

बांगरू में दो-दो कारकचिन्ह प्रयोग में लाए गए दिखाई देते हैं, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
मेरी भांति तू भी काम कर।	मेरे की तरियां तू बी काम कर।
तेरे समान अब कोई आएगा ..	तेरे की ढाल अद कोए आवैगा ...

वास्तव में उपर्युक्त बांगरू वाक्यों में `मेरे` तथा `तेरे` कारक चिन्ह रहित तिर्यक रूप हैं (देखिए अंक 3.2.5.4)।

3.7 समुच्चयबोधक

मानक हिन्दी और बांगरू में समुच्चय बोधक के सन्दर्भ में पाए जाने वाली विभिन्नताओं का उल्लेख समुच्चयबोधकों के विभिन्न भेदों के आधार पर किया जा रहा है। समुच्चयबोधकों के मुख्य दो भेद हैं - (1) समानाधिकरण और (2) व्यधिकरण।[1] इन भेदों के अवान्तर उपभेद भी हैं, यथा समानाधिकरण के विभिन्न उपभेदों में संयोजक, विभाजक विरोधदर्शक, परिणामदर्शक शामिल हैं और व्यधिकरण समुच्चयबोधकों में स्वरूपवाचक, संकेतवाचक, कारणवाचक और उद्देश्यात्मक शामिल हैं।

1. संयोजक - मानक हिन्दी में `और, तथा, एवं` संयोजकों का प्रयोग होता है। गुरु कामता प्रसाद[2] ने मानक हिन्दी के संयोजकों में `व` भी शामिल किया है, परन्तु अब संयोजक के रूप में `व` अप्रचलित हो गया है,[3] जबकि बांगरू में संयोजक के रूप में `अर` प्रयुक्त होता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में `और` पद जब संयोजक के रूप में प्रयुक्त होता है तब अनुरूपी बांगरू पद `अर` होता है और जब मानक हिन्दी में `और` पद का अर्थ `अतिरिक्त,

1- गुरु, कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि०, पृष्ठ 168

2- गुरु, कामताप्रसाद ; यथोपरि ; पृष्ठ 168

3- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी; 1975 ; अंक 302(ए) (iii); पृष्ठ 162

अन्य होता है तब अनुरूपी बांगरू पद ` और ` होता है । बांगरू में ` तथा `, ` एवं ` संयोजकों का अभाव है ।

2. विभाजक- मानक हिन्दी में विभाजक समुच्चयबोधक के रूप में अधिकांशतः ` या ` का प्रयोग होता है, जबकि बांगरू में विभाजक के रूप में ` के ` का प्रयोग ही पाया जाता है, उदाहरणार्थ-

मानकहिन्दी	बांगरू
मैं जाऊँगा या लड़का जाएगा ।	मैं जांगा के छोहरा जा गा ।

बांगरू में ` के ` के स्थान पर कभी कभी ` या ` का प्रयोग भी सुनने में आता है ।

मानक हिन्दी में विभाजक के रूप में ` अथवा ` का प्रयोग भी उपलब्ध होता है, जबकि बांगरू में ऐसे प्रयोग का अभाव है ।

कामताप्रसाद गुरु[1] ने मानक हिन्दी विभाजकों की सूची में ` किंवा, वा ` भी शामिल किए हैं । विभाजक के अर्थ में ` वा ` अब अप्रचलित हो गया है ।[2] ` किंवा ` का प्रयोग भी कविता में ही देखने में आया है, यथा ` ये हैं नरक के दूत किंवा दूत हैं कलिराज के ` ।[3] बांगरू में ` वा, किंवा ` विभाजकों का अभाव है ।

3. विरोधदर्शक- बांगरू में विरोधदर्शक समुच्चयबोधक के रूप में ` पर ` का प्रयोग होता है यथा ` आया था पर बोल्या कोन्या `(आया था परन्तु बोला नहीं), जबकि मानक हिन्दी में ` पर ` के अलावा ` परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर ` भी प्रयुक्त होते हैं ।

4. परिणामदर्शक- मानक हिन्दी में परिणामदर्शक समुच्चयबोधकों के रूप में ` इसलिए, अतः, अतएव `का प्रयोग होता है । कभी कभी ` इससे `, ` इस वास्ते `, ` इस कारण ` भी परिणामदर्शक के रूप में प्रयुक्त होते हैं । बांगरू में परिणामदर्शक

1- गुरु, कामता प्रसाद ; हिन्दी व्याकरण, 2017 वि0; पृष्ठ 170

2- शर्मा, आर्येन्द्र ,ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी, 1975 ; अंक 302(ए) (iii) ; पृष्ठ 162

3- गुरु, कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि0, पृष्ठ 170 से उद्धृत ।

समुच्चयबोधक के रूप में अधिकांशतया ` इस मारै ` प्रयोग में आता है, उदाहरणार्थ -

मानकहिन्दी	बांगरू
वह बुलाने आया था, इसलिए जाना पड़ेगा ।	वोह बुलाण आया था इस मारै जाणा पड़ैगा ।

बांगरू में ` इसमारै ` का वैकल्पिक प्रयोग ` इस कर कै ` भी उपलब्ध होता है, यथा ` वो बुलाण आया था, इस कर कै जाणा पड़ैगा `।

5. स्वरूपवाचक- मानक हिन्दी में स्वरूपवाचक अव्यय के रूप में ` कि ` प्रयुक्त होता है,जबकि बांगरू में ` अक ` प्रयुक्त होताहै, उदाहरणार्थ -

मानकहिन्दी	बांगरू
राम बोला कि मैं जाऊंगा ।	राम बोल्या अक मैं जां गा ।

6. संकेतवाचक - संकेतवाचक समुच्चयबोधक मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में सम्बन्धवाचक और नित्यसम्बन्धी सर्वनामों के समान जोड़े से आते हैं । मानक हिन्दी में ऐसा एक जोड़ा ` यदि ... तो ` है । बांगरू में ` यदि ` के स्थान पर ` जै ` प्रयुक्त होता है, परन्तु मुख्य उपवाक्य से पूर्व मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में 'तो' ही प्रयुक्त होता है, उदाहरणार्थ -

मानकहिन्दी	बांगरू
यदि मेहनत करता तो पास हो जाता ।	जै मेहनत करदा तो पास हो जान्दा ।

मानकहिन्दी में एक अन्य जोड़ा ` चाहे ... तो भी ` है । बांगरू में ये समुच्चयबोधक इसी प्रकार है, अन्तर केवल इतना है कि मानक हिन्दी ` भी ` का बांगरू रूप ` बी ` हो जाता है, उदाहरणार्थ

मानकहिन्दी	बांगरू
चाहे खुशामद करो तो भी काम बनना मुश्किल है ।	चाहे खुशामद करो तो बी काम बनना मुश्कल से ।

इसी अर्थ में संस्कृत के आगत समुच्चयबोधक ` यद्यपि .... तथापि ` भी मानक हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं, बांगरू में जिनका अभाव है।

7. कारणवाचक- कारणवाचक समुच्चयबोधक का स्वरूप मानक हिन्दी में ` क्योंकि ` है, जबकि बांगरू में ` इस कर् के अक ` उदाहरणार्थ-

मानकहिन्दी	बांगरू
वह गया क्योंकि तुझे आना था।	वोह गया इस करै अक तन्नै आणा था।

8. उद्देश्यवाचक- मानक हिन्दी में उद्देश्यवाचक समुच्चयबोधक के रूप में ` इसलिए कि ` या ` ताकि ` प्रयुक्त होते हैं, जबकि बांगरू में कारणवाचक समुच्चयबोधक के समान ही ` इस कर् कै अक ` प्रयुक्त होता है, उदाहरणार्थ-

मानकहिन्दी	बांगरू
कागज़ दबा लिया ताकि कोई उड़ न रहे	कागद दबा लिया इस करै अक कोर उड़ ना रहै।
कागज़ दबा लिया इसलिए कि कोई उड़ न रहे।	.. .. ..

3.8 विस्मयादिबोधक

विस्मयादिबोधक अव्ययों का व्याकरणिक रूप से कोई विशेष महत्व नहीं होता है।[1] मानक हिन्दी और बांगरू में विस्मयादि बोधक अव्ययों के सन्दर्भ में जो अन्तर उपलब्ध होता है, वह मुख्यतया शब्दकोशीय है, यथा- मानक हिन्दी ` अच्छा ` के लिए बांगरू में ` चोखा `; मानक हिन्दी ` हां ` के लिए बांगरू में ` हम्बै `।

बांगरू विस्मयादिबोधकों के सन्दर्भ में जैसे कि डा० नानकचन्द शर्मा ने लिखा है-

---

1- गुरु, कामताप्रसाद, हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि०, पृष्ठ 183

" `रे ` और `है ` तथा `ऊं ` और `हूं ` पृथक पृथक रूप से मूलत: सम्मतिसूचक अव्यय है किन्तु जब ये दोनों मिल जाते हैं और अन्तिम अनुनासिक एक झटके के साथ आकस्मिक रूप से समाप्त होती है तो ये मूल-नकारात्मक-अव्यय में बदल जाते हैं, अर्थात् `रे-है `, `ऊं- हूं ` असम्मति सूचक अव्यय हैं। "[1] मानक हिन्दी में ऐसे किन्हीं दो सम्मतिसूचक अव्ययों के मेल से असम्मतिसूचक अव्यय की व्युत्पत्ति की प्रवृत्ति का अभाव है।

बांगरू के कुछ विस्मयादिबोधक अव्ययों से वक्ता तथा सम्बोधित व्यक्ति के बारे में कुछ विशिष्टताओं[2] का पता चलता है, जैसे कि `बाबो ` सम्बोधन से पता चलता है कि वक्ता विवाहित स्त्री है और सम्बोधित व्यक्ति पुरुष है और उस स्त्री के साथ उस का विशिष्ट सामाजिक रिश्ता है। `बारे ` से ज्ञात होता है कि कोई पुरुष किसी अन्य पुरुष को सम्बोधित कर रहा है।

3.9 व्युत्पन्न प्रातिपदिक

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में एक रूपिम वाले प्रातिपदिक भी हैं और एकाधिक रूपिम वाले प्रातिपदिक भी। पहले प्रकार के प्रातिपदिक सरल प्रातिपदिक होते हैं और दूसरे प्रकार के व्युत्पन्न प्रातिपदिक। हाकिट[3] ने इन्हें क्रमश: `सिम्पल - स्टेम्स् ` तथा ` डेराइव्ड् स्टेम्स् या डेरेवेटिव्स् ` कहा है और ` डेराइव्ड् स्टेम्स् ` को रूपीपी संघटकों के आधार पर सेकेन्ड्री तथा प्राइमरी दो वर्गों में विभाजित किया है। ` सेकेन्ड्री डेराइव्ड् स्टेम्स ` में कम से कम एक रूपीपी संघटक प्रातिपदिक अवश्य होता है जबकि ` प्राइमरी डेराइव्ड् स्टेम्स् ` में कोई भी रूपीपी संघटक प्रातिपदिक नहीं होता। जिन सेकेन्ड्री डेराइव्ड् स्टेम्स् में केवल एक रूपीपी संघटक प्रातिपदिक हो और दूसरा व्युत्पादक प्रत्यय, उन्हें हाकिट[4] ने ` सेकेन्ड्री डेरेवेटिव्स् ` की तथा ब्लूमफील्ड[5]

1- शर्मा, मानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास;1968;पृ0 31

2- गिलाइन-जगदेवसिंह, ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ;1970 ;पृष्ठ 73

3- हाकिट, सी0एफ ; ए कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक्स, भारतीय संस्करण, 1970 ; पृष्ठ 240

4- यथोपरि

5- ब्लूमफील्ड, एल ; लैंग्वेज ; पुनर्मुद्रण 1964 ; पृष्ठ 209

ने 'डेराइव्ड सेकेन्डरी वर्ड्स' की संज्ञा दी है। प्रस्तुत विश्लेषण में इन्हें 'व्युत्पादक प्रत्ययों द्वारा व्युत्पन्न प्रातिपदिक' कहा जा रहा है। जिन 'सेकेन्डरी डेराइव्ड स्टेम्स' में समस्त समीपी संघटक प्रातिपदिक हों उन्हें हाकिट[1] ने 'स्टेम कम्पाउन्ड्स' की और ब्लूमफील्ड[2] ने 'कम्पाउन्ड वर्ड्स' की संज्ञा दी है। प्रस्तुत विश्लेषण में इन्हें 'व्युत्पन्न सामासिक प्रातिपदिक' कहा जा रहा है। मानक हिन्दी और बांगरू के व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के इस अध्ययन को व्युत्पादक प्रत्ययों द्वारा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों तथा व्युत्पन्न सामासिक प्रातिपदिकों तक ही सीमित रखा जा रहा है। डा० महावीर सरन जैन[3] के विश्लेषणानुसार यद्यपि मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में ही सार्वनामिक विशेषणों यथा 'इतना', 'उतना' (बां० 'इतणा', 'उतणा'), सार्वनामिक क्रियाविशेषणों यथा 'अब', 'जब' (बां० 'इब', 'जद') आदि को मूल व्युत्पन्न प्रातिपदिक के रूप में भी विश्लेषित किया जा सकता है, परन्तु प्रस्तुत विश्लेषण में कामताप्रसाद गुरु[4] के मतानुसार 'इतना', 'उतना' आदि सार्वनामिक विशेषणों तथा 'अब', 'जब' आदि सार्वनामिक क्रियाविशेषणों की व्युत्पत्ति 'यह', 'वह', 'जो' आदि सर्वनामों से मानी गयी है।

3.9.1 व्युत्पादक प्रत्ययों द्वारा व्युत्पन्न प्रातिपदिक

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में व्युत्पादक प्रत्यय दो प्रकार के हैं- (1) व्युत्पादक पूर्वप्रत्यय, (2) व्युत्पादक परप्रत्यय। व्युत्पादक पूर्वप्रत्ययों की स्थिति में संरचना आबद्धरूप + मुक्त रूप होती है और व्युत्पादक परप्रत्ययों की स्थिति में संरचना मुक्तरूप + आबद्धरूप होती है।

(1) व्युत्पादक पूर्वप्रत्यय: मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में प्रातिपदिक के

1- हाकिट, सी० एफ०; ए कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक्स, भारतीय संस्करण, 1970; पृष्ठ 240
2- ब्लूमफील्ड, एल; लैंग्वेज; पुनर्मुद्रण 1964; पृष्ठ 209
3- जैन, महावीर सरन; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन; 1978; पृष्ठ 105, 107
4- गुरु, कामता प्रसाद; हिन्दी व्याकरण; 2017 वि०, पृष्ठ 98, 137

साथ पूर्वप्रत्यय के संयोग से व्युत्पन्न प्रातिपदिक की निष्पत्ति होती है, यथा स+ पूत → सपूत । यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सिद्धान्तानुसार व्युत्पादक पूर्वप्रत्यय के रूप में केवल बाध्द रूप ही प्रयुक्त हो सकते हैं । कभी भूल से पूर्वप्रत्ययों में ऐसे रूपिम भी शामिल कर लिए जाते हैं जिन का प्रयोग मुक्त रूप में होता है ; उदाहरणार्थ कामताप्रसाद गुरु[1] तथा डा० आर्येन्द्र शर्मा[2] ने पूर्वप्रत्ययों की सूची में ` अति `, ` अन्तर `, ` प्रति `, ` कमी `, ` हर ` मुक्त रूप भी शामिल कर लिए हैं, जोकि पूर्वप्रत्ययों के सिद्धान्त के विरुद्ध है ।[3] मानक हिन्दी और बांगरू में पूर्वप्रत्ययों के सन्दर्भ में पाए जाने वाली कुछ विभिन्नताएं निम्नलिखित अनुसार हैं :-

(i) बांगरू में प्रातिपदिक के साथ व्युत्पादक पूर्वप्रत्यय की केवल एक ही परत लग सकती है । मानक हिन्दी में भी प्रायः प्रातिपदिक के साथ व्युत्पादक पूर्वप्रत्यय की एक ही परत लगती है, परन्तु मानक हिन्दी में पूर्वप्रत्यय की एकाधिक परत का विरल उदाहरण भी उपलब्ध हो जाता है, यथा—

फल → सफल → असफल, जबकि बांगरू में ऐसे उदाहरणों का अभाव है ।

(ii) बांगरू में मानक हिन्दी के समान ` बे- ` तथा ` न- ` पूर्वप्रत्ययों का अर्थ निषेधात्मक होता है, यथा ` बेहटके `, ` नास्तिक ` (बांगरू नास्तक) आदि में । बांगरू में इन पूर्व प्रत्ययों के कुछ ऐसे प्रयोग भी उपलब्ध होते हैं जिनमें इनके अर्थ में निषेधात्मकता लुप्त हो जाती है, जबकि मानक हिन्दी में इन पूर्वप्रत्ययों की निषेधात्मकता लुप्त होने वाले उदाहरणों का अभाव है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
शालिस	सालस
	न + सालस → नसालस
फ़ज़ूल	फजूल
	बे + फजूल → बेफजूल

1- गुरु, कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि०, पृष्ठ 332, 334, 335, 33[illegible]

2- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आफ माडर्न हिन्दी ; 1975 ; पृष्ठ 133, 135, 136

3- दीक्षित- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978 ; पृष्ठ 15-16

बांगरू में `नठालस` तथा `बेफजूल` में प्रयुक्त पूर्वप्रत्ययों का अर्थ `निषेध` न होकर `बिल्कुल` हो गया है। बांगरू में `नठालस` का अर्थ है- `बिल्कुल आलस` और `बेफजूल` का अर्थ है - `बिल्कुल फजूल`।

(iii) बांगरू में प्रातिपदिक के साथ पूर्वप्रत्यय का संयोग होने पर प्रातिपादिक के स्वरूप में भी परिवर्तन आ जाता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा देखने में नहीं आया (मिलाइए- अंक 2.1.1(1)), उदाहरणार्थ-

मानक हिन्दी	बांगरू
/कु-/ + /-कर्म/—/कुकर्म/	/कु-/ + /-करम/ → /कुहरम /[1]
	/ न-/ + /-गुरू- / + /-आ/ → /नुगुरा/

(iv) बांगरू की अपेक्षा मानक हिन्दी में व्युत्पादक पूर्वप्रत्ययों के प्रयोग में बाहुल्य और विविधता उपलब्ध होती है। मानक हिन्दी में एक ही प्रातिपदिक के साथ संस्कृत स्रोत के विभिन्न व्युत्पादक पूर्वप्रत्ययों के संयोग से व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की संख्या पर्याप्त हो जाती है, यथा- `हार` प्रातिपदिक से `आहार`, `विहार`, `प्रहार`, `परिहार`, `संहार` आदि अनेक व्युत्पन्न प्रातिपदिक निष्पन्न होते हैं, जबकि बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है।

(v) मानक हिन्दी `पर-` पूर्वप्रत्यय के स्थान पर बांगरू में `पड़-` का प्रयोग होता है, यथा

मानकहिन्दी	बांगरू
परदादा	पड़दादा
परदादी	पड़दादी
परनाना	पड़नाना
परनानी	पड़नानी

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी `र` के स्थान पर बांगरू में `ड़` के प्रयोग की प्रवृत्ति कुछ अन्य शब्दों में भी उपलब्ध होती है, यथा मानक हिन्दी-'कुरता' → बांगरू-

1- जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आफ बांगरू ; 1970 ; पृष्ठ 25

'हुक्का'; मानक हिन्दी- उरद → बांगरू- 'उड़द'; मानक हिन्दी- 'उर्दू' → बांगरू -- 'उड़दू'।

(2) व्युत्पादक परप्रत्यय- मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में प्रातिपदिक के साथ व्युत्पादक परप्रत्यय लग कर भी व्युत्पन्न प्रातिपदिक की निष्पत्ति होती है, यथा- बुरा + आई → बुराई। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में प्रातिपदिक के साथ व्युत्पादक परप्रत्ययों की कई परतें हो सकती हैं, यथा- मानक हिन्दी ; बन → बना → बनाव → बनावट → बनावटी → बनावटीपन ; बांगरू : बण → बणा → बणौटी → बणौटीपणा। बांगरू की अपेक्षा मानक हिन्दी में व्युत्पादक पूर्वप्रत्ययों का तो प्रयोग-बाहुल्य और प्रयोग-विविधता उपलब्ध होती है परन्तु व्युत्पादक परप्रत्ययों के सन्दर्भ में यह बात लागू नहीं होती। बांगरू में अनेक ऐसे व्युत्पादक परप्रत्यय उपलब्ध हैं, जिनका मानक हिन्दी में या तो पूर्णतया अभाव है या बहुत सीमित प्रयोग।

(i) मानक हिन्दी में जब किसी एक शब्द-भेद वाले प्रातिपदिक के साथ व्युत्पादक परप्रत्यय के योग से अन्य शब्द-भेद वाला व्युत्पन्न प्रातिपदिक निष्पन्न होता है तब यह आवश्यक नहीं कि बांगरू व्युत्पन्न प्रातिपदिक की रचना भी उसी आधार पर हो, जैसे यदि मानक हिन्दी में विशेषण प्रातिपदिक के साथ व्युत्पादक परप्रत्यय लगाकर संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक की निष्पत्ति होती है तो बांगरू में उसी अर्थ वाले संज्ञा प्रातिपदिक के साथ व्युत्पादक परप्रत्यय लगाकर विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक की रचना हो सकती है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
विशेषण + परप्रत्यय — संज्ञा	संज्ञा + परप्रत्यय — विशेषण
कमज़ोर + ई — कमज़ोरी	बोद + आ — बोदा
दुर्बल + ता — दुर्बलता	बोद् + आ — बोदा

यहां यह उल्लेखनीय है कि बांगरू प्रातिपदिक 'बोद' अर्थ की दृष्टि से मानक हिन्दी 'कमज़ोरी', दुर्बलता' के समकक्ष है।

(ii) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में 'सुख', 'दुख' आदि संज्ञा प्रातिपदिकों के साथ व्युत्पादक परप्रत्यय '-ई' लगने पर 'सुखी', 'दुखी' आदि विशेषण प्रातिपदिक निष्पन्न होते हैं। बांगरू में इसी सादृश्य पर 'सुख' से 'सुखा'

निष्पन्न कर के विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, जबकि मानक हिन्दी में `खुश` प्रातिपदिक स्वयं विशेषण है और उस से व्युत्पन्न प्रातिपदिक `खुशी` संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होता है, यथा -

मानकहिन्दी	बांगरू
राम सुखी हुआ ।	राम सुखी होया ।
राम दुखी हुआ ।	राम दुखी होया ।
राम खुश हुआ ।	राम खुशी होया ।

(iii) मानक हिन्दी में प्रयुक्त किसी परप्रत्यय के स्थान पर बांगरू में उस परप्रत्यय का विस्तृत रूप भी प्रयुक्त हो सकता है, जैसे मानक हिन्दी में उपलब्ध व्युत्पादक परप्रत्यय `-पन` के स्थान पर बांगरू में उस परप्रत्यय का विस्तृत रूप `-पणा` प्रयुक्त होता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
-पन	- पणा
भद्दा+ पन —— भद्दापन	भूंडा+पणा—— भूंडापणा
पागल +पन —— पागलपन	पागल+ पणा ——पागलपणा
लुच्चा+ पन —— लुच्चापन	लुच्चा+ पणा —— लुचपणा
बच्चा+ पन —— बचपन	बच्चा + पणा —— बचपणा

बांगरू में `- पणा` परप्रत्यय के योग से निष्पन्न अन्य व्युत्पन्न प्रातिपदिक :

बोळा (पागल) + पणा —— बोळपणा
साह (सेठ) + पणा —— साहपणा
ठाड़ा (शक्तिशाली)+ पणा ——ठाड़पणा

(iv) मानक हिन्दी में व्युत्पादक परप्रत्यय `-वाला` का बहुल प्रयोग उपलब्ध होता है, बांगरू में तदनुरूपी परप्रत्यय `-वाळा` है। इस परप्रत्यय के पूर्व मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में प्रातिपदिक का तिर्यक रूप प्रयुक्त होता है, यथा

मानकहिन्दी	बांगरू
जानेवाला	जाणवाळा
खानेवाला	खाणवाळा
पीनेवाला	पीणवाळा
करनेवाला	करणवाळा

बाँगरू में इसी अर्थ में क्रियार्थक संज्ञा के तिर्यक रूप के साथ `-इया` परप्रत्यय का भी बहुल प्रयोग उपलब्ध होता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसी परिस्थिति में `-इया` परप्रत्यय का प्रयोग देखने में नहीं आया। मानक हिन्दी में इसके स्थान पर `-वाला` परप्रत्यय ही चलता है, यथा-

मानकहिन्दी	बाँगरू
जानेवाला	जाणिया
खानेवाला	खाणिया
पीनेवाला	पीणिया
करनेवाला	करणिया

(v) मानक हिन्दी में कुछ व्युत्पादक परप्रत्ययों के कारण प्रातिपदिक के आदि स्वर के स्थान पर वृद्धि स्वर हो जाता है, अर्थात् प्रातिपदिक के आदि अक्षर का स्वर /अ/, /इ ई ए/, /उ ऊ ओ/ क्रमशः /आ/,/ऐ/, /औ/ में परिवर्तित हो जाता है (2.3.1(6)), जबकि बाँगरू में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है। मानक हिन्दी में ऐसी परिस्थिति में शून्य परप्रत्यय का प्रयोग भी हो सकता है, यथा-

भरत — भारत
वसुदेव — वासुदेव
कुन्ती — कौन्तेय
रघु — राघव
सुन्दर — सौन्दर्य
उचित — औचित्य
उदार — औदार्य
अग्नि — आग्नेय

(vi) मानक हिन्दी में कुछ ऐसे व्युत्पादक परप्रत्यय भी है जिनका बाँगरू में अभाव है, यथा `-त्व` परप्रत्यय। इस परप्रत्यय का मानक हिन्दी में व्यापक प्रयोग उपलब्ध होता है, उदाहरणार्थ- रामत्व, देवत्व, पुरुषत्व, मनुष्यत्व ; व्यक्तित्व, आदि।

(vii) कुछ व्युत्पादक परप्रत्यय ऐसे हैं जो मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में उपलब्ध तो होते हैं परन्तु एक में दूसरे की अपेक्षा इनका प्रयोग काफी सीमित है, यथा- '-ऐल' और '-अक' परप्रत्यय। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में हाथ+ ऐल → हथैल, ठण्डा + अक → ठंडक। परन्तु ये प्रत्यय मानक हिन्दी की अपेक्षा बांगरू में बहुत अधिक उत्पादक हैं, यथा बांगरू : बाट+ ऐल → बटैल, बाणिया + ऐल → बणैल, पीला + अक → पीलक ; सीला + अक → सीलक।

(viii) कुछ प्रत्यय ऐसे हैं जिनकी व्युत्पादकता बहुत सीमित है परन्तु जो मानक हिन्दी और बांगरू में से एक में उपलब्ध है तथा दूसरे में जिनका सर्वथा अभाव है, यथा बांगरू में संज्ञा प्रातिपदिक के साथ लगने वाला '-णा' परप्रत्यय, उदाहरणार्थ- चान्द + णा → चान्दणा 'रोशनी'

(ix) बांगरू में बहुत से अन्य ऐसे व्युत्पादक परप्रत्यय हैं जिनकी सहायता से बने व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का मानक हिन्दी में अभाव है। यहां हम डा० जयनारायण कौशिक द्वारा दिए गए व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। बांगरू में स्थान-भेद के कारण इनके स्वरूप में कुछ भेद हो सकता है।

प्रातिपदिक परप्रत्यय	व्युत्पन्न प्रातिपदिक	
कर + अन्ता —	करन्ता[1]	'करने वाला'
जाण+ अन्ता —	जाणन्ता[1]	'जानने वाला'
सुसरा+आड़ —	सुसराड़[2]	'ससुराल'
मारना +आड़ —	मराड़[2]	'मारने वाला'
पढ + एसरी —	पढेसरी[3]	'व्यंग्य के अर्थ में पढ़ने वाला'
लिख + एसरी —	लिखेसरी[3]	'व्यंग्य के अर्थ में लिखनेवाला'
खा + ज्याणा—	खाज्याणा[4]	'अनादर के अर्थ में खानेवाला'
मर + ज्याणा —	मरज्याणा[4]	'अनादर के अर्थ में मरनेवाला'

1- कौशिक, जयनारायण ; हरियाणवी-प्रत्यय कोश ; 1980 ; पृष्ठ 17

2- यथोपरि, पृष्ठ 14

3- यथोपरि, पृष्ठ 25

4- यथोपरि, पृष्ठ 35

3.9.2 व्युत्पन्न सामासिक प्रातिपदिक

मानक हिन्दी और बाँगरू दोनों में दो या दो से अधिक मुक्त प्रातिपदिकों के संयोग से व्युत्पन्न सामासिक प्रातिपदिकों की रचना होती है। मानक हिन्दी और बाँगरू दोनों में स्वतंत्र शब्दों से वाक्यांश रचना भी होती है। समास रचना और वाक्यांश रचना का अन्तर बताते हुए डा० रमेशचन्द्र जैन[1] लिखते हैं, "दो स्वतंत्र शब्दों के योग से बना होने पर भी समास वाक्यरचना में व्याकरण की एक इकाई का रूप ग्रहण करता है। उदाहरणार्थ किसी भाषा में संज्ञा का रूप लेगा अथवा विशेषण या अन्य किसी रूपात्मक इकाई का। संज्ञा और विशेषण के रूप में उस की रूपात्मक सत्ता पृथक पृथक नहीं हो सकती। यदि उसकी सत्ता पृथक-पृथक रहती है तो ऐसे शब्द समास की नहीं, वाक्यांश की रचना करेंगे।" डा० जैन का यह कथन मानक हिन्दी और बाँगरू दोनों की समास रचना पर समान रूप से लागू होता है। दोनों में समास रचना अन्तः केन्द्रमुखी भी होती है और बाह्य केन्द्रमुखी भी, यथा 'मालगाड़ी' (बाँगरू: मालगाड्डी) अन्तः केन्द्रमुखी समास है और 'कालापानी' (बाँगरू : कालापाणी) बाह्य केन्द्रमुखी समास है। समास रचना संधियुक्त भी होती है और सन्धि रहित भी। सन्धियुक्त समास रचना में बाह्य सन्धि-युक्त समास भी होते हैं और आन्तरिक सन्धियुक्त समास भी। मानक हिन्दी और बाँगरू दोनों में 'कूड़ा-कबाड़ा' सन्धि रहित समास रचना का, 'नकटा' (नाक + कटा) बाह्य सन्धियुक्त समास रचना का, और 'चपकड़ी' आन्तरिक सन्धियुक्त समास रचना का उदाहरण है। मानक हिन्दी और बाँगरू में समास रचना के सन्दर्भ में कुछ उल्लेखनीय विभिन्नताएं निम्नलिखित अनुसार हैं -

(i) संस्कृत प्रातिपदिक 'मैत्र्', 'प्राणिन्' आदि को मानक हिन्दी में 'मैत्री', 'प्राणी' आदि प्रातिपदिकों के रूप में अपनाया गया है, परन्तु जब व्युत्पन्न सामासिक प्रातिपदिकों में इनका प्रयोग होता है तो ये क्रमशः 'मैत्रि-', 'प्राणि-' आदि रूप धारण कर लेते हैं, जबकि बाँगरू में ऐसी प्रवृत्ति

1- जैन, रमेशचन्द्र ; हिन्दी समास- रचना का अध्ययन ; 1964 ;पृष्ठ 9

का अभाव है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
मंत्री + मंडल ⟶ मंत्रिमंडल	मंतरी + मंडल ⟶ मंतरीमंडल
प्राणी + विज्ञान ⟶ प्राणिविज्ञान	पराणी+विग्यान⟶ पराणीविग्यान

(ii) मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में एक विशिष्ट प्रकार की पुनरावृत्ति वाली समास रचना में दूसरा शब्द पहले शब्द की प्रतिच्छाया होता है,परन्तु मानक हिन्दी और बांगरू के ऐसे प्रतिच्छाया शब्दों के रूप में अन्तर होता है। बांगरू में प्राय: पहले शब्द के आदि अक्षर के दीर्घ तथा ह्रस्वस्वर के स्थान पर प्रतिच्छाया शब्द में क्रमश: `ऊ` तथा `उ` हो जाता है जबकि मानक हिन्दी में प्राय: प्रतिच्छाया शब्द का आदि व्यंजन बदला हुआ होता है। उदाहरणार्थ-[1]

मानकहिन्दी	बांगरू
पानी - वानी	पाणी-पूणी
चाय - वाय	चा- चू
काम - वाम	काम-कूम
मन्दिर-वन्दिर	मन्दर-मुन्दर

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि बांगरू में पहले शब्द के आदि अक्षर का स्वर यदि `ऊ` हो तो प्रतिच्छाया शब्द में `ऊ` के स्थान पर `आ` हो जाता है, यथा-चूरमा-चारमा अर्थात् मीठी चूरी इत्यादि ; फूल-फाल अर्थात् फूल इत्यादि ; चूड़ी-चाड़ी अर्थात् चूड़ी आदि ।

1- मिलाइए- शर्मा, विनय मोहन ; खड़ी बोली हिन्दी और पंजाब में उस का व्यवहृत रूप ; `सप्तसिन्धु` का उपभाषा विशेषांक , नवम्बर-दिसम्बर-जनवरी, 1965-66 ; पृष्ठ 35

4. वाक्य-विन्यास

4.1 भिन्न शब्द-भेद के रूप में

4.2 पदक्रम

4.3 उद्देश्य तथा विधेय की मैत्री

4.4 कर्मणि तथा भावे प्रयोग

4.5 पदबन्ध

4.6 उपवाक्य

4.7 रूपान्तरण

4. वाक्य-विन्यास

मानक हिन्दी और बांगरू में वाक्यविन्यास स्तर पर निम्नलिखित उल्लेखनीय विभिन्नताएं उपलब्ध होती हैं-

4.1 भिन्न शब्द-भेद के रूप में-

'कोश में पाए जाने वाले शब्दों को 'शब्द' कहा जाता है लेकिन भाषान्तर्गत प्रयोग के बाद उनकी संज्ञा बदल जाती है, वे 'पद' कहलाते हैं। वाक्य-रचना में 'पद' सब से छोटी अर्थमूला इकाई है। + + + वाक्य-रचना में पद अपरिहार्य सिद्ध तत्त्व है। वस्तुतः पदों का संश्लेषण ही वाक्य की सप्राणता का सूचक है। आज भी परम्परागत व्याकरणों में पाया जाने वाला शब्द-भेद वाक्य-विन्यास के अध्ययन हेतु महत्त्वपूर्ण है। यह दूसरी बात है कि वाक्य में आए हुए पद प्रायः अपने व्याकरण-सम्मत रूढ़ अभिधान और धर्म से भिन्न अभिधान और धर्म ग्रहण कर लेते हैं।[1]' इस दृष्टि से यहां यह उल्लेखनीय है कि क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त का प्रयोग बांगरू में विशेषण के रूप में भी उपलब्ध है, (देखिए अंक 3.3.5.3),जबकि मानक हिन्दी में ऐसा नहीं होता।बांगरू में ऐसे प्रयोग के उदाहरण हैं -

वोह भाजणा कूद है।
वोह मारणा कूद है।
वोह बालणा कूद है।
वोह भाजणी घोड़ी है।
वोह मारणी गां है।

मानक हिन्दी में ऐसी परिस्थिति में क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त के स्थान पर कर्तृवाचक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है, यथा-

---

1- कालरा, सुधा ; हिन्दी- वाक्य-विन्यास ; 1971 ; पृष्ठ 70-72

यह भागनेवाला बैल है।

यह मारने वाला बैल है।

यह चलनेवाला बैल है।

यह भागनेवाली घोड़ी है।

यह मारनेवाली गाय है।

डा० सुधा कालरा[1] के अनुसार क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त का हिन्दी में भी विशेषण के रूप में प्रयोग होता है। अपने मत के समर्थन में उन्होंने निम्न उदाहरण दिए हैं -

भागने के आदमी होशियार होने चाहिए।

धुलनेके कपड़े इकट्ठे कर दो।

दिखानेके दांत और हैं खाने के (—) और।

हमारे विचारानुसार डा० सुधा कालरा द्वारा दिये गये उदाहरण बोलचाल की हिन्दी के हैं ; मानक हिन्दी के नहीं।

कामताप्रसाद गुरु[2] ने भी क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त का प्रयोग विशेषण के रूप में माना है। उन के मतानुसार-" जब क्रियार्थक संज्ञा विशेषण के समान आती है तब उसका रूप उसकी पूर्ति या कर्म(विशेष्य) के लिंग-वचन के अनुसार बदलता है, जैसे, तुम को परीक्षा करनी हो तो कर लो। " यहां गुरु द्वारा दिये गए उदाहरण में " करनी हो " वास्तव में संयुक्त क्रिया के अंग के रूप में ही प्रयुक्त हुआ है न कि विशेषण के रूप में। डा० आर्येन्द्र शर्मा[3] तथा डा० महावीर सरन जैन[4] ने भी मानक हिन्दी में एक ओर जहां वर्तमानकालिक तथा भूतकालिक कृदन्तों को तो विशेषण के रूप में प्रयुक्त बताया है वहां दूसरी ओर क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त का विशेषण के रूप में प्रयोग होने का कोई उल्लेख नहीं किया है।

1- कालरा, सुधा ; हिन्दी-वाक्य-विन्यास ; 1971 ; पृष्ठ 159

2- गुरु, कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि० ; पृष्ठ 271

3- शर्मा, आर्येन्द्र ; ए बेसिक ग्रामर आव माडर्न हिन्दी ; 1975; पृष्ठ 109-11

4- जैन, महावीर सरन ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978 ; पृष्ठ 83

4.2. पदक्रम

पदक्रम की दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू में उल्लेखनीय भिन्नताएं निम्नलिखित अनुसार है -

(1) अंग्रेज़ी प्रभाव के फलस्वरूप मानक हिन्दी के मिश्रवाक्यों में अधीनस्थ उपवाक्य का स्थान प्रधान उपवाक्य के मध्य में भी हो सकता है, जबकि बांगरू में ऐसा नहीं होता । मानक हिन्दी का ऐसा उदाहरण है-

'भारत, जहां पहले दूध की नदियां बहती थीं, अब भुखमरी का शिकार हो रहा है।'

(2) बांगरू में भविष्य काल में विकृत क्रिया तथा कालसूचक 'गा' के मध्य निषेधात्मक क्रियाविशेषण का प्रयोग हो सकता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा नहीं हो सकता, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
राम नहीं जाएगा ।	राम जावै कोन्या गा ।
राम जाएगा नहीं ।	राम जावै कोन्या गा
सीता नहीं जाएगी ।	सीता जावै कोन्या गी ।
सीता जाएगी नहीं ।	सीता जावै कोन्या गी ।

4.3. उद्देश्य तथा विधेय की मैत्री

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में 'वाक्य संरचना की एक व्यवस्था उद्देश्य-विधेय मूलक है । इस व्यवस्था के अन्तर्गत एक तत्व प्रयोज्य होता है और दूसरा तत्व प्रयोजक । प्रयोज्य तत्व वास्तव में आधार होता है और प्रयोजक तत्व के द्वारा उस आधार का व्याख्यान अथवा कथन हुआ करता है । + + + प्राय: व्याकरण ग्रन्थों में कर्ता और उद्देश्य को समान मान लिया गया है, वास्तव में ऐसा नहीं है । योजना में एक योजक तत्व कर्ता और उद्देश्य दोनों हो सकता है, और यह भी हो सकता है कि किसी योजना में कर्ता और उद्देश्य अलग अलग हों । उद्देश्य और विधेय की अनिवार्यता असंदिग्ध है ।[1]' मानक

1- देखिए- कालरा, सुधा ; हिन्दी-वाक्य-विन्यास ; 1971 ; पृष्ठ 71

हिन्दी और बांगरू दोनों में प्राय: वचन, लिंग तथा पुरुष की दृष्टि से उद्देश्य की अपने विधेय से मैत्री उपलब्ध होती है परन्तु कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में मानक हिन्दी और बांगरू में वचन, लिंग तथा पुरुष तीनों की दृष्टियों से उद्देश्य-विधेय मैत्री के सन्दर्भ में विभिन्नताएं उपलब्ध होती हैं।

4.3.1. उद्देश्य तथा विधेय की वचनपरक मैत्री

(1) बांगरू में कभी कभी सम्मानसूचक बहुवचन का प्रयोग सुनने में आ जाता है, यथा- ' पंडज्जी आगे हैं।[1] ' बांगरू में उपलब्ध सम्मानसूचक का यह विरल प्रयोग केवल पुल्लिंग तक सीमित है। बांगरू में यदि स्त्रीलिंग उद्देश्य के साथ भूले भटके सम्मानसूचक ' जी ' का प्रयोग कर भी लिया जाए तो भी क्रिया एकवचन में होगी, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं है, यथा-

मानक हिन्दी	बांगरू
ताई जी आई हैं	ताई जी आई है
(हैं - बहुवचन)	(है - एकवचन)

(2) सम्मानसूचक बहुवचन का प्रयोग बांगरू की सामान्य प्रकृति के अनुकूल नहीं है, इसलिये उद्देश्य के साथ सम्मानसूचक ' जी ' का प्रयोग होने पर भी विधेय एकवचन में उपलब्ध हो सकता है जबकि मानक हिन्दी में सम्मानार्थक संरचना में विधेय सर्वदा बहुवचन में रहेगा, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
मास्टरजी कहाँ गए।	मास्टरजी कड़ै गया।[2]
लाला जी! यहाँ बैठ जाओ।	लालाजी! आड़ै बैठ जा।[2]

1- शर्मा, नानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 1968 ; पृष्ठ 194

2- देखिए- खंडेलवाल, शिवकुमार ; बांगरू बोली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन ; 1980 ; पृष्ठ 222

(3) मानक हिन्दी में सम्मानार्थक प्रयोग में विधेय तो केवल बहुवचन में होता है परन्तु उद्देश्य का बहुवचन में रूपान्तरण केवल नहीं होता। मानक हिन्दी में ऐसी परिस्थिति में उद्देश्य एकवचन में तथा विधेय बहुवचन में होने से उद्देश्य तथा विधेय की वचन सम्बन्धी मैत्री भंग हो जाती है, यथा `राजा की बेटी आई हैं` वाक्य में `आई हैं` विधेय बहुवचन में है, जबकि उद्देश्य `राजा की बेटी` एकवचन में है। विधेय से मैत्री के लिये उद्देश्य भी बहुवचन में `राजा की बेटियाँ` होना चाहिये था, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता। बांगरू में मैत्री भंग के ऐसे उदाहरण उपलब्ध नहीं हैं। बांगरू में ऐसी परिस्थिति में विधेय भी एकवचन में होता है। कुछ उदाहरण देखिए -

मानकहिन्दी	बांगरू
(विधेय बहुवचन में)	(विधेय एकवचन में)
राजा की बेटी आई हैं।	राजा की बेटी आई है।
अध्यापिका आई हैं।	मास्टरणी आई है।
बड़ी बहू आई हैं।	बड़ी बहू आई है।

4.3.2 उद्देश्य तथा विधेय की लिंगपरक मैत्री

(1) जब कोई स्त्री अपने लिए एकवचन `मैं` के स्थान पर बहुवचन `हम` का प्रयोग करती है तब मानक हिन्दी में विधेय सदा पुल्लिंग बहुवचन में होता है, यथा `रानी-महाराज! अब हम महल में जाते हैं`[1], जबकि बांगरू में इस प्रकार की प्रवृत्ति का अभाव है।

(2) डा० हरिकुमार शर्मा[2] के विचारानुसार मानकहिन्दी में अब आदरार्थ में एकवचन स्त्रीलिंग कर्ता के साथ बहुवचन पुल्लिंग क्रिया का प्रयोग भी चलने लगा है।

1- गुरु, कामताप्रसाद ; हिन्दी व्याकरण ; 2017 वि० ; पृष्ठ 77

2- शर्मा, हरिकुमार, हिन्दी वाक्यों में अन्विति व्यवस्था ; `भाषा` त्रैमासिक, हिन्दी भाषाविज्ञान विशेषांक, 1973 ; पृष्ठ 299

उन्होंने ऐसे प्रयोग के निम्नलिखित उदाहरण दिए हैं -

- माता जी अभी तक नहीं आए हैं
- बहिन जी आज देर से आएंगे ।
- शीला जी, आप भी हमारे साथ चल रहे हैं न ?

हमारे मतानुसार मानक हिन्दी में ऐसे प्रयोग अभी सर्वमान्य नहीं हुए हैं, केवल पंजाबी-हिन्दी में ऐसे प्रयोग सुनने में आते हैं । फिर भी, मानक हिन्दी में विवादास्पद रूप से प्राप्त ऐसे प्रयोगों का बांगरू में सर्वथा अभाव है ।

4.3.3 उद्देश्य तथा विधेय की पुरुषपरक मैत्री

मानक हिन्दी में मौखिक वक्ता के मध्यम पुरुष के लिये जब सम्मान सूचक ` आप ` सर्वनाम का प्रयोग होता है तब विधेय अन्य पुरुष बहुवचन में प्रयुक्त होता है । बांगरू में सम्मानसूचक ` आप ` के विरल प्रयोग की स्थिति में विधेय मध्यम पुरुष बहुवचन में होता है, (देखिए अंक 3.2.4.3), उदाहरणार्थ-

मानक हिन्दी	बांगरू
आप चलेंगे ।	आप चालोगे ।
आप आएंगे ।	आप आओगे ।

4.4. कर्मणि तथा भावे प्रयोग

(1) यदि कर्ता का प्रयोग परसर्ग सहित हो, कर्म के स्थान पर सर्वनाम हो और क्रिया एक कर्मक हो तो मानक हिन्दी में क्रिया भावे प्रयोग में होतीहै जबकि बांगरू में ऐसी परिस्थिति में क्रिया कर्मणि प्रयोग में होती है, यथा—

मानकहिन्दी	बांगरू
राम ने उसे पीटा ।	(1) राम ने वोह पीट्या ।
	(2) राम ने वा पीटी ।
राम ने मुझे बुलाया था ।	(1) राम ने मैं बुलाया था ।
	(2) राम ने मैं बुलाई थी ।

(2) ऊपर वर्णित परिस्थिति में (देखिए अंक 4.4(1)) यदि कर्म के स्थान पर व्यक्तिवाचक संज्ञा हो और वह संज्ञा मानवेतर न हो तो भी मानक हिन्दी के भावे प्रयोग के स्थान पर बांगरू में कर्मणि प्रयोग उपलब्ध होता है, (देखिए अंक 3.6.1.6) उदाहरणार्थ-

मानकहिन्दी	बांगरू
मैंने राम को देखा था।	मन्नै राम देख्या था।
मैंने सीता को देखा था।	मन्नै सीता देखी थी।

4.5. पदबन्ध

4.5.1 संज्ञा पदबन्ध

(1) मानक हिन्दी के संज्ञा पदबन्ध में सार्वनामिक विशेषण सदा परसर्ग रहित होता है, जबकि बांगरू में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
मुझ गरीब ने	मन्नै गरीब नै
मुझ गरीब को	मन्नै गरीब नै
तुझ गरीब ने	तन्नै गरीब नै
तुझ गरीब को	तन्नै गरीब नै

(2) बांगरू में संज्ञा पदबन्ध में सार्वनामिक विशेषण के साथ परसर्ग का प्रयोग केवल उस अवस्था में होता है जिसमें सार्वनामिक विशेषण के साथ परसर्ग संश्लिष्ट अवस्था में होता है, अन्यथा सार्वनामिक विशेषण परसर्ग रहित ही होता है, यथा—

मानकहिन्दी (परसर्ग रहित)	बांगरू (परसर्ग सहित)
मुझ गरीब ने / को	मन्नै गरीब नै
तुझ गरीब का	तेरा गरीब का (परसर्ग रहित)
उस गरीब ने / को	उस गरीब नै
उन गरीबों ने/ को	उन गरीबां नै

(3) बांगरू में संज्ञा पदबन्ध में सार्वनामिक विशेषण के साथ संश्लिष्ट परसर्ग का प्रयोग होने से बांगरू में वाक्यों के दो-दो अर्थ हो जाते हैं, यथा-

बांगरू	मानकहिन्दी
म्हारे कुम्हारां के	(1) हम कुम्हारों के
	(2) हमारे कुम्हारों के
थारे कुम्हारां के	(1) तुम कुम्हारों के
	(2) तुम्हारे कुम्हारों के

(4) बांगरू में कभी कभी संज्ञा पदबन्ध के केन्द्रक के साथ प्रयुक्त परसर्ग संज्ञा पदबन्ध के केन्द्रक से बिछुट कर अलग हुए विशेषण के साथ भी आता देखा जाता है। यह भावावेश की अवस्था में ही पाया जाता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
कुल्टी सी काले मुंह वाली रांड ने	काले मुंहआली रांड ने, डाकण सी ने।[1]
कुल्टी से काले कुत्ते ने	काले कुत्ते ने, डाकी से ने।[1]

ऐसी स्थिति में मानक हिन्दी का एक संज्ञा पदबन्ध बांगरू में दो समानाधिकरण संज्ञा पदबन्धों का रूप ग्रहण कर लेता है।

1- शर्मा, मामचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास ; 1968 ; पृष्ठ 13

4.5.2 क्रिया पदबन्ध[1]

(1) कुछ रचनाओं में मानक हिन्दी के क्रियापद के स्थान पर बांगरू में क्रिया पदबन्ध का प्रयोग होता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
(राम) है	(राम) होगा[2]
(उन्हें) चाहिए	(उसने) चाहिए है[3]
(यदि रोटी) चाहिए	(जे रोटी) चाहन्दी हो[3]

किन्तु निषेध प्रयोग में उपर्युक्त संरचना के विपरीत भी रूप देखने को मिल सकते हैं, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
(राम) नहीं है	(राम) कोन्या

(2) मानक हिन्दी क्रिया पदबन्ध में प्रयुक्त पदों की संख्या तदनुरूपी बांगरू क्रिया पदबन्ध में अर्थ पर प्रभाव डाले बिना घट-बढ़ सकती है, यथा -

---

1- क्रिया पदबन्ध की स्थिति के बारे में विद्वानों में मतभेद है। डा० महेशचन्द्र गर्ग, डा० कपिल विद्यालंकार आदि कुछ विद्वान क्रिया पदबन्ध को मान्यता नहीं देते, जबकि कुछ विद्वान क्रिया पदबन्ध को मान्यता देते हैं, जैसे डा० सुधाकालरा, डा० न० वी० राजगोपालन, डा० हरदेव बाहरी, डा० जगदेवसिंह। देखिए-
i) गर्ग, महेशचन्द्र ; परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन ; 1978 ; पृष्ठ 51-52 पर पादटिप्पणी ।
ii) विद्यालंकार, कपिल ; हिन्दी में शब्द, पद और पदबन्ध ; `भाषा` त्रैमासिक, हिन्दी भाषाविज्ञान अंक, 1973 ; पृष्ठ 117
iii) कालरा, सुधा ; हिन्दी-वाक्य-विन्यास ; 1971 ; पृष्ठ 239-240
iv) राजगोपालन, न० वी०; हिन्दी का भाषावैज्ञानिक व्याकरण ; 1973, पृ०55
v) बाहरी, हरदेव ; व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण ; 1972 , पृष्ठ 182
vi) जगदेवसिंह ; ए डिस्क्रिप्टिव ग्रामर आव बांगरू ; 1970 ;पृष्ठ 88-107

2- मिलाइए- शर्मा, मानकचन्द ; हरियाणवी भाषा का उद्गम तथा विकास ; 1968 ; पृष्ठ 14

3- मिलाइए- जगदेवसिंह ; हिन्दी और हरियाणवी- भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में ; जर्नल आफ हरियाणा स्टडीज ; खंड 6 , अंक 1-2, 1974 ; पृष्ठ 68

मानकहिन्दी	बाँगरू
(पद संख्या अधिक)	(पद संख्या कम)
खाई जा सकी तो	खाई गई तो
जाना नहीं है	जाणा कोन्या
नहीं जाता है	कोन्या जान्दा

(पद संख्या कम)	(पद संख्या अधिक)
जाना चाहिए	जाणा चाहिए है
पढ़ रहा है	पढ़ण लाग रह्या है

(3) मानक हिन्दी क्रिया पदबन्ध में यदि मुख्य क्रिया कृदन्त में हो तो यह अनिवार्य नहीं कि बाँगरू में भी तदनुरूपी मुख्यक्रिया कृदन्त में हो । साथ ही मानक हिन्दी तिङन्त के स्थान पर बाँगरू में कृदन्त क्रिया भी प्रयुक्त हो सकती है, यथा-

मानकहिन्दी	बाँगरू
(कृदन्त)	(तिङन्त)
जाता है	जावै है
जाती है	जावै है
जाते हैं	जावैं हैं
जाती हैं	जावैं हैं
जाता था	जावै था
जाती थी	जावै थी
जाते थे	जावैं थे
जाती थीं	जावैं थी
धोए जाते हैं	धोइए हैं
धोई जाती है	धोइए है

मानकहिन्दी	बाँगरू
(तिङन्त)	(कृदन्त)
(नौकरी) चाहिए (तो)	(नौकरी) चाहन्दी हो (तो)
(बैल) चाहिए (तो लेलेगा)	(जुद) चाहन्दा होगा(तो ले लेगा)

(4) मानक हिन्दी क्रिया पदबन्ध में जो अर्थ एक गौण क्रिया से अभिव्यक्त होता है बांगरू में वही अर्थ भिन्न गौण क्रिया से अभिव्यक्त हो सकता है, साथ ही मानक हिन्दी और बांगरू की मुख्य क्रिया के स्वरूप में भी अन्तर हो सकता है,यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
बुलाए जाने चाहिए	बुला हो है
कमाई जानी चाहिए	कमा हो है
खाता रहता है	खाएं जा है
होता रहता है	होएं जा है

(5) मानकहिन्दी क्रिया पदबन्ध में कोई विशिष्ट धातु मुख्य क्रिया के स्थान पर है या गौण क्रिया के स्थान पर, इस आधार पर उसके स्वरूप में अन्तर नहीं पड़ता, जबकि बांगरू में गौण क्रिया के रूप में प्रयुक्त क्रिया में स्वर का लोप या परिवर्तन हो सकता है; विस्तार के लिए देखिए- अंक 2.1.1 (2) तथा 2.3.1 (10) ।

4.5.3 क्रियाविशेषण पदबन्ध

मानक हिन्दी क्रियाविशेषण पदबन्ध के स्थान पर बांगरू में क्रिया-विशेषण पद का प्रयोग हो सकता है(देखिए अंक 3.5), यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
जाने से	जाएं
जाने पर	जाएं
जाने के बाद	जाएं

4.6 उपवाक्य

मानक हिन्दी और बांगरू दोनों की वाक्य रचना में एक ही प्रधान उपवाक्य वाले साधारण वाक्य, एक प्रधान उपवाक्य के साथ एक या एकाधिक अधीन उपवाक्यों वाले मिश्र वाक्य तथा एकाधिक सहयोगी प्रधान उपवाक्यों वाले संयुक्त वाक्य तीनों प्रकार के

वाक्य उपलब्ध है । उपवाक्यों की दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू में एक उल्लेखनीय विभिन्नता यह है कि बांगरू का झुकाव तो छोटे छोटे वाक्यों की ओर रहता है,जबकि मानकहिन्दी की आम बोलचाल वाली शैली में तो छोटे वाक्यों का ही प्रचलन है,परन्तु साहित्यिक शैली में लम्बे लम्बे गुम्फित वाक्यों की भी प्रथा है । बांगरू -भाषी ऐसे लम्बे लम्बे वाक्यों को भूलभुलैयां समझता है और इनसे दूर रहना ही पसन्द करता है । यहां मानक हिन्दी के लम्बे लम्बे गुम्फित साधारण, मिश्र तथा संयुक्त वाक्यों का एक एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा है -

(1) गुम्फित लम्बे साधारण वाक्य का उदाहरण :-

" उत्तर भारत के कुछ राज्यों में पिछले लम्बे समय से पड़ रहे भयंकर सूखे की स्थिति पर विचार करने के लिये आज मंगलवार को गांधी मैदान में सभी राजनैतिक दलों की ओर से आयोजित एक विशाल जन सभा में भाषण देते हुए मोहनलाल जी रो पड़े " ।[1]

(2) गुम्फित लम्बे मिश्रवाक्य का उदाहरण :-

" एक बार बीच में कच्ची नीन्द का हल्का-सा झोंका आया था तो लगा था जैसे वह सामने खड़ी हो, बिल्कुल वही शक्ल थी, वही उदास सी आंखें थीं और - - - ।"[2]

उपर्युक्त मिश्र वाक्य में अधीन उपवाक्य के अधीनाधीन उपवाक्यों का सिलसिला भी चला है । एक ही मिश्र वाक्य में छह उपवाक्य गुम्फित कर दिए गए हैं । बांगरू में ऐसे गुम्फित मिश्रवाक्यों का प्रचलन नहीं है ।

(3) गुम्फित लम्बे संयुक्त वाक्य का उदाहरण:-

" देखता हूं कि कुछ दृश्य हैं जो बिजली की कौंध की तरह चमकते हैं, कुछ और हैं जो रुक गए हैं और घटना के अनुक्रम का धागा तोड़ गए हैं, तोड़ ही नहीं उलझा भी गए

1- " भाषा " त्रैमासिक, हिन्दी भाषाविज्ञान अंक ; 1973 ; पृष्ठ 117

2- कालरा, सुधा ; हिन्दी-वाक्य-विन्यास ; 1971 ; पृष्ठ 199

है जिससे मैं उन ज्वलन्त घटनाओं को भी ठीक कालक्रम से नहीं देखता-समझाने क्रम से चलती हुई आती है और चली जाती है और मैं दावे के साथ नहीं कह सकता कि क्या पहले हुआ क्या पीछे हुआ ; इतना ही कह सकता हूं कि यह सब अवश्य हुआ है ; और इस में यह ध्वनित नहीं है कि केवल इतना ही हुआ था कि इसी क्रम से हुआ ।' [1]

उपर्युक्त संयुक्त वाक्य में भी सहयोगी उपवाक्य गुम्फित है । इन सहयोगी उपवाक्यों में से कुछ के दो-दो अधीन उपवाक्य भी हैं । इस प्रकार एक ही वाक्य में अठारह उपवाक्य गुम्फित हो गये हैं । बांगरू में ऐसे लम्बे लम्बे संयुक्त वाक्यों का बिल्कुल अभाव है ।

4.7 रूपान्तरण

जब किसी बीज-वाक्य को अन्य वाक्य में रूपान्तरित किया जाता है तब कई बार वाक्य-रचना सम्बन्धी कुछ परिवर्तन भी हो जाते हैं । मानक हिन्दी और बांगरू में ऐसे परिवर्तन अपने अपने ढंग से होते हैं, अत: दोनों में वाक्य- रचना सम्बन्धी कुछ भिन्नता आ जाती है ।

4.7.1 तथ्यात्मक वाक्यों का निषेधात्मक वाक्यों में रूपान्तरण

इस दृष्टि से मानक हिन्दी और बांगरू में निम्नलिखित अनुसार भिन्नता आ जाती है -

(1) जब अस्तित्व सूचक ' हो ' धातु के वर्तमानकाल का प्रयोग मुख्य क्रिया के रूप में हो तब निषेधात्मक रूपान्तरण होने पर मानक हिन्दी में क्रियारूप बना रहता है, जबकि बांगरू में वह लुप्त हो सकता है, यथा-

---

1- कालरा , सुधा ; हिन्दी-वाक्य-विन्यास ; 1971 ; पृष्ठ 225

मानक हिन्दी	बांगरू
राम है → राम नहीं है	राम से → राम कोन्या
राम अच्छा है → राम अच्छा नहीं है	राम आछा से → राम आछा कोन्या
गाय खेत में है→ गाय खेत में नहीं है	गां खेत में से → गां खेत में कोन्या

यदि बांगरू में निषेधात्मक `कोन्या` के स्थान पर निषेधात्मक `न्याइं` अव्यय का प्रयोग किया जाए तो अस्तित्व सूचक मुख्य क्रिया का लोप नहीं होता, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
राम है → राम नहीं है	राम से → राम न्याइं से
राम अच्छा है → राम अच्छा नहींहै	राम आछा से → राम आछा न्याइं से
गाय खेत में है → गाय खेत में नहीं है	गां खेत में से → गां खेत में न्याइं से

(2) निश्चयात्मक वर्तमान काल के वाक्य का निषेधात्मक वाक्य में रूपान्तरण के समय मानक हिन्दी में सहायक क्रिया का वैकल्पिक लोप होता है, मुख्यक्रिया के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता, जबकि बांगरू में सहायकक्रिया का अनिवार्य लोप हो जाता है और मुख्य क्रिया तिङन्त के स्थान पर कृदन्त रूप धारण कर लेती है, यथा -

मानकहिन्दी	बांगरू
राम जाता है → राम नहीं जाता (है)	राम जावै से → राम कोन्या जान्दा
सीता जाती है → सीता नहीं जाती(है)	सीता जावै से → सीता कोन्या जान्दी
हम जाते हैं → हम नहीं जाते (हैं)	हम जावैं सैं → हम कोन्या जान्दे

(3) जब सामान्य भविष्यत् काल के वाक्य को निषेधात्मक वाक्य में रूपान्तरित किया जाता है तब मानक हिन्दी में किसी प्रकार का संरचनात्मक परिवर्तन नहीं होता, जबकि बांगरू में निषेधात्मक अव्यय के योग के कारण भविष्य सूचक `गा` का लोप हो जाता है, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
राम जाएगा → राम नहीं जाएगा	राम जावैगा → राम कोन्या जावै
सीता जाएगी→ सीता नहीं जाएगी	सीता जावैगी→ सीता कोन्या जावै
तुम जाओगे → तुम नहीं जाओगे	थम जाओगे → थम कोन्या जाओ

मानकहिन्दी के `आने से`, `आने पर` आदि के लिए जब बांगरू में `आये` आदि रूप प्रयुक्त होते हैं तब निषेधात्मक रूपान्तरण में मानक हिन्दी में तो कोई रचनागत परिवर्तन नहीं होता जबकि बांगरू में `आएं` आदि के लिए वैकल्पिक रूप में क्रियार्थक संज्ञा वाले रूप भी प्रयुक्त होते हैं, यथा

मानकहिन्दी	बांगरू
तुम्हारे आने से बात बनेगी	थारे आयें बात बणैगी
→ तुम्हारे आने से बात नहीं बनेगी	→ थारे आयें बात कोन्या बणै[1]
	~ थारे आणा तैं बात कोन्या बणै[1]

4.7.2. प्रत्यक्षकथन का अप्रत्यक्षकथन में रूपान्तरण

बांगरू में प्रत्यक्षकथन को अप्रत्यक्षकथन में रूपान्तरित करने पर मुख्यकथन तथा मुक्ति-कथन के मध्य केवल `अक` अव्यय लगाने की आवश्यकता पड़ती है उसी प्रकार मानक हिन्दी में मुख्यकथन तथा मुक्ति कथन दोनों `कि` अव्यय के द्वारा जुड़ जाते हैं। मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में मुक्तिकथन अपना स्वतंत्र अस्तित्व छोड़कर मुख्य कथन का आश्रित बन जाता है। परन्तु मानक हिन्दी में कभी कभी ऐसा भी होता है कि अंग्रेज़ी रचना के प्रभावानुसार मुख्यकथन का पुरुष मुक्तिकथन के पुरुष को अपने रंग में रंग लेता है। बांगरू में मुक्तिकथन में इस प्रकार पुरुष का परिवर्तन नहीं होता, यथा-

मानकहिन्दी	बांगरू
उसने कहा, `मैं मूर्ख हूं`।	उसने कह्या, `मैं मूरख हूं`।
— उसने कहा कि वह मूर्ख है।	— उसने कह्या अक मैं मूरख हूं।

यहाँ यह स्पष्ट किया जाना उचित होगा कि मानक हिन्दी की अंग्रेज़ी से प्रभावित शैली में भी अप्रत्यक्षकथन में मुक्तिकथन का पुरुष मुख्यकथन के पुरुष से प्रभावित

1- जगदेवसिंह ; हिन्दी और हरियाणवी- भाषा शिक्षण के सन्दर्भ में ; जर्नल आव हरियाणा स्टडीज़ ; खंड 6 अंक 1-2 ; 1974 ; पृष्ठ 69

होता है । डा० सुधा कालरा[1] ने वक्तृकथन की अंग्रेज़ी से प्रभावित इस शैली को ` अंग्रेज़ी-हिन्दी-रचना-पद्धति ` नाम दिया है । मानक हिन्दी की आम बोलचाल वाली शैली में तथा मानक हिन्दी की साहित्यिक शैली दोनों में ही वक्तृकथन में सूक्तिकथन के पुरुष का रूपान्तरण नहीं होता । मानक हिन्दी की इन शैलियों में उपर्युक्त उदाहरण में वक्तृकथन का रूप होता है - उसने कहा कि मैं मूर्ख हूँ । यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में वक्तृकथन की ` अंग्रेज़ी-हिन्दी-रचना पद्धति ` में भी अंग्रेज़ी प्रभाव पुरुष परिवर्तन तक ही सीमित है, सूक्तिकथन का काल निश्चित रूप से वही रहता है जो मूल कथन में होता है, यथा- राम ने कहा- ` मैं जाता हूँ । —→ राम ने कहा कि वह जाता है । यहाँ मुख्यकथन के भूतकाल ने सूक्तिकथन के काल को भूतकाल में परिवर्तित नहीं किया, जबकि अंग्रेज़ी भाषा में वक्तृकथन में सूक्त्यांश का काल भी प्रभावित होता है ।

-0-

1- कालरा, सुधा, हिन्दी-वाक्य-विन्यास ; 1971, पृष्ठ 319

निष्कर्ष

निष्कर्ष

मानक हिन्दी और बांगरू पर व्यतिरेकी विश्लेषण की दृष्टि से किए गए इस प्रथम शोध-कार्य से मुख्य रूप से जो तथ्य सामने आता है वह यह कि मानक हिन्दी और बांगरू की भाषायी व्यवस्थाओं में हर स्तर पर उल्लेखनीय अन्तर उपलब्ध होता है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में दिखाई गई स्वनिम-व्यवस्था सम्बन्धी विभिन्नताओं से यह ज्ञात होता है कि कुछ स्वनिम, यथा / औ ऑ ङ् ञ् ष् फ़् ज़् ड़ ढ़ / मानक हिन्दी स्वनिममाला में तो स्वीकृत किए गए हैं (1.1.1.(क)(1)(2)) परन्तु बांगरू स्वनिममाला में उनका अभाव है (1.1.2(क)(1),(2)) । दूसरी ओर कुछ स्वनिम, यथा / ळ ल्ह ण्ह / ऐसे हैं जो कि बांगरू स्वनिममाला के अंग हैं (1.1.2 (क)(2)) किन्तु मानक हिन्दी स्वनिममाला में उनका कोई स्थान नहीं (1. 1.1(क) (2))। `ऋ` की विद्यमानता मानक हिन्दी में स्वतंत्र स्वनिम के रूप में है तो बांगरू में /र्/ स्वनिम के उपस्वन मात्र के रूप में (1.2.2(6)) । मानक हिन्दी और बांगरू स्वनिममालाओं में समान रूप से उपलब्ध स्वनिमों के स्वनिकीय स्वरूपों में भी भिन्नता पाई जाती है, यथा बांगरू में कुछ विशिष्ट अहीरी गांवों के शब्दों में दीर्घ स्वरों के ह्रस्व उपस्वन भी उपलब्ध होते हैं, जबकि उन्हीं शब्दों में मानक हिन्दी में ऐसा नहीं होता (1.3.1) । इसी प्रकार सरल व्यंजनों के दीर्घ उपस्वनों की परिस्थितियां भी मानक हिन्दी और बांगरू में भिन्न-भिन्न हैं । मानक हिन्दी में ये अन्तस्थ व्यंजनों के पूर्व उपलब्ध होते हैं(1.3.2 , जबकि बांगरू में दीर्घ स्वरों के ह्रस्व उपस्वन वाली स्थिति में ही सरल व्यंजनों के दीर्घ उपस्वन उपलब्ध होते हैं (1.3.1) । मानक हिन्दी और बांगरू दोनों में अनुनासिकता का स्वनिम समान रूप से उपलब्ध तो है परन्तु बांगरू में अनुनासिक स्वर के प्रभाव से पदान्तर्गत स्वरक्रम के अन्य सभी सदस्यों में भी स्वनिकीय अनुनासिकता आ जाती है, जबकि मानक हिन्दी में अनुनासिकता का ऐसा स्वनिकीय विस्तार नहीं होता(1.3.5)। वितरण सम्बन्धी अन्तर के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि बांगरू में / अ इ उ / ह्रस्व स्वरों का प्रयोग शब्दों की आदि तथा मध्य स्थिति तक सीमित है, जबकि मानक हिन्दी

में शब्दों की अन्त्य स्थिति में भी इनका प्रयोग पाया जाता है (1·4·1(1),(2) तथा (3) । मानक हिन्दी में बहु अक्षरी शब्दों के अन्त में / ढ़ / उपलब्ध नहीं होता जबकि बांगरू में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है (1·4·1 (4)) । मानक हिन्दी के समान यद्यपि बांगरू में भी / ड़ ड़ ढ़ / स्वनिम विद्यमान हैं, तो भी अनेक वितरणों में शब्द के मध्य और अन्त में इनके स्थान पर बांगरू में क्रमशः / ड़ ण ढ़ / का प्रयोग उपलब्ध होता है (1.4·2 (3),(4) तथा (5)) । अर्द्ध व्यंजन / य व / बांगरू में शब्द की आदि तथा मध्य स्थिति तक ही सीमित हैं , जबकि मानक हिन्दी में ये शब्द की अन्त्य स्थिति में भी उपलब्ध होते हैं (1. 4·2(7)) । मानक हिन्दी के एकाक्षरी शब्दों में अन्त्य अनुनासिक स्वरों के पूर्व स्पर्श व्यंजन उपलब्ध नहीं होते जबकि बांगरू में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है (1· 4.3 (2) । स्वरक्रम सम्बन्धी विभिन्नता के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में शब्द के मध्य में तीन स्वरों तक का क्रम उपलब्ध होता है, जबकि बांगरू में मध्य स्थिति में दो स्वरों से अधिक के क्रम उपलब्ध नहीं होते (1·5·3) । शब्द की अन्त्य स्थिति में मानक हिन्दी में तीन स्वरों तक के क्रम उपलब्ध होते हैं, जबकि बांगरू में चार स्वरों तक के क्रम भी उपलब्ध होते हैं(1.5. 4) । व्यंजन-गुच्छों के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में शब्द की आदि स्थिति में तीन व्यंजनों तक के गुच्छ (1.7·1(क)) तथा अन्त्य स्थिति में चार व्यंजनों तक के गुच्छ उपलब्ध होते हैं (1·7·2), जबकि बांगरू में शब्दादि और शब्दान्त में दो-दो व्यंजनों के ही गुच्छ प्रयुक्त होते हैं (1·7·1 तथा 1.7·2) । यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि बांगरू में आदि व्यंजन-गुच्छ का प्रयोग केवल दीर्घ स्वरों के पूर्व उपलब्ध होता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है (1·7·1(ख) (5)) । द्वित्व व्यंजनों की दृष्टि से यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में शब्द की अन्त्य स्थिति में द्वित्व व्यंजन उपलब्ध होते हैं, जबकि बांगरू में नहीं (1·6.3(1)) । बांगरू में यदि द्वित्व-व्यंजन के पश्चात् ह्रस्व स्वर है तो वह सदा बन्द अक्षर का शीर्ष होगा, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है (1.6.3(3)) । इसी प्रकार बांगरू में द्वित्व-व्यंजन के पश्चात् पाया जाने वाला दीर्घ स्वर शब्द की अन्त्य स्थिति में होना अनिवार्य है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा होना भी अनिवार्य नहीं है (1.6.3(4))। मानक हिन्दी में बांग

की अपेक्षा अक्षरी ढाँचों की अधिक विविधता उपलब्ध होती है। मानक हिन्दी में छह स्वनिमों तक के अक्षर उपलब्ध होते हैं, जबकि बांगरू में चार स्वनिमों तक के ही अक्षर उपलब्ध होते हैं (1.8.2)। मानक हिन्दी का बलाघातित मुक्त अक्षर बांगरू में स्वनिमीय रूप से बन्द अक्षर हो जाता है (1.9.3 (1))। बांगरू में बलाघातित अक्षर के शीर्ष के दीर्घीकरण की भी प्रवृत्ति उपलब्ध होती है (1.9.3(2))। बांगरू में बलाघात रहित अक्षर के शीर्ष का ह्रस्वीकरण अथवा लोप भी हो जाता है (1.9.3(4),(5),(6))। मानक हिन्दी में नासिक्य व्यंजन के पश्चात अन्त्य स्थिति में आने वाले स्वर में केवल स्वनिमीय अनुनासिकता उपलब्ध होती है, जबकि बांगरू में स्वनिमीय अनुनासिकता भी उपलब्ध हो सकती है (1.10.1)।

दूसरे अध्याय में दिखाई गई विभिन्नताओं से यह ज्ञात होता है कि मानक हिन्दी और बांगरू में रूपस्वनप्रक्रिया स्तर पर स्वनिम-लोप, स्वनिम-आगम तथा स्वनिम-प्रतिस्थापन सभी दृष्टियों से विभिन्नता उपलब्ध होती है। स्वनिम-लोप के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि बांगरू में पूर्वप्रत्यय के योग के प्रभाव से प्रातिपदिक के आदि अक्षर के शीर्ष /a/ के लोप का उदाहरण उपलब्ध है, जबकि मानक हिन्दी में नहीं (2.1.1 (1))। विशिष्ट अक्षरी ढाँचे के प्रातिपदिकों के साथ परप्रत्यय के रूप में स्वर जोड़ा जाने पर बांगरू में द्वित्व व्यंजन का सरलीकरण हो जाता है और साथ ही द्वित्व व्यंजन के परवर्ती स्वर /a/ का लोप भी हो जाता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा नहीं होता (2.1.[illegible])। दूसरी ओर मानक हिन्दी में ईकारान्त धातुओं के साथ भूतकालिक कृदन्त का स्त्रीलिंग परप्रत्यय /-ईं/ लगाया जाने पर एक /ई/ का लोप हो जाता है, जबकि बांगरू में ऐसा नहीं होता (2.1.3)। स्वनिम-आगम सम्बन्धी विभिन्नताओं के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि स्वरान्त धातुओं के साथ प्रेरणार्थक क्रिया का परप्रत्यय लगाने पर मानक हिन्दी में तो /ल्/ का आगम होता है जबकि बांगरू में नहीं (2.2.2.(5)), तथा दूसरी ओर व्यंजनान्त धातुओं की स्थिति में भूतकालिक कृदन्त का परप्रत्यय लगने पर बांगरू में तो /[illegible]/ का आगम उपलब्ध है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा आगम नहीं होता (2.2.2.(1))। स्वनिम प्रतिस्थापन की दृष्टि से पाई जाने वाली विभिन्नता के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है

कि मानक हिन्दी में कुछ व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिकों तथा व्युत्पन्न विशेषण प्रातिपदिकों में मूल प्रातिपदिक के आदि अक्षर का स्वर तदनुसार वृद्धि स्वर में परिवर्तित हो जाता है, जबकि बांगरू में ऐसी प्रवृत्ति का अभाव है (2.3.1(6)) ।

तीसरे अध्याय में उल्लिखित रूपप्रक्रिया स्तर की विभिन्नताओं से यह ज्ञात होता है कि मानक हिन्दी में संस्कृत तथा अरबी-फारसी से आगत कुछ पुल्लिंग संज्ञाओं के स्त्रीलिंग रूप बनाने के लिए ` -आ ` परप्रत्यय का योग होता है, जबकि बांगरू में ऐसा नहीं होता (3.1.2.11 (i),(ii), (iii)), दूसरी ओर बांगरू में अन्त्य /-उ/ को /-ओ/ में परिवर्तित कर के स्त्रीलिंग रूप बनाने की प्रवृत्ति है, जिसका मानक हिन्दी में अभाव है (3.1.2.12)। मानक हिन्दी में अरबी-फारसी से प्रभावित कानूनी भाषा में कर्तृ बहुवचन रूप बनाने के लिए ` -आन ` तथा ` -आत ` परप्रत्ययों का प्रयोग उपलब्ध होता है, जबकि बांगरू में नहीं (3.1.4.2 (क) (4)) । मानक हिन्दी में अधिकांश स्त्रीलिंग संज्ञाएं कर्तृ बहुवचन के लिए रूपान्तरित होती हैं, जबकि बांगरू की आम प्रवृत्ति के अनुसार ऐसा रूपान्तरण नहीं होता (3.1.4.2(ख) (1)) । तिर्यक एकवचन में आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाएं मानक हिन्दी में एकारान्त रूप धारण कर लेती हैं, जबकि बांगरू में ऐकारान्त (3.1.4.3 (2)) । इसी प्रकार तिर्यक बहुवचन का परप्रत्यय मानक हिन्दी में ` -ओं ` है, जबकि बांगरू में ` -आं ` (3.1.4.4 (1))। सर्वनामों के स्वरूप में तो मानक हिन्दी और बांगरू में अन्तर उपलब्ध होता ही है (3.2.1), साथ ही इस सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में लिंग के कारण सर्वनामों का रूपान्तरण नहीं होता है, जबकि बांगरू में ऐसा रूपान्तरण उपलब्ध होता है (3.2.2) । आदर सूचक सर्वनाम ` आप ` का प्रयोग मानक हिन्दी में अन्य पुरुष के रूप में होता है, जबकि बांगरू में मध्यम पुरुष के रूप में (3.2.4.3) । सर्वनामों के परसर्गयुक्त संश्लिष्ट रूपों की दृष्टि से भी मानक हिन्दी और बांगरू में अन्तर उपलब्ध होता है (3.2.6) । मानक हिन्दी में निजवाचक सर्वनाम ` आप ` के साथ कर्ता कारक में परसर्ग का प्रयोग नहीं होता, जबकि बांगरू में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है

(3.2.5.8)। मानक हिन्दी में क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त का प्रयोग विशेषण के रूप में उपलब्ध नहीं होता, जबकि बांगरू में ऐसा प्रयोग उपलब्ध होता है (3.3.5.3) । मानक हिन्दी में ` सही ` तथा ` बटा ` शब्दों की सहायता से किसी भी अपूर्ण संख्या को अभिव्यक्त किया जा सकता है, जबकि बांगरू में इस प्रवृत्ति का पूर्णतया अभाव है (3.3.6.1(ख) (4))। मानक हिन्दी में क्रमसूचक विशेषणों का परप्रत्यय `-वां ` है, जबकि बांगरू में `-मा ` (3.3.6.2 (1))। इसी प्रकार समुदाय सूचक विशेषणों का परप्रत्यय मानक हिन्दी में ` -ओं ` है, जबकि बांगरू में ` -ऊं ` (3.3.6.3(1)) । मानक हिन्दी में विशेषणों की उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था में क्रमश: ` - तर ` तथा ` -तम ` (अथवा ` - तरीन ` परप्रत्ययों का प्रयोग उपलब्ध होता है, जबकि बांगरू में ऐसे प्रयोगों का पूर्णतया अभाव है (3.3.7) । बांगरू में ऐकारान्त धातु उपलब्ध है, जबकि मानक हिन्दी में इनका पूर्णतया अभाव है (3.4.1) । क्रिया का सामान्य रूप मानक हिन्दी में धातु के साथ /-ना / पर प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है, जबकि बांगरू में /-णा / परप्रत्यय के योग से (3.4.2) । स्वरान्त अकर्मक धातुएं सकर्मक में रूपान्तरित होने पर मानक हिन्दी में व्यंजनान्त हो जाती है, जबकि बांगरू में उनका व्यंजनान्त होना अनिवार्य नहीं है (3.4.3.1) । बांगरू में स्वरान्त तथा अकारान्त धातुओं से प्रेरणार्थक का केवल एक-एक रूप निष्पन्न होता है, जबकि मानक हिन्दी में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं है (3.4.4.7) ।क्रियार्थक संज्ञा कृदन्त का विकारी रूप मानक हिन्दी में एकारान्त होता है, जबकि बांगरू में व्यंजनान्त (3.4.6.1 (2)) । मानक हिन्दी में वर्तमानकालिक कृदन्त का परप्रत्यय ` -ता ` है, जबकि बांगरू में ` -दा ` (3.4.6.2.(1))। कर्तृवाचक कृदन्त के लिए मानक हिन्दी में क्रियार्थक संज्ञा के विकारी रूप के साथ ` - वाला ` परप्रत्यय लगाया जाता है, जबकि बांगरू में ` -आला ` (3.4.6.4) । पूर्वकालिक कृदन्त के लिए मानक हिन्दी में धातु के साथ `-कर ` प्रयुक्त होता है, जबकि बांगरू में `-कै ` (3.4.6.6.(1)) । बांगरू में ` कै ` के पश्चात् ` नै ` का वैकल्पिक प्रयोग भी उपलब्ध होता है जबकि मानक हिन्दी में ऐसा प्रयोग उपलब्ध नहीं होता । क्रिया रूपों में मानक हिन्दी के कृदन्तीय प्रयोग के स्थान पर बांगरू में तिङन्तीय प्रयोग हो सकता है और इस कारण मानक हिन्दी की क्रिया में उपलब्ध लिं-

भेद बांगरू क्रिया में लुप्त हो सकता है (3.4.7.1) । मानक हिन्दी में क्रियाओं के स्त्रीलिंग कृदन्तीय रूपों में भी वचन-भेद उपलब्ध होता है, जबकि बांगरू में नहीं (3.4.7.2) । मानक हिन्दी में व्यापक पक्ष तथा अपूर्ण पक्ष में पार्थक्य बना रहता है, जबकि बांगरू में यह लुप्त भी हो सकता है (3.4.9.1) । मानक हिन्दी में संकेतार्थस्मृति के रूप वर्तमानकालिक कृदन्त की सहायता से ही बनते हैं, जबकि बांगरू में सम्भाव्य भविष्यत के रूपों के साथ `हो` सहायकक्रिया के योग से निष्पन्न वैकल्पिक रूप भी उपलब्ध होते हैं (3.4.10) । सहायक क्रियाओं के रूपों में भी विभिन्नता उपलब्ध होतीहै, यथा वर्तमानकाल उत्तम पुरुष एक वचन की सहायकक्रिया मानक हिन्दी में `हूँ` है तो बांगरू में `हूं` (3.4.11.1) । मानक हिन्दी में वर्तमानकालिक कृदन्त रूप वाली क्रिया के साथ सहायकक्रिया का प्रयोग हो सकता है, जबकि बांगरू में नहीं (3.4.11.5) । मानक हिन्दी में कर्मवाच्य के रूप `जा` धातु के रूपों के योग से ही निष्पन्न होते हैं, जबकि बांगरू में `जा` धातु के रूपों की सहायता के बिना कर्मवाच्य के वैकल्पिक रूप भी निष्पन्न होते हैं (3.4.12) । कालरचना की दृष्टि से भी मानक हिन्दी और बांगरू में भिन्नता उपलब्ध होतीहै, यथा परोक्षविधि काल में मानक हिन्दी `जाना` के स्थान पर बांगरू में `जाइए` प्रयोग में लाया जाता है (3.4.13) । मानक हिन्दी में कोई क्रिया चाहे मुख्यक्रिया के रूप में प्रयुक्त हो, चाहे गौणक्रिया के रूप में, इस आधार पर उसके स्वरूप में अन्तर नहीं पड़ता, जबकि बांगरू में गौणक्रिया के रूप में प्रयुक्त होने पर क्रिया का रूप संकुचित हो जाता है (3.4.14.), साथ ही यह भी आवश्यक नहीं है कि संयुक्तक्रिया की रचना में मुख्यक्रिया तथा गौण-क्रिया का जो स्वरूप मानक हिन्दी में प्रयुक्त हुआ है, वही स्वरूप बांगरू में भी उपलब्ध हो (3.4.14.2) । मानक हिन्दी और बांगरू में सार्वनामिक क्रियाविशेषणों के रूपों में भिन्नता पाई जाती है, यथा मानक हिन्दी में कालबोधक सार्वनामिक क्रियाविशेषण `कब`, `जब` के स्थान पर बांगरू में क्रमशः `कद`, `जद` प्रयुक्त होते हैं । बांगरू में `-एं` परप्रत्यय के संयोग से बने क्रियाविशेषण पदों, यथा `करें` के स्थान पर मानक हिन्दी में क्रियाविशेषण पदबन्ध, यथा `करने से` प्रयोग में लाए जाते हैं, (3.5.4) । मानक हिन्दी में निषेधात्मक क्रियाविशेषण के रूप में `मत`

तथा ` न ` का प्रयोग एक साथ नहीं होता है, जबकि बांगरू में ` मत ` तथा ` ना ` दोनों का एक साथ ` मतना ` के रूप में भी प्रयोग उपलब्ध होता है (3.5.5) । परसर्गों के प्रयोग में भी मानक हिन्दी और बांगरू में भिन्नता उपलब्ध होती है, यथा मानक हिन्दी में ` ने ` परसर्ग का प्रयोग कर्ता कारक तक सीमित है, जबकि बांगरू में उस के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले ` नै ` परसर्ग का क्षेत्र कर्ता कारक के अतिरिक्त कर्म तथा सम्प्रदान कारकों तक भी व्याप्त है (3.6.1.5) । मानक हिन्दी में बहुत से परसर्गात्मक शब्द ऐसे हैं जिन से पूर्व कारक प्रत्यय का प्रयोग होता है, जबकि अनुरूपी बांगरू परसर्गात्मक शब्दों का प्रयोग कारक प्रत्ययों के बिना ही पाया जाता है (3.6.2.1) । मानक हिन्दी और बांगरू में समुच्चय-बोधकों के स्वरूप में भी अन्तर उपलब्ध होता है, यथा मानक हिन्दी ` और ` के लिए बांगरू में ` अर ` (3.7.1), मानक हिन्दी ` या ` के स्थान पर बांगरू में ` के ` (3.7.2), मानक हिन्दी ` कि ` के स्थान पर बांगरू में ` अक ` (3.7.3) । व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी में निषेध के अर्थ में प्रयुक्त ` ना- ` तथा `बे-` पूर्वप्रत्यय बांगरू में निषेध का अर्थ त्याग कर ` बिल्कुल ` अर्थ में भी प्रयुक्त हो सकते हैं, यथा ` नखालस ` अर्थात् बिल्कुल खालिस और ` बेफजूल ` अर्थात् बिल्कुल फ़िजूल (3.9.1(i) (ii)) । बांगरू की अपेक्षा मानक हिन्दी में व्युत्पादक पूर्वप्रत्ययों के प्रयोग में बाहुल्य तथा विविधता उपलब्ध होती है (3.9.1(i) (iv))। व्युत्पादक परप्रत्ययों की दृष्टि से यह उल्लेखनीय है कि कुछ परप्रत्यय यथा ` - त्व ` मानक हिन्दी में उपलब्ध हैं तो बांगरू में नहीं और अन्य कुछ, यथा ` - एड़ी ` बांगरू में उपलब्ध हैं तो मानक हिन्दी में नहीं (3.9.1(2) (vi) तथा (ix)) । मानक हिन्दी में ` मंत्री `, ` प्राणी ` आदि शब्द व्युत्पन्न सामासिक प्रातिपदिकों में ` मंत्रि- `, ` प्राणि- ` आदि रूप धारण कर लेते हैं, जबकि बांगरू में ऐसा नहीं होता (3.9.2(i)) ।

चौथे अध्याय में दिखाई गई विभिन्नताओं से यह सिद्ध होता है कि मानक हिन्दी और बांगरू की भाषायी-व्यवस्था में वाक्य-विन्यास के स्तर पर भी भिन्नता उपलब्ध है । पदक्रम के सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है मानक हिन्दी में भविष्य काल में क्रिया तथा

कालसूचक ` गा ` के मध्य निषेधात्मक क्रियाविशेषण का प्रयोग नहीं हो सकता, जबकि बांगरू में ऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं है (4.2(2)) । मानक हिन्दी में स्त्रीलिंग उद्देश्य के एकवचन वाले रूप के साथ सम्मान प्रदर्शनार्थ बहुवचन विधेय का प्रयोग होने पर उद्देश्य तथा विधेय की वचनपरक मैत्री भंग हो जाती है, जबकि बांगरू में विधेय एकवचन में प्रयुक्त होता है (4.3.1 (3)) । इसी प्रकार मानक हिन्दी में स्त्रीलिंग उद्देश्य के साथ पुल्लिंग विधेय प्रयुक्त होने पर उद्देश्य तथा विधेय की लिंगपरक मैत्री भी भंग हो जाती है, जबकि बांगरू में स्त्रीलिंग उद्देश्य के साथ पुल्लिंग विधेय का प्रयोग उपलब्ध न होने के कारण उद्देश्य तथा विधेय की लिंगपरक मैत्री बनी रहती है (4.3.2(2)) । मानक हिन्दी के भावे प्रयोग के स्थान पर बांगरू में कर्मणि प्रयोग उपलब्ध हो सकता है (3.4.4) । पदबन्ध की दृष्टि से यह उल्लेखनीय है कि मानक हिन्दी के संज्ञापदबन्ध में सार्वनामिक विशेषण सदा परसर्ग रहित रहता है, जबकि बांगरू में ऐसा प्रतिबन्ध नहीं है (4.5.1)। मानक हिन्दी में प्रयुक्त पद के स्थान पर बांगरू में पदबन्ध का (4.5.2(i)) तथा मानक हिन्दी पदबन्ध के स्थान पर बांगरू में पद का प्रयोग हो सकता है (4.5.2 (ii)) तथा 4.5.3) । क्रियापदबन्ध के सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि यह आवश्यक नहीं कि मानक हिन्दी में मुख्यक्रिया का कृदन्तीय अथवा तिङन्तीय जो स्वरूप हो वही स्वरूप तदनुरूपी बांगरू मुख्य क्रिया का भी हो (3.5.2 (3)) । मानक हिन्दी की साहित्यिक शैली में लम्बे लम्बे गुम्फित वाक्यों की प्रवृत्ति भी उपलब्ध होती है, जबकि बांगरू में छोटे छोटे वाक्यों की प्रवृत्ति है (4.6) । वाक्य रूपान्तरण की दृष्टि से भी मानक हिन्दी और बांगरू में भिन्नता पाई जाती है, यथा निश्चयात्मक वर्तमान काल के तथ्यात्मक वाक्य का निषेधात्मक वाक्य में रूपान्तरण के समय मानक हिन्दी में सहायक क्रिया का वैकल्पिक रूप में लोप होता है, मुख्यक्रिया के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता, जबकि बांगरू में सहायक-क्रिया का अनिवार्य रूप से लोप हो जाता है और मुख्यक्रिया तिङन्त के स्थान पर कृदन्त रूप धारण कर लेती है (4.7.1(2))। मानक हिन्दी की अंग्रेज़ी से प्रभावित शैली में अनुकथन को वक्तृकथन में रूपान्तरित करते समय सूचितकथन का पुरुष मूलकथन के पुरुष से प्रभावित हो जाता है, जबकि बांगरू में ऐसा नहीं होता (4.7.2) ।

मानक हिन्दी और बांग्ला की भाषायी व्यवस्थाओं की विभिन्नता के कारण बांग्ला भाषी विद्यार्थियों को मानक हिन्दी सीखते समय विविध प्रकार की अनेक भाषायी बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

कुछ भाषायी बाधाएं ऐसी हैं जिन के फलस्वरूप मानक हिन्दी और बांग्ला के उच्चारण में ही अन्तर आता है, अर्थ में कोई अन्तर नहीं पड़ता। स्वनिकीय व्यतिरेक(1.3) के अन्तर्गत दिखाई गई सभी भाषायी बाधाएं इसी वर्ग की हैं।

अन्य कुछ भाषायी बाधाओं के फलस्वरूप मानक हिन्दी में उपलब्ध सार्थक भेदकता बांग्ला में लुप्त हो जाती है, यथा मानक हिन्दी में उपलब्ध / श / : / ष / का सार्थक विरोध बांग्ला में लुप्त हो जाता है (1.4.2 (4)) ।

भाषायी बाधाओं का एक वर्ग ऐसा है जिसके फलस्वरूप मानक हिन्दी में भेदकता न होते हुए भी बांग्ला में भेदकता आ जाती है, यथा मानक हिन्दी में पार्श्विक व्यंजनों में उच्चारणस्थान के भेद के आधार पर भेदकता नहीं होती जबकि बांग्ला में ऐसे भेदकता उपलब्ध होती है (1.2 .2.(8)) ।

भाषायी बाधाओं के एक अन्य वर्ग के फलस्वरूप बांग्ला भाषी विद्यार्थियों द्वारा मानक हिन्दी रूपरचना पर बांग्ला रूपरचना लाद दी जाती है, यथा मानक हिन्दी तिर्यक बहुवचन के परप्रत्यय `-ओं` के स्थान पर अनुरूपी बांग्ला परप्रत्यय `-आं` का प्रयोग [3.1.4.4 (1)]।

कुछ भाषायी बाधाएं ऐसी हैं जिनके फलस्वरूप बांग्ला भाषी विद्यार्थियों द्वारा मानक हिन्दी वाक्य-रचना पर बांग्ला वाक्य-रचना थोप दी जाती है, यथा मानक हिन्दी में सार्वनामिक विशेषणों के परसर्ग रहित प्रयोग के स्थान पर बांग्ला के अनुसार सार्वनामिक विशेषण का परसर्ग युक्त प्रयोग किया जाना(4.5.1 (1) तथा (3)) ।

यहां यह उल्लेखनीय है कि बांग्ला भाषी विद्यार्थियों द्वारा मानक हिन्दी सीखते समय की जाने वाली सारी त्रुटियां तो नहीं परन्तु अधिकांश त्रुटियां बांग्ला के प्रभाव

से उत्पन्न भाषायी बाधाओं के भी कारण होती है । अतः यह आवश्यक है कि इस सम्बन्ध में आगे शोध-कार्य करके ऐसी सभी भाषायी बाधाओं का स्तरीकरण बांगरू भाषी विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुसार किया जाए ताकि व्यतिरेकी विश्लेषण की तकनीक की सहायता से प्रकाश में लाई गई विभिन्न भाषायी बाधाओं को सुविधा-पूर्वक दूर किया जा सके । यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि उच्चारण-सम्बन्धी भाषायी बाधाओं को दूर करने का प्रयत्न प्रारम्भिक कक्षाओं में ही किया जाना चाहिए क्योंकि बाद की अवस्था में उच्चारण सम्बन्धी भाषायी व्यवस्थाओं के परिपक्व हो जाने के कारण उनमें आने वाली बाधाओं को दूर करना बहुत कठिन हो जाता है ।

प्रस्तुत शोध-कार्य के समापन से पूर्व अनुसन्धित्सु का यह भी विनम्र निवेदन है कि प्रस्तुत शोध-कार्य से मानक हिन्दी और बांगरू की भाषायी विभिन्नताएं तो प्रकाश में आई ही हैं, साथ ही बांगरू के विषय में भी अनेक ऐसे तथ्यों का उद्घाटन हुआ है, जिन का उल्लेख बांगरू पर कार्य करने वाले विद्वानों द्वारा अब तक नहीं किया गया । ऐसे कुछ तथ्य हैं -

(1) बांगरू में द्वित्व व्यंजन का परवर्ती दीर्घ स्वर सदा अन्त्य मुक्त अक्षर का शीर्ष होता है (1.6.3.(4))।

(2) बांगरू में द्वित्व व्यंजन का परवर्ती ह्रस्व स्वर सदा बन्द अक्षर का शीर्ष होता है (1.6.3 (3)) ।

(3) बांगरू में आदि व्यंजन-गुच्छ के पश्चात् दीर्घ स्वर का ही प्रयोग होता है (1.7.1 (ख) (5)) ।

(4) बांगरू में बलाघातित अक्षर के शीर्ष के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति उपलब्ध होती है (1.9.2(2)) ।

(5) बांगरू में बलाघात रहित अक्षर के शीर्ष के दीर्घ स्वर के ह्रस्वीकरण की तथा ह्रस्व स्वर के लोप की प्रवृत्ति उपलब्ध होती है (1.9.2 (4), (5), (6)) ।

बांगरू में अनुकथन को वक्रकथन में रूपान्तरित किए जाने की चर्चा भी प्रस्तुत शोध में पहली बार की गई है ।

— o-o —

सहायक ग्रन्थ सूची (हिन्दी)

सहायक ग्रन्थ सूची (हिन्दी)

अग्रवाल, कैलाशचन्द्र	(1964)	शेखावटी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन, लखनऊ
,, ,,	(1973)	' हिन्दी परसर्ग और पदबन्ध संरचना ' — भाषा (हिन्दी भाषाविज्ञान अंक), नई दिल्ली
अग्रवाल, रामेश्वरप्रसाद	(1963)	बुन्देली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, लखनऊ
अग्रवाल, सरयूप्रसाद	(1970)	भाषा-विज्ञान और हिन्दी, इलाहाबाद
अमरबहादुर सिंह	(1973)	' विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी : शिक्षण के सन्दर्भ में ' — भाषा (हिन्दी भाषाविज्ञान अंक), नई दिल्ली
अरुण, अवधेश्वर	(1973)	हिन्दी भाषा का स्वरूप विकास, पटना
उप्रेति, मुरारीलाल	(1964)	हिन्दी में प्रत्यय विचार, आगरा
,, ,,	(1969)	' हिन्दी अनुतान '— भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा
कपिलदेव सिंह	(1956)	ब्रजभाषा बनाम खड़ी बोली, आगरा
कपूर, बदरीनाथ	(1978)	परिष्कृत हिन्दी व्याकरण, नई दिल्ली
काचरू, यमुना	(1969)	' Nominal Complement Constructions in Hindi ' — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा
,, ,,	(1973)	' हिन्दी के कृदन्त विशेषण पद '— भाषा (हिन्दी भाषाविज्ञान अंक), नई दिल्ली
कालरा, सुधा	(1971)	हिन्दी-वाक्य-विन्यास, इलाहाबाद
,, ,,	(1973)	' हिन्दी की प्रेरणार्थक क्रियाएं ' — भाषा (हिन्दी भाषाविज्ञान अंक), नई दिल्ली

कालिका प्रसाद (2030 वि0) बृहत् हिन्दी कोश, वाराणसी

काशीनाथ सिंह (1976) हिन्दी में संयुक्त क्रियाएं, इलाहाबाद

कुलश्रेष्ठ, रामप्रकाश (1969) ` हिन्दी उच्चारण शिक्षण का महत्व ` — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

कृष्णास्वामी, एन0 (1969) ' Transformational Grammar and Contrastive Analysis' — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

केलकर, अशोक रामचन्द्र (1973) ` अहिन्दी भारतीयों के लिए हिन्दी उच्चारण शिक्षण ` — भाषा (हिन्दी-भाषाविज्ञान अंक), नई दिल्ली

कौड़ा, रामगोपाल (1965-66) ` हरियाणवी और पंजाबी का तुलनात्मक अध्ययन ` — सप्तसिन्धु (उपभाषा विशेषांक), पटियाला

कौशिक, जयनारायण (1980) हिन्दी-हरियाणवी उच्चारण भेद, दिल्ली

,, ,, (1980) हरियाणवी प्रत्यय कोश, दिल्ली

खंडेलवाल, शिवकुमार (1980) बांगरू बोली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, दिल्ली

गर्ग, महेशचन्द्र (1978) परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन, मेरठ[illegible]

गुरु, कामताप्रसाद (2017 वि0) हिन्दी व्याकरण, काशी

ग्रियर्सन, जार्ज अब्राहम (1959) भारत का भाषा सर्वेक्षण (खंड 1, भाग 1), लखनऊ

,, ,, (1967) भारत का भाषा सर्वेक्षण (भाग 9), लखनऊ

चतुर्वेदी, एम0बी0 (1969) ' A Constrastive Study of Hindi-English Stress Accent'— भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा ।

चतुर्वेदी, रामस्वरूप (1961) आगरा ज़िले की बोली, इलाहाबाद

चाटुर्ज्या, सुनीतिकुमार (1954) भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, दिल्ली

चाम्स्की, नोअम (1975) वाक्यविन्यास का सैद्धान्तिक पक्ष, जयपुर

चौधरी, अनन्त (1973) नागरी लिपि और हिन्दी वर्तनी, पटना

जगदेव सिंह (1962-63) भाषा और उसका अध्ययन तथा बाँगरू की ध्वन्यात्मक संरचना (हिन्दी विभाग, पंजाब की वार्षिक लेखक गोष्ठी में पढ़ा गया मुद्रित निबन्ध), पटियाला

.. (1965-66) 'हरियाणवी क्रियापद' — सप्तसिन्धु (उपभाषा विशेषांक), पटियाला

.. (1967-68) हिन्दी में निषेधात्मक रचना (हिन्दी विभाग पंजाब की वार्षिक लेखक गोष्ठी में पढ़ा गया मुद्रित निबन्ध), पटियाला।

.. (1969) 'हिन्दी सीखने में बोली भाषियों की कठिनाइयाँ' — भाषा-शिक्षण तथा भाषा-विज्ञान, आगरा

.. (1973) 'हिन्दी में रूपिम निर्धारण की समस्या' — भाषा (हिन्दी भाषाविज्ञान विशेषांक), नई दिल्ली

जुयाल, गुणानन्द (1967) मध्य पहाड़ी भाषा (गढ़वाली कुमाऊँनी) का अनुशीलन और उसका हिन्दी से सम्बन्ध, लखनऊ

जैन, दीपचन्द्र एवं तिवारी, कैलाश (1972) हिन्दी और उसकी विविध बोलियाँ, पटना

जैन, महावीर शरन	(1969)	'अन्य भाषा-शिक्षण तथा ध्वनिविज्ञान' — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा
,, ,,	(1974)	परिनिष्ठित हिन्दी का ध्वनिग्रामिक अध्ययन, इलाहाबाद
,, ,,	(1978)	परिनिष्ठित हिन्दी का रूपग्रामिक अध्ययन, इलाहाबाद
जैन, रमेशचन्द्र	(1964)	हिन्दी समास रचना का अध्ययन, आगरा
जैन, सन्तोष	(1974)	हिन्दी और बंगला भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन, दिल्ली
झा, वेणीशंकर	(2034 वि0)	कामताप्रसाद गुरु स्मृति-ग्रंथ, वाराणसी
ठाकुर, एम0 आर0	(1975)	पहाड़ी भाषा-कुलुई के विशेष सन्दर्भ में, दिल्ली
तिवारी, उदयनारायण	(2018वि0)	हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, इलाहाबाद
,, ,,	(2020 वि0)	भाषाशास्त्र की रूपरेखा, इलाहाबाद
तिवारी, भोलानाथ	(1966)	हिन्दी भाषा, इलाहाबाद
,, ,,	(1973)	हिन्दी ध्वनियाँ और उनका उच्चारण, दिल्ली
तिवारी, भोषलाल	(2023 वि0)	हिन्दी भाषा पर फारसी तथा अंग्रेजी का प्रभाव, वाराणसी
दीमशित्स, ज0म0	(1966)	हिन्दी व्याकरण की रूपरेखा, दिल्ली
दुनी चन्द	(2007 वि0)	हिन्दी व्याकरण, होशियारपुर
द्विवेदी, देवीशंकर	(1964)	भाषा और भाषिकी, आगरा
,, ,,	(1973)	'आप और अपना' — भाषा (हिन्दी भाषाविज्ञान अंक), नई दिल्ली

द्विवेदी, देवीशंकर	(1976-77)	'देवनागरी और हिन्दी' — वार्षिक-लेखक गोष्ठी 1976-77 के शोध-पत्र, चण्डीगढ़
पन्त, गोलोक विहारी	(1958)	ध्वनिविज्ञान, आगरा
धौम्य, कौशल कुमार	(1976)	हरियाणवी शब्दावली, चंडीगढ़
पार्थसारथि, के०	(1967)	'Contrastive Linguistics and Language Teaching' - भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा।
बाहरी, हरदेव	(नवम्बर, 1961)	'हिन्दी कोशों में उच्चारण संकेतों की आवश्यकता' — भाषा, दिल्ली
,, ,,	(1966)	ग्रामीण हिन्दी बोलियाँ, इलाहाबाद
,, ,,	(1975)	व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण, इलाहाबाद
,, ,,	(1975)	हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप, इलाहाबाद
बंसल, ओमदत्त	(1965-66)	'हरियाणवी और बांगडू' — सप्तसिन्धु (उपभाषा विशेषांक), पटियाला
,, ,,	(1966)	'हरियाणवी- क्रिया' — सप्तसिन्धु (वर्ष 13, अंक 6), पटियाला
,, ,,	(1966)	'हरियाणा नामकरण' — सप्तसिन्धु (वर्ष 13, अंक 10), पटियाला
बलदेव सिंह	(1965-66)	'बांगरू का संस्कृत से सान्निध्य' — सप्तसिन्धु (उपभाषा-विशेषांक), पटियाला
भाटिया, कैलाशचन्द्र	(1967)	हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्दों का भाषा-तात्विक अध्ययन, इलाहाबाद
,, ,,	(1969)	'शब्द : शब्द का अध्ययन तथा भाषा शिक्षण' — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

भाटिया, कैलाशचन्द्र (2027 वि०) हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा, वाराणसी

भारद्वाज, विष्णुदत्त (1977-78) ` हरियाणवी पर अरबी फारसी का प्रभाव ` — वार्षिक लेखक गोष्ठी 1977-78 के शोधपत्र, चंडीगढ़

मल्होत्रा, रमेशचन्द्र (1970) हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी, नई दिल्ली

मिश्र, लक्ष्मीनारायण (1973) ` हिन्दी में संज्ञा प्रातिपदिकों का रूपप्रक्रियात्मक वर्गीकरण ` — भाषा (हिन्दी भाषाविज्ञान अंक) नई दिल्ली

मिश्र, भगवत्स्वरूप (1969) ` भाषा-शिक्षण में भाषाविज्ञान का योगदान ` — भाषाशिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

मिश्र, राम नरेश (1978-79) ` हरियाणा में प्रचलित संकर शब्दों का भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन ` — वार्षिक लेखक गोष्ठी 1978-79 के शोधपत्र, चंडीगढ़

यादव, शंकर लाल (1960) हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, इलाहाबाद

रणजीत सिंह (1970-71) हरियाणवी का साहित्य में प्रयोग (भाषा विभाग हरियाणा की वार्षिक लेखक-गोष्ठी 1970-71 में पढ़ा गया मुद्रित निबन्ध), चंडीगढ़

,, (1977-78) ` बांगरू बोली के सम्बोधन निर्देश ` — वार्षिक गोष्ठी 1977-78 के शोधपत्र, चंडीगढ़

,, (प्रथम संस्करण) ` बांगरू ' — हरियाणा की उपभाषाएं, चंडीगढ़

राजगोपालन, एल० वी० (1969) ` भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान ` — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

" " (1973) हिन्दी का भाषावैज्ञानिक व्याकरण, आगरा

रावत, चन्द्रभान (1967) मथुरा जिले की बोली, इलाहाबाद

लाल, देवनारायण (1969) `हिन्दी-शिक्षण में प्रायोगिक भाषाविज्ञान की उपादेयता` — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

वर्मा, एस० के० (1969) ' Implication of Transformational Grammar for Language Teaching' भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

वर्मा, जयनारायण (1972) हरियाणवी लोकोक्तियाँ : शास्त्रीय - विश्लेषण , दिल्ली

वर्मा, धीरेन्द्र (1949) हिन्दी भाषा का इतिहास, प्रयाग

,, ,, (1954) ब्रजभाषा, प्रयाग

,, ,, (1956) ग्रामीण हिन्दी, इलाहाबाद

वर्मा, ब्रजेश्वर (1969) `भाषा-शिक्षण में भाषाविज्ञान का योग` — भाषा शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

वर्मा, रामचन्द्र (2018 वि०) अच्छी हिन्दी, वाराणसी

,, ,, (1964) मानक हिन्दी कोश, प्रयाग

वर्मा, शिवेन्द्रकिशोर (1973) `व्यतिरेकी विश्लेषण` — भाषा (हिन्दी भाषाविज्ञान अंक), नई दिल्ली

वाजपेयी, किशोरीदास (2014 वि०) हिन्दी शब्दानुशासन, काशी

वशिष्ठ, रवि दत्त (1965-66) `हरियाणवी क्रियाविशेषण तथा अव्यय` -- सप्तसिन्धु (उपभाषा विशेषांक), पटियाला

विमल, रामप्रकाश (1965-66) `मेवाती- एक परिचय` — सप्तसिन्धु (उपभाषा विशेषांक), पटियाला

व्यास, नटवरलाल अम्बालाल (1969) `अन्य भाषा-शिक्षण में भाषाविज्ञान का योग` — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

शर्मा, गेन्दालाल (1965) ब्रजभाषा और खड़ी बोली के व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन, मेरठ

शर्मा, देवेन्द्र (1978) भाषाविज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली

शर्मा, नानकचन्द (1965-66) 'हरियाणवी : हिन्दी तथा पंजाबी' – सप्तसिन्धु (उपभाषा विशेषांक), पटियाला

,, ,, (1968) हरियाणवी भाषा का उद्भव तथा विकास, होशियारपुर

,, ,, (1974) भिवानी की भाषा और खड़ी बोली के क्रियापदों का तुलनात्मक अध्ययन(भाषा विभाग, हरियाणा की वार्षिक लेखक-गोष्ठी-वर्ष 1974 में पढ़ा गया मुद्रित निबन्ध), चंडीगढ़

शर्मा, पूर्णचन्द (1977-78) 'हरियाणा के लोकनाट्यों की भाषा' – वार्षिक लेखक गोष्ठी 1977-78 के शोधपत्र, चंडीगढ़

शर्मा, महावीर प्रसाद (1977) मेवाती का उद्भव और विकास, कोटपुतली

शर्मा, विनयमोहन (1965-66) 'खड़ी बोली हिन्दी और पंजाब में उसका व्यवहृत रूप' – सप्तसिन्धु, (उपभाषा-विशेषांक), पटियाला

शर्मा, शशिकुमार (1973) 'हिन्दी वाक्यों में अन्विति व्यवस्था' – भाषा (हिन्दी भाषाविज्ञान अंक), नई दिल्ली

शर्मा, स्थाणुदत्त (1958-59) हरियाणे की भाषा (भाषा विभाग, पंजाब की वार्षिक लेखक-गोष्ठी वर्ष 1958-59 में पढ़ा गया मुद्रित निबन्ध), पटियाला

,, ,, (1973-74) कौरवी की रूप-रेखा(भाषा विभाग, हरियाणा की वार्षिक लेखक-गोष्ठी वर्ष 1973-74 में पढ़ा गया मुद्रित निबन्ध), चंडीगढ़

शर्मा, साधुराम (प्रथम संस्करण) हरियाणा की उपभाषाएँ, चंडीगढ़

शास्त्री, देवेन्द्र कुमार (1973) भाषाशास्त्र तथा हिन्दी भाषा, वाराणसी

शास्त्री, मंगलदेव (1951) भाषाविज्ञान, प्रयाग

शास्त्री, राधाराम (1975-76) ' हरियाणवी भाषा एवं साहित्य ' — वार्षिक लेखक गोष्ठी (1975-76) के शोध-पत्र, चंडीगढ़

शास्त्री, रामेश्वर दयाल (1965-66) ' हरियाणवी और खड़ीबोली ' — सप्तसिन्धु (उपभाषा विशेषांक), पटियाला

शुक्ल, कैलाशनाथ (1973) पश्चिमी हिन्दी बोलियों की व्याकरणिक कोटियाँ, इलाहाबाद

श्रीवास्तव, आर० एन० (1969) ' Phonetics and Phonemics in Second Language Teaching' — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

श्रीवास्तव, वीणा (1973) ' हिन्दी की अपनी सन्धियाँ ' — भाषा : (हिन्दी भाषाविज्ञान अंक), नई दिल्ली

सक्सेना, बाबू राम (1952) दक्खिनी हिन्दी, इलाहाबाद

.. .. (1971) सामान्य भाषाविज्ञान, प्रयाग

.. .. (1972) अवधी का विकास, इलाहाबाद

सहाय, चतुर्भुज (1969) ' हिन्दी में नकारात्मक निपात ' — भाषा-शिक्षण तथा भाषाविज्ञान, आगरा

सिंघल, शशि चन्द्र	(प्रथम संस्करण)	'कौरवी' — *हरियाणा की उपभाषाएं*, चंडीगढ़
सुमन, अम्बाप्रसाद	(1965-66)	'हरियाणवी और उसकी प्रतिवेशिनी उपभाषाओं में 'ने' का प्रयोग' — *सप्तसिन्धु* (*उपभाषा विशेषांक*), पटियाला
,, ,,	(1969)	*भाषाविज्ञान सिद्धान्त और प्रयोग*, दिल्ली
सूरजभान सिंह	(1973)	'हिन्दी में व्यंजन + य गुच्छ' — *भाषा*(*हिन्दी भाषाविज्ञान अंक*), नई दिल्ली
सूरी, वेद	(1965-66)	'पंजाबी, लहिंदी, हरियाणवी और कांगड़ी के कारक चिह्न' — *सप्तसिन्धु* (*उपभाषा विशेषांक*), पटियाला
स्वामी, कृष्णा	(1965-66)	'अम्बालवी एक अध्ययन' — *सप्तसिन्धु* (*उपभाषा विशेषांक*), पटियाला

-o-

सहायक ग्रन्थ सूची (अंग्रेजी)

BIBLIOGRAPHY

Allen, W. S.	(1961)	Phonetics in Ancient India, London.
Arun, V. B.	(1961)	Comparative Phonology of Hindi and Panjabi, Ludhiana.
Bahadur Singh	(1966)	The Dialect of Delhi, New Delhi.
Bahri, Hardev	(1959)	Hindi Semantics, Allahabad.
"	(1962)	Lahndi Phonology, Allahabad.
"	(1963)	Lahndi Phonetics, Allahabad.
Bailey, T. Grahame	(1950)	Teach Yourself Hindustani, London.
Block, Barnard and Trager, G. L.	(1942)	Outline of Linguistics Analysis, Baltimore.
Bloomfield, Leonard	(1964)	Language, Delhi
Chatterjee, S. K.	(1960)	Indo Aryan and Hindi, Calcutta.
Chaturvedi, M. G.	(1973)	A Contrastive Study of Hindi-English Phonology, Delhi.
Chomsky, N.	(1957)	Syntatic Structures, The Hague .
"	(1977)	Logical Structure of Linguistic Theory, New York.
Fries, Charles C.	(1945)	Teaching and Learning English as a Foreign Language, Ann Arbor.
Ganesan, S. N.	(1975)	A Contrastive Grammar of Tamil and and Hindi, Madras.
Gill, H. S and Gleason, Jr, H. A.	(1969)	A Reference Grammar of Panjabi, Patiala.

Gleason, H. A. (1962) In Introduction to Descriptive Linguistics, New York.

Gray, L. H. (1950) Foundations of Language, New York.

Grierson, G. A., (1967) Linguistic Survey of India, Vol. I Part I ; Vol IX- Part 1, Delhi.

Grittner, Frank M. (1977) Teaching Foreign Languages, New York.

Hall, Jr., Robert A. (1969) Introductory Linguistics, Delhi.

Harley, A. H. (1960) Colloquial Hindustani, London.

Hill, A. A. (1958) Introduction to Linguistic Structures from Sound to Sentence in English, New York.

Hill, Leslie A. (1959-60) ' A Comparison between Initial Clusters in English and Hindi'- Transactions of Linguistic Circle of Delhi (Dr. S. Varma Vol.), Delhi.

Hockett, C. F. (1970) A Course in Modern Linguistics, New Delhi.

Jag Dev Singh. (1970) A Descriptive Grammar of Bangru, Kurukshetra.

" (1972) ' Haryani- Ek Vivaranatmak Parichay - Journal of Haryana Studies (Vol. IV. Number 1-2), Kurukshetra

" (1974) ' Hindi Aur Haryani: Bhasha Shiksha Ke Sandarbh Men'- Journal of Haryana Studies (Vol VI. Number 1-2), Kurukshetra.

Jain, B.D. (1934) *A Phonology of Panjabi as spoken about Ludhiana and a Ludhiani Phonetic Reader*, Lahore.

Jones, Daniel. (1950) *The Phoneme: Its nature and Use*, Cambridge.

,, (1956) *An Outline of English Phonetics*, Cambridge.

Joseph, E. (1910) ' Jatu Glossary ' - *Journal of Asiatic Society of Bengal* (*Vol VI 19*.. Calcutta.

Kailash Chandra (?) *Morphophonemic Analysis of Grammatical forms in the North Western Kaurvi(Hindi) as represented by the spoken tongue of Shahabad Markanda, District Karnal-Kurukshetra region, Panjab*-(unpublished thesis submitted to Panjab University)

Kelkar, A.R. (1968) *Studies in Hindi-Urdu, I. Introduction and Word phonology*, Poona.

Kellog, H.S. (1972) *A Grammar of Hindi Language*, New Delhi.

Lado, Robert (1964) *Language Teaching- A Scientific approach*, New Delhi.

Mc Gregor, R.S. (1972) *Outline of Hindi Grammar*, Oxford.

Narang, Gopi Chand (1961) *Karkhanadari Dialect of Delhi Urdu* Delhi.

Nida, E. A. (1949) Morphology, Ann Arbor.

Pike, K. L. (1949) *Phonemics: A Technique for Reducing Languages to Writing*, Ann Arbor.

Quadri, Mohiuddin (1930) *Hindustani Phonetics*, Paris.

Rohaj, Bani Singh (1979) *Speech Variations and Social Stratification in Bangru-Two Case Studies*. (An unpublished Ph.D. thesis submitted to Kurukshetra University) Kurukshetra.

Saksena, B.R. (1937) *Evolution of Awadhi*, Allahabad.

Sandhu, B.S., (1974) "The Articulatory and Acoustic Structure of the Punjabi Vowels" - *Parkh (Vol.II)*, Chandigarh.

Sapir, Edward (1921) *Language*, New York.

Sharma, Aryendra (1975) *A Basic Grammar of Modern Hindi*, Delhi.

Sharma, D.D., (1971) *Syllabic Structure of Hindi and Panjabi*, Chandigarh.

Sharma, Sham Lal (1974) ' *Kangri - A Descriptive Study of Kangra Valley Dialect of Himachal Pradesh*, Hoshiarpur.

Tiwari, Udai Narain (1960) *The Origin and Development of Bhojpuri Language*, Calcutta.

Varma, S. (1961) *Phonetic Observations of Ancient Indian Grammarians*, New Delhi.